ॐ

यतिदण्ड ऐश्वर्यविधानम्

(द्वितीय खण्ड- श्रीयन्त्र पूजा पद्धिति और न्यास विधिः)

दण्ड

दण्ड

पिण्ड

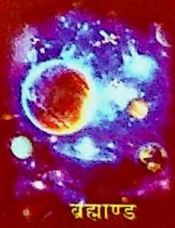

ब्रह्माण्ड

हिन्दी व्याख्याता
स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वतीजी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।ॐ श्रीसद्गुरवे नमः।।

जगद्गुर्वाद्यशंकराचार्यप्रणीतः

यतिदण्डैश्वर्यविधानपद्धतिः के अन्तर्गत

श्रीयन्त्र पूजापद्धति
और
समस्त महाषोढान्यास

द्वितीयखण्डः

हिन्दीव्याख्याकारः
स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती
सत्यं साधना कुटीर
वार्ड नं 3, डाकः कैलास गेट, मुनि की रेती,
ऋषिकेश, तहसीलः नरेन्द्रनगर, जिलाः टिहरी गढ़वाल,
उत्तराखण्ड. पिनः 249137. चलदूरभाष : 9557130251

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ग्रन्थ का नामः यतिदण्डैश्वर्यविधानपद्धतिः - द्वितीयखण्डः।
प्रकाशकः सत्यं साधना कुटीर।

© सर्वाधिकारः प्रकाशकाधीनः।

प्रथमावृत्ति : 500 (पांचसौ).

संपादकगण : स्वामी सर्वेशानन्द सरस्वती,
पं. ज्योतिप्रसाद उनियाल।

प्राप्तिस्थान : सत्यं साधना कुटीर
वार्ड नं 3, डाकः कैलास गेट, मुनि की रेती,
ऋषिकेश, तहसीलः नरेन्द्रनगर, जिलाः टिहरी गढ़वाल,
उत्तराखण्ड. पिनः 249137. चलदूरभाष : 9557130251
ईपत्रः swsdsr@gmail.com Web: www.satyamsadhana.org
आरर्वाईव और यू-टूबः satyamsadhanakutir

मूल्य :
मुद्रक : सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, रेलवे रोड, ऋषिकेश.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीयन्त्र पूजापद्धति (द्वितीया खण्ड) की विषयसूची

संख्या	विषयसूची	पृष्ठ संख्या
1	आचमनम्	8
2	स्वासनपूजा	9
3	प्राणायामः	10
4	चक्रचिन्तनम्	10
5	सृष्टिक्रमेण यन्त्रोद्धारः	12
6	जलशोधनम्	13
7	श्रीचक्रराजे आयतनपूजा	13
8	साम्बायतनपूजनम्	15
9	द्वारदेवतापूजनम्	15
10	तिरस्करणीध्यानम्	20
11	तिरस्करणीमन्त्रोद्धारः	20
12	भूतापसारणम्	22
13	पूर्वद्वारार्चनम्	25
14	दक्षिणद्वारार्चनम्	26
15	पश्चिमद्वारार्चनम्	27
16	उत्तरद्वारार्चनम्	28
17	ऊर्ध्वद्वारार्चनम्	29
18	मन्दिरार्चनम्	32
19	न्यासाः	45
20	षोढान्यासस्य स्वरूपम्	46
21	अंगषोढान्यासः	46
21क	अधराम्नायषोढान्यासः	48
21ख	पूर्वाम्नायषोढान्यासः	47
21ग	दक्षिणाम्नायषोढान्यासः	47
21घ	पश्चिमाम्नायषोढान्यासः	48
21ङ	उत्तराम्नायषोढान्यासः	48

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

21च	ऊर्ध्वाम्नायलघुषोढान्यासः	49
21छ	ऊर्ध्वाम्नायमहाषोढान्यासः	49
22	पात्रासादनम्	50
23	प्रथमावरणार्चनम्	64
24	द्वितीयावरणार्चनम्	70
25	तृतीयावरणार्चनम्	72
26	चतुर्थावरणार्चनम्	74
27	पूर्वाम्नायसमष्टिक्रमः	78
28	पंचमावरणार्चनम्	79
29	षष्ठावरणार्चनम्	81
30	सप्तममावरणार्चनम्	84
31	दक्षिणाम्नायसमष्टिक्रमः	86
32	अष्टममावरणार्चनम्	88
33	गुरुस्मरणम्	90
34	नवमावरणार्चनम्	93
35	दशमावरणार्चनम्	97
36	पश्चिमाम्नायसमष्टिक्रमः	99
37	एकादशावरणार्चनम्	100
37 क	त्रिपदागायत्री	101
37 ख	चतुष्पदागायत्री	102
38	द्वादशावरणार्चनम्	104
38 क	दशमहाविद्या	104
38 ख	उत्तरामयसमष्टिक्रमः	106
38 ग	अतिरिक्तसमष्टिपूजनम्	106
39	त्रयोदशावरणार्चनम्	107
40	चतुर्दशावरणार्चनम्	108
41	पंचदशावरणार्चनम्	110
42	षोडशावरणार्चनम्	112
42क	समष्टिपूजा	115

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परिशिष्टस्थ महाषोढान्यासों का सूची

1. हंसषोढोपनिषत् 116

2. तारामहाषोढान्यास 117-121

विनियोगादि (117)। शिवकलान्यास (117)। ग्रहन्यास (120)। दिक्पालन्यास(120)। षट्चक्रन्यास (121)। तारादिन्यास (121)। पीठन्यास (121)।

3. भुवनेश्वरीमहाषोढान्यास 121-133

विनियोगादि (122)। परान्यास (122)। परात्परान्यास (124)। परात्परातीतान्यास (126)। चित्परान्यास (127)। चित्परात्परान्यास (129)। चित्परात्परातीतान्यास (131)।

4. महाकालीमहाषोढान्यास 134-141

विनियोगादि (134)। ग्रहन्यास (134)। राशिन्यास (135)। नक्षत्रन्यास (136)। योगन्यास (138)। करणन्यास (139)। संवत्सरन्यास (140)।

5. पश्चिमाम्नाय-कुब्जिकामहाषोढान्यास 142-155

विनियोगादि(143)। गुरुमण्डलन्यास(143)। द्वात्रिंशद्वर्णन्यास(144)। षडङ्गहृदयादिन्यास(145)। ग्रन्थिन्यास(145)। अघोरन्यास(146)। मालिनीन्यास(146)। शब्दराशिन्यास(148)। षड्दूतीन्यास(150)। रत्नपंचकन्यास (151)। नवात्मन्यास (151)। हृदयादिन्यास (151)। छोटिकान्यास (152), अघोरास्त्रयास (152), द्वात्रिंशद्वर्णन्यास (152)। एकाक्षरीन्यास (152), त्रिविद्यान्यास (153), घोराष्टकन्यास (153), रुद्रखण्डन्यास (153)। मातृखण्डन्यास (154), त्रिखण्डान्यास (154)। बीजपंचकन्यास (155), पादादिषट्कन्यास (155)।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

6. **पंचक्रमकालिका** (उत्तराम्नाय के अनुसार) 156-172
विनियोगादि (156), उग्रमातृक्रमन्यास (156)। कालीकुलक्रमन्यास (157)। पीठन्यास (159), योगिनीन्यास (160)। देवतान्यास (161)। मन्त्रन्यास (162)। बलिदानमन्त्र (164)। श्रीकुब्जिकाकवचमालामन्त्रस्तोत्र (164)। सृष्टिवज्रकुब्जिका (पश्चिमाम्नाय के अनुसार)(165)।

7. **श्रीविद्या-लघुषोढान्यास** 173-184
विनियोगादि (173)। गणेशन्यास (173)। ग्रहन्यास (176)। नक्षत्रन्यास (176)। योगिनीन्यास (177)। राशिन्यास (181)। पीठन्यास (182)।

8. **श्रीविद्या-षोढान्यास** (ऊर्ध्वाम्नाय के अनुसार) 185-192
विनियोगादि (186)। सिद्धेश्वरीन्यास(186)। परमेश्वरीन्यास (188)। महाविद्यान्यास (188)। महाकालाधीश्वरीन्यास(189)। बीजकलान्यास(190)। चरणन्यास(190)।

9. **श्रीविद्या-महाषोढान्यास** 193-203
विनियोगादि (193), अङ्गुलीन्यास (193), देहन्यास (193), वक्त्रन्यास (193), कर-हृदयादि न्यास (193)। प्रपंचन्यास (194)। भुवनन्यास (196)। मूर्तिन्यास (197)। मन्त्रन्यास (198)। देवातान्यास (201)। मातृकाभैरवन्यास (202)।

10. **श्रीविद्यामहाशक्तिन्यासस्तोत्रम्** 204-219

11. **श्री परा महायोनि कवचम्** 220-222

12. **श्री भुवनेश्वरी स्तोत्रम्** 223-224

--- 0000 ---

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।ॐ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः।।

अथ श्रीचक्रपूजापद्धतिः

अथ प्रार्थना –

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवम्।
सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुगं दूतिक्रमं मण्डलम्।।
(शाम्भवम्)
वीरान्द्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपंचकम्।
श्रीमन्मालिनीमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्।।1।।

श्रीनाथ आदि गुरुत्रय, गणपति, पीठत्रय, भैरव, सिद्धौघ, बटुकत्रय, पादयुगल, दूतीक्रम और (गुरु) मंडल/शाम्भव। वीरों, दो, चार, आठ, नौ और साठ सहित वीरावली पंचक तथा श्रीमालिनीमन्त्रराजसहित गुरुजनों के मण्डल की मैं वन्दना करता हूँ।1।

स्वस्वरूपपरिज्ञानहेतवे गुरुवे नमः।
स्वच्छप्रकाशरूपाय विमर्शरूपिणे नमः।।2।।

अपने स्वरूप का परिज्ञान के कारणीभूत तथा स्वच्छप्रकाश स्वरूप एवं विमर्शस्वरूप गुरु को मैं बारम्बार नमस्कार करता हूँ।।2।।

सदाशिवस्वरूपाय पराय गुरवे नमः।
स्वात्मारामस्वरूपाय पंजरे पांचभौतिके।।3।।

सदाशिवस्वरूप तथा परतत्त्वस्वरूप गुरु को मैं नमस्कार करता हूँ। तथा इस पांचभौतिक पिंजरे में स्थित स्वात्मारामस्वरूप (गुरु) को मेरा नमस्कार हो।।3।।

विलीनतेजसे नौमि गुरवे परमेष्ठिने।
योगक्षेमस्य सिद्ध्यर्थं गुरुं नौमि परात्परम्।।4।।

विलीनतेजवाले परमेष्ठिगुरु को मैं नमस्कार करता हूं तथा योग और क्षेम की सिद्धि केलिये परात्पर गुरु को मैं नमस्कार करता हूँ।।4।।

नत्वा गुरुं गणेशानं पुरतः स्वेष्टदेवताम्।
ततोऽर्चयेत् गुरुं मूर्ध्नि न्याससंघट्टमुद्रया।।5।।
(ततो ध्यायेत्-इति पाठभेदः)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(इस प्रकार) गुरु और गणपति को पहले नमस्कार करके स्वेष्टदेवता को प्रणाम करें। फिर पूजा करें (पाठभेदानुसार - न्यास करें), किसका ? न्यासमुद्रा और संघट्टमुद्रा से मूर्धा में (मस्तिष्क यानि सहस्रार चक्र में) स्थित गुरु का पूजन/न्यास करें।।5।।

तत्पादुकौ पादुकाख्यविद्यया चन्दनादिभिः।
प्रणम्याज्ञां समादाय वक्ष्यमाणविधानतः ।।6।।

(पाठभेदः - तत्पादुके चन्दनाद्यैः पूजयेत् रत्नविद्यया।
प्रणम्याज्ञां समादाय वक्ष्यमाणविधानतः।।)

पादुका नामक विद्या (मन्त्र) का उच्चारण पूर्वक चन्दनादि सामग्रियों से उनके (गुरु के) चरणकमलों की पूजा कर (पाठभेदानुसार - रत्नविद्या से गुरु पूजन कर) प्रणाम करके उनकी आज्ञा प्राप्त करके आगे कहे गये विधि से आगे की पूजा आरम्भ करें ।6।

ॐ शुद्धस्फटिकसंकाशं द्विनेत्रं करुणानिधिम्।
वराभयकरं वन्दे श्रीगुरुं शिवरूपिणम् ।।7।।

शुद्धस्फटिक के जैसे जो हैं, दो नेत्रों से युक्त, करुणानिधि के स्वरूप, वर और अभय मुद्राओं से युक्त हाथों से सुशोभित, शिवस्वरूप श्रीगुरुदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।7।

भक्ताज्ञानतमोभानुं मूर्ध्नि पंकजसंस्थितम्।
सदाशिवमयं नित्यं श्रीगुरुं प्रणमाम्यहम्।।8।।

सिर में सहस्रारचक्र में विराजमान, अन्धकार को नष्टकरनेवाला सूर्य के समान भक्तों के अज्ञान को नष्टकरनेवाले सदाशिवमय श्रीगुरुदेव को मैं नित्य ही प्रणाम करता हूँ।8।

श्रीविद्यां जगतां धात्रीं सर्गस्थितिलयेश्वरीम्।
नमामि ललितां नित्यं महात्रिपुरसुन्दरीम्।।9।।

जगत् को धारणकरनेवाली, सृष्टि-स्थिति-लय की ईश्वरी, श्रीविद्या स्वरूपा महात्रिपुरसुन्दरी ललिता देवी को मैं नित्य ही प्रणाम करता हूँ। 9।

1. आचमनम् = आचमन करना -

ॐ ऐं आत्मतत्त्वं परिशोधयामि।
क्लीं विद्याख्यतत्त्वं च तु कामपूर्वम्।।10।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सौः शक्तिकूटेन च शिवाख्यतत्त्वम्।
कूटत्रयैः कारणतत्त्वमेवम् ।।11।।

मूलमन्त्र (ऐंक्लींसौः) और पंचदशीमन्त्र कएईलह्रीं (वाक्कूट), हसकहलह्रीं (कामकूट) और सकलह्रीं (शक्तिकूट) को नीचे दर्शित प्रकार से संयोजन करके आचमन करें। **ॐ ऐं कएईलह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि, ॐ क्लीं हसकहलह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि, ॐ सौः सकलह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि, ॐ ऐंक्लींसौः कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं कारणतत्त्वं शोधयामि** - इन चार मन्त्रों से आचमन करें।।10-11।।

2. स्वासनपूजा = अपने आसन की पूजा करना -

स्वीयमासनमास्तीर्य देवस्याग्रे तु प्राङ्मुखः।
उपविश्यासने तत्र तत्त्वैराचम्य यत्नतः ।।12।।
प्राणानायम्य विधिवत्पूजाद्रव्याणि शोधयेत्।
जलस्य शोधनं कृत्वा गन्धपुष्पादि शोधयेत्।।13।।

देवता के सामने अपने आसन को बिछाकर पूर्वाभिमुख होकर बैठें। वहाँ बैठे हुये प्रयत्नपूर्वक पूर्वोक्त विधि से पुनः तत्त्वों से आचमन करें। विधिवत् प्राणायाम करके पूजाद्रव्यों की शुद्धिकरण करें। जल का शोधन करके गन्ध-पुष्प आदि सामग्रियों का भी शोधन करें।।12-13। विधिः -

स्वाग्रे त्रिकोणं कुर्वेऽहमासनाधो महेश्वरि।
तत्र योगासनं पूज्यं वीरासनमथोऽर्चये।।14।।
शरासनं पूजयित्वा अनन्तासनमर्चये।
अर्चयित्वा महेशानि विमलासनमुत्तमम्।।15।।
आधारशक्तिकमलासनं देवि ततोऽर्चये।
तत्रोपविश्याचमनं देहशुद्ध्यै करोम्यहम्।।16।।

अपने सामने की ओर आसन के नीचे त्रिकोण बनाते वक्त निम्न प्रार्थना मन्त्र को उच्चारण करते हुये देवी से प्रार्थना करें तत्पश्चात् निम्न आसन पूजा मन्त्रों से आसन की पूजा करें। इस त्रिकोण में पूज्य जो योगासन है उस की मैं पूजा करता हूँ, तदनन्तर वीरासन की मैं पूजा करता हूँ। हे महेशानि! शरासन की पूजा करके अनन्तासन की पूजा करता हूँ। उत्तम विमलासन की पूजा करके हे देवी! आधारशक्तिकमल आसन की मैं पूजा करता हूँ। प्रार्थना मन्त्र - '**स्वाग्रे त्रिकोणं कुर्वेऽहमासनाधो महेश्वरी।**', अक्षतपुष्पगन्धादि से आसन की पूजा इन मन्त्रों से करे - '**ॐ योगासनाय नमः,**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योगासनं पूजयामि भावयामि समर्पयामि; ॐ वीरासनाय नमः, वीरासनं पूजयामि भावयामि समर्पयामि; ॐ शरासनाय नमः, शरासनं पूजयामि भावयामि समर्पयामि; ॐ अनन्तासनाय नमः, अनन्तासनं पूजयामि भावयामि समर्पयामि; ॐ विमलासनाय नमः, विमलासनं पूजयामि भावयामि समर्पयामि; ॐ आधारशक्तिकमलासनाय नमः, आधारशक्तिकमलासनं पूजयामि भावयामि समर्पयामि।' अब उस आसन पर बैठके देहशुद्धि केलिये पुनः आचमन करें।14-16।।

3. प्राणायामः = प्राणायाम करना -

इत्थमाचम्य शुद्धांगः प्राणायामत्रयं चरेत्।
पूरकं कुम्भकं चैव रेचकं त्रिविधं क्रमात्।।17।।

उक्त प्रकार से आचमन करके शुद्ध अंगोंवाला साधक/यजमान तीन बार प्राणायाम करें। वह भी क्रमशः पूरक, कुम्भक और रेचक - तीनों प्रकार से युक्त हो।।17।।

4. चक्रचिन्तनम् = चक्रों का चिन्तन करना -

मूलाधारात्समारभ्य आज्ञाचक्रावधि प्रिये।
चक्रषट्कं समाख्यातं योगशास्त्रविशारदैः।।18।।

हे प्रिये! मूलाधारचक्र से आरम्भ करके आज्ञा चक्र पर्यन्त छः चक्र योग शास्त्रों के विद्वानों द्वारा बताया गया है।18।

मध्यचक्रचतुष्क तु एकैकांगुलमन्तरा ।
अधोमुखानि चक्राणि तत्तन्नाम्ना स्थितानि वै।।19।।

इनके ही बीच में चार और चक्र हैं जो एक-एक अंगुल के अन्तर में अधोमुख होकर स्थित हैं। उनके नाम भी बीच के चक्रों के नाम से ही हैं। (अधोमुखस्वाधिष्ठान, अधोमुखमणिपूर, अधोमुखानाहत, अधोमुखविशुद्ध)।19।

मूलाधारमधः स्वाधिष्ठानचक्रकं ततः परम्।
स्वाधिष्ठानं तत ऊर्ध्वं स्थितमेकांगुलान्तरे।।20।।
मणिपूराभिधानान्नाभिचक्राच्च यदधः स्थितः।
एकांगुलप्रमाणेन तदधो मणिपूरकम् ।।21।।
एकांगुलेन मानेनाऽनाहताद्यदधः स्थितम्।
तदधोऽनाहताख्यं हि चक्रमुक्तं मनीषिभिः।।22।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विशुद्धचक्रात्कण्ठस्थादधः एकांगुलान्तरे।
अधोविशुद्धचक्रं हि स्थितमित्यागमा जगुः।।23।।

सब से नीचे मूलाधारचक्र है, उससे एक अंगुल के अन्तर में ऊपर की ओर अधोमुखस्वाधिष्ठानचक्र है, उससे ऊपर (ऊर्ध्वमुख) स्वाधिष्ठानचक्र है, उससे ऊपर नाभिचक्र अथवा मणिपूरचक्र नाम से प्रसिद्ध चक्र है, उससे नीचे एक अंगुल के अन्तर में अधोमुखमणिपूरचक्र स्थित है, मणिपूरचक्र के ऊपर और अनाहतचक्र के नीचे एक अंगुल के अन्तर में अधोमुखानाहतचक्र है, उससे ऊपर शुद्ध यानि ऊर्ध्वमुखी अनाहतचक्र स्थित है। पूर्वोक्त प्रकार से ही शुद्ध अनाहतचक्र के ऊपर और शुद्ध विशुद्धिचक्र के नीचे एक अंगुल के अन्तर में अधोमुखविशुद्धचक्र है। अतः उससे एक अंगुल ऊपर (शुद्ध/ऊर्ध्वमुखी) विशुद्धचक्र स्थित है। उससे ऊपर आज्ञाचक्र है, इस प्रकार योगशास्त्र और आगमों के ज्ञाता कहते हैं (बताते हैं) ।20-23।

आधारनादसूत्रेण ध्यायेद्वर्णमणीन् क्रमात्।
अकुलं च महाबिन्दुश्चोन्मना समना तथा।।24।।
व्यापिकाशक्तिनादान्तनादरोधार्धचन्द्रिकाः।
बिन्देराज्ञा ततश्चैव लम्बिकाऽथ विशुद्धिका।।25।।
अधोमुखविशुद्धिश्च शुद्धिश्चानाहतं ततः।
अधोमुखं तथैवास्तु मणिपूरमधोमुखम्।।26।।
स्वाधिष्ठानं ततोऽधश्च मूलाधारं तथैव च।
विषुवं कुलसंज्ञं च कुलत्थेति प्रकीर्तितम्।।27।।

वर्णरूपी मणियों का ध्यान आधारनादसूत्र के अनुसार करें। उसी प्रकार अकुल, महाबिन्दु, उन्मना, समना, व्यापिका, शक्ति, नादान्त, नाद, रोधनी, अर्धचन्द्र,

---

[पूजारम्भक्रमं दर्शयति -

कृत्वा तु मण्डपाद् बाह्ये षट्कोणचतुरस्रकम्।
विद्यया पूजयेन्मध्ये खण्डैस्त्र्यस्रं प्रपूज्य च।।27.1।।
बीजावृत्त्या तु षट्कोणं सम्पूज्यार्घ्यं निवेशयेत्।
मंदिरद्वारपूजां च कुर्यात्साधकसत्तमः।।27.2।।

पूजा मण्डप के बाहर एक चतुर्भुज के भीतर एक षट्कोण बनाकर उसका विद्या से पूजन करें। उसके बीच में एक त्र्यस्र बनाकर उसका मन्त्रखण्ड (तीनों कूटें में से प्रत्येक कूट से अलग-अलग) के द्वारा पूजन करें। तदनन्तर बीज की आवृत्ति से षट्कोण की पूजा करें। उस पर सामान्य अर्घ्य पात्र की स्थापना करके मन्दिर के द्वारों की पूजा करें। इस क्रम को साधकश्रेष्ठ सदैव पालन करें। यह आरम्भिक पूजा विधि तीनों क्रम (सृष्टिक्रम, स्थितिक्रम और संहारक्रम) के अनुसार श्रीयन्त्र की पूजा करनेवालों के लिये बराबर है।]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बिन्दु, आज्ञा, लम्बिका, विशुद्धि, अधोमुखविशुद्धि, अनाहत, अधोमुख-अनाहत, मणिपूर, अधोमुखमणिपूर, स्वाधिष्ठान, अधोमुखस्वाधिष्ठान, मूलाधार, विषुव, कुल और कुलत्थ - इस क्रम से चक्रों का ध्यान करना है।24-27।

5. सृष्टिक्रमेण यन्त्रोद्धारः पूजा च = सृष्टिक्रम से यन्त्रोद्धार और पूजा-

बिन्दुत्रिकोणसंयुक्तं वसुकोणसमन्वितम्।
दशकोणद्वयोपेतं भुवनारसमन्वितम् ।।28।।
दलाष्टकसमोपेतं दलषोडशकान्वितम्।
वृत्तत्रयान्वितं भूमिसदनत्रयभूषितम्।।29।।
श्रीचक्रमेतदुदितं देवतायाः पराया वै।
नमामि त्रिपुराचक्रं भक्तानामेतदिष्टदम्।।29.क।।

बिन्दु, त्रिकोण, वसुकोण, दो दशकोण, भुवनार (चतुर्दशार), अष्टदल, षोडशदल, वृत्तत्रय, भूमिसदनत्रय से विभूषित परा देवता श्रीमहात्रिपुर सुन्दरीजी के प्रतीक, जो भक्तों को अभीष्टफलप्रदायक कहा गया है उस श्रीत्रिपुराचक्र यानि श्रीचक्र को मैं नमस्कार करता हूँ।।28-29।।

[स्थितिक्रमे -

भूगृहं गुणरेखाढ्यं वेदद्वारोपशोभितम्।
त्रिवृत्तं षोडशदलं तथाऽष्टदलकर्णिकम्।।29.1।।
मध्ये बिन्दुमहाचक्रं नित्यं श्रीत्रिपुरामयम्।
मनुकोणं द्विदिक्कोणं वसुकोणं त्रिकोणकम्।।29.2।।
श्रीगुरो! दक्षिणामूर्ते! भक्तानुग्रहकारक।
अनुज्ञां भगवन्देहि स्थितिक्रमार्चनाय मे।।29.3।।

ऊपर से नीचे तक के आवरणों की पूजा का क्रम सृष्टिक्रमावलम्बी साधकों के लिये ऊपर में बताया गया। अब स्थितिक्रमावलम्बी साधकों के लिये आवरणों के पूजा का क्रम बता रहे हैं, जो कि इस प्रकार है -भूप्रस्तर, तत्रस्थ तीन रेखा या स्तर (सत्त्व, रज और तम), चारद्वार, त्रिवृत्त, षोडशदल, अष्टदल, बीच में ही बिन्दु रूपी त्रिपुरामय महाचक्र का पूजन करने के अनन्तर मनुकोण, दशकोणद्वय, वासुकोण और त्रिकोण की पूजा करें। हे गुरुदेव! हे दक्षिणामूर्ति भगवन्! हे भक्तों पर अनुग्रह करनेवाले! स्थितिक्रम से अर्चन करने के लिये आप मुझे अनुमति प्रदान करें। संहारक्रमे -

सदनत्रयसंयुक्तं वृत्तत्रयभूषितम् ।
दलषोडशयुक्तं च दलाष्टकविभूषितम्।।29.4।।
भुवनैः सुसंयुक्तं दशकोणद्वयान्वितम्।
वसुकोणं त्रिकोणं च बिन्दुत्रययुतं तथा।।29.5।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

6. जलशोधनम् = जल आदि का शोधन करना –

पवित्रीकरणं कुर्यात्प्रथमं स्थानशुद्धये।
जलस्य शोधनं कुर्याज्जलशोधनविधया।।30।।
गन्धशोधनमन्त्रेण गन्धादीन् परिशोधयेत्।
पुष्पशोधनमन्त्रेण पुष्पाणि च विशोधयेत्।।31।।

पवित्रीकरण कर लेने के बाद स्थानशुद्धि के लिये पहले जलशोधनविद्या से जल का शोधन करें। गन्धादियों के शोधनमन्त्रों से गन्धादियों का भी शोधन कर लें। तदनन्तर पुष्प शोधनमन्त्र से पुष्पों का विशोधन कर लें।।30–31।।

7. श्रीचक्रराजे आयतनपूजनम् = श्रीचक्रराज में आयतनों की पूजा –

सिद्धिबुद्धिसमायुक्तं महागणपतिं शिवे।
अर्चयामि मुदा भक्त्या नैर्ऋत्यां विघ्नशान्तये।।1।।

हे शिवे! विघ्ननिवारण के लिये नैर्ऋत्य दिशा में सिद्धि और बुद्धि से समायुक्त महागणपति को भक्तिपूर्वक प्रसन्न चित्त से मैं पूजता हूँ।।1।।

गायत्र्या सह मार्तण्डरविं वायौ प्रपूजये।
लक्ष्म्या युतं महाविष्णुमीशान्यां पूजयाम्यहम्।।2।।

वायव्य कोण में गायत्री के साथ मार्तण्ड भगवान् सूर्य को मैं पूजता हूँ तथा ईशान कोण में लक्ष्मी सहित महाविष्णु को मैं पूजता हूँ।2।

शिवेन सहितां देवीं श्रीमद्भुवनसुन्दरीम्।
तव प्रीत्यै जगद्धात्रि! चाग्नेय्यां पूजयाम्यहम्।।3।।

इति पाठभेदः

संहारक्रम में इस क्रम से पूजा करनी है – सदनत्रय, वृत्तत्रय, षोडशदल, अष्टदल, भुवनसंयुक्त यानि चतुर्दशार सहित दशदलद्वय, वसुकोण, त्रिकोण, और बिन्दुत्रय। एक दूसरी विधि भी है संहारक्रम कि – अथवा

भूगृहं गुणरेखाढ्यं वेदद्वारोपशोभितम्।
त्रिवृत्तं षोडशदलं तथाऽष्टदलकर्णिकम्।।29.6।।
मनुकोणं द्विदिक्कोणं वसुकोणं त्रिकोणकम्।
मध्ये बिन्दुमहाचक्रं नित्यं श्रीत्रिपुरालयम्।।29.7।।
श्रीगुरो! दक्षिणामूर्ते! भक्तानुग्रहकारक।
अनुज्ञां भगवन्देहि लयक्रमार्चनाय मे ।।29.8।।

गुणरेखाओं (सत्त्व, रज, तम) से युक्त भूगृह, चारद्वार, त्रिवृत्त, षोडशदल, अष्टदल, मनुकोण, दशदलद्वय, वसुकोण, त्रिकोण और मध्य में स्थित त्रिपुरा का आलय जो बिन्दु महाचक्र है, उसका नित्य ही पूजन करें। हे गुरुदेव! हे दक्षिणामूर्ति भगवन्! हे भक्तों पर अनुग्रह करनेवाले! लयक्रम से अर्चन करने के लिये आप मुझे अनुमति प्रदान करें।]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हे जगद्धात्री! आपकी प्रसन्नता केलिये नैर्ऋत्य (आग्नेय) कोण में शिव के सहित देवी श्रीमद् भुवनसुन्दरी को मैं पूजता हूँ।3।

मध्ये दुर्गासमायुक्तं पाण्डुनाथाख्यभैरवम्।
पूजयामि सुरेशानि तव प्रीत्यै सुरेश्वरि।।4।।

हे सुरेशानी! हे सुरेश्वरी! आपकी प्रसन्नता केलिये मध्य में दुर्गा सहित पाण्डुनाथ नामक भैरव को मैं पूजता हूँ।।4।।

अग्निकोणेऽर्चयाम्यत्र गौर्या सह सदाशिवम्।
गायत्र्या सहितं पाशुपतं भट्टारकं शिवे।।5।।
वायव्यां भक्तिभावेन पूजयामि सुरेश्वरि।
गुह्येश्वर्या समं गुह्येश्वरं भैरवमादरात्।।6।।
भक्त्या समर्चये देवि आग्नेय्यां तव तुष्टये।
नौमि भैरवमुन्मत्तं वाराहीसहितं शिवे।।7।।
ईशानकोणमाश्रित्य पूजयेऽहं महेश्वरि।
श्रीगुरुं दक्षिणामूर्तिं ज्ञानशक्त्या समन्वितम्।।8।।
मध्येऽर्चयामि देवेशि तव प्रीत्यै महेश्वरि।
इत्थं पूजा प्रकर्तव्या सम्यगायतनात्मिका।।9।।

हे सुरेश्वरी! अग्निकोण में गौरी युक्त सदाशिव को मैं पूजता हूँ तथा हे शिवे! वायव्यकोण में भक्तिभाव से गायत्री सहित पाशुपत भट्टारक को मैं पूजता हूँ और हे देवी! अग्निकोण में पुनः आपकी प्रसन्नता केलिये गुह्येश्वरी सहित गुह्येश्वर भैरव को मैं आदरपूर्वक पूजता हूँ। हे शिवे! हे महेश्वरी! ईशान कोण में वाराही सहित उन्मत्तभैरव को मैं प्रणाम करता हूँ और पूजता हूँ। तथा हे देवेशी! हे महेश्वरी! आपकी प्रसन्नता केलिये ज्ञानशक्ति सहित श्रीगुरु दक्षिणामूर्ति भगवान् की पूजा मध्य में मैं करता हूँ। इस प्रकार सम्यगायतनात्मिका (वैदिक यानि श्रौत पंचायतन की) पूजा परम्परा के अनुसार हर साधक को अवश्य करना चाहिये।5-9।

ततस्त्रिखण्डया कार्यमावाहनमनुत्तमम् ।
महात्रिपुरसुन्दर्या यन्त्रराजे यथाविधि।।10।।

तदनन्तर त्रिखण्डा आदि मुद्राओं से यन्त्रराज में विधिपूर्वक श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी का सर्वोत्तम भाव से आवाहनादि कर्म करना चाहिये।।10।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

8. साम्बायतनपूजनम् = साम्ब आयतन की पूजा–

ज्ञानाम्बासहितं मध्ये दक्षिणामूर्तिमर्चये।
नैर्ऋत्यामर्चये भक्त्या गुह्येश्वर्या गुह्येश्वरम्।।11।।

मध्य में ज्ञानाम्बा सहित दक्षिणामूर्ति को मैं पूजता हूँ और गुह्येश्वरी सहित गुह्येश्वर को नैर्ऋत्य में भक्तिपूर्वक मैं अर्चना करता हूँ।।11।।

महेश्वरं च मातंग्या सहितं वायव्ये यजे।
ऐशान्ये भुवनायुक्तं पूजयामि सदाशिवम्।।12।।

वायव्यकोण में मातंगी सहित महेश्वर को मैं पूजता हूँ एवं ऐशान्य में भुवना सहित सदाशिव को मैं पूजता हूँ।12।

भट्टारकं पाशुपतं गायत्र्या सह वह्निगम्।
मध्ये दुर्गां समभ्यर्च्य सिद्धिबुद्धिसमन्विताम्।।13।।
गणेशानं पूजयामि नैर्ऋत्यां विघ्नशान्तये ।

हे महेशानी! आग्नेय कोण में गायत्री सहित पाशुपतभट्टारक को पूजता हूँ तथा मध्य में सिद्धि और बुद्धि सहिता दुर्गा को पूजकर, विघ्नशान्ति केलिये नैर्ऋत्य में गणेशजी का पूजन करता हूँ।

9. द्वारदेवतापूजनम् = द्वारदेवताओं का पूजन विधि –

श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्याः पूजयेद् द्वारदेवताः।।14।।

तदनन्तर श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी के द्वारदेवताओं की पूजा करें।14।

कोटियोजनविस्तीर्णायाममादौ पृथक्पृथक्।
सुधार्णवचतुष्कन्तु ध्यात्वा तन्मध्यगं पुनः।।15।।
कोटियोजनविस्तीर्णायामं द्वीपं महाद्भुतम्।
नवरत्नमयं कोटिसूर्यमण्डलसन्निभाम् ।।16।।
तत्तृतीयांशमानेन मदनोन्मादनं महत्।
नानापुष्पलतोपेतं कदम्बोद्यानगर्भिणम् ।।17।।
हेमपर्वतमूर्ध्निस्थं चन्दनोद्यानमामृशेत् ।

गायत्र्या सह मार्तण्डं रविं वायौ प्रपूज्य च।।13.1।।
लक्ष्म्या युतं महाविष्णुमीशाने पूजयाम्यहम्।
अग्निकोणे महेशानि गौर्या सह सदाशिवम्।।13.2।।

गायत्री सहित मार्तण्ड रवि को वायव्य कोण में पूजकर लक्ष्मी सहित महाविष्णु को ईशान कोण में मैं पूजता हूँ तथा अग्नि कोण में गौरी सहित सदाशिव को मैं पूजता हूँ।13.1–13.2।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वप्रथम कोटियोजन विस्तीर्ण अलग-अलग अमृतपूर्ण चार समुद्र का ध्यान करके, उसके बीच में कोटियोजन विस्तीर्ण महा अद्भुत नवरत्नमय कोटिसूर्यमण्डल के सदृश देदीप्यमान चार द्वीपों का ध्यान करें। उसके एक/तीन यानि तीसरे हिस्से में एक बगीचे का ध्यान करना है जो कि निम्न प्रकार है - द्वीप के मध्य में स्थित स्वर्णमय पर्वत के चोटी पर काम को उद्दीप्त करनेवाला, नानाप्रकार के पुष्पयुक्त लताओं से सुशोभित कदम्बवृक्ष का उद्यान से गर्भित चन्दन का उद्यान है।15-18।

तन्मध्ये च तृतीयांशमानेनादित्यकोटिभम्।।18।।
स्वर्णप्राकारसंवीतं तोरणद्वारशोभितम्।
मण्डितं विविधै रत्नैरिन्द्राद्यैः परिवारितम्।।19।।
मणिमण्डपमेतन्तु ततस्तद्द्वारदेवताः।
सामान्यार्घजलैर्गन्धपुष्पाक्षतसमन्वितैः।।20।।
वक्ष्यमाणप्रकारेण ध्यात्वा सम्यक्समर्चयेत्।
आदौ सुधार्णवानिष्ट्वा समुदायेन मन्त्रवित्।।21।।

उस चन्दन के उद्यान के बीच में एक/तीन यानि तीसरे हिस्से में चार द्वार युक्त एक मण्डप का ध्यान करें जो कि निम्न प्रकार का है - स्वर्णमय चार दीवारी से घिरा हुआ, कोटिसूर्य प्रकाश के समान चमकता हुआ, विविध रत्नों से मण्डित, तोरणों से अलंकृत द्वारों वाला, इन्द्रादि देवताओं से परिवारित, मणिमय मण्डप है। इस प्रकार ध्यान करने के पश्चात् उन चार द्वारों के देवताओं का आगे बताये गये विधि से सामान्यार्घ्यपात्र के जल, गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि सामग्रियों से तत्तद्देवताओं का ध्यान करके सम्यक् प्रकार से पूजन करें। सर्वप्रथम समुदाय यानि एकसाथ (एकतन्त्र से) मन्त्रवेत्ता साधक चारों समुद्रों का पूजन करें।18-21।

अकारादिक्षकारान्तां बिन्द्वन्तां मातृकां स्मरेत्।
नवरत्नमयं द्वीपं नवखण्डमयं यजेत्।।22।।

तत्पश्चात् बिन्दुयुक्त अकार से लेकर क्षकार पर्यन्त मातृकाओं का उच्चारण करें और नवरत्नमय द्वीप को नौ भागों में विभक्तकर पूजन करें।22।

स्वर्णभूधरमभ्यर्च्य चन्दनोद्यानमर्चयेत्।
स्वर्णप्राकारमभ्यर्च्य तद्द्वारस्य च शाखयोः।।23।।

तदनन्तर स्वर्णमय पर्वत, तदुपरि स्थित चन्दनोद्यान, तन्मध्यस्थ मण्डप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के स्वर्णमय चार दीवार और दीवारों के बीचों बीच में स्थित चार द्वार के शाखाओं का निम्न क्रम से पूजन करें।23।

ऊर्ध्वोदुम्बरदेहल्यां गणेशं क्षेत्रपालकम्।
द्वारश्रियं देहलीं च यजेद्गन्धादिभिः क्रमात्।।24।।

द्वार के शाखाओं में इस क्रम से पूजन करें - ऊपरवाली उदुम्बर की शाखा में क्षेत्रपालक गणेशजी का द्वारश्री(द्वारलक्ष्मीजी)के साथ पूजन कर अन्य शाखाओं का पूजन गन्ध आदि सामग्रियों से क्रमशः करें।24।

प्राकारान्तः प्रविश्याथ प्रादक्षिण्येन साधकः।
इन्द्रादीनथ दिक्पालानर्चयेत्स्वस्वदिक्स्थितान्।।25।।
पश्चिमे मण्डपस्याथ मण्डपाभिमुखस्थिताम्।।26।।
वाराहीमर्चयेन्मन्त्री तन्मन्त्रेण विचक्षणः।

चारदीवारी के भीतर प्रवेश करके प्रदक्षिणा (घड़ीनुमा) का क्रम से साधक दशदिक्पालों जो अपने-अपने दिक् में स्थित हैं उन इन्द्रादियों का पूजन करें। मण्डप के पश्चिम भाग में मण्डप के अभिमुख होकर स्थित वाराही का पूजन मन्त्रवेत्ता साधक उसी के मन्त्र से ही करें।25-26।

ततः कामवसन्तौ च नन्दनोद्यानपालकौ।
सपत्नीकौ यजेद्ध्यात्वा पश्चिमद्वारसंस्थितौ।।27।।

तत्पश्चात् पश्चिम द्वार पर संस्थित नन्दन उद्यान के पालक (माली) सपत्नीक काम और वसन्त का ध्यान करके पूजन करें।27।

पश्चिमद्वारमासाद्य मण्डपस्यार्घ्यवारिणा ।
अस्त्रेण तोरणद्वारमभ्युक्ष्याऽथ समर्चयेत्।।28।।

अब पश्चिम द्वार पर पहुँचकर (यानि द्वार के सामने खड़े होकर) समान्यार्घ्यपात्रस्थ जल से मण्डप और तोरण आदि का प्रोक्षण कर पूजा करें।28।

तद्द्वारोर्ध्वस्थशाखायां वामदक्षिणयोः क्रमात्।
ध्यात्वा समर्चयेन्मन्त्री महालक्ष्मीं सरस्वतीम्।।29।।
मध्ये दुर्गां समभ्यर्च्य द्वारश्रियमथाऽर्चयेत्।
स्वस्वनामाद्यवर्णन्तु बिन्दुदीर्घसमन्वितम्।।30।।
महालक्ष्मीसरस्वत्योर्बीजं द्वारश्रियस्तथा।
दूमित्येकाक्षरं बीजं दुर्गायाः परिकीर्तितम्।।31।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वारस्य शाखयोः पूज्यौ शंखपद्मनिधी क्रमात्।
सपत्नीकौ ततः पूज्यौ गणेशक्षेत्रपालकौ।। 32।।

उस पश्चिम द्वार के ऊपरवाली शाखा पर बायें और दाहिने के क्रम से मन्त्रजापक साधक महालक्ष्मी और सरस्वती का ध्यान करके पूजा करें। द्वार के मध्य में दुर्गाजी की पूजा करके द्वारश्री का पूजन करें। देवताओं के अपने-अपने नाम का पहला अक्षर (वर्ण) को दीर्घ व बिन्दु से युक्त कर नाम का चतुर्थ्यन्त को पूजा में मन्त्र के रूप में प्रयोग करें। यदि ज्ञात हो तो तत्तद्देवताओं के बीज मन्त्र भी जोड़ लें। अतः महालक्ष्मी, सरस्वती और द्वारश्री के बीजों को जोड़कर ही पूजा करें। जैसे की '**दूम्**', यह दुर्गाजी का बीज मन्त्र कहा गया है। द्वार के बायें और दाहिने शाखाओं में क्रम से शंख और पद्म नामक निधियों का पूजन करें। ततः सपत्नीक गणेशजी और क्षेत्रपाल का पूजन करें।29-32।

मायाशक्तिं च चिच्छक्तिं गंगां च यमुनां तथा।
धातारं च विधातारं देहल्यां देहलीं यजेत्।। 33।।

द्वार की निचले शाखा (देहली) के बायें और दायें में क्रम से मायाशक्ति और चिच्छक्ति से युक्त धाता और विधाता को गंगा और यमुना के साथ पूजन करके देहली के बीच में देहलीदेवी का पूजन करें।33।

द्वाराग्रे वरुणं चैव स्वनामाद्यक्षरैर्यजेत्।
बिन्दुयुक्तैर्नामभिः स्वैश्चतुर्थीहृदयान्वितैः।। 34।।

द्वार के अग्रभाग में (सामने) वरुणदेवता का पूजन करें। देवताओं के अपने-अपने नाम का पहला अक्षर (वर्ण) को दीर्घ व बिन्दु से युक्त कर नाम का चतुर्थ्यन्त पद सहित को मन्त्र के रूप में पूजा में प्रयोग करें। यदि ज्ञात हो तो तत्तद्देवताओं के बीज मन्त्र को भी जोड़ लें।34।

साधकेन्द्रस्ततो गत्वा सम्प्रोक्ष्य द्वारमुत्तरम्।
महालक्ष्मीसरस्वत्यौ प्राग्वत्सम्पूज्य मध्यतः।। 35।।
सम्पूज्य बटुकं द्वारश्रियं चाभ्यर्च्य पूर्ववत्।
शंखनिध्यादिकान्दृष्ट्वा देहल्यां तान्समर्चयेत्।। 36।।
कुबेरं, पूर्वगद्वारं संप्रोक्ष्यऽभ्यर्च्य पूर्ववत्।
महालक्ष्मीसरस्वत्यौ क्षेत्रेशं मध्यतो यजेत्।। 37।।
द्वारश्रियं ततोऽभ्यर्च्य शंखनिध्यादिपूर्ववत्।
देहल्यन्तं समभ्यर्च्य द्वाराग्रे शक्रमर्चयेत्।। 38।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार पश्चिम द्वार का पूजन करके अब उक्त क्रम एवं उक्त प्रकार से ही उत्तर आदि द्वारों का भी पूजन करना है। अतः साधकश्रेष्ठ पश्चिमद्वार से निकलकर उत्तरद्वार पहुँचकर द्वार, तोरण आदि का प्रोक्षण कर पूर्ववत् महालक्ष्मी और सरस्वती की पूजा करके मध्य में बटुक का पूजन करें। तत्पश्चात् शंख और पद्म निधियों का ध्यान करके पूजन कर देहली के बीच में देहलीदेवी का पूजन करें। द्वार के अग्रभाग में (सामने) कुबेरदेवता का पूजन करें। तत्पश्चात् उत्तरद्वार से निकलकर पूर्वद्वार पहुँचकर द्वार, तोरण आदि का प्रोक्षण कर पूर्ववत् महालक्ष्मी और सरस्वती की पूजा करके मध्य में क्षेत्रेश का पूजन करें। तत्पश्चात् शंख और पद्म निधियों का ध्यान करके पूजन कर देहली के बीच में देहलीदेवी का पूजन करें। द्वार के अग्रभाग में (सामने) इन्द्रदेवता का पूजन करें।35-38।

ततो दक्षिणमभ्येत्य द्वारमभ्युक्ष्य पूर्ववत्।
महालक्ष्मीसरस्वत्यौ प्राग्वदभ्यर्च्य मध्यतः।।39।।
गणनाथं समभ्यर्च्य ग्लौंबीजेन ततो गुरुम्।
द्वारश्रियं समभ्यर्च्य शंखनिध्यादिपूर्ववत्।।40।।
देहल्यन्तं समभ्यर्च्य द्वाराग्रे यममर्चयेत्।

तदनन्तर पूर्वद्वार से निकलकर दक्षिणद्वार पहुँचकर द्वार, तोरण आदि का प्रोक्षण कर पूर्ववत् महालक्ष्मी और सरस्वती की पूजा करके मध्य में गणनाथ का ग्लौं बीज से पूजन कर गुरु और द्वारश्री का पूजन करें। शंख और पद्म निधियों का ध्यान करके पूजन कर देहली के बीच में देहलीदेवी का पूजन पर्यन्त कार्य पूर्ववत् करें। द्वार के अग्रभाग में (सामने) यमदेवता का पूजन करें।39-41।

स्वनामाद्यक्षरं बीजं प्राग्वज्जलधनेशयोः।।41।।
शक्रस्य च यमस्यापि लंटंबीजद्वयं भवेत्।
पुनः पश्चिममासाद्य द्वारं साधकसत्तमः।।42।।

देवताओं के अपने-अपने नाम का पहला अक्षर (वर्ण) को दीर्घ व बिन्दु से युक्त कर चतुर्थ्यन्त को पूजा में मन्त्र के रूप में प्रयोग करें। साथ में पश्चिमादि क्रम से वरुण, कुबेर, इन्द्र और यम का पूजन **'लं टं'** इन दो बीजों को जोड़कर ही करें। इस प्रकार द्वारों का पूजन कर साधकश्रेष्ठ पुनः पश्चिमद्वार पर आयें।41-42।

वामपादं पुरस्कृत्य तोरणान्तः प्रविश्य च।
रत्नसोपानपंक्तिं च पूजयेच्चन्दनादिभिः।।43।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तामारुह्य ततो गत्वा मंचस्योपरि मन्त्रवित्।
पश्चिमद्वारबाह्ये तु समासीनां वरानने ।।44।।
तद्द्वाराभिमुखीं देवीं तिरस्करणिकां यजेत्।

हे वरानने! साधकश्रेष्ठ अपने बायें पैर को आगे करके तोरणों के बीच में से मण्डप में प्रवेश करें। रत्नमय सीढ़ियों का चन्दन आदि से पूजन करें। अब उन सीढ़ियों पर चढ़कर अन्दर जाके साधक मंच के ऊपर जाकर पश्चिमाभिमुख होकर पश्चिमद्वार के बाहर बैठी हुई तिरस्करणिका देवी का पूजन करें।43-45।

10. तिरस्करणीध्यानम् = तिरस्करणी का ध्यान -

श्यामवर्णां मदाघूर्णनेत्रत्रयान्विताम्।।45।।
कृष्णाम्बरां गदां खड्गं दधतीं च भुजद्वये।
दोर्भ्यां मनोहराभ्यां च खर्जूरीकुम्भधारिणीम्।।46।।
नीलतुरंगमारूढां प्रौढां पीनघनस्तनीम्।
मुक्तकेशीं विवसनां सर्वालंकारभूषिताम्।।47।।
स्वयोनिदर्शनान्मुह्यत्पशुवर्गामुपास्महे ।

श्यामरंगवाली, मद से घूरती हुई लालरंग के तीननेत्रोंवाली, कालेवस्त्रों से विभूषित, दो हाथों में गदा और खड्ग को धारण की हुई, काले घोड़े पर बैठी हुई, गोलाकार मोटे स्तनों से युक्त, प्रौढ़शरीरवाली, मुक्तकेशी, अधोवस्त्र रहित किन्तु अन्य समस्त अलंकारों से सुशोभित, आपके योनि का दर्शन से मोहित होते हुये पशुवर्ग (अज्ञानीजीव) हैं जिसकी, ऐसी तिरस्करणी देवी की मैं उपासना (ध्यान) करता हूँ।45-48।

11. तिरस्करणीमन्त्रोद्धारः = तिरस्करणी मन्त्र का उद्धार -

इति ध्यात्वा यजेद्देवीं तन्मन्त्रेणैव मन्त्रवित्।।45।।
वाग्भवं बीजमुच्चार्य नमो भगवतीति च।
माहेश्वरि पदस्यान्ते पशुजनमनःपदम्।।46।।
चक्षुस्तिरस्करपदे णं कुरु द्वितयं द्विठः।
तिरस्करिण्या विद्यायाः त्रिंशदर्णाः समीरिताः।।47।।

तिरस्करणी देवी का उक्त प्रकार से ध्यान करके मन्त्रवेत्ता साधकश्रेष्ठ उसी के मन्त्र से पूजन करें। वह मन्त्र क्या है? तिरस्करणी विद्या (मन्त्र) में 30

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अक्षर कहे गये हैं, वे इस क्रम से हैं - वाग्भव बीज (ऐं)के बाद 'नमो भगवति' और 'माहेश्वरि' पदों के बाद 'पशुजनमनः' पद को रखें, तत्पश्चात् उसके अन्त में 'चक्षुःतिरस्कर' पद को रखकर 'णं' जोड़ें, तदनन्तर दो बार 'कुरु' एवं दो बार 'ठः' कहें। मन्त्र का स्वरूप यह हुआ - **ऐं नमो भगवति माहेश्वरि पशुजनमनःचक्षुःतिरस्करणं कुरु कुरु ठः ठः** ।48-50।

नमोऽन्ते श्रीपदं पश्चात्पादुकां पूजयामि च।
इत्युच्चार्य यजेद्देवीं प्रोक्तरूपां धिया स्मरन्।।51।।

ध्यानश्लोक में उक्त स्वरूप का स्मरण करते हुये 'श्री' पद रखने के पश्चात् 'पादुकां पूजयामि' पदों को रखके अन्त में 'नमः' पद को जोड़ कर बने मन्त्र से भी तिरस्करणी देवी का पूजन करें। मन्त्र का स्वरूप है - **'तिरस्करणीदेव्या श्रीपादुकां पूजयामि नमः'** ।51।

मंचस्य पश्चिमद्वारपार्श्वयोर्दक्षिणाऽन्ययोः।
सरस्वतीं महालक्ष्मीमन्तराले तयोस्ततः ।।52।।
यजेदुपर्यधोऽग्रेषु गौरीलोकपदादिकाम् ।
धात्रीं वागीश्वरीं पश्चादुत्तरद्वारपार्श्वयोः ।।53।।
मायां दुर्गां समभ्यर्च्य यजेद् गौर्यादि पूर्ववत्।
एवं च दक्षिणद्वारि स्वाहां चैव शुभंकरीम् ।।54।।
गौर्याद्याश्च समभ्यर्च्य-

पहले मण्डप के द्वारों का पूजन किया गया था, अब मंच के पश्चिम द्वार का दोनों (बायें और दायें) बगल में क्रमशः महालक्ष्मी और सरस्वती का एवं बीच में दुर्गा का पूजन करें। तत्पश्चात् ऊपर, नीचे और अग्र में क्रमशः गौरी, धात्री और वागीश्वरी का पूजन लोकपालादि सहित करें। तदनन्तर उत्तरद्वार के दोनों बगल में माया और दुर्गा का पूजन कर पूर्ववत् गौर्यादि का पूजन करें। अब दक्षिण द्वार के दोनों बगल में स्वाहा और शुभंकरी का पूजन कर पूर्ववत् गौर्यादि का पूजन करके ।52-55।

पुनर्द्वारं च पश्चिमम् ।
आसाद्य तालत्रितयमस्त्रमन्त्रेण साधकः ।।55।।
कृत्वा बद्ध्वा समादाय कुशभस्मादिसर्षपाम्।
गन्धपुष्पाक्षतयुतान्सदूर्वानभिमन्त्र्य च।5 4।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अस्त्रमन्त्रेणाष्टवारं मण्डपान्तर्विकीर्य च।
नाराच मुद्रया मन्त्री मन्त्रद्वयमिमं पठन्।।55।।

तत्पश्चात् पुनः पश्चिम द्वार पर आकर साधक अस्त्र मन्त्र का पाठ करते हुये तीन बार ताली बजाकर मुष्टिमुद्रा दर्शाके सामग्रियों को ग्रहण करें - कुशा, भस्मादि, सरसों, गन्ध, पुष्प, अक्षत, दूर्वा सहित को अभिमन्त्रित करके अस्त्रमन्त्र को पाठ करते हुये ही मण्डप के भीतर आठ बार बिखेरें। तदनन्तर बाण मुद्रा को दर्शाते हुये निम्न दो मन्त्रों का पाठ करते हुये भूतों का अपसारण करें।55-57।

12. भूतापसारणम् = भूतों को हटायें -

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः प्रेतगुह्यकाः।
ये चात्र निवसन्त्यन्ये देवता भुवि संस्थिताः।

समस्तभूत, पिशाच, प्रेत, गुह्यक और जो भी अन्य यहाँ इस पृथिवी पर विघ्नकारक देवता स्थित हैं, वे सब इस कर्मस्थल से चले जायें।58।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।59।।

जो भी भूत पृथिवी पर संस्थित हैं और जो विघ्नकर्ता भूत हैं, वे सब भूत शिवजी की आज्ञा से नष्ट हो जायें।59।।

इत्यन्ते रोषतोऽस्त्रेण तस्मान्निर्गच्छतां बुधः।
दद्यात्स्ववामतो मार्गं भूतानां विघ्नकारिणाम्।।60।।

इस प्रकार दो मन्त्रों का पाठ कर, क्रोध का अभिनय करते हुये अस्त्रमन्त्र का पाठ करते हुये विद्वान् साधक जाते हुये, उन विघ्नकारक भूतों को अपनी बायीं ओर से जाने केलिये रास्ता दें।60।

पाखण्डचारिणो भूताः भूमौ ये चान्तरिक्षगाः।
दिवि लोके स्थिता ये च ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।61।।

जो भी भूत पाखण्डचारी भूत इस पृथिवी पर विद्यमान हों या अन्तरिक्ष में विराजते हों या द्युलोक में स्थित हों वे सब भूत शिवजी की आज्ञा से नष्ट हो जायें।61।

इत्यन्तेऽस्त्रं पठन्मन्त्री पार्ष्णिघातत्रयेण तु।
भौमानूर्ध्वोर्ध्वतस्तालत्रितयेनान्तरिक्षगान्।।62।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीक्ष्णदृष्ट्यावलोकेन दिव्यान् विघ्नान्निवारयेत्।
मण्डपाभ्यन्तरे वास्तुपुरुषं नैर्ऋते यजेत्।।63।।

इस मन्त्र का पाठ करके अन्त में कर्मस्थल से उन्हें भगाने के लिये क्रमशः निम्न विधि का पालन करें - अस्त्रमन्त्र का पाठ करते हुये एड़ी से तीन बार जमीन पर घात करें और भावना करें की भूमिस्थ सकल भूत पलायन किये, हाथों को थोड़े-थोड़े ऊपर उठाते हुये हाथों से ताली अथवा चुटकी बजाते हुये भावना करें कि अन्तरिक्ष में स्थित सकल भूत पलायन किये तथा तीक्ष्ण दृष्टि से ऊपर देखते हुये भावना करें कि द्युलोक में स्थित सकल भूत पलायन किये। तदनन्तर मण्डप के भीतर नैर्ऋत्य कोण में वास्तुपुरुष का पूजन करें।62-63।

तत्रैव वास्त्वधीशानं ब्रह्माणं चन्दनादिना।
ऐशान्यां कुलनाथं च दीपनाथं च पूजयेत्।।64।।

वहीं पर अर्थात् नैर्ऋत्य दिशा में ही वास्तु के अधीश ब्रह्माजी का चन्दनादि से पूजन कर ईशान कोण में कुलनाथ और दीपनाथ का पूजन करें।64।

दीपनाथं रक्तवर्णं द्वारे द्वादशशक्तिभिः।
सहितं पूजयेन्मन्त्री श्रीसप्ताक्षरविद्यया।।65।।

साधक सप्ताक्षरविद्या (सप्ताक्षरमन्त्र) से लालरंग के बत्तियों से युक्त तथा अपने बारह शक्तियों से युक्त दीपकनाथ का द्वार पर पूजन करें।65।

ततः समर्चयेद् दीपनाथस्याज्ञां समाहितः।
अस्मिन् क्षेत्रे दीपनाथ निर्विघ्नं सिद्धिहेतवे।।66।।
श्रीचक्रक्रमपूजार्थमनुज्ञां दीयतां मम।
पश्चिमद्वारमारभ्य नवशक्तीरिमा यजेत्।।67।।

तत्पश्चात् दीपकनाथ की आज्ञा प्राप्त कर समाहित चित्त से पूजा करके प्रार्थना करें कि हे दीपकनाथ! इस कर्मस्थल में निर्विघ्नता की सिद्धि केलिये आपको पूजता हूँ, कृपा कर श्रीचक्र की क्रमपूजा केलिये मुझे अनुमति दें। अनुमति पारकर पश्चिमद्वार से आरम्भ करके इन नौ शक्तियों की पूजा करें।66-67।

शक्तिद्वयं प्रतिद्वारं मध्ये चैकां यथाक्रमम्।
दूतरी सुन्दरी चैव सुमुखी च विरूपगा।।68।।
विमला चान्तरी पश्चाद् बन्दरी च पुरन्दरी।
पुष्पभृद् दिग्यथाऽम्बा च श्रीपादुकां पूजयामि।।69।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रत्येक द्वार पर दो शक्ति यानि द्वार के दोनों तरफ एक-एक और मध्य में एक क्रमशः पूजें- पश्चिम में दूतरी और सुन्दरी, उत्तर में सुमुखी और विरूपगा, पूर्व में विमला और आन्तरी तथा दक्षिण में बन्दरी और पुरन्दरी। सभी द्वार के बीच में '**पुष्पभृद्**' का ही आवृत्ति पूर्वक पूजें। पूजा में प्रत्येक का नाम के साथ '**अम्बा**' जोड़कर चतुर्थ्यन्त बनाके अन्त में '**श्रीपादुकां पूजयामि**' जोड़ के मन्त्र के रूप में प्रयोग करें।68-69।

एवमेताः समभ्यर्च्य भैरवाज्ञामथाऽर्थयेत्।
तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।।70।।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।
इति प्रार्थ्य च लब्धाज्ञो यागरक्षार्थमर्चयेत्।।71।।

इस प्रकार इन सब का पूजन करके भैरव से आज्ञा प्राप्त करने केलिये पहले भैरव का प्रार्थना पूर्वक पूजन करें - हे! तीक्ष्णदाढ़वाले, हे! विशालकायवाले, हे कल्पान्तक अग्नि के सदृश भयंकर दीखने वाले, भैरव भगवान् आपको नमस्कार हो। कृपा करके कर्म करने केलिये मुझे अनुमति दें। ऐसे प्रार्थना करके अनुमति प्राप्त कर याग (संपूर्णपूजा रूपी कर्म) की रक्षा केलिये उनकी पूजा करें।70-71।

रुद्रं शलभनामानं सुदर्शनहरिं ततः।
अघोररुद्रं गन्धाद्यैर्दुर्गां विन्ध्यनिवासिनीम्।।72।।
उत्तरद्वारमारभ्य यावद्द्वारन्तु पश्चिमम्।
तत्रादावुत्तरद्वारे रुद्रं शलभसंज्ञकम्।।73।।

उत्तर द्वार से आरम्भ करके पश्चिम द्वार पर्यन्त क्रमशः शलभ नामक रुद्र, सुदर्शन नामक हरि, अघोर नामक रुद्र और विन्ध्यवासिनी दुर्गा का, गन्ध आदि द्रव्यों से पूजन करें। उन में से सबसे पहले उत्तर द्वार में शलभ नामक रुद्र का पूजन निम्न मन्त्रों से करें।72-73।

तारहृद्भगमानीय कामिका सोर्ध्वकेशिनी।
बकेशश्च पिनाकीशो निद्रा वै मृत्युरूपिणी।।74।।
सदीर्घाऽत्र पिनाकीशो जलस्थोऽनन्तसंयुतः।
वायुश्च लोहितेशश्च संवर्तेशः सलोचनः।।75।।
वह्निदीर्घयुतः छान्तो दीर्घावान्मरुतस्ततः।
महाकाली महाकालो बकेशः पूतनाग्नियुक्।।76।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वामकर्णायुतावाथ सदीर्घः शेषयुग्मकम्।
सन्ध्यावायुः पुनश्चैतत्त्रयं मेधाद्वयं पृथक्।।74।।
कवचास्त्राग्निजायातश्चतुस्त्रिंशद्भिरक्षरैः।
मन्त्रेणानेन सम्पूज्य शलभं चन्दनादिभिः।।75।।

पूजा केलिये 34 अक्षरों के मन्त्र का संकेत कर रहे हैं –तार = प्रणव, हृद्भग = अनाहतचक्र का बीज, ऊर्ध्वकेशिनी कामिका, पिनाकीश जो बकेश, मृत्युरूपिणी निद्रा, अनन्त से युक्त जलस्थ सदीर्घा पिनाकीश, सलोचन संवर्तेश व लोहितेश जो वायु, दीर्घयुक्त वह्नि, दीर्घवाला शान्त मरुत्, महाकाली, महाकाल, पूतनाग्नि युक्त बकेश, वामकर्णावायुतौ = रेफों से युक्त व दीर्घयुक्त शेष युग्म, सन्ध्या, वायु, पुनः वे ही तीन, दो मेधा, कवच, अस्त्र और अग्निजाया (= स्वाहा) – इन से निर्मित 34 अक्षरोंवाले मन्त्र से शलभ नामक रुद्र का पूजन, चन्दनादियों से करें।74–78।

13. अथ पूर्वद्वारार्चनम् = पूर्व द्वार का पूजन विधि –

श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते भक्तानुग्रहकारक।
अनुज्ञां भगवन् देहि पूर्वद्वारार्चनाय मे।।79।।

हे श्रीगुरुदेव! हे श्रीदक्षिणामूर्ति! हे भगवन्! हे भक्तों पर अनुग्रह करनेवाले! पूर्वद्वार का पूजन करने केलिये आप मुझे अनुमति दें।79।

पूर्वाम्नायमयं पूर्वद्वारं देवि भजामि ते।
यजेऽहं द्वारदेवेशं सर्वकामार्थसिद्धये।।80।।

हे देवी! पूर्वाम्नायमय पूर्वद्वार रूपिणी आपको मैं भजता हूँ अर्थात् मैं आपकी पूजा करता हूँ। सकलकामनाओं की सिद्धि केलिये मैं द्वार के देवेश का पूजन करता हूँ।80।

पूर्वद्वारं समासाद्य मण्डपस्यार्घ्यवारिणा।
ततश्च तोरणद्वारमभ्युक्ष्याऽथ समर्चयेत्।।81।।

इस प्रकार द्वारेश का पूजन कर पूर्वद्वार के पास आकर सामान्यार्घ्य जल से मण्डप का प्रोक्षण कर क्रमशः तोरण, द्वारादि पर भी प्रोक्षण करके पूजन करें।81।

तद्द्वारोर्ध्वस्थशाखायां वामदक्षिणयोः क्रमात्।
ध्यात्वा समर्चयेन्मन्त्री महालक्ष्मीं सरस्वतीं।।82।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्व द्वार के ऊपरवाली शाखा पर बायें और दाहिने के क्रम से मन्त्रजापक साधक, महालक्ष्मी और सरस्वती का ध्यान करके पूजा करें।82।

द्वारश्रियं च निध्यादिं कच्छपं च मुकुन्दकम्।
पूर्वस्यामुन्मनीं दिव्यां विरंचिं च गणाधिपम्।। 83।।

द्वार के बायें और दाहिने शाखाओं में क्रम से शंख और पद्म नामक निधियों का पूजन करें। तथा क्रमशः कच्छप और मुकुन्द, उन्मनी और दिव्या एवं विरंचि और क्षेत्रपाल सहित गणाधिप का पूजन करें।83।

क्षेत्रपालं च मायां च चिच्छक्तिं चैव दिव्यगाम्।
यमुनां धातृविधातारौ देहल्यां शक्रमर्चयेत्।।84।।

द्वार की निचले शाखा (देहली) के बायें और दायें में क्रम से मायाशक्ति और चिच्छक्ति से युक्त धाता और विधाता को गंगा और यमुना के साथ पूजन करके देहली के बीच में देहलीदेवी का पूजन करें तथा द्वार के अग्रभाग में (सामने) इन्द्रदेवता का पूजन करें।84।

14. अथ दक्षिणद्वारार्चनम् = दक्षिण द्वार का पूजन विधि –

श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते भक्तानुग्रहकारक।
दक्षिणद्वारपूजार्थमनुज्ञां यच्छ महेश्वर।।85।।

हे श्रीगुरुदेव! हे श्रीदक्षिणामूर्ति! हे महेश्वर! हे भक्तों पर अनुग्रह करनेवाले! दक्षिणद्वार का पूजन करने केलिये आप मुझे अनुमति दें।85।

दक्षिणाम्नायरूपन्ते दक्षिणद्वारमाश्रये ।
यजेऽहं द्वारदेवेशं सर्वकामार्थसिद्धये।।86।।

हे देवी! दक्षिणाम्नायमय दक्षिणद्वार रूपिणी आपको मैं भजता हूँ अर्थात् मैं आपकी पूजा करता हूँ। सकलकामनाओं की सिद्धि केलिये मैं द्वार के देवेश का पूजन करता हूँ।86।

अथ दक्षिणमभ्येत्य द्वारमभ्युक्ष्य पूर्ववत्।
सरस्वतीं महालक्ष्मीं प्राग्वदभ्यर्च्य मध्यतः।।87।।

तदनन्तर दक्षिणद्वार पर आकर द्वार का सामान्यार्घ्यपात्रस्थ जल से प्रोक्षण कर पूर्ववत् पूजन करके, पूर्ववत् ही द्वार के शाखाओं में साधक महालक्ष्मी और सरस्वती का ध्यान करके पूजा करें।87।

गणनाथं समभ्यर्च्य ग्लौंबीजेन ततः सदा।
द्वारश्रियं च निध्यादिं नन्दनीलौ च कालिकाम्।।88।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मध्य में 'ग्लौं' बीज से गणनाथ का पूजन करके द्वारश्री, नन्द और नील नाम के निधियों सहित कालिका का पूजन करें।88।

लक्ष्मीं गणपतिं चैव क्षेत्रेशं क्षेत्रपालकम्।
मायाशक्तिं च चिच्छक्तिं गंगां च यमुनान्तथा।।89।।
धातारं च विधातारं तन्मन्त्रेण विचक्षणः।
देहल्यां तु समभ्यर्च्य द्वाराग्रे यममर्चयेत्।।90।।

क्रमशः कालिका और लक्ष्मी, गणपति और क्षेत्रेश जो क्षेत्रपाल, मायाशक्ति और चिच्छक्ति, गंगा और यमुना तथा धाता और विधाता का पूर्ववत् पूजन करके देहली के बीच में देहलीदेवी का पूजन करें तथा द्वार के अग्रभाग में यम देवता का पूजन करें।।89-90।।

15. अथ पश्चिमद्वारार्चनम् = पश्चिम द्वार का पूजन विधि -

श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते भक्तानुग्रहकारक ।
पश्चिमद्वारपूजार्थमनुज्ञां यच्छ यच्छ मे।।91।।

हे श्रीगुरुदेव! हे श्रीदक्षिणामूर्ति! हे भक्तों पर अनुग्रह करनेवाले! पश्चिमद्वार का पूजन करने केलिये आप मुझे अनुमति दें, अनुमति दें।।91।।

नमामि ते परं द्वारं पश्चिमाम्नायरूपकम्।
यजेऽहं द्वारदेवेशं सर्वकामार्थसिद्धये ।।92।।

हे देवी! पश्चिमाम्नायमय पश्चिमद्वार रूपिणी आपको मैं भजता हूँ अर्थात् मैं आपकी पूजा करता हूँ। सकलकामनाओं की सिद्धि केलिये मैं द्वार के देवेश का पूजन करता हूँ।92।

पश्चिमे मण्डपस्याथ मण्डपाभिमुखस्थिताम्।
वाराहीमर्चयेन्मन्त्री तन्मन्त्रेण विचक्षणः ।।93।।

मण्डप के पश्चिम में मण्डप के अभिमुख होकर स्थित वाराही देवी का विद्वान् साधक वाराही मन्त्र से पूजन करें।93।

मध्ये दुर्गां समभ्यर्च्य द्वारश्रियमथार्चयेत्।
स्वस्वनामाद्यवर्णन्तु बिन्दुदीर्घसमन्वितम् ।।94।।

मध्य में दुर्गाजी का पूजन करके द्वारश्री का पूजन करें। देवताओं के अपने-अपने नाम का पहला अक्षर (वर्ण) को दीर्घ व बिन्दु से युक्त कर नाम का चतुर्थ्यन्त पद सहित को पूजा में मन्त्र के रूप में प्रयोग करें।94।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महालक्ष्म्याः सरस्वत्याः बीजं द्वारश्रियं तथा।
दूमित्येकाक्षरं बीजं दुर्गायाः परिकीर्तितम् ।।95।।

यदि ज्ञात हो तो तत्तद्देवताओं के बीज मन्त्र भी जोड़ लें। अतः महालक्ष्मी, सरस्वती और द्वारश्री के बीजों को जोड़कर ही पूजा करें। जैसे की '**दूम्**', यह दुर्गाजी का बीज मन्त्र कहा गया है।95।

द्वारस्य शाखयोः पूज्यौ शंखपद्मनिधी क्रमात्।
सपत्नीकैस्ततः पूज्ये विघ्नेशाघोरकुब्जिके।।96।।

द्वार के शाखाओं में सपत्नीक शंख और पद्म नामक निधियों का क्रमशः पूजन करके विघ्नेश और अघोरकुब्जिका का पूजन करें।96।

क्षेत्रपालं च सम्पूज्य पुष्पगन्धैर्विधानतः।
मायाशक्तिं च चिच्छक्तिं गंगां च यमुनान्तथा।।97।।
धातारं च विधातारं देहल्यां देहलीं यजेत्।
द्वाराग्रे वं वरुणाय पूजयेद् भक्तिमान्नरः।।98।।

क्षेत्रपाल का पुष्प-गन्ध आदियों से विधि विधान से पूजन करके मायाशक्ति और चिच्छक्ति, गंगा और यमुना तथा धाता और विधाता का पूर्ववत् पूजन करके देहली का बीच में देहली देवी का पूजन करें तथा द्वार के अग्रभाग में (सामने) वरुण देवता का '**वं**' बीज युक्त मन्त्र से भक्तिमान् साधक पूजन करें।97-98।

16. अथ उत्तरद्वारार्चनम् = उत्तर द्वार का पूजन विधि -

श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते भक्तानुग्रहकारक।
अनुज्ञां भगवन्देहि द्वारोत्तरार्चनाय मे ।।99।।

हे श्रीगुरुदेव! हे श्रीदक्षिणामूर्ति! हे भगवन्! हे भक्तों पर अनुग्रह करनेवाले! उत्तरद्वार का पूजन करने केलिये आप मुझे अनुमति दें।99।

वन्देऽहमुत्तरं द्वारमुत्तराम्नायरूपकम् ।
यजेऽहं द्वारदेवेशं सर्वकामार्थसिद्धये।।100।।

हे देवी! उत्तराम्नायमय उत्तरद्वार रूपिणी आपको मैं भजता हूँ अर्थात् मैं आपकी पूजा करता हूँ। सकलकामनाओं की सिद्धि केलिये मैं द्वार के देवेश का पूजन करता हूँ।100।

साधकेन्द्रस्ततो गत्वा सम्प्रोक्ष्य द्वारमुत्तरम्।
महालक्ष्मीसरस्वत्यौ प्राग्वत्सम्पूज्य मध्यतः।।101।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधकश्रेष्ठ अब पश्चिमद्वार से उत्तरद्वार की ओर उक्त प्रकार से प्रार्थना करते हुये, जाकर पूर्ववत् द्वार आदि का प्रोक्षण आदि से शोधन करें। तत्पश्चात् पूर्ववत् ही द्वार के शाखाओं में साधक महालक्ष्मी और सरस्वती का ध्यान करके पूजा करें।101।

सम्पूज्य बटुकं द्वारश्रियं चाभ्यर्च्य पूर्ववत्।
महापद्मनिधिं यष्ट्वा पूजयेन्मकरं निधिम्।।102।।

तत्पश्चात् मध्य में बटुक का पूजन करके द्वारश्री का पूजन कर पूर्ववत् महापद्म और मकर नामक निधियों का शाखाओं में पूजन करें।102।

सिद्धलक्ष्मीं समुद्दिष्टामुच्छिष्टामुच्छिष्टगणनायकम्।
महालक्ष्मीसरस्वत्यौ क्षेत्रेशं मध्यतो यजेत् ।।103।।

समुद्दिष्ट उच्छिष्टसिद्धलक्ष्मी और उच्छिष्टगणपति (गणनायक) तथा महालक्ष्मी और सरस्वती की पूजा करके मध्य में क्षेत्रेश का पूजन करें।103।

मायाशक्तिं च चिच्छक्तिं गंगां च यमुनान्तथा।
धातारं च विधातारं देहल्यां सोममर्चयेत् ।।104।।

मायाशक्ति और चिच्छक्ति, गंगा और यमुना तथा धाता और विधाता का पूर्ववत् पूजन करके देहली के बीच में देहलीदेवी का पूजन करें तथा द्वार के अग्रभाग में (सामने) सोम देवता का भक्तिमान् साधक पूजन करें।104।

17. अथ ऊर्ध्वद्वारार्चनम् = ऊर्ध्वद्वार का पूजन विधि –

श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते भक्तानुग्रहकारक।
अनुज्ञां भगवन्देहि ऊर्ध्वद्वारार्चनाय मे।।105।।

हे श्रीगुरुदेव! हे श्रीदक्षिणामूर्ति! हे भगवन्! हे भक्तों पर अनुग्रह करनेवाले! ऊर्ध्वद्वार का पूजन करने केलिये आप मुझे अनुमति दें।105।

ऊर्ध्वाम्नायमहं वन्दे ऊर्ध्वद्वारं कुलेश्वरि।
यजेऽहं द्वारदेवेशं सर्वकामार्थसिद्धये ।।106।।

हे देवी! ऊर्ध्वाम्नायमय ऊर्ध्वद्वार रूपिणी आपको मैं भजता हूँ अर्थात् मैं आपकी पूजा करता हूँ। सकलकामनाओं की सिद्धि केलिये मैं द्वार के देवेश का पूजन करता हूँ।106।

ऊर्ध्वोदुम्बरदेहल्यां महागणपतिं यजेत्।
क्षेत्रपालं ततो द्वारश्रियं च देहलीं क्रमात्।।107।।

ऊर्ध्वद्वार के उदुम्बर की लकड़ी से बनी हुयी देहली में महागणपति का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूजन कर क्षेत्रपाल की भी पूजा करके क्रमशः द्वारश्री और देहली देवी की पूजा करने पर द्वारपूजा पूरी हो जाती है।107।

प्राकारान्तः प्रविश्याथ प्रादक्षिण्येन साधकः।
इन्द्रादीनथ दिक्पालानर्चयेत्स्वदिगास्थितान्।।108।।

---

17. **विभिन्न क्रमेषु आसनयोगिनीनायिकानां क्रमः** = विभिन्न क्रमों में आसन, योगिनी और नायिकाओं के पूजा क्रम-

प्रातः सृष्टिक्रमे पूर्व-दक्षिण-पश्चिम-उत्तरद्वारपूजाक्रमो विद्यते।
मध्याह्ने स्थितिक्रमे दक्षिण-पश्चिम-उत्तर-पूर्वद्वारक्रमो भवति।।
सायंकाले संहारक्रमे पश्चिम-उत्तर-पूर्व-दक्षिणद्वारपूजाक्रमो भवति।
अनाख्यायां भासायां च उत्तर-पश्चिम-दक्षिण-पूर्वद्वारपूजाक्रमोऽस्ति।।108.01।।

प्रातःकाल में सृष्टिक्रम के अनुसार द्वारपूजा का क्रम है पूर्व-दक्षिण-पश्चिम और उत्तर। मध्याह्नकाल में स्थितिक्रम के अनुसार द्वारपूजा का क्रम है दक्षिण-पश्चिम-उत्तर और पूर्व। सायंकाल में संहारक्रम के अनुसार द्वारपूजा का क्रम है पश्चिम-उत्तर-पूर्व और दक्षिण। अनाख्या और भासा में अर्थात् मध्यरात्रि काल में द्वारपूजा का क्रम है उत्तर-पश्चिम-दक्षिण और पूर्व।।108.01।।

17.1.क. **सृष्टिक्रमे आसनम्** = सृष्टिक्रम में आसनों का क्रम -

पद्मासनं नमस्यामि सर्वत्रैकरसं स्थिरम्।
महाप्रेतासनं वन्दे पर्यकपीठकासनम्।।108.02।।
नवयोन्यासनं नौमि साध्यसिद्धासनं भजे।
सर्वमन्त्रासनं नत्वा सर्वचक्रासनं भजे।।108.03।।
ततो दिव्यासनं नौमि नौमि पीताम्बुजासनम्।
कालचक्रासनं नौमि सुधार्णवासनं पुनः।।108.04।।

सृष्टिक्रम में आसनों की पूजा का क्रम इस प्रकार है - सर्वत्रैकरस व स्थिररहनेवाला पद्मासन, महाप्रेतासन, पर्यकपीठासन, नवयोन्यासन, साध्यसिद्धासन, सर्वमन्त्रासन, सर्वचक्रासन, दिव्यासन, पीताम्बुजासन, कालचक्रासन और सुधार्णवासन।।108.।।2-4।

17.1.ख. **सृष्टिक्रमे योगिन्यः** = सृष्टिक्रम में योगिनियों का क्रम -

परापरातिरहस्याऽतिरहस्या ततः परम्।
रहस्ययोगिनी पूज्या निगर्भा कुलकौलिनी।।108.05।।
सम्प्रदाया गुप्ततरा गुप्तान्ते मातृका स्मृता।
ततः प्रकटयोगिन्यः सृष्टिमार्गस्य पूजने।।108.06।।

सृष्टिक्रम में योगिनियों की पूजा का क्रम इस प्रकार है - परापरातिरहस्या, अतिरहस्या, रहस्या, निगर्भा, कुलकौलिनी, सम्प्रदाया, गुप्ततरा, मातृका और प्रकटयोगिनी।108.5-6।

17.1.ग. **सृष्टिक्रमे चक्रनायिकाः** = सृष्टिक्रम में चक्रनायिकाओं का क्रम -

चक्रेश्वरी तु प्रथमा महात्रिपुरसुन्दरी।
द्वितीया तु सदा पूज्या श्रीमत्त्रिपुरभैरवी।। 108.07।।
तृतीया त्रिपुराम्बा स्यात्सदा सृष्टिक्रमार्चने।
चतुर्थी त्रिपुरासिद्धा ततस्त्रिपुरमालिनी।।108.08।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्रिपुराश्रीर्भवेत्षष्ठी ततस्त्रिपुरसुन्दरी ।
सर्वान्ते त्रिपुरा पूज्या सृष्टिमार्गसमर्चने।।108.09।।

सृष्टिक्रम में नायिकाओं की पूजा का क्रम इस प्रकार है - चक्रेश्वरी महात्रिपुरसुन्दरी, श्रीमत्त्रिपुरभैरवी, त्रिपुराम्बा, त्रिपुरासिद्धा, त्रिपुरमालिनी, त्रिपुराश्री, त्रिपुरसुन्दरी (त्रिपुरेशी, त्रिपुरेशिनी) और त्रिपुरा।108.7-9।

17.2.क. **स्थितिक्रमे आसनम्** = स्थितिक्रम में आसनों का क्रम -

सुधार्णवासनं नौमि कालचक्रासनं ततः।
पीताम्बुजासनं नौमि वन्दे दिव्यासनं ततः।।108.10।।
महाप्रेतासनं वन्दे पर्यकपीठकासनम्।
नवयोन्यासनं नौमि साध्यसिद्धासनं भजे।।108.11।।
सर्वमन्त्रासनं नत्वा सर्वचक्रासनं भजे।
पद्मासनं नमस्यामि सर्वत्रैकरसं स्थिरम्।।108.12।।

स्थितिक्रम में आसनों की पूजा का क्रम इस प्रकार है - सुधार्णवासन, कालचक्रासन, पीताम्बुजासन, दिव्यासन, महाप्रेतासन, पर्यंकपीठासन, नवयोन्यासन, साध्यसिद्धासन, सर्वमन्त्रासन, सर्वचक्रासन और सर्वत्रैकरस व स्थिररहनेवाला पद्मासन।108.10-12।

17.2.ख. **स्थितिक्रमे योगिन्यः** = स्थितिक्रम में योगिनियों का क्रम -

प्रकटा मातृका गुप्ता तथा गुप्ततरा स्मृता।
परापरातिरहस्या ततश्चातिरहस्यकाः।।108.13।।
रहस्या च निगर्भाख्या कुलोत्तीर्णास्ततः परम्।
सम्प्रदायाख्ययोगिन्यः पूज्याः स्थितिक्रमार्चने।।108.14।।

स्थिति क्रम में योगिनियों की पूजा का क्रम इस प्रकार है - प्रकटा, मातृका, गुप्ता, गुप्ततरा, परारातिरहस्या, अतिरहस्या, रहस्या, निगर्भा, कुलोत्तीर्णा और सम्प्रदायोगिनी।108.13-14।

17.2.ग. **स्थितिक्रमे चक्रनायिकाः** = स्थितिक्रम में चक्रनायिकाओं का क्रम -

त्रिपुरा त्रिपुरेशी च ततश्च त्रिपुरेशिनी।
त्रिपुरसुन्दरी चैव चतुर्थी चाष्टपत्रके।।108.15।।
चतुर्दशारे सम्पूज्या महात्रिपुरसुन्दरी ।
त्रिपुरभैरवी चैव त्रिपुराम्बा ततःपरम्।।108.16।।
ततस्तु त्रिपुरासिद्धा ततस्त्रिपुरमालिनी ।
त्रिपुराश्रीः सदा पूज्या स्थितिमार्गार्चने बुधैः।।108.17।।

स्थितिक्रम में नायिकाओं की पूजा का क्रम इस प्रकार है - त्रिपुरा, त्रिपुरेशी, त्रिपुरेशिनी, त्रिपुरसुन्दरी, महात्रिपुरसुन्दरी, त्रिपुरभैरवी, त्रिपुराम्बा, त्रिपुरासिद्धा, त्रिपुरमालिनी और त्रिपुराश्री।।108.15-17।।

17.3.क. **संहारक्रमे आसनम्** = संहारक्रम में आसनों का क्रम -

सुधार्णवं नमस्यामि कालचक्रासनं तथा।
पीताम्बुजं च देव्यात्मसर्वचक्रासनं सदा।।108.18।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब साधक प्राकार में प्रवेश कर प्रदक्षिणानुमा घूमते हुये स्व स्व दिशा में स्थित इन्द्र आदि दिक्पालों का पूजन करें।108।

18. अथ मन्दिरार्चनम् = मन्दिर का पूजन विधि-

भक्त्या नत्वा यन्त्रराजं कुर्यात् श्रीमन्दिरार्चनम्।
अमृताम्भोनिधिं तत्र रत्नद्वीपं नमाम्यहम्।।109।।
नानावृक्षमहोद्यानं वन्देऽहं कल्पवाटिकाम्।
सन्तानवाटिकां वन्दे हरिचन्दनवाटिकाम्।।110।।
मन्दारवाटिकां वन्दे पारिजाताख्यवाटिकाम्।
नमामि तव देवेशि कदम्बवनवाटिकाम्।।111।।

सर्वमन्त्रं नमस्यामि साध्यसिद्धं तथा भजे।
नवयोन्यासनं वन्दे पर्यंकमासनं तथा।।108.19।।
सदाशिवं महाप्रेतं देवतासनमुत्तमम् ।
षड्दलं कमलं वन्दे देवतासनमुत्तमम्।।108.20।।
षट्त्रिंशद्योगतत्त्वं च नमस्यामि महेश्वरि।
वन्देऽहं महापीठयोगासनं शुभं सदा।।108.21।।

संहारक्रम में आसनों की पूजा का क्रम इस प्रकार है-सुधार्णवासन, कालचक्रासन, पीताम्बुजासन, सर्वचक्रासन, सर्वमन्त्रासन, साध्यसिद्धासन, नवयोन्यासन, पर्यंकपीठासन, सदाशिवात्मक महाप्रेतासन, दिव्यासन और सर्वत्रैकरस व स्थिर रहनेवाला पद्मासन। इनके अलावा षड्दलकमल, षट्त्रिंशद्योगतत्त्व और महापीठयोगासन भी इस पूजा क्रम में है।।108.18-21।।

17.3.ख. **संहारक्रमे योगिन्यः** = संहारक्रम में योगिनियों का क्रम -

प्रकटा मातृका गुप्ता गुप्ततरा सम्प्रदाया।
कुलोत्तीर्णा निगर्भा च रहस्यातिरहस्या च।108.22।।
परापररहस्याख्याः योगिन्यश्च क्रमस्तथा।
संहारपूजने बुधैः कर्तव्या संशयं विना।।108.23।।

संहारक्रम में योगनियों की पूजा का क्रम इस प्रकार है - प्रकटा, मातृका, गुप्ता, गुप्ततरा, सम्प्रदाया, कुलोत्तीर्णा, निगर्भा, रहस्या, अतिरहस्या और परापररहस्या।।108.22-23।।

17.3.ग. **संहारक्रमे चक्रनायिकाः** = संहारक्रम में चक्रनायिकाओं का क्रम -

त्रिपुरा त्रिपुरेशानी त्रिपुरेशी त्रिपुरा च।
सुन्दरी त्रिपुरा तथा वासिनी त्रिपुराश्रीश्च।।108.24।।
त्रिपुरमालिनी चैव तथा च त्रिपुरासिद्धा।
त्रिपुराम्बा त्रिपुरा च भैरवीसंज्ञकाः सदा।।108.25।।

संहारक्रम में नायिकाओं की पूजा का क्रम इस प्रकार है -त्रिपुरा, त्रिपुरेशानी, त्रिपुरेशी, त्रिपुरा, त्रिपुरसुन्दरी, त्रिपुरवासिनी, त्रिपुराश्री, त्रिपुरमालिनी, त्रिपुरासिद्धा, त्रिपुराम्बा और त्रिपुरभैरवी।।108.24-25।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हे देवेशी! भक्तिपूर्वक यन्त्रराज को नमस्कार करके मन्दिर की अर्चना करें। मन्दिर में विद्यमान आपके वैभव रूप इन सकल पदार्थों को क्रमशः प्रणाम करता हूँ - अमृताम्भोनिधि, रत्नद्वीप, नानावृक्षों से युक्त महान् उद्यान, कल्पवाटिका, सन्तानवाटिका, हरिचन्दनवाटिका, पारिजातवाटिका, कदम्बवनवाटिका को मैं वन्दना करता हूँ और पूजता हूँ।109-111।

पुष्परागमहारत्नप्राकारं प्रणमाम्यहम्।
पद्मरागाख्यरत्नानां प्राकारं सदा भजे॥112।।
गोमेदरत्नप्राकारं वज्रप्राकारमाश्रये।
वैडूर्यरत्नप्राकारं प्रणमामि तवेश्वरि॥113।।
इन्द्रनीलाख्यरत्नानां प्राकारं प्रणमाम्यहम्।
मुक्तारत्नमयं चैव प्राकारं सर्वदा भजे॥114।।
मरकताख्यमहारत्नप्राकाराय नमस्तव।
विद्रुमाख्यमहारत्नप्राकारन्तु तवाऽऽश्रये॥115।।

हे ईश्वरी! आपके वैभव स्वरूप पुखराजनामक महारत्न, पद्मरागनामकरत्न, गोमेदरत्न, वज्र, वैडूर्यरत्न, इन्द्रनीलनामकरत्न, मुक्तारत्न, मरकतनामक महारत्न, विद्रुमनामक महारत्न इत्यादि श्रेष्ठरत्नों से बनी चारदीवारी को मैं सदा प्रणाम करता हूँ, आश्रित होता हूँ और भजता हूँ अर्थात् पूजता हूँ।112-115।

माणिक्यमण्डपं वन्दे सहस्रस्तम्भमण्डपम्।
त्रिपुरे तव देवेशि भजाम्यमृतवापिकाम्॥116।।
आनन्दवापिकां वन्दे भजे चैव विमर्शिकाम्।
भजे बालातपोद्गारं चन्द्रिकोद्गारमाश्रये॥117।।

हे त्रिपुरे! हे देवेशी! आपके वैभव स्वरूप इस एक हजार खम्बों से विनिर्मित माणिक्यमय मण्डप की वन्दना करत हूँ तथा अमृतवापिका (कुंआँ), आनन्दवापिका, विमर्शिका वापिका आदि वापिकाओं को मैं सदा प्रणाम करता हूँ, आश्रित होता हूँ और भजता हूँ अर्थात् पूजता हूँ। बालसूर्य के प्रकाशयुक्त किरणों और चन्द्रिकाओं के प्रकाश सदृश दिव्य प्रकाश से चमकते हुये आपके इस मण्डप को मैं सदा प्रणाम करता हूँ और पूजता हूँ।116-117।

महाश्रृंगारपरिखां महापद्माटवीं भजे।
चिन्तामणिमहारत्नगृहराजं नमाम्यहम्।।118।।

महाश्रृंगार से युक्त परिखा (किले के बाहर चारों तरफ गहरा खात खोद कर पानी से भर दिया जाता था ताकि शत्रु आदि उपद्रवी अनायास प्रवेश न पा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सके, उस पानी भरा खात को परिखा कहते हैं। यह मण्डप के बाहर है।) उस परिखा के जल में उत्पन्न बड़े कमलों का जंगल जैसा कमल उद्यान और चिन्तामणि महारत्न से बने हुये बड़ा महल जैसा आपके निवास स्थान को मैं सदा प्रणाम करता हूँ और भजता हूँ अर्थात् पूजता हूँ।118।।

ब्रह्मात्मकं मंचपादमेकं तव नमाम्यहम्।
एकं विष्णुमयं मंचपादं तव नमाम्यहम्।।119।।
एकं रुद्रमयं मंचपादं तव नमाम्यहम्।
मंचपादं नामाम्येकं तव देवीश्वरात्मकम्।।120।।

हे देवी! आपके सिंहासन रूपी पांच पैरोंवाले मंच का एक पैर ब्रह्मात्मक, दूसरा विष्णु है, तीसरा रुद्र, चौथा ईश्वर और पांचवां स्वर्णमय हैं, ऐसे दिव्य मंच को बार बार प्रणाम करता हूँ।119-120।।

मंचैकं फलकं वन्दे सदाशिवमयं शुभम्।
नमामि ते हंसतूलतूलिकां परमेश्वरि।।121।।

हे परमेश्वरी! आपके दिव्य मंच का एकमात्र फलक (पीछे भाग में लगा हुआ रोकथाम) अत्यन्त मंगलमय सदाशिवात्मक है, मैं उसकी वन्दना करता हूँ तथा हंस के पर जैसे कोमल रूई से बना हुआ मसनद को प्रणाम करता हूँ।121।।

भजामि ते हंसतूलमहोपधानमुत्तमम् ।
कौसुंभास्तरणं देवि तव नित्यं भजाम्यहम्।।122।।

हे देवी! आपके मंचस्थ हंस के पर जैसे कोमल रूई से बने श्रेष्ठ तकियों को मैं भजता (पूजता) हूँ और आपके स्वर्णमय बिछावन को मैं भजता (पूजता) हूँ।122।

महावितानकं वन्दे महाजवनिकां भजे।
एवं पूजागृहं ध्यात्वा श्रीचक्रस्य शिवे।।123।।
मद्दक्षिणे स्थापयामि भागे पुष्पाक्षतादिकम्।
लयस्वरूपिणीं ध्याये महात्रिपुरसुन्दरीम्।।124।।

हे शिवे! आपके यह महान् गद्दी और चारों तरफ लगे पर्दो की मैं वन्दना करता हूँ। इस प्रकार आपके भव्य व दिव्य पूजा गृह का ध्यान करके श्रीचक्र के सामने मेरे दाहिने भाग में पुष्पाक्षतचन्दनादि सामग्रियों को स्थापित करता हूँ और लयस्वरूपिणी महात्रिपुरसुन्दरी का ध्यान करता हूँ।123-124।

जलसंशोधनं मन्त्रं न्यस्य वस्तुषु प्रोक्षणम्।
ततोऽमृतीकृत्य तालं त्रिधाऽवगुण्ठ्य चेक्षणम्।।125।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जलशोधन मन्त्र का न्यासादि करके समस्त सामग्रियों पर प्रोक्षण करें। फिर उन्हें अमृतभाव प्रदान करके तीन बार ताली या चुटकी बजाके अपने नेत्रों को वस्त्र से ढककर कुछ क्षण शान्त बैठें।125।।

अधिष्ठाने च पुष्पस्य प्रणवं पूर्वमुद्धरेत्।
शताभिषेकेति पदं शतमिति ततः परम्।।126।।
षेकेति च ततः प्रोक्तं हुंफट्स्वाहा ततः परम्।
प्रणवं पुष्पकेतुश्च तथा राजार्हतेऽपि च।।127।।
शताय सम्यगित्युक्त्वा जपेच्चैव हुमिति।
पुष्पचयावकीर्णे हुंफट्स्वाहा च ततः परम्।।128।।

तदनन्तर प्रणवोच्चारण पूर्वक अधिष्ठान में शोधित पुष्पों को समर्पित करें। पुष्प शोधन मन्त्र बता रहे हैं – पहले 'शताभिषेक' पद, उसके बाद 'शतम्' यह पद हो, उससे परे 'षेक' यह पद, उसके बाद 'हुंफट्स्वाहा' पदों को कहा गया है, उससे परे 'प्रणव' और 'पुष्पकेतु' तथा 'राजार्हते' पदों को रख कर 'शताय सम्यक्' ऐसे कहकर अन्त में 'हुम्' जोड़ कर जपें। जप के बाद 'पुष्पचयावकीर्णे हुंफट्स्वाहा' मन्त्र से पुष्पों का शोधन करें। अतः जपमन्त्र यह है – '**ॐ शताभिषेक शतं षेक हुंफट्स्वाहा ॐ पुष्पकेतु राजार्हते शताय सम्यग् हुम्**' और शोधनमन्त्र यह है –'**ॐ पुष्पचयावकीर्णे हुंफट्स्वाहा**'।126-128।

विशोध्य पुष्पमेतेन जलं पूर्ववदाहरेत्।
पुष्पे पुष्पे महापुष्पे पुष्पावकीर्ण इत्यपि।
स्वाहेति शोधयेत् पुष्पं तेन पुष्पेन पूजयेत्।

उक्त मन्त्र से पुष्पों का शोधन करके पुनः पूर्ववत् जल को ले आयें। पुष्पों पर जल से प्रोक्षण करते हुये इस मन्त्र को बोलें – '**ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे पुष्पावकीर्णे स्वाहा**', उन्हीं शोधित पुष्पों से पुष्पों का पूजन करें।129-130।

अभितस्ते महादेवि दीपाँस्तान्दर्शयाम्यहम्।
दीपदेवि महादेवि शुभं भवतु मे सदा।
यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावत्प्रज्वल सुस्थिर।

हे महादेवी! अब मैं आपके दोनों तरफ दीपों को स्थापित कर दर्शाता हूँ और प्रार्थना करता हूँ – 'हे दीपदेवी! हे महादेवी! सदा मेरे शुभ ही हो और जब तक पूजा समाप्त न हो तब तक आप प्रज्वलित रहें और सुस्थिर रहें'।130-131।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(दीपक के विषय में ध्यान दें -**घृतदीपो दक्षिणे स्यात्तैलदीपस्तु वामतः। सितवर्तियुतो दक्षे रक्तवर्तिस्तु वामतः।।** दाहिने भाग में घी का दीपक और बायें भाग में तेल का दीपक रखा जाता है। सफेदरंग के बत्तियोंवाला दीपक दाहिने भाग में और लालरंग के बत्तियोंवाला दीपक बायें भाग में रखा जाता है।)

सुगन्धपुष्पाण्यादाय चन्दनाक्तानि मन्त्रवित्।
मन्त्रयित्वा करौ सम्यक्सुरभिकृतविद्यया।।132।।
करशुद्धाख्यया वामकरेणादाय तान्यथ।
नाराचमुद्रामन्त्रेण वक्ष्यमाणेन दूरतः।।133।।
ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसन्ति हिंसकाः।
मृत्युरोगभयक्लेशाः पतन्तु रिपुमस्तके।।134।।
पठित्वेत्थं परित्यज्य वामे नाराचमुद्रया।

चन्दन से युक्त सुगन्धित पुष्पों को हाथ में लेकर मन्त्रवेत्ता साधक दाहिने हाथ में रखे हुये सुरभिकृत नामक विद्या से सम्यक् प्रकार से अभिमन्त्रित करके करशुद्धि नामक विद्या से पुष्पों को बायें हाथ में लेकर आगे कहे गये बाणमुद्रा मन्त्र का पाठ करके दूर से ही बाणमुद्रा से अपनी बायीं ओर फेंकें। मन्त्र है -'**ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसन्ति हिंसकाः। मृत्युरोगभयक्लेशाः पतन्तु रिपुमस्तके।।**' अर्थात् जो हिंसक मुझे हिंसित करते हैं वे सभी के सभी विलय को प्राप्त होवे और मृत्यु, भय, रोग एवं क्लेश (मुझे छोड़कर) शत्रु के मस्तक पर जा गिरें।132-135।

पुनश्च करशुद्ध्याख्यविद्ययाऽन्योऽन्यमार्जनम्।।135।।

पुनः करशुद्धि नामक मन्त्र से दोनों हाथों को परस्पर धोवें। 135।

शोधयित्वा करौ पश्चान्मध्यमादितलावधि।
मध्याऽऽनामाकनिष्ठासु तर्जन्यंगुष्ठयोरपि।।136।।
तलयोश्च न्यसेद्विद्यां स्थित्या सा वक्ष्यतेऽधुना।

हाथों को शुद्धकरके मूलविद्या का मध्यमा आदि के तलावधि पर्यन्त न्यास करें। अर्थात् मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा, तर्जनी और अंगुष्ठ के तल पर्यन्त विद्या का न्यास करके स्थित होने के अनन्तर क्या करना है वह अब मैं कहता हूँ।136-137।

मूलेन त्रिपुराचक्रं तव सम्पूजयाम्यहम्।।137।।
त्रिभिः खण्डैस्तव त्र्यस्रं पूजयामि शिवप्रिये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाय्वग्निजलसंयुक्त-प्राणायामैरहं शिवे॥138॥
शोषणं दाहकं देवि करोम्याप्लावनं तथा।
त्रिवारं मूलमन्त्रेण प्राणायामं करोम्यहम्॥139॥

मैं आपके त्रिपुराचक्र का मूलमन्त्र से पूजा करूँगा। हे शिवप्रिये! मूलमन्त्र के तीन खण्डों से त्र्यस्र का पूजन करता हूँ। हे शिवे! हे देवी! वायु, अग्नि और जल (के बीजमन्त्रों से) संयुक्त तीन प्राणायाम के द्वारा क्रमशः शोषण, दाहन और आप्लावन करूँगा। तत्पश्चात् मूलमन्त्र से मैं तीन बार प्राणायाम करूँगा।137-139।।

अस्त्रमन्त्रेणाष्टवारं मण्डपान्तर्विकीर्य च।
नाराचमुद्रया मन्त्री मन्त्रद्वयमिमं पठन्॥140॥

अस्त्रमन्त्र से मण्डप के भीतर (पीली सरसों को) 8 बार बिखेर कर बाण मुद्रा को दर्शाते हुये निम्न दो मन्त्रों का पाठ करते हुये (भूतों का अपसारण करें)।140।।

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः प्रेतगुह्यकाः।
ये चात्र निवसन्त्यन्ये देवता भुवि संस्थिताः॥141॥

समस्तभूत, पिशाच, प्रेत, गुह्यक और जो अन्य यहाँ इस पृथिवी पर विघ्नकारक देवता स्थित हैं वे सब इस कर्मस्थल से चले जायें।141।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥142॥

जो भी भूत पृथिवी पर संस्थित हैं और जो विघ्नकर्ता भूत हैं, वे सब भूत शिवजी की आज्ञा से नष्ट हो जायें।142।

इत्यन्ते रोषतोऽस्त्रेण तस्मान्निर्गच्छतां बुधः।
दद्यात्स्ववामतो मार्गं भूतानां विघ्नकारिणाम्॥143॥

इस प्रकार दो मन्त्रों का पाठ कर क्रोध का अभिनय करते हुये अस्त्रमन्त्र का पाठ करते हुये, विद्वान् साधक जाते हुये उन विघ्नकारक भूतों को अपनी बायीं ओर से ज़ाने केलिये रास्ता दें।143।।

पाखण्डचारिणो भूताः भूमौ ये चान्तरिक्षगाः।
दिवि लोके स्थिता ये च ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥144॥

जो भी भूत पाखण्डचारी इस पृथिवी पर विद्यमान हों या अन्तरिक्ष में विराजते हों या द्युलोक में स्थित हों, वे सब भूत शिवजी की आज्ञा से नष्ट हो जायें।144।

ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः।
विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु॥145॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः।
अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे।।146।।

मेरे मन्त्र की सिद्धि में जो भी विघ्नकर्ता पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक में हैं तथा अन्य भी जो कोई विघ्न रूप हैं वे मेरे द्वारा कीलित इस कर्मस्थल को त्यागकर दूर से ही हट जायें और निर्विघ्न मेरे कर्म और मन्त्र की सिद्धि होवे।145-146।

वेतालाश्च पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः।
अपसर्पन्तु सर्वत्र मन्त्ररूपास्त्रमाहितम् ।।147।।

वेताल, पिशाच, राक्षस, सर्पादि रेंगनेवाले जीव और जो भी इधर-उधर आस-पास में रह रहे विघ्नकारक जीव मन्त्ररूपी अस्त्र से आहत होकर दूर हो जायें।147।

इत्यन्तेऽस्त्रं पठन्मन्त्री पार्ष्णिघातत्रयेण तु।
भौमानूर्ध्वोर्ध्वतस्तालत्रितयेनान्तरिक्षगान् ।।148।।
तीक्ष्णदृष्ट्यावलोकेन दिव्यान् विघ्नान्निवारयेत्।
मण्डपाभ्यन्तरे वास्तुपुरुषं नैर्ऋते यजेत् ।।149।।

इस मन्त्र का पाठ करके अन्त में कर्मस्थल से उन्हें भगाने क्रमशः निम्न विधि का पालन करें - अस्त्रमन्त्र का पाठ करते हुये एड़ी से तीन बार जमीन पर घात करें और भावना करें की भूमिस्थ सकल भूत पलायन किये, हाथों को थोड़े-थोड़े ऊपर उठाते हुये हाथों से तीन बार ताली अथवा चुटकी बजाते हुये भावना करें की अन्तरिक्ष में स्थित सकल भूत पलायन किये तथा तीक्ष्ण दृष्टि से ऊपर देखते हुये भावना करें कि द्युलोक में स्थित सकल भूत पलायन किये। तदनन्तर मण्डप के भीतर नैर्ऋत्य में वास्तुपुरुष का पूजन करें।148-149।

तत्रैव वास्त्वधीशानं ब्रह्माणं चन्दनादिना।
ऐशान्यां कुलनाथं च दीपनाथं च पूजयेत्।।150।।

वहीं पर अर्थात् नैर्ऋत्य दिशा में ही वास्तु के अधीश ब्रह्माजी का चन्दनादि से पूजन कर ईशान कोण में कुलनाथ और दीपनाथ का पूजन करें।150।

दीपनाथं रक्तवर्णं द्वारे द्वादशशक्तिभिः।

(साधक सप्ताक्षरविद्या यानि सप्ताक्षरमन्त्र से) लालरंग के बत्तियों से युक्त तथा अपने बारह शक्तियों से युक्त दीपकनाथ का द्वार पर पूजन करें।151।

रक्तप्रभा तथा ज्वाला तेजोवती तथैव हि।।151।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज्योत्स्ना प्रकाशिनी शक्तिरुद्योतिनी तथैव च।
अंशुभूता तु सम्पूज्या दुःस्पर्शिनीति नामिकाः।।152।।
मयूखमालिनीख्याता निर्विकल्पेति शक्तयः।
सहितं पूजयेन्मन्त्री श्रीसप्ताक्षरविद्यया।।153 ।।

उन बारह शक्तियों का नाम है - रक्तप्रभा, ज्वाला, तेजोवती, ज्योत्स्ना, प्रकाशिनी, शक्ति, उद्योतिनी, अंशुभूता, सम्पूज्या, दुःस्पर्शिनी, मयूख्यमालिनी और निर्विकल्पा। इन सुप्रसिद्ध 12 शक्तियों के सहित श्रीसप्ताक्षरविद्या से साधक दीपकनाथ की पूजा करें।151-153।।

ततः समर्चयेद् दीपनाथस्याज्ञां समाहितः।
अस्मिन् क्षेत्रे दीपनाथ निर्विघ्नं सिद्धिहेतवे ।।154।।
श्रीचक्रक्रमपूजार्थमनुज्ञां दीयतां मम ।

तत्पश्चात् दीपनाथ की आज्ञा प्राप्त करने के लिये समाहित चित्त से पूजा कर प्रार्थना करें कि - हे दीपकनाथ! इस कर्मस्थल में निर्विघ्नता की सिद्धि केलिये आपको पूजता हूँ, कृपा कर श्रीचक्र की क्रमपूजा केलिये मुझे अनुमति दें।154-155।

श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते भक्तानुग्रहकारक।।155।।
अनुज्ञां देहि भगवन् श्रीचक्रयजनाय मे।

हे श्रीगुरुदेव! हे श्रीदक्षिणामूर्ति! हे भगवन्! हे भक्तों पर अनुग्रह करनेवाले! श्रीचक्र का पूजन करने केलिये आप मुझे अनुमति दें।155-156।

एवमेतान्समभ्यर्च्य भैरवाज्ञामथाऽर्थयेत्।।156।।
तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।।157।।

इस प्रकार इन सब का पूजन करके भैरव से आज्ञा प्राप्त करने से पहले भैरव का पूजन करें - हे! तीक्ष्णदाढ़वाले, हे! विशालकायवाले, हे! कल्पान्तक अग्नि के सदृश भयंकर दीखनेवाले, हे! भैरव भगवान्, आपको नमस्कार हो। कृपा करके कर्म करने के लिये मुझे अनुमति दें।156-157।

गुरुदेवतयोर्मन्त्रदेवतयोश्च क्षणं पुनः।
ऐक्यं संचिन्त्य गृह्णीयादाज्ञां बद्धांजलिः पठन्।।158।।

गुरु और देवता तथा मन्त्र और देवता के ऐक्तयता का कुछ क्षण चिन्तन करके हाथ जोड़कर इस मन्त्र का पाठ करते हुये आज्ञा ग्रहण करें।158।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महात्रिपुरसुन्दरि देह्यनुज्ञां महेश्वरि।
प्रयतिष्ये निदेशस्ते योगक्षेमार्थसिद्धये।।159।।

हे! महात्रिपुरसुन्दरी, हे! महेश्वरी, श्रीयन्त्र की पूजा करने की अनुमति दें, योगक्षेम की सिद्धि के लिये मैं आपके निर्देशों (विधि विधान) के अनुसार करने के लिये प्रयत्न करूँगा।159।

एवं निदेशं संगृह्ययोगक्षेमप्रदोत्तमम् ।
इति प्रार्थ्य च लब्धाज्ञो यागरक्षार्थमर्चयेत्।।160।।

इस प्रकार योगक्षेम प्रदायक निर्देश (आज्ञा) को ग्रहण करके एवं ऐसे प्रार्थना करके अनुमति प्राप्त कर याग (संपूर्णपूजा रूपी कर्म) की रक्षा केलिये उनकी पूजा करें।160।

पश्चिमद्वारमारभ्य नवशक्तीरिमा यजेत्।
शक्तिद्वयं प्रतिद्वारं मध्ये चैकां यथाक्रमम्।।161।।

पश्चिमद्वार से आरम्भ कर इन नौ शक्तियों की पूजा करें। प्रत्येक द्वार पर दो शक्ति यानि द्वार के दोनों तरफ एक-एक और मध्य में एक क्रमशः पूजें।161।

दूतरी सुन्दरी चैव सुमुखी च विरूपगा।
विमला चान्तरी पश्चाद् बन्दरी च पुरन्दरी।।162।।
पुष्पभृद् दिग्यथाऽम्बा च श्रीपादुकां पूजयामि।

पश्चिम में दूतरी और सुन्दरी, उत्तर में सुमुखी और विरूपगा, पूर्व में विमला और आन्तरी तथा दक्षिण में बन्दरी और पुरन्दरी। सभी द्वार के बीच में '**पुष्पभृद्**' का ही आवृत्ति पूर्वक पूजें। पूजा में प्रत्येक का नाम के साथ '**अम्बा**' जोड़कर चतुर्थ्यन्त बनाके अन्त में '**श्रीपादुकां पूजयामि**' जोड़ के मन्त्र के रूप में प्रयोग करें।162-163।

रुद्रं शलभनामानं सुदर्शनहरिं ततः।।163।।
अघोररुद्रं गन्धाद्यैर्दुर्गां विन्ध्यनिवासिनीम्।
उत्तरद्वारमारभ्य यावद्द्वारन्तु पश्चिमम्।।164।।
तत्रादावुत्तरद्वारे रुद्रं शलभसंज्ञकम्।

उत्तर द्वार से आरम्भ करके पश्चिम द्वार पर्यन्त क्रमशः शलभ नामक रुद्र, सुदर्शन नामक हरि, अघोर नामक रुद्र और विन्ध्यवासिनी दुर्गा का, गन्ध आदि द्रव्यों से पूजन करें। उन में से सबसे पहले उत्तर द्वार में शलभ नामक रुद्र का पूजन करें।163-165।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तारहृद्भगमानीय कामिका सोर्ध्वकेशिनी ।।165।।
बकेशश्च पिनाकीशो निद्रा वै मृत्युरूपिणी।
सदीर्घाऽथ पिनाकीशो जलस्थोऽनन्तसंयुतः ।।166।।
वायुस्तथा लोहितेशः संवर्तेशः सलोचनः।
वह्निदीर्घयुतः छान्तो दीर्घवान्मरुतस्ततः ।।167।।
महाकाली महाकालो बकेशः पूतनाग्नियुक्।
वामकर्णावुतावाथ सदीर्घः शेषयुग्मकम् ।।168।।
सन्ध्यावायुः पुनश्चैतत्त्रयं मेधाद्वयं पृथक्।

पूजा केलिये 34 अक्षरों के मन्त्र का संकेत कर रह हैं –

तार = प्रणव, हृद्भग = अनाहतचक्र का बीज, ऊर्ध्वकेशिनी कामिका, पिनाकीश जो बकेश, मृत्युरूपिणी निद्रा, अनन्त से युक्त जलस्थ सदीर्घा पिनाकीश, सलोचन संवर्तेश व लोहितेश जो वायु, दीर्घयुक्त वह्नि, दीर्घवाला शान्त मरुत्, महाकाली, महाकाल, पूतनाग्नि युक्त बकेश, वामकर्णावायुतौ = रेफों से युक्त व दीर्घयुक्त शेष युग्म, सन्ध्या, वायु, पुनः वे ही तीन, दो मेधा (कवच, अस्त्र और अग्निजाया = स्वाहा – इन से निर्मित 34 अक्षरोंवाला मन्त्र से शलभ नामक रुद्र का पूजन चन्दनादियों से करें) ।165–169।

तद्वामपार्श्वे शलभीं ध्यात्वा शिवसमाकृतिम् ।।169।।
तारहृद्भगवत्यन्ते शलभ्यन्ते च शालिनी ।
शलभीमर्चयेद्भक्त्या साधकश्चन्दनादिभिः ।।170।।

उस शलभ नामक रुद्र के बायें भाग में शिवसमाकृतिवाली शलभी का ध्यान करें और निम्न मन्त्र से पूजन करें – 'तार, हृद्, भगवती, शालिनी, (अन्त में) शलभ्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि'। इस मन्त्र से साधक भक्तिपूर्वक चन्दनादियों से शलभी की अर्चना करें।169–170।।

पूर्वद्वारे यजेत्पश्चाद्ध्यात्वा विष्णुं सुदर्शनम्।
प्रणवौ भृगुहंसौ च पुनर्ब्रह्मासनो भृगुः ।।171।।
ततस्तु दक्षिणे द्वारे ह्यघोरं चन्दनादिभिः।
अथ दुर्गां यजेद् द्वारि पश्चिमे विन्ध्यवासिनीम् ।।172।।

उसके बाद पूर्व द्वार में सुदर्शन नामक विष्णु का ध्यान करके पूजा करें। इस मन्त्र से – 'प्रणव, भृगु, हंस, ब्रह्मासन = हंस, भृगु'। तदनन्तर दक्षिण द्वार में चन्दनादि से अघोर का पूजन करें। उसके बाद पश्चिम द्वार में विन्ध्यवासिनी दुर्गा का पूजन करें।।171–172।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वाग्रे त्रिकोणं कुर्यादासनाधो महेश्वरि।
तत्र योगासनं पूज्यं वीरासनमथाऽर्चयेत्।।173।।
शरासनं पूजयित्वा अनन्तासनमर्चयेत् ।
अर्चयित्वा महेशानि विमलासनमुत्तमम्।।174।।
(आधारशक्तिकमलासनं देवि ततोऽर्चयेत्।
इत्थमासनपूजां च कृत्वा शुद्धेस्तनोः कुर्यात्।।174क।।)

अपने सामने की ओर आसन के नीचे त्रिकोण बनाते वक्त निम्न प्रार्थना मन्त्र को उच्चारण करते हुये देवी से प्रार्थना करें तत्पश्चात् निम्न आसन पूजा मन्त्रों से आसन की पूजा करें। इस त्रिकोण में पूज्य योगासन, तदनन्तर वीरासन की मैं पूजा करता हूँ। हे महेशानि! शरासन की पूजा करके अनन्तासन की पूजा करता हूँ। उत्तम विमलासन की पूजा करके हे देवी! आधारशक्तिकमल आसन की मैं पूजा करता हूँ। प्रार्थना मन्त्र -'**स्वाग्रे त्रिकोणं कुर्वेऽहमासनाधो महेश्वरि।**', अक्षतपुष्पगन्धादि से आसन की पूजा इन मन्त्रों से करे - '**ॐ योगासनाय नमः, योगासनं पूजयामि भावयामि समर्पयामि; ॐ वीरासनाय नमः, वीरासनं पूजयामि भावयामि समर्पयामि; ॐ शरासनाय नमः, शरासनं पूजयामि भावयामि समर्पयामि; ॐ अनन्तासनाय नमः, अनन्तासनं पूजयामि भावयामि समर्पयामि; ॐ विमलासनाय नमः, विमलासनं पूजयामि भावयामि समर्पयामि; ॐ आधारशक्तिकमलासनाय नमः, आधारशक्तिकमलासनं पूजयामि भावयामि समर्पयामि।**' इस प्रकार आसन पूजा करके देह शुद्धि करें।173-174।

तत्रोपविश्य चाचम्य देहशुद्धिं करोम्यहम् ।
पूजावेदीं समासाद्य पृथिवीं प्रार्थयेत्ततः।।175।।

अब उस आसन पर बैठके देह शुद्धि केलिये पुनः मैं आचमन करता हूं। देह शुद्धि करने के अनन्तर पूजा वेदी का संस्पर्श करके पृथिवी से प्रार्थना करें।175।

मेरुपृष्ठऋषिः प्रोक्तः सुतलं छन्द ईरितम्।
कूर्मोऽत्र देवता प्रोक्ता आसनारोपणे तथा।।176।।
विनियोगस्तु कथितस्ततो धृत्वा पठेदिदम्।
पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।।177।।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।
वसुधे हेमगर्भासि शेषस्योपरिशायिनी।।178।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्थानं मे देहि पूजार्थं गृहाणार्घ्यं धरित्रि मे।
ॐ नमो देव्यै भगवत्यै धरण्यै धारिणी धरे।।179।।
स्वाहेत्यनेन मन्त्रेण दद्यादर्घ्यं विधानतः।

भूशोधन मन्त्र के ऋषि हैं मेरुपृष्ठ, छन्द है सुतल, देवता कूर्म, आसन का आरोपण (स्थापन) करने में विनियोग करना है। थोड़ा जल छोड़ें। तदनन्तर निम्न मन्त्र का पाठ करें - हे पृथिवी! आपने समस्त लोकों को धारण किया है, हे देवी! आपको विष्णु ने धारण किया है, हे देवी! आप इस आसन को पवित्र कर मुझे धारण करें। हे वसुधे! आप स्वर्णगर्भा हैं, शेषनाग के ऊपर शयन करनेवाली आप मुझे पूजा करने केलिये कुछ स्थान दीजिये। हे धरित्री! मेरे द्वारा अर्पित अर्घ्य ग्रहण करें। निम्न मन्त्र से विधिपूर्वक अर्घ्य दें। हे धरे! सब को धारण करनेवाली भगवती धरणी देवी केलिये नमस्कार, स्वाहा।176-180।

प्रथमं त्रिकोणमालिख्य योगवीरौ शरं तथा।।180।।
कूर्मविमलावनन्तं च पूजयेदासनं शुभम्।

सबसे पहले अपने सामने एक त्रिकोण बनायें और क्रमशः छः आसनों का पूजन करें-योगासन, वीरासन, शरासन, कूर्मासन, विमलासन, अनन्तासन।180-181।

ॐ निमन्त्रिता मया देवि सांगा च गुरुपूर्वकम्।।181।।
पुष्पधूपादिसहित - सौमनस्यं प्रयच्छ मे।
आमन्त्रिता मया भक्त्या श्रीचक्रगुरुदेवता।।182।।
दिव्ययाग - समृद्ध्यर्थमेह्येहि परमेश्वरि।
इत्युक्त्वैव दूर्वाक्षतान्वेद्यां मन्त्री च निक्षिपेत्।।183।।

तदनन्तर निम्न मन्त्र का उच्चारणपूर्वक दूर्वा-पुष-अक्षत-चन्दनादि को पूजावेदी पर प्रोक्षण करें - ॐ हे देवी! मेरे द्वारा गुरु सहित सांग देवताओं को जब निमन्त्रित किया जायेगा तब मुझे पुष्प धूप आदि सहित सौमनस्य प्रदान करें। हे परमेश्वरी! मेरे द्वारा श्रीचक्र, गुरु व देवतागण आमन्त्रित होकर यह याग (पूजा) दिव्य व समृद्ध होवे, इसके लिये आप पधारें और कृपा करें।181-183।

किंचिद्विचिन्त्य स्वात्मानं शिरसावरोहनं यजेत्।
मंचस्य दक्षिणद्वारपार्श्वयोरुभयोः खलु।।184।।
मायां दुर्गां समर्चेत पूर्वोक्तसंविधानतः।
मंचस्य पूर्वद्वारे तु पार्श्वयोरुभयोस्ततः।।185।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुछ क्षण अपने स्वरूप का चिन्तन करें कि सिर से नीचे तक पूरा शरीर शान्त व सुखपूर्वक स्थिति के साथ मन प्रसन्न एवं प्रफुल्ल होकर पूजा केलिये तैयार है। अब मंच के दक्षिण द्वार अथवा वेदी के दक्षिण भाग के दायें व बायें (दोनों बगल) में पूर्वोक्त विधि से माया और दुर्गा का पूजन करें।184-185।

भद्रकालीं च स्वस्ति श्रीमभ्यर्च्य च विधानतः।
एवं तथोत्तरे द्वारि पार्श्वयोरुभयोर्ननु।।186।।
पूज्ये पूर्वविधानेन स्वाहा चैव शुभंकरी।
गौरी श्रीलोकधारी च द्वाराग्रे दक्षिणोत्तरे।।187।।
द्वाराग्रे पश्चिमे द्वारि पूज्या वागीश्वरी ततः।

तदनन्तर मंच के पूर्व द्वार अथवा वेदी के दक्षिण भाग के दायें व बायें (दोनों बगल) में पूर्वोक्त विधि से भद्रकाली और स्वस्तिश्री का पूजन करने के पश्चात् मंच के उत्तर द्वार अथवा वेदी के उत्तर भाग के दायें व बायें (दोनों बगल) में पूर्वोक्त विधि से स्वाहा और शुभंकरी का पूजन करें। तथा मंच के पूर्व द्वार अथवा वेदी के पूर्व भाग के अग्र का दायें व बायें (दोनों बगल) में पूर्वोक्त विधि से गौरी और श्रीलोकधारिणी का पूजन करें। एवं मंच के पश्चिम द्वार अथवा वेदी के पश्चिम भाग के अग्र में पूर्वोक्त विधि से वागीश्वरी का पूजन करें।186-188।

करोम्यनेन मन्त्रेण तालत्रयमहं शिवे।।188।।
नारायणोऽहं ब्रह्माऽहं भैरवोऽहं शिवोऽस्म्यहम्।
देवोऽहं परमात्माऽहं महात्रिपुरसुन्दरि।।189।।
ध्यात्वैवं वज्रकवचं न्यासं तव करोम्यहम्।
कुमारीबीजसंयुक्तं महात्रिपुरसुन्दरि। 190।।
हृदि मां रक्ष रक्षेति करोम्यंजलिमीश्वरि ।

हे शिवे! तत्पश्चात् निम्न मन्त्र (वज्र कवच) का पाठ करते हुये मैं तीन बार ताली बजाऊँगा - हे महात्रिपुरसुन्दरी! मैं नारायण हूँ, मैं ब्रह्मा हूँ, मैं शिव हूँ, मैं देव हूँ, मैं परमात्मा हूँ। इस प्रकार वज्र कवच का पाठ व ध्यान करके अब मैं न्यास करता हूँ। हृदय पर हाथ रखके कुमारीबीज से संयुक्त कर कहूँगा - हे त्रिपुरसुन्दरी! हे ईश्वरी! मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो।188-191।

सुधार्णवासनं नौमि कालचक्रासनं ततः।।191।।
पीताम्बुजासनं नौमि वन्दे दिव्यासनं ततः।
सर्वचक्रासनं वन्दे सर्वमन्त्रासनं तथा ।।192।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साध्यसिद्धासनं वन्दे नवयोन्यासनं ततः।
पर्यंकपीठासनकं महाप्रेतासनं ततः ।।193।।
ततः पद्मासनं वन्दे सर्वत्रैवं सुसंस्थिरम्।
नमो देव्यासनायेति प्रकरोम्यासनं शिवे।।194।।
चन्द्रासनं नमस्यामि सर्वमन्त्रासनं भजे।
साध्यसिद्धासनं वन्दे मन्त्रैरेभिर्महेश्वरि।।195।।
करोम्यस्मिंश्चक्रमन्त्रदेवतासनमुत्तमम्।

हे शिवे! हे महेश्वरी! सुधार्णवासन को मैं नमस्कार करता हूँ, कालचक्रासन को मैं नमस्कार करता हूँ, पीताम्बुजासन को मैं नमस्कार करता हूँ, दिव्यासन को मैं नमस्कार करता हूँ, सर्वचक्रासन को मैं नमस्कार करता हूँ, सर्वमन्त्रासन को मैं नमस्कार करता हूँ, साध्यसिद्धासन को मैं नमस्कार करता हूँ, नवयोन्यासन को मैं नमस्कार करता हूँ, पर्यकपीठासन को मैं नमस्कार करता हूँ, महाप्रेतासनं को मैं नमस्कार करता हूँ। सर्वत्रैकरूप व सुसंस्थिर रहनेवाला पद्मासन को मैं नमस्कार करता हूँ, देव्यासन को मैं नमस्कार करता हूँ, चन्द्रासन को मैं नमस्कार करता हूँ, सर्वमन्त्रासन को मैं नमस्कार करता हूँ, साध्य सिद्धासन को मैं नमस्कार करता हूँ। हे महेश्वरी! मैं इन मन्त्रों के द्वारा इस स्थान में (मंच या वेदी पर) सर्वोत्तम श्रीचक्रात्मक एवं मन्त्रमयदेवतात्मक आसन को बिछाता हूँ ।191-196।

19. न्यासाः = न्यासों का क्रम -

वशिन्याद्यष्टकं न्यासं नवयोन्याख्यमुत्तमम्।
षोढान्यासं ततः कुर्वे महाषोढामनन्तरम्। ।196।।
षोढान्यासं तु वै कुर्याद्येन ब्रह्माण्डरूपकम्।
विराट्स्वरूपी परमात्मा शिवः साक्षान्न संशयः।।197।।
चक्रन्यासं ततः कुर्वे श्रीकण्ठन्यासमुत्तमम्। ।198।।
केशवादिमहान्यासं कामन्यासं करोम्यहम्।
कलान्यासं ततः कुर्वे कामकलाह्वयम्।।199।।

(ऋषिस्तु दक्षिणामूर्तिः गायत्री छन्द उच्यते।
विराट्स्वरूपिणी देवी महात्रिपुरसुन्दरी।।197क।।)
(इसके ऋषि दक्षिणामूर्ति हैं, छन्द गायत्री है और विराट्रूपिणी महात्रिपुरसुन्दरी देवता हैं।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पीठन्यासं ततः कुर्वे तत्त्वन्यासं करोम्यहम्।
करोम्यथ षडंगाख्यं मातृकाश्च करोम्यहम्।।200।।

वशिन्याद्यष्टकन्यास, नवयोनिनामकश्रेष्ठन्यास, षोढान्यास, तदनन्तर महाषोढान्यास। षोढान्यास अवश्य करना चाहिये जिससे साधक को ब्रह्माण्डरूपता की प्राप्ति हो सके। वह विराट्रूपता साक्षात् परमात्मा शिव का ही स्वरूप है, इसमें कोई संशय नहीं है। (इस प्रकार शिव और शक्ति का अभेद सिद्ध होने पर साधक भी न्यास द्वारा शिव-शक्ति स्वरूप ही हो जाता है।) तत्पश्चात् मैं क्रमशः चक्रन्यास, उत्तम श्रीकण्ठन्यास, केशवादि महान्यास, कामन्यास, कलान्यास, कामकलानामक-न्यास, पीठन्यास, तत्त्वन्यास, षडंगन्यास और मातृकान्यास को करूँगा।196-200।

[**ध्यान दें** -जो साधक नित्य सभी न्यासों को नहीं कर सकता वह इन दो प्रकार के दीक्षाओं में से किसी एक दीक्षा से दीक्षित होना अनिवार्य है - वारदीक्षा क्रम (इसमें एकसप्ताह में नियमित रूप से किसी भी एक दिन एक बार ही सभी न्यासों को करने का अधिकार प्राप्त होता है) अथवा केवलदीक्षाक्रम (इसमें केवल विशेष पर्वो में ही सभी न्यासों को करने का अधिकार प्राप्त होता है)]

20. षोढान्यासस्य स्वरूपम् = षोढान्यास का स्वरूप -

बीजकूटं क्रमो धातुस्तत्त्वं पंचमपंचकम्।।201।।
पंचविंशतिसंख्याकाः न्यासा एते प्रकीर्तिताः।
ततश्च लघुषोढा स्यान्महाषोढा ततः परम्।।202।।
महानिर्वाणषोढा च सर्वे देवि प्रकीर्तिताः।

बीज, कूट, क्रम, धातु, तत्त्व जो पंचक में पांचवाँ है अर्थात् 5 गुणा 5 = कुल 25 प्रकार के न्यास कहे गये हैं। हे देवी! उन्हें करने के बाद लघुषोढा, महाषोढा और महानिर्वाणषोढा करने का विधान है - इस प्रकार संपूर्ण न्यास कहे गये हैं।201-202।

21. अंगषोढान्यासः = अंगषोढान्यास की विधि -

अंगषोढा सुखेशानि कुर्यात्पूर्वोक्तवर्त्मना।
महाषोढाह्वयं न्यासं ततः कुर्यात्समाहितः।।203।।

हे सुखेशानि! पूर्वोक्त प्रकार से क्रमशः अंगषोढान्यास और महाषोढान्यास को एकाग्रचित्त होकर नित्य ही अवश्य करना चाहिये।।203।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ केचिन्न्यासानां विशेषस्वरूपम् = कुछ न्यासों का विशेष स्वरूप-

21.क- अधराम्नायषोढान्यासः = अधराम्नाय षोढान्यास की विधि -

रवौ पद्मे शिवकला ग्रहदोषनिवारकः ।
दिक्पालडाकिनीतारादिकं पीठं च विन्यसेत्।।204।।

रविवार के दिन आज्ञाचक्र में शिवकलान्यास, ग्रहदोषनिवारक ग्रहन्यास, दिक्पालन्यास, डाकिनीतारादि न्यासों के साथ पीठन्यास करना चहिये।204।

21.ख- पूर्वाम्नायषोढान्यासः = पूर्वाम्नायषोढान्यास की विधि-

प्रातः श्रीभुवनेश्वर्याः षोढान्यासं समाचरेत्।
श्रीमहाभुवनेश्वर्याः महाषोढां च विन्यसेत्।।205।।
स्वाधिष्ठाने तु न्यस्तव्याः पूर्वाम्नायक्रमादिमे।
मध्याह्ने दक्षिणाकाल्याः महाषोढां च विन्यसेत्।।206।।
परा परात्परान्यासो परात्परातीता तथा।
चित्परा चित्परात्परा सोमे स्वाधिष्ठाने तथा।।207।।
सा चित्परात्परातीता तथेयं भवुनेश्वरी।

हे भुवनेश्वरी! सोमवार के दिन प्रातःकाल में स्वाधिष्ठानचक्र में भुवनेश्वरी के षोढान्यास तथा महाभुवनेश्वरी के महाषोढान्यास - इन दोनों न्यासों को पूर्वाम्नायक्रम के अनुसार करना है। तथा मध्याह्न में दक्षिणाकाली का महाषोढान्यास करने के बाद क्रमशः इन न्यासों को करें - परान्यास, परात्परान्यास, परात्परातीतान्यास, चित्परान्यास, चित्परात्परान्यास और चित्परात्परातीतान्यास।।205-207।।

21.ग- दक्षिणाम्नायषोढान्यासः = दक्षिणाम्नायषोढान्यास की विधि -

मणिपूराख्यचक्रे तु भक्तिभावसमन्वितः।
महोग्रतारादेव्यास्तु मूलाधारे न्यसेत्सदा।।208।।
हंसः मन्त्रो लघुश्चैव महाषोढा तथा स्मृतः।
ग्रहाश्च राशिनक्षत्रे योगः करण एव च।
पंचसंवत्सराः काल्याः मनोर्भौमे न्यसेत्सदा।।209।।

मंगलवार के दिन पहले मणिपूरचक्र में भक्तिभाव से युक्त होकर महोग्रतारादेवी का महाषोढान्यास करें तत्पश्चात् मूलाधारचक्र में क्रमशः - हंसन्यास, मन्त्रन्यास, लघुषोढान्यास, महाषोढान्यास, ग्रहन्यास, राशिन्यास, नक्षत्रन्यास, योगन्यास, करणन्यास, पंचसंवत्सरन्यास और काली के मन्त्र का न्यास को करें।।208-209।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

21.घ- पश्चिमाम्नायषोढान्यासः = पश्चिमाम्नायषोढान्यास की विधि -

घोराष्टकं त्रिखण्डा तु चैवाक्षरो द्विपंचकम्।
डादिषष्ठकन्यासोऽपि षोढान्यास उदाहृतः ॥210॥
ग्रन्थिन्यासं तथाऽघोरं द्वादशांगं षडंगकम्।
मालिनीशब्दराशी च षड्दूतं रत्नपंचकम् ॥211॥
त्रिखण्डं मन्त्रखण्डन्तु मातृखण्डं तथैव च।
रुद्रखण्डमिति प्रोक्तमनाहते बुधवासरे ॥212॥
रक्ष मां कुब्जिके देवि रक्ष मां कुब्जिकेश्वरि।
रक्ष रक्ष महादेवि अस्मदीयमिदं वपुः।
कुलदेवीति विख्याता कैलासशिखरालये।।
सा कुब्जिका महामाया स्थातु श्रीर्मम मस्तके।।213।।
कवचपाठे महत्पुण्यं जायते तेन निर्भयः।
कवचेन रक्षां प्राप्नोति तस्मान्नित्यं पठेन्नरः ॥214॥

बुधवार के दिन अनाहतचक्र में क्रमशः इन न्यासों को करना है - घोराष्टक, त्रिखण्डा, अक्षर, द्विपंचक, डादिषष्ठक, षोढा, ग्रन्थि, अघोर, द्वादशांग, षडंग, मालिनी, शब्द, राशी, षड्दूत और रत्नपंचक। त्रिखण्डा क्या है? मन्त्रखण्डन्यास, मातृखण्डन्यास और रुद्रखण्डन्यास को त्रिखण्डान्यास कहते हैं। अन्त में इस कवच का पाठ करें - ''हे महादेवी! रक्षा करें, रक्षा करें, मेरे इस शरीर की रक्षा करें। हे कैलासशिखरालया! कुलदेवी नाम से जो विख्यात हैं सो आप महामाया कुब्जिका हैं, आप मेरे मस्तक पर सब प्रकार के श्री को स्थिर करें।'' कवच पाठ करने पर महान् पुण्य होता है और साधक निर्भय होता है तथा कवच से रक्षा होती है। अतः मनुष्य का कर्तव्य है कि वह नित्य ही कवच का पाठ अवश्य करें।210-214।

21.ङ- उत्तराम्नायषोढान्यासः = उत्तराम्नायषोढान्यास की विधि -

प्रागेव ब्रह्ममुहूर्तात्कुर्यात्षोढाचतुष्टयम्।
बालायाः पंचदश्याश्च महाषोडशिकाख्यायाः ॥215॥
महात्रिपुरसुन्दर्याः आज्ञाचक्रे तु विन्यसेत्।
उत्तराम्नायमाश्रित्य प्राक्प्रातः कृत्यतश्चरेत् ॥216॥
उग्रमातृक्रमः काली कुलपीठानि योगिनी।
देवतामन्त्ररूपाणि न्यासेऽयं कालिकाक्रमे।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महाषोढान्यासो विशुद्धे तु विन्यसेच्च क्रमात्तथा।।217।।
ततश्च लघुषोढा स्यान्महाषोढा ततः परम्।
महानिर्वाणषोढा च गुरावेतत्प्रकीर्तितम्।।218।।

गुरुवार के दिन ब्रह्ममुहूर्त से पहले आज्ञाचक्र में उत्तराम्नाय के अनुसार षोढाचतुष्टय को करना चाहिये। वे चार षोढा हैं क्रमशः बाला, पंचदशी, महाषोडशिका और महात्रिपुरसुन्दरी। उसके बाद प्रातःकृत्य से पहले विशुद्धचक्र में कालीक्रम में कहे अनुसार क्रमशः इन न्यासों को करें - उग्रमातृकाक्रम, काली, पीठ, योगिनी, देवतामन्त्ररूप और महाषोढान्यास। तदनन्तर (प्रातःकृत्य के बाद) नित्य पूजा काल में लघुषोढा, महाषोढा और महानिर्वाणषोढा न्यासों को करने केलिये कहा गया है।215-218।

21.च- **ऊर्ध्वाम्नायलघुषोढान्यासः** = ऊर्ध्वाम्नायलघुषोढान्यास की विधि -

शुक्रवारे गणेशश्च दशविद्यामयो ग्रहः।
नक्षत्रयोगिनीराशिपीठं लघुषोढा स्मृतः।।219।।

शुक्रवार के दिन बिन्दुविसर्गचक्र में इन न्यासों को करें - गणेश, दशविद्यामय, ग्रह, नक्षत्र, योगिनी, राशि, पीठ और लघुषोढा।।219।।

21.छ -ऊर्ध्वाम्नायमहाषोढान्यासः = ऊर्ध्वाम्नायमहाषोढान्यास की विधि -

प्रपंच-भुवनं मूर्ति-मन्त्र-दैवत-मातरः।
महाषोढा ह्ययं न्यासः आज्ञायां विन्यसेत्सदा।।220।।
सास्मदीयं शिरः पातु सदा तिष्ठतु भैरवी।
या विशाला विशालाक्षी निर्मला मलवर्जिता।
या योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।।221।।
सिद्धेश्वरी परापरा महाविद्या महाकला।
बीजकलावरोहाश्च सहस्रारे शनौ न्यसेत्।।222।।
एतत्पाठे महत्पुण्यं न्यासो देवस्वरूपगः।
केवलन्यासपाठेन तत्र तिष्ठन्ति देवताः।।223।।

(केवलं स्मृतिमात्रेण तिष्ठन्ति सर्वदेवताः। -इति पाठान्तरम्।)

(कूटैर्बीजैर्विना षोढान्यासो न सिद्ध्यति।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कूटमन्त्रान् हि योजयेत्।।220.क।।)

(कूट और बीज के बिना षोढा न्यास होता नहीं इसलिये पूरे प्रयत्न से कूट और बीजों को जोड़ लेना चाहिये।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शनिवार के दिन पहले आज्ञाचक्र में इन न्यासों को करें - प्रपंच, भुवन, मूर्ति, मन्त्र, देवता और मातृका। इन छः न्यासों को महाषोढा कहा गया है। कवच पाठ करें - जो विशाला, विशालाक्षी, निर्मला, मलवर्जिता, योगिनी और महामाया नाम से विख्यात हैं वह हमारे सिर की रक्षा करें और मेरे मस्तक पर सब प्रकार के श्री को स्थापित करें।

तत्पश्चात् शनिवार के दिन ही सहस्रारचक्र में इन न्यासों को करें - सिद्धेश्वरी, परात्परा, महाविद्या, महाकला, बीज, कला और अवरोह। इनका पाठ करने से ही महान् पुण्य होगा। क्योंकि न्यास साक्षात् साधक को देवता का स्वरूप प्रदान करते हैं। केवल न्यास का पाठ मात्र से देवता पूजास्थल में उपस्थित हो जाते हैं। (पाठभेद के अनुसार - केवल न्यास का स्मरण मात्र से देवता पूजास्थल में उपस्थित हो जाते हैं) ।220-223।

22. पात्रासादनम् = पात्रों को स्थापित करना-

ततः करोमि स्थित्यादिन्यासं त्वत्रिपुरेश्वरि।
ततः शुद्धोदकेनाहं वामभागे महेश्वरि।।224।।
करोमि मण्डलं वृत्तं चतुरस्रं शिवप्रिये।
पुष्पैरभ्यर्च्य साधारं शंखं संस्थापयाम्यहम्।।225।।
अर्चयामि षडंगेन जलमापूरयाम्यहम्।
ददामि चादिमं बिन्दुं कुर्वे मूलाभिमन्त्रितम्।।226।।

हे त्रिपुरेश्वरी! पूर्वोक्त न्यासों को करने के बाद मैं स्थित्यादि न्यासों को करता हूँ। हे महेश्वरी! हे शिवप्रिये! तत्पश्चात् मैं अपने बायें भाग में शुद्ध जल से चतुरस्र के अन्दर एक गोलाकार मण्डल बनाके उसकी पूजा पुष्पाक्षगन्धादि से करने के बाद सर्वप्रथम मैं उस पर शंख की स्थापना करता हूँ। जिसको आगे सामान्यार्घ्यपात्र नाम से व्यवहार किया जायेगा। उस शंख की विधिवत् षडंग से पूजा करके उस शंख को जल से भरता हूँ। उसे आदि बिन्दु देकर मूलमन्त्र से अभिमन्त्रित करता हूँ।224-226।

तज्जलेन जगन्मातस्त्रिकोणं वृत्तसंयुतम्।
षट्कोणं चतुरस्रं च मण्डलं प्रकरोम्यहम्।।227।।

हे जगन्मातः! मैं उस अभिमन्त्रित सामान्यार्घ्यपात्र का, जल से चतुष्कोण में एक वृत्त बनाकर उसके बीच में एक षट्कोण तदन्तर्वर्ति एक त्रिकोण से युक्त मण्डल को बनाता हूँ।।227।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विद्यया पूजनं मध्ये खण्डैस्त्र्यस्राभिपूजनम्।
बीजावृत्त्या कोणषट्कं पूजयामि शिवप्रिये।।228।।

हे शिवप्रिये! मूलविद्या से बीच में पूजन करके त्रिकोण की तीनभुजाओं को मूलविद्या के तीन खण्डों से पूजता हूँ। मैं बीज की आवृत्ति से षट्कोण के भुजाओं को पूजता हूँ।228।

तस्मिन्दशकलायुक्तमग्निमण्डलमाश्रये।
धूम्रार्चिषं नमस्यामि ऊष्मां च ज्वलिनीं भजे।।229।।
ज्वालिनीं च नमस्यामि वन्देऽहं विस्फुलिंगिनीम्।
सुश्रियं च सुरूपां च कपिलां प्रणमाम्यहम्।।230।।
नौमि हव्यवहां नित्यं भजे कव्यवहां कलाम्।
यादिभिः सहिता वह्नेः कला दश तथा भजे।।231।।

उस पर दस कलाओं से युक्त अग्निमण्डल की भावना करके उसको यादि बीज सहित अग्नि के ही दस कलाओं से पूजन करता हूँ। धूम्रार्चिष् को प्रणाम करता हूँ, ऊष्मा और ज्वलिनी को भजता हूँ, ज्वालिनी को नमस्कर करता हूँ, विस्फुलिंगिनी की वन्दना करता हूँ, तथा सुश्री, सुरूपा और कपिला को प्रणाम करता हूँ। नित्य ही हव्यवहा को नमस्कार करता हूँ और कव्यवहा को मैं भजता हूँ। (आदि में मूलबीज के साथ यादि बीज को जोड़कर इन नामों के चतुर्थ्यन्त के अन्त में नमः जोड़ने से यह मन्त्र होते हैं, इनसे पूजा करनी है) ।229-231।

सूर्यस्य मण्डलं तत्र कला द्वादशकलात्मकम्।
अर्घ्यपात्रे त्वहं वन्दे तपिनीं तापिनीं भजे।।232।।
धूम्रां मरीचिं वन्देऽहं ज्वालिनीं च रुचिं भजे।
सुषुम्णां भोगदां वन्दे भजे विश्वां च बोधिनीम्।।233।।
धारिणीं च क्षमां वन्दे सौरा एताः कला भजे।
सोमस्य मण्डलं तत्र कलाः षोडशात्मकाः।।234।।

अब उस अर्घ्यपात्र में मैं 12 कलाओं से युक्त सुर्यमण्डल की भावना कर वन्दना करके उन कलाओं की उनके ही नामों से पूजता हूँ। तपिनी और तापिनी को मैं भजता हूँ। धूम्रा और मरीचि की मैं वन्दना करता हूँ। ज्वालिनी और रुचि को मैं भजता हूँ। सुषुम्णा और भोगदा की मैं वन्दना करता हूँ। विश्वा और बोधिनी को मैं भजता हूँ तथा धारिणी और क्षमा की मैं वन्दना करता हूँ। इस प्रकार सूर्य के कलाओं की पूजन के बाद उसी में 16 कलात्मक सोम (चन्द्र) मण्डल की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भावना कर वन्दना करके उन कलाओं की भी उनके ही नामों से पूजता हूँ। उन नामों को नीचे कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष के अनुसार क्रमवार स्पष्ट बताया गया है।232-234।

अर्घ्यामृतात्मकं वन्देऽमृतां च मानदां स्तुवे।
पूषां तुष्टिं भजे पुष्टिं रतिं धृतिमहं भजे।।235।।
शशिनीं चन्द्रिकां भजे कान्तिं ज्योत्स्नां श्रियं भजे।
नौमि प्रीतिं चांगदां च पूर्णा पूर्णामृतां भजे।।236।।
स्वरैः षोडशभिर्युक्ता भजे सोमस्य कलाः।

16 कलाओं की पूजा कृष्णपक्ष की 16 कलाओं के नामों से अथवा शुक्लपक्ष के 16 कलाओं के नामों से कर सकते हैं। यह साधक पर निर्भर है। पहले कृष्णपक्ष की कलाओं के नाम बता रहे हैं - अमृता, मानवी, तुष्टि, पुष्टि, प्रीती, रति, श्री, ह्री, स्वधा, रात्रि, ज्योत्स्ना, हेमवती, छाया, पूर्णिमा, विद्या और सोलहवीं अमावास्या। अर्ध्यात्मक जल की मैं वन्दना करता हूँ।

त्रिकोणलेखनं कुर्वे अकथादिसुरेखकम्।।237।।
ह-ळ-क्षवर्णसंयुक्तं स्थितान्तर्हसभास्वरम्।
वाक्कामशक्तिसंयुक्तं हंसेनाराधयाम्यहम्।।238।।

उस अर्घ्यपात्र में जल पर एक षट्कोण, उसके भीतर वृत्त, उसके भी

अग्रे अंकिताः कलाः कृष्णपक्षस्य खलु = आगे अंकित कलायें कृष्णपक्ष की हैं -

अमृता मानसी तुष्टिः पुष्टिः प्रीती रतिस्तथा।
श्रीश्च ह्रीश्च स्वधा रात्रिर्ज्योत्स्ना हैमवती तथा।।234क।।

छायाऽन्या पूर्णिमा विद्या अमावास्या च षोडशी।
आभिर्वा पूजयेत्सोमं पराभिर्वा यथाक्रमात्।।234ख।।

एताश्च शुक्लपक्षस्य कलाः = ये कलायें शुक्ल पक्ष की हैं-

अमृता मानदा पूषा तुष्टिः पुष्टी रतिर्धृतिः।
शशिनी चन्द्रिका कान्तिर्ज्योत्स्ना श्रीः प्रीतिरंगदा।।
पूर्णा पूर्णामृता कामदायिन्यः स्वरगाः कलाः।।235क।।

अमृता आदि नाम कृष्ण पक्ष के कलाओं की है। इनसे पूजा करें अथवा मूल में कहे गये नामों से। अब शुक्लपक्ष की कलाओं के नाम बता रहे हैं -अमृता, मानदा, पूषा, तुष्टि, पुष्टि, रति, धृति, शशिनी, चन्द्रिका, कान्ति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूर्णा और पूर्णामृता। ये स्वरों में प्रतिष्ठित कलायें कामनाओं को देनेवाली हैं। अतः इनकी पूजा में पूर्ववत् (यादि के समान) मूल के साथ स्वरों को बिन्दु से युक्त कर बीज के समान जोड़ कर प्रयोग करना चाहिये।234क-235क।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भीतर एक त्रिकोण, त्रिकोण के मध्य में एक छोटा सा वृत्त – इस प्रकार की एक विशिष्ट मण्डल की भावना कर उस मण्डलान्तर्वर्ति त्रिकोण के तीन भुजाओं में प्रदक्षिणा के विपरीत क्रम से अकारादि 16, ककारादि 16 और थकारादि 16 वर्णमातृकाओं की भावना करता हूँ। त्रिकोण के भीतर तीन कोणों में 'ह, ळ, क्ष' इन तीन वर्णमातृकाओं की भावना करके तीनों भुजाओं के भीतर की ओर प्रदक्षिणा के क्रम से पंचदशी मन्त्र की भावना करता हूँ। अन्त में त्रिकोण के बीच में स्थित बिन्दु रूपी वृत्त में 'ई' बीज को और वृत्त के बाहर दोनों बगल में 'सो' और 'हं' की भावना करता हूँ। अब इस मण्डल विशेष को मैं पूजता हूँ।237-238।

वृत्ताद्बहिः षडस्रे च लेखनं प्रकरोम्यहम्।
पुरोमार्गादिषट्कोणं षडंगेनार्चयाम्यहम्।।239।।
श्रीविद्यायाः सप्तवारं करोम्यत्राभिमन्त्रणम्।
समर्पयामि विश्वेशि तस्मिन् गन्धाक्षतादिकम्।।240।।

हे विश्वेशि! वृत्त के बाहर में स्थित षट्कोण में पुरोमार्गादि (षडाम्नाय अथवा षडायतन) की भावना कर षडंग से अर्चना करता हूँ। तदनन्तर श्रीविद्या की 7 बार उच्चारण पूर्वक जल को अभिमन्त्रित करता हूँ तथा पुष्पाक्षतगन्धादि से पूजता हूँ।।239-240।।

ध्यायामि पूजाद्रव्यं ते सर्वं विद्यामयं शुभम्।
चतुर्नवतिसन्मन्त्रान्स्पृष्ट्वा तत्प्रयजाम्यहम्।।241।।

अर्घ्यपात्र की स्थापना के बाद अब मैं आपके पूजा द्रव्यों का ध्यान करता हूँ, सब को शुभ एवं विद्यामय होने की भावना करता हूँ। 94 सद् मन्त्रों का स्मरण करते हुये उनका शोधन रूपी प्रकृष्ट पूजा करता हूँ।241।

ध्यान दें – श्लोक संख्या 242 से 253 तक के श्लोकों में 94 नाम हैं, जिनके चतुर्थ्यन्त के आदि में नाम के आदि अक्षर को दीर्घान्त व बिन्दु सहित बीज जैसे ग्रहण करके अन्त में नमः आदि शब्दों को जोड़कर मन्त्र स्वरूप बनाकर पूजा में प्रयोग करें।

वह्नेर्दशकलाः सूर्यकलाद्वादशकं भजे।
आश्रये षोडशकलास्तत्र सोमस्य कामदाः।।242।।

पूर्वोक्त अग्नि के 10 कलाओं, सूर्य के 12 कलाओं और सोम (चन्द्र) के कामदा 16 कलाओं को मैं भजता हूँ और आश्रित अर्थात् प्रणाम पूर्वक शरणागत होता हूँ।242।

Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh

सृष्टिमृद्धिं स्मृतिं वन्दे मेधां कान्तिं नमाम्यहम्।
लक्ष्मीं धृतिं स्थिरां वन्दे स्थितिं सिद्धिं भजाम्यहम्॥243।।
एता ब्रह्मकला वन्दे, जरां तां पालिनीं भजे।

सृष्टि, ऋद्धि और स्मृति की वन्दना करता हूँ; मेधा और कान्ति को मैं नमस्कार करता हूँ; लक्ष्मी, धृति और स्थिरा की मैं वन्दना करता हूँ तथा स्थिति और सिद्धि को भजता हूँ। इन ब्रह्मा जी के 10 कलाओं की मैं वन्दना करता हूँ, जिनके नाम का चतुर्थ्यन्त को कवर्ग और चवर्ग के कुल 10वर्णो को पूर्ववत् बिन्दुसहित आदि में जोड़कर प्रयोग करना है।।243-244।

शान्तिं नमामीश्वरीं च रतिं वन्दे च कामिकाम्।। 244।।
वरदां ह्लादिनीं वन्दे प्रीतिं दीर्घां भजाम्यहम्।
टादिभिः सहिता विष्णोः कला दश तथा भजे॥ 245।।
एता विष्णोः कला वन्दे, तीक्ष्णां रौद्रीं भयां तथा।

जरा और पालिनी को मैं भजता हूँ, शान्ति और ईश्वरी को मैं नमस्कार करता हूँ; रति और कामिका की मैं वन्दना करता हूँ; वरदा और ह्लादिनी की मैं वन्दना करता हूँ तथा प्रीति और दीर्घा को मैं भजता हूँ। इन विष्णुजी के 10 कलाओं की मैं वन्दना करता हूँ, जिनके नाम का चतुर्थ्यन्त को टवर्ग और तवर्ग के कुल 10 वर्णो को पूर्ववत् बिन्दु सहित आदि में जोड़कर प्रयोग करना है।244-246।

निद्रां तन्द्रां क्षुधां वन्दे नमामि क्रोधिनीं क्रियाम्॥246।।
उद्गारीं च भजे मृत्युमेता रुद्रकला भजे।

तीक्ष्णा, रौद्री, भया, निद्रा, तन्द्रा और क्षुधा की मैं वन्दना करता हूँ; तथा क्रोधिनी और क्रिया को मैं नमस्कार करता हूँ; एवं उद्गारी और मृत्यु को मै भजता हूँ। इन रुद्रजी के 10 कलाओं की मैं वन्दना करता हूँ, जिनके नाम का चतुर्थ्यन्त को पवर्ग और यादि 5 (यवरलश) कुल 10 वर्णों को पूर्ववत् बिन्दु सहित आदि में जोड़कर प्रयोग करना है।244-246।

पीतां श्वेतां भजे नित्यामरुणां च तथा भजे।।247।।
भजेऽसितां तथाऽनन्तां षादिभिः सहितास्तथा।
ईश्वरस्य कला ह्येता वन्दे नित्यमभीष्टदाः।।248।।

पीता और श्वेता को मैं भजता हूँ; तथा अरुणा युक्त नित्या और असिता युक्त अनन्ता को मैं भजता हूँ। नित्य ही अभीष्टप्रदायक इन ईश्वर के 4 कलाओं की मैं वन्दना करता हूँ, जिनके नाम का चतुर्थ्यन्त को षादि 4 (षसहक्ष) कुल 4

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वर्णों को पूर्ववत् बिन्दु सहित आदि में जोड़कर प्रयोग करना है।।247-248।।

निवृत्तिं च प्रतिष्ठां च विद्यां शान्तिं नमाम्यहम्।
इन्धिकां दीपिकां चैव रेचिकां मोचिकां तथा।।249।।
परां सूक्ष्मां नमस्यामि नौमि सूक्ष्मामृतां कलाम्।
वन्दे ज्ञानकलां चैव तथा ज्ञानामृतां कलाम्।।250।।
आप्यायिनीं व्यापिनीं च व्योमरूपां नमाम्यहम्।
कलाः सदाशिवस्यैताः षोडश प्रणमाम्यहम्।।251।।

निवृत्ति, प्रतिष्ठा, विद्या और शान्ति को मैं नमस्कार करता हूँ; इन्धिका, दीपिका, रोचिका, मोचिका, परा और सूक्ष्मा को मैं नमस्कार करता हूँ; सूक्ष्मामृतकला को नमस्कार करता हूँ, ज्ञानकला और ज्ञानामृतकला की मैं वन्दना करता हूँ; तथा आप्यायिनी, व्यापिनी ओर व्योमरूपा कला को मैं नमस्कार करता हूँ। इन सदाशिव के 16 कलाओं की मैं वन्दना करता हूँ, जिनके नाम का चतुर्थ्यन्त को स्वरवर्णों को पूर्ववत् बिन्दु सहित आदि में जोड़कर प्रयोग करना है।249-251।

हंसाख्यं च महामन्त्रं ज्योतिषं हंसमाश्रये।
प्रतत्प्रथमविश्वान्तं मन्त्रं ज्योतिषमाश्रये।।252।।
त्र्यम्बकं च नमस्यामि तद्विष्णोः प्रणमाम्यहम्।
विष्णुर्योनिं मूलविद्यां मन्त्रैरेभिरनुत्तमैः।।253।।

पूर्वोक्त 88 कलाओं से अतिरिक्त अग्रिम 6 सर्वश्रेष्ठ विशेष मन्त्रों से मैं नमस्कर करता हूँ। 1. हंस को प्रकाशित करनेवाला हंसनामक महामन्त्र, 2. 'प्रतत्' शब्द आदि में और अन्त में 'विश्व' शब्द हो ऐसा तत्त्व प्रकाशक मन्त्र, 3. मृत्युंजय मन्त्र, 4. 'तद्विष्णोः' शब्द से आरब्ध मन्त्र, 5. 'विष्णुर्योनिं' शब्द से आरब्ध मन्त्र और 6. मूलविद्या।252-253।

ये कुल छः मन्त्र हैं। जो इस प्रकार हैं-

1. हंसमन्त्र -हंसश्शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरस दृतसद्व्योम -सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्।।नमः।। ऋग्वेद 4.40.5।।
2. प्रतत्प्रथमविश्वान्तमन्त्र-प्रतद्विष्णुस्तवेद्वीर्याय मृगोन भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।। नमः।। शु.य. 5.20।।
3. त्र्यम्बकमन्त्र - त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। नमः।। शु.य. 3.60।।

(शेष अगले पृष्ठ में देखें)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अमृतं मन्त्रितं वन्दे चतुर्नवतिभिस्तव।
अखण्डैकरसानन्दकरेऽपरसुधात्मनि ॥254॥
स्वच्छन्दस्फुरणामत्र निधेह्यकुलरूपिणी ।
अकुलस्थाऽमृताकारे शुद्धज्ञानकरे परे ॥255॥
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन्वस्तुनि क्लिन्नरूपिणी।
तद्रूपाण्यैकरस्यस्त्वं कृत्वा ह्येतत्स्वरूपिणी ॥256॥
भूत्वा परामृताकारा मयि चित्स्फुरणं कुरु।
अमृतेशीं नमस्यामि सर्वदाऽमृतवर्षिणीम् ॥257॥
वाग्वादिनीं नमस्यामि श्रीविद्यां प्रणमाम्यहम्।
एभिर्मनूत्तमैर्वन्दे मन्त्रितं परमामृतम् ॥258॥

इस प्रकार आपकी पूजा के सकल सामग्रियों को 94 मन्त्रों से अभिमन्त्रण के द्वारा अमृतभाव संपादन कर प्रार्थना करता हूँ कि - हे अकुलरूपिणी! अमृतैकरसानन्दप्रदायक अपर अमृतात्मक इन सामग्रियों में आप स्वच्छन्दस्फुरणता को स्थापित करें। तथा हे अकुलस्थामृताकारे!, हे शुद्धज्ञानकरे!, हे परे!, हे क्लिन्नरूपिणी! आप इन वस्तुओं में अमृतत्व का आधान करें। आप इन सामग्रियों को अपना अमृतैकरस्यता स्वरूप प्रदान करके आप स्वयं एतादृशस्वरूपवाली व परामृताकारस्वरूपवाली होकर मुझमें चिद्भाव को स्फुरित करें, मैं अमृतवर्षिणी अमृतेशी आपको सर्वदा प्रणाम करता हूँ। मैं वाग्वादिनी को नमस्कार करता हूँ और श्रीविद्या को मैं प्रणाम करता हूँ। इस प्रकार पूर्वोक्त 94 मन्त्रों से अतिरिक्त श्लोक संख्या 254 से 258 तक में कहे गये श्रेष्ठ मन्त्रों से विशेषतः परमामृतस्वरूप अर्घ्यपात्रस्थ अभिमन्त्रित जल की मैं वन्दना करता हूँ।254-258।

---

4. 'तद्विष्णोः' मन्त्र - तद्विष्णोः परमं पदे सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।
तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः सभिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम्।। नमः।।
शु.य. 6.5।।

5. विष्णुर्योनिमन्त्र - विष्णुर्योनिं कल्पयत त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
आसिंचतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते।। नमः।।
ऋग्वेद 10.184.1।।

6. मूलविद्यामन्त्र- गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वती।
गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा।। नमः।।ऋग्वेद 10.184.2।।
अथवा ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज्योतिर्मयमिदं कुर्वे परमर्घ्यं महेश्वरि।
तद्बिन्दुभिर्मे शिरसि त्रिगुरून् पूजयाम्यहम्।।259।।

हे महेश्वरी! इस अर्घ्य को श्रेष्ठ और ज्योतिर्मय करता हूँ। अर्घ्यपात्रस्थ तीन बूंद जल से अपने सिर पर प्रोक्षण करते हुये सहस्रार में मैं तीन गुरुजनों की पूजा करता हूँ।259।

साक्षी तु सर्वभूतानां ज्ञानात्मा परिकीर्तितः।
आत्मान्तरात्मपरमज्ञानात्मानः प्रकीर्तिताः।।260।।

सकलभूतों का साक्षीरूप ज्ञानात्मा को गुरु कहा गया है। जिसे इन तीन रूपों में कहा गया है - आत्मा, अन्तरात्मा और परमज्ञानात्मा।260।

अब **अन्तर्याग** का विधि बताते हैं-

एतद्रूपं हि चित्कुण्डं चतुरस्रं विभावयेत्।
आनन्दमेखलारभ्यं बिन्दुत्रिवलयान्वितम्।।261।।
अर्धमात्रायोनिरूपं ब्रह्मानन्दमयं सदा।
परदेवमये सर्वज्ञानदीपविजृम्भिते ।।262।।

अपने हृदय में ज्ञानस्वरूप ही चैतन्यात्मक एक चौकोर कुण्ड की भावना करें। उसके मेखलायें आनन्द से ही आरम्भ कर तीन बिन्दु युक्त अर्धमात्रा ही इस हवनकुण्ड की योनि है। ऐसा ब्रह्मानन्दमय चित्कुण्ड है। जिसमें परदेवता स्वरूप सर्वज्ञानात्मक अग्नि के रूप में आप ही प्रज्ज्वलित हैं।261-262।

ब्रह्माहमस्मि तद्बिन्दुं कुण्डलिन्यां जुहोम्यहम्।
हृच्चक्रस्थां महादेवीं महात्रिपुरसुन्दरीम्।।263।।

'अहं ब्रह्मास्मि' मन्त्र से मैं उस बिन्दु को हृदयचक्र में स्थित महादेवी व महात्रिपुरसुन्दरी रूपा कुण्डलिनी में हवन करता हूँ।263।

जुहुयात्सन्निभे वह्नौ प्रपंचाहुतिमुत्कटम्।
शब्दाख्यमातृकारूपमक्षवर्णविराजितम्।।264।।

सत्सदृश उस चिदग्नि में शब्दनामक मातृकाओं के स्वरूप अक्षरवर्णादि रूप में विराजमान प्रपंच रूपी उत्कट आहुति का हवन करें।264।

अक्षराणि हुतान्यत्र निःशब्दं ब्रह्म जायते।
कृत्याकृत्ये पापपुण्ये संकल्पनं च विकल्पनम्।।265।।
धर्माधर्मैः साधकेन्द्रो हविस्तेन प्रकल्पयेत्।
जुहुयाच्चित्स्वरूपाग्नौ मनुभिस्तेन याजकः।।266।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जब सकल अक्षरों का उस में हवन कर देंगे तब ब्रह्म निःशब्द हो जायेगा। उस स्थिति में कृत्य-अकृत्य, पाप-पुण्य, संकल्प-विकल्प, धर्म-अधर्म आदि सकल तत्त्वों में आहुति की भावना कर चित्स्वरूपात्मक अग्नि में साधकश्रेष्ठ यजमान मन्त्रों (उन्ही शब्दों के चतुर्थ्यन्त बना लें पूर्ववत्) से हवन करें।265-266।

मूलविद्यां ब्रह्मरूपां ध्यात्वा संविन्मयीं पराम्।
धर्माधर्महविर्दीप्त आत्माग्नौ मनसा स्रुचा।।267।।
सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम्।
अग्निजायान्वितो मन्त्रो मूलान्ते प्रकटीकृतः।।268।।

संविन्मयी ब्रह्मरूपा परा मूलविद्या का ध्यान करके धर्माधर्मरूपी हविष से दीप्त आत्माग्नि में सुषुम्ना रूपी मार्ग द्वारा मन रूपी स्रुचा से नित्य ही इन्द्रिय जन्य वृत्तियों को मूलमन्त्र के अन्त में स्वाहा को जोड़ने पर प्रकट मन्त्र को बोलते हुये मैं हवन करता हूँ।267-268।

नाभौ चैतन्यरूपाग्नौ हविषा मनसा स्रुचा।
ज्ञानप्रदीपिते नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम्।।269।।
वह्निजायान्वितो मन्त्रो मूलान्ते समुदाहृतः।

इसी प्रकार ज्ञानरूपी हविष के द्वारा प्रदीप्त नाभिस्थान में स्थित चैतन्यरूपी अग्नि में मन रूपी स्रुचा से नित्य ही इन्द्रिय जन्य वृत्तियों को मूलमन्त्र के अन्त में स्वाहा को जोड़कर प्रकट मन्त्र को बोलते हुये मैं हवन करता हूँ।269-270।

प्रकाशमक्षहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनी स्रुचा।।270।।
धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णमग्नौ जुहोम्यहम्।
अग्निजायान्वितो मन्त्रो मूलान्ते च महात्मना।।271।।

एवमेव महात्मा (महत् आत्मा अर्थात् महत्तत्व यानि बुद्धितत्त्व) रूपी हविष से दीप्त संविदग्नि में धर्माधर्मकला रूपी घी से पूर्ण ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय द्वारा उत्पन्न ज्ञान रूप प्रकाश में हविष भाव का अवलम्बन कर उस हविष को उन्मनी रूपी स्रुचा से मूलमन्त्र के अन्त में स्वाहा को जोड़ने पर प्रकट मन्त्र को बोलते हुये मैं हवन करता हूँ।।270-271।।

अन्तर्निरन्तरनिरिन्धनमेधमाने,
मायान्धकारपरिपन्थिनि संविदग्नौ।
कस्मिंश्चिदद्भुतमरीचिविकासभूमौ,
विश्वं जुहोमि वसुधादिशिवावसानम्।।272।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जुहुयान्मूलमन्त्रान्ते ब्रह्मप्राप्त्यै च साधकः।

किसी अद्भुत किरण का विकास रूपी भूमि परस्थापित माया और अन्धकार का विरोधी, जो भीतर निरन्तर विना ईन्धन के प्रदीप्त संविद् रूपी अग्नि में पृथिवी से शिव पर्यन्त संपूर्ण विश्व को हविष के रूप में भावित कर, उस हविष का मूल मन्त्र के अन्त में स्वाहा जोड़कर ब्रह्म प्राप्ति केलिये साधक हवन करें। 272-273।

निष्प्रपंचो यदा काले जायते ब्रह्मविन्नरः।।273।।
तदा संविन्मयः साक्षात्केवलं ब्रह्मरूपतः ।
अन्तर्होममनुः प्रोक्तः सर्वपापनिकृन्तनः।।274।।

इस प्रकार नित्य ही विश्वाहुति को स्वरूपाग्नि में हवन करते हुये जब साधक निष्प्रपंच भाव में स्थित होगा तब वह मनुष्य साधक ब्रह्मवित् अर्थात् संविन्मय केवल व साक्षात्ब्रह्मरूप हो जायेगा। सर्वपापों का नाशक यह अन्तर्याग की प्रक्रिया का मन्त्र यानि रहस्य बता दिया गया।273-274।

येनेदं ज्ञायते सर्वं समत्वेन च सर्वदा।
चन्द्रः सूर्यो यथा नित्यं नीरक्षीरेषु दृश्यते।।275।।
तद्वत् क्षीरस्य समता नीरक्षीरविभेदतः।
कर्दमे चन्दने भिन्नं न भवेदन्त्यजे द्विजे।।276।।

जिससे वह साधक सर्वदा इन सब का वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट रूप से जान लेता है जैसे स्वच्छ जल में सूर्य, चन्द्र आदि स्पष्ट दिखाई देते हैं। जीवन्मुक्त होने के कारण अन्तिम जन्मवाला वह साधक द्विज को दूध और पानी एवं कीचड़ और चन्दन में विद्यमान भेद से ऊपर उठकर जलत्वेन और पृथ्विवित्वेन सम दृष्टि प्राप्त हो जाती है।275-276।

अब **बहिर्याग** का विधि बताते हैं -

निरस्तमोहतिमिरां साक्षात्संवित्स्वरूपिणीम्।
नासापुटे पराकलामथ निर्गमयाम्यहम्।।277।।
समानयामि तां हस्ते त्रिखण्डकुसुमांजलौ ।
जगन्मातर्महादेवि महात्रिपुरसुन्दरि।।278।।

हे जगन्मातः!, हे महादेवि!, हे महात्रिपुरसुन्दरी! मोह रूपी अन्धकार पूर्णरूप से निरस्त है जिसमें ऐसी साक्षात्संवित्स्वरूपिणी पराकला स्वरूपा (बाहर पूजा हेतु बाहर श्रीयन्त्र में स्थापना करने के लिये) नासा पुट में प्राणशक्ति के रूप में विद्यमान आपको मैं बाहर लाता हूँ और हाथों पर स्थापित कर त्रिखण्ड मन्त्र से पुष्पांजलि देता हूँ।277-278।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुधाचैतन्यमूर्तिं ते कल्पयामि नमः शिवे।
अनेन मनुना देवियन्त्रे त्वां स्थापयाम्यहम्।।282।।

हे शिवे! अमृतमयी संविदात्मक मूर्ति की कल्पना करके नमस्कार करता हूँ। हे देवी! इस मन्त्र से (**सुधाचैतन्यमूर्तये नमः आनयामि स्थापयामि पूजयामि**) आपको मैं यन्त्र में स्थापित करता हूँ।279।

महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे ।
सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि।।280।।
देवेशि भक्तिसुलभे सर्वावरणसंयुते।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भव।।281।।
अनेन मन्त्रयुग्मेन त्वामत्रावाहयाम्यहम्।
कल्पयामि नमः पाद्यमर्घ्यं ते कल्पयाम्यहम्।।282।।

हे मातः!, हे परमेश्वरी! महापद्मों के वन में स्थित कारणानन्दस्वरूपिणी, सकलभूतों का हित केलिये आप कृपया यहां (इस श्रीयन्त्र) में पधारें, आप पधारें। हे देवेशी! भक्ति से सुलभ हैं तथा सर्वावरणों से युक्त हैं, ऐसे जो आप जब तक मैं पूजा करूँगा तब तक यहाँ सुस्थिर रहें। इन दो मन्त्रों से मैं आपका इस श्रीयन्त्र में आवाहन करता हूँ। (**ध्यान दें** - सकल उपचार श्रीयन्त्र में ही करना है लेकिन करते वक्त यह भावना करें की साक्षात् महात्रिपुरसुन्दरी जी ही वर्णित प्रकार से सेवा स्वीकार कर रही है।) मैं आप के लिये पाद्य की कल्पना करता हूँ और नमस्कार करता हूँ तथा अर्घ्य की कल्पना करता हूँ और नमस्कार करता हूँ।280-282।

पादुके परिधायाम्ब त्रिपुरे रत्ननिर्मिते।
सुगन्धतैलाभ्यंगं च मज्जशाला प्रवेशनम्।।283।।

हे अम्ब!, हे त्रिपुरे! रत्नों से निर्मित पादुकाओं को धारण कर सुगन्धित तेलों से अभ्यंजन करने (शरीर में तेल लगाने)के लिये मालिश कक्ष में प्रवेश करें।283।

स्नानमण्डपमायाहि स्नानार्थं शक्रदिग्गतम्।
आगच्छ निर्मलं याम्यमलंकारस्य मण्डपम्।।284।।

पूर्व दिशा में स्थित स्नान मण्डप में स्नान केलिये आप पधारें, (स्नान करने के बाद) आप दक्षिण दिशा में स्थित निर्मल अलंकार करने के मण्डप में आयें।284।

पादुकायुग्ममारुह्य पंचवाद्यपुरःसरम् ।
यागमण्डपमायाहि परिवारगणैः सह।।285।।

पादुका द्वय को पहनकर पांच प्रकार के वाद्यों का नाद घोष पूर्वक अपने परिवारगण सहित याग (पूजा) मण्डप में पधारें।285।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(संक्षेप में कहे गये स्नान कर्म रूपी उपचार को विस्तार रूप से कहते हैं। -)

कल्पयामि नमस्तस्मिन्मणिपीठोपवेशनम्।
दिव्यस्नानीयमीशानि गृहाणोद्वर्तनं शुभम्।।286।।

उस स्नान मण्डप में मणियों से बने हुये पीठ पर आपके विराजने की कल्पना करता हूँ और नमस्कार करता हूँ। हे ईशानी! स्नान केलिये अत्यन्त शुभ एवं दिव्य स्नानीय उद्वर्तन को ग्रहण करें।286।

गृहाणोष्णोदकस्नानं कल्पयामि नमस्तव।
हेमकुम्भच्युतैस्तीर्थैः कल्पयाम्यभिषेचनम्।।287।।

स्नान के लिये आप गरम जल ग्रहण करें, आपको नमस्कार करता हूँ। स्वर्णकलशों से च्युत तीर्थो के जल से अभिषेक की मैं कल्पना करता हूँ।287।

कल्पयामि नमस्तुभ्यं धौतेन परिमार्जनम्।
बालभानुप्रतीकाशं दुकूलपरिधानकम्।।288।।

शुभ्र वस्त्र से शरीर को पोछने की कल्पना करता हूँ और नमस्कार करता हूँ। बालसूर्य का रंग के सदृश रंगवाले वस्त्रों को पहनाने की कल्पना करता हूँ।288।

अरुणेन दुकूलेनोत्तरीयं कल्पयामि ते।
प्रवेशनं कल्पयामि तत्रालेपनमण्डपम्।।289।।

आप केलिये अरुण रंग के उत्तरीय वस्त्र की कल्पना करता हूँ। तत्पश्चात् आलेपन मण्डप में आपके प्रवेश की मैं कल्पना करता हूँ।289।

नमस्ते कल्पयाम्यत्र मणिपीठोपवेशनम्।
अष्टगन्धैः कल्पयामि सर्वांगेषु विलेपनम्।।290।।

आलेपन मण्डप में मणिपीठ पर विराजने की मैं कल्पना करता हूँ और नमस्कार करता हूँ। अष्टगन्ध से सर्वांग में विलेपन की मैं कल्पना करता हूँ।290।

कालागरुमहाधूपस्तव केशभारस्य हि।
मल्लिका मालती जाती चम्पकादिमनोरमैः।।291।।
रचिताः कुसुमैर्मालाः कल्पयामि नमस्तव।
प्रवेशनं कल्पयामि नमो भूषणमण्डपम्।।292।।

आपके लम्बे केशों को कालागरु आदि ओषधियों से बने धूप का धुआँ से सुखाता हूँ और मल्लिका, मालती, जाती, चम्पक आदि सुगन्धी मनोरम पुष्पों से रचित मालाओं से अलंकृत करने की कल्पना करता हूँ और नमस्कार करता हूँ। वहाँ से भूषण मण्डप में आपके प्रवेश की कल्पना करता हूँ और नमस्कार करता हूँ।291-292।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्नानमण्डपमायाहि स्नानार्थं शक्रदिग्गतम्।
आगच्छ निर्मलं याम्यमलंकारस्य मण्डपम्।।293।।
पादुकायुग्ममारुह्य पंचवाद्यपुरः सरम्।
यागमण्डपमायाहि परिवारगणैः सह।।294।।

(ये दोनें श्लोकों की यहाँ 284-285 का पुनरावृत्ति निष्प्रयोजन होने से उपेक्ष्य हैं।)

उपवेशं रत्नपीठे तत्र ते कल्पयाम्यहम्।
ततः सीमन्तसिन्दूरं ततस्तिलकमुत्तमम्।।295।।
नवमाणिक्यमुकुटं तच्चन्द्रशकलं ततः।
कालांजनं कल्पयामि पालीयुगलमुत्तमम्।।296।।
मणिकुण्डलयुग्मं ते नासाभरणमीश्वरि।
ते कल्पयामि त्रिपुरे ललिताऽधरयावकम्।।297।।

आभूषण मण्डप में रत्नपीठ पर बैठाने की मैं कल्पना करता हूँ। तदनन्तर क्रमशः सीमन्तसिन्दूर और श्रेष्ठ तिलक से विभूषित करता हूँ। नवमाणिक्य से बने मुकुट और चांदी से बने दूज के चन्द्र जैसा अलंकार को मैं आप केलिये कल्पना करता हूँ। आप के आँखों के लिये काला (अंजन) काजल और पालीयुगल (अग्रिम बालों से कान तक के आभूषण) तथा कानों केलिये मणिमय कुण्डल द्वय की मैं कल्पना करता हूँ। हे ईश्वरी!, हे त्रिपुरे! नाक पर नासाभरण सहित आप के अत्यन्त ललित (सुन्दर) होंठ के नीचे का यावक नामक आभूषण की कल्पना करता हूँ।295-297।

अथाभूषणं कण्ठे हेमचिन्ताकमुत्तमम्।
पदकं ते कल्पयामि महापदकमुत्तमम्।।298।।
कल्पयामि नमो मुक्तावलिमेकावलिं च ते।
छन्नवीरं च केयूरयुगलानां चतुष्टयम्।।299।।
वलयावलिमीशानि ऊर्मिकावलिमीश्वरि ।
कांचीदामकटिसूत्रं सौभाग्याभरणं च ते।।300।।

हे ईशानी!, हे ईश्वरी! तत्पश्चात् आपके कण्ठ में श्रेष्ठ मणियों से जड़े हुये श्रेष्ठ स्वर्णमय हार, सर्वश्रेष्ठ पदक और महापदक की कल्पना करता हूँ। मुक्तावली, एकावली, छन्नवीर, चार केयूरयुगलों की मैं कल्पना करता हूँ और नमस्कार करता हूँ। वलयावली, ऊर्मिकावली, कांचीदाम, कटिसूत्र और सौभाग्य आभरण की मैं कल्पना करता हूँ।298-300।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्रिपुरे पादकटकं कल्पये रत्ननूपुरम्।
पादांगुलीयकं तुभ्यं पाशमेकं करे तव॥301॥
अन्यस्मिन्नंकुशं देवि पुंड्रेक्षुधनुषं परे।
अपरे पुष्पबाणांश्च श्रीमन्माणिक्यपादुके॥302॥

हे त्रिपुरे! मैं आप केलिये आपके चरणों को अलंकृत करते हुये रत्नमय नूपुर, कड़ा अंगुलियों के अंगूठियों की कल्पना करता हूँ। हे देवी! आपके एक हाथ में पाश, दूसरे में अंकुश, तीसरे में गन्ने को धनुष के रूप में और चौथे में पुष्पबाणों से सुशोभित करता हूँ तथा चरणों को श्रीमन्माणिक्यपादुकाओं पर आसीन करता हूँ।301-302।

नवावरणदेवीभिर्महाचक्राधिरोहणम्।
कामेश्वरांकपर्यंक उपवेशनमुत्तमम्॥303॥

अब आप कृपा करके नौ आवरणों के देवियों सहित महाचक्र श्रीचक्र पर आरूढ़ होकर उत्तम कामेश्वर का अंक रूपी पर्यक पर बैठें हैं, मैं ऐसी कल्पना करता हूँ।303।

शेष उपचारों से पूजा-

सुधासवाख्यं चषकं तत आचमनीयकम्।
कर्पूरवीटिकां तुभ्यं कल्पयामि नमः शिवे॥304॥

हे शिवे! सुधासव नामक चषक प्रस्तुत कर आचमनीय देके कर्पूरवीटिका की कल्पना करता हूँ अर्थात् आपकी सेवा में समर्पित करता हूँ और नमस्कार करता हूँ।304।

आनन्दोल्लासवैलासहासं ते कल्पयाम्यहम्।
मंगलारार्तिक्यं देवि छत्रं ते कल्पयाम्यहम्॥305॥
ततश्चामरयुग्मं ते दर्पणं कल्पयाम्यहम्।
तालवृत्तं कल्पयामि गन्धं पुष्पं महेश्वरि॥306॥
धूपं दीपं च नैवेद्यं कल्पयामि नमस्तव।

हे देवी! आनन्द का उल्लास से जन्य विलास और हास की मैं कल्पना करता हूँ तदनन्तर मंगल आरती को दर्शाकर आप केलिये छाता की कल्पना करता हूँ। तत्पश्चात् चामरयुगल और दर्पण की मैं कल्पना करता हूँ। हे महेश्वरी! तालवृत्त, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य को क्रमशः कल्पना कर समर्पण करके शिरःसाष्टांग नमस्कार करता हूँ।305-307।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथाहं बैन्दवे चक्रे सर्वानन्दमयात्मिके ।।307।।
रत्नसिंहासने रम्ये समासीनं शिवप्रियाम्।
सृष्टिक्रमेण ध्यायामि महात्रिपुरसुन्दरि ।।308।।

हे महात्रिपुरसुन्दरी! सर्वानन्दमयात्मक बैन्दवचक्र में अत्यन्त रमणीय सिंहासन पर विराजमान शिवप्रिया को मैं सृष्टिक्रम से ध्यान करता हूँ।307-308।

23. अथ त्रैलोक्यमोहनचक्रे प्रथमावरणार्चनम् = त्रैलोक्यमोहन चक्र में प्रथम आवरण की पूजा-

अथ वक्ष्ये महेशानि प्रथमावरणार्चनम्।
त्रैलोक्यमोहनं चक्रं सृष्टिसृष्ट्यात्मकं खलु।

हे महेशानी! अब मैं सृष्टिसृष्ट्यात्मक त्रैलोक्यमोहन नामक चक्र रूपी प्रथम आवरण की पूजा पद्धति कहता हूँ।309।

अथ प्राथमिके देवि चतुरस्रे तवेश्वरि।
त्रैलोक्यमोहने चक्रे बाह्यरेखां समाश्रितः ।।310।।
सामान्यपात्रसुधया पूजयेत्सिद्धिदेवताः।
चतुरस्रान्तरेखायां पश्चिमादिषु वै क्रमात् ।।311।।

हे देवी!, हे ईश्वरी! सर्वप्रथम आपके चतुरस्रात्मक त्रैलाक्यमोहन नामक चक्र में स्थित बाहर की रेखा को आश्रित कर अर्थात् चतुरस्र के अन्तिम रेखा पर सिद्धिदेवताओं का पश्चिमादि क्रम से सामान्यार्घ्यपात्रस्थ जल से पूजा करें।310-311।

द्वारेषु वायुकोणादिकोणेषु ह्यथ ऊर्ध्वतः।
दक्षिणावर्तयोगेन यजेत्सर्वार्थसिद्धये ।।312।।

द्वारों में, वायव्यादि दिक्कोणों में और ऊर्ध्व में सर्वार्थसिद्धि केलिये प्रदक्षिणा के क्रम से (दक्षिणावर्त = शंख) शंखस्थ जल से पूजन करें।312।

23.1 अन्तिम रेखा (बाहरी) पूजन विधि -

चतुरस्रान्तरेखातः बहिरेव यजेत्सुधीः।
उत्तरे शरभीदेवी पूर्वद्वारे सुदर्शनः।
अघोरो दक्षिणद्वारे वनदुर्गा च पश्चिमे।।313।।
गणपतिः क्षेत्रपालश्च दक्षिणपूर्वयोस्तथा।
पश्चिमे योगिनी चैव बटुकस्त्वुत्तरे।।314।।

चतुरस्र के अन्तिम रेखा से बाहर ही बुद्धिमान् साधक उत्तरद्वार में शरभीदेवी,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्वद्वार में सुदर्शन, दक्षिणद्वार में अघोर और पश्चिमद्वार में वनदुर्गा, तथा क्रमशः दक्षिण और पूर्व में गणपति और क्षेत्रपाल, पश्चिम में योगिनी और उत्तर में बटुक का पूजन करें।313-314।

इन्द्राग्नियमाश्चैव निर्ऋतिर्वरुणस्तथा ।
वायुः सोमस्तथैशानः ब्रह्मानन्तौ तथैव च।।315।।

पूर्व, अग्नि, दक्षिण, नैर्ऋत्य और पश्चिम में क्रमशः वायु, सोम, ईशान, ब्रह्मा और अनन्त का पूजन करें।315।

वज्रशक्तिस्तथा दण्डं खड्गपाशांकुशाः गदा।
त्रिशूलं पद्मचक्रे च पूज्या चायुधदेवताः।।316।।

वज्र, शक्ति, दण्ड, खड्ग, पाश, अंकुश, गदा, त्रिशूल, पद्म और चक्र - इन आयुधों के अभिमानी देवताओं का क्रमशः दस दिशाओं में पूजन करें।316।

आम्नायनायिका पूज्या द्वारेषु च यथाविधि।
द्वारे वै पश्चिमे पूज्या नायिका घोरकुब्जिका।।317।।
उत्तरे सिद्धलक्ष्मीश्च पूर्वे चोन्मनी तथा।
आद्याकाली दक्षिणे स्यात्पूज्या द्वारांगदेवताः।।318।।

तथा यथाविधि द्वारों में आम्नायनायिकाओं के पूजन इस क्रम से करना है। पश्चिमद्वार में घोरकुब्जिका नामक नायिका, उत्तरद्वार में सिद्धलक्ष्मी, पूर्वद्वार में उन्मनी, दक्षिणद्वार में आद्याकाली - इनका पूजन करके द्वारांगदेवताओं का भी पूजन करें। 317-318।

नैर्ऋत्ये चैव संपूज्या तिरस्करणीति वै शुभा।
चामुण्डा भद्रकालीति कथिता द्वारदेवता।।319।।
आग्नेये वनदुर्गा च महालक्ष्मीति विश्रुता।
कामरतिस्तथैशाने महाकालीति वै शुभा।।320।।
वसन्तप्रीतिर्वायव्ये महासरस्वती तथा।

नैर्ऋत्य कोण में कल्याणकारी तिरस्करणी पूज्या है, चामुण्डा और भद्रकाली को द्वारदेवता कहा गया है। आग्नेय कोण में वनदुर्गा और महालक्ष्मी प्रसिद्ध द्वारदेवता हैं, ईशान कोण में कामरति और कल्याणकारी महाकाली द्वारदेवता हैं तथा वायव्य कोण में वसन्तप्रीति और महासरस्वती द्वारदेवता हैं।319-321।

द्वारपार्श्वेषु पूज्या हि निधिदेवता वै क्रमात्।।321।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्वादौ दक्षपार्श्वे तु वामपार्श्वे क्रमात्ततः।
कच्छपश्च मुकुन्दश्च नन्दो नीलनिधिस्तथा।।322।।
शंखपद्ममहापद्ममकराः निधयस्तथा ।
अणिमा गरिमासिद्धिः लघिमा महिमा तथा।।323।।
ईशित्वं च वशित्वं च प्राकाम्यं मुक्तिरेव च।
इच्छाप्राप्तिः सर्वकामा मोक्षसिद्धिः क्रमात्प्रिये।।324।।

द्वार के बायें और दाहिने दोनों बगल में निधिदेवताओं का क्रमशः पूजन करें। वह भी पूर्वादि के बायाँ में पहले फिर दाहिने में - इस क्रम से पूजा करनी है। पूर्व में कच्छप और मुकुन्द, दक्षिण में नन्द और नील, पश्चिम में शंख और पद्म, उत्तर में महापद्म और मकर। हे प्रिये! इसी प्रकार सिद्धियों को पूजना है, वे हैं - अणिमा, गरिमा, लघिमा, महिमा, ईशित्व, वशित्व, प्राकाम्य, मुक्ति, इच्छाप्राप्ति और सर्वकामा मोक्षसिद्धि।321-324।

अभीष्टसिद्धिं मे देवि शरणागतपालिके।
भक्त्या समर्पये तुभ्यमिदमावरणार्चनम्।।326।।

(ध्यान दें - मूल पुस्तक के विपरीत क्रम से हम यहाँ श्लोक को रखें हैं, क्योंकि यह प्रक्षिप्त है। कारण, यह श्लोक चक्र के तीनों रेखा की पूजा के अन्त में नहीं है और मध्य रेखा सम्बन्धी 325 और 327 के बीच में इसका औचित्य भी नहीं है। अतः यह उपेक्षणीय है। श्लोकार्थ - हे देवी!, हे शरणागत भक्तों का पालन करनेवाली! मुझे मेरे अभीष्ट की सिद्धि प्रदान करें और आपके चरणों में इस आवरण की पूजा को समर्पित करता हूँ, स्वीकार करें।) इस प्रकार अन्तिम रेखा की पूजा समाप्त हुई।

23.2 मध्यरेखा पूजा विधि -

सद्यः सन्तप्तहेमाभाः पाशांकुशधराः शुभाः।
महाभरणरत्नानि ससुवर्णानि वै निधीन्।।327।।
प्रयच्छन्त्यः साधकेभ्यः पद्मयुग्मधरास्तथा।
त्रैलोक्यमोहनचक्रे मध्यरेखां समाश्रिताः।।328।।

त्रैलोक्यमोहनचक्र के मध्यरेखा में सन्तप्त सोने के रंग सदृश रंगवाली, चार हाथों में कमलद्वय तथा पाश और अंकुश को धारण की हुयी, कल्याणकारिणी देवियाँ साधकों को स्वर्ण पर जड़े हुये महाभरणरत्नों को देती हुयी आश्रित हैं। 325 एवं 327।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तप्तजाम्बूनदाभासाः पंचाशत्पीठदेवताः ।
पाशांकुशाभयवरकराः प्रकटरूपकाः।।328।।

तपे हुये जम्बूद्वीप के सदृश रंगवाले तथा पाश-अंकुश-अभय-वरमुद्रा युक्त हाथों से शोभायमान प्रकटरूप 50 पीठों के देवता हैं।328।

ताः पूजयित्वा च ततो ब्राह्म्याद्याः सिद्धिवद्यजेत्।
पूर्वद्वारादिद्वारेषु शुचिकोणादिषु क्रमात्।।329।।

उनका पूजन करके पूर्वादि द्वार और ईशानादि कोणों में सिद्धि देवियों के समान ब्राह्मी आदि 8 देवियों का 8 भैरवों के साथ पूजन करें।329। वे क्रमशः इस प्रकार हैं -

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा।
वाराह्यैन्द्री च चामुण्डा महालक्ष्मीः क्रमात्प्रिये।।330।।
असितांगी रुरुश्चण्डः क्रोधश्चोन्मत्तसंज्ञकः।
कपाली भीषणश्चैव संहारश्चाष्टभैरवाः।।331।।

8 देवियाँ - हे प्रिये! ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐन्द्री, चामुण्डा और महालक्ष्मी क्रम से हैं। 8 भैरव - असितांगी, रुरु, चण्ड, क्रोध, उन्मत्त, कपाली, भीषण और संहार-नाम से हैं।।330-331।

कामरूपं च मलयं कौह्लाख्यं च कुलान्तकम्।
चोहारपीठं देवेशि जालन्धरमतः परम्।।332।।
उड्यानं देविकोट्टं च पीठाष्टकमुदाहृतम्।

हे देवेशी! कामरूप, मलय, कौह्ल, कुलान्तक, चोहार, जालन्धर, उड्यान और देविकोट्ट - 8 पीठों के नाम हैं, ऐसे कहा गया है।332-333।

मातरो भैरवांकस्थाः स्मेरवक्त्राः मदालसाः।।333।।
ब्राह्मीप्रभृतयो दिव्या योगिन्यः प्रकटाः शुभाः।
पाशांकुशधराः सर्वाः क्रमेण दधतीः स्मरेत्।।334।।
विघ्नं शूलं च शक्तिं च चक्रं चैव गदां ततः।
वज्रं वैडूर्यं मालां च पद्मं च वरदं तथा।।335।।

ब्राह्मी आदि देवियों का ध्यान इस प्रकार करें - 8 भैरवों के अंकस्थ ब्राह्मी आदि दिव्ययोगिनियाँ कल्याणकारी व प्रकटरूपिणी हैं, हसमुखी तथा प्रसन्नमुखी हैं, सभी पाश और अंकुश को धारण की हुयीं हैं। तथा क्रमशः इन्हें भी धारण किये हुयें हैं - विघ्न, शूल, शक्ति, चक्र, गदा, वज्र, वैडूर्य, माला, पद्म और वरदमुद्रा।333-335।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भैरवास्त्वसितांगाद्याः पीठाष्टकनिवासिनः।
शूलं कपालं प्रेतं च बिभ्राणाः क्षुद्रदुन्दुभिम्।।336।।
गजत्वगम्बरा भीमाः कुटिलालकशोभिनः।
पाशांकुशकरा भीतिकराः पीठाष्टकदेवताः।।337।।

8 पीठों के निवासी असितांगादि भैरव जो 8 पीठों के देवता हैं वे हाथी के चर्म को वस्त्र के रूप में धारण किये हुये हैं, उनके केश कुटिल व सुन्दर हैं। उनके हाथ शूल, कपाल, प्रेत, क्षुद्रदुन्दुभि, पाश, अंकुश, वरमुद्रा और अभयमुद्रा से युक्त हैं।336-337।

इस प्रकार मध्यरेखा की पूजा समाप्त हुआ।

23.3 अन्त्य और मध्य की अपेक्षा तृतीय अर्थात् आदि रेखा (भीतर में स्थित) की पूजा विधि -

तत्र जाम्बूनदप्रख्या योगिन्यः प्रकटाः शुभाः।।338।।
एवं तृतीयरेखायां सिद्धिवत्पूजयेत्प्रिये।
मुद्रादेवीप्रयत्नेन सर्वसंक्षोभणादिकाः ।।339।।

हे प्रिये! तीसरी रेखा में जम्बूद्वीप देश के भूमि का रंग के सदृश रंग से युक्त कल्याणकारिणी सर्वसंक्षोभणादि जो मुद्रादेवियाँ हैं उन प्रकटयोगिनियों की पूजा प्रयत्नपूर्वक सिद्धियों की पूजा के समान करें।338-339।

सर्वसंक्षोभिणी चैव सर्वविद्राविणी तथा।
सर्वाकर्षणिका सर्ववशीकरणिका तथा।।340।।
सर्वोन्मादिनिका चैव ततः सर्वमहांकुशा।
सर्वखेचरिका सर्वबीजमुद्रा तथैव च।।341।।
सर्वयोनिस्ततः सर्वत्रिखण्डा परिकीर्तिता।

सर्वसंक्षोभिणी, सर्वविद्राविणी, सर्वाकर्षणिका, सर्ववशीकरणिका, सर्वोन्मादिनिका, सर्वमहांकुशा, सर्वखेचरिका, सर्वबीजमुद्रा, सर्वयोनि और सर्वत्रिखण्डा - ये हैं सर्वसंक्षोभिण्यादि मुद्रादेवियाँ जिन्हें प्रकटयोगिनियाँ भी कहा जाता है।340-341।

त्रिपुरा चोन्मनी पूज्ये चक्राम्नायनायिके।
यथोपचारैराराध्य चतुष्पीठादिदेवताः।।342।।

त्रैलोक्यमोहन चक्र के चक्रनायिका हैं- त्रिपुरा और उन्मनी। यथोपलब्ध उपचारों से इनकी पूजा करें तथा चारपीठ आदि के देवताओं का भी यथासंभव पूजन करें।342।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चतुरस्रे तु पूर्वादि श्रीपात्रामृतबिन्दुभिः ।
श्रीविद्यैकाक्षरी चैव महालक्ष्मीस्तथैव च ।।343।।
त्रिशक्तिसर्वसाम्राज्यलक्ष्मीति पंच कीर्तिताः ।
चक्राग्रे वै प्रपूज्येत अणिमासिद्धिरेव च ।।344।।

पूर्वादि क्रम से चतुरस्र पर श्रीपात्र (विशेषार्घ्यपात्र) के अमृतबिन्दु (अमृतमय जल) से श्रीविद्या, एकाक्षरी, महालक्ष्मी, त्रिशक्ति और सर्वसाम्राज्यलक्ष्मी - कथित इन 5 देवियों का पूजन करें तथा चक्र के अग्रभाग में अणिमा आदि सिद्धियों का पूजन करें।343-344।

पाशांकुशकरारक्त - निजायुधकरद्वयाः ।
सर्वसंक्षोभणीरूपा चार्वाकदर्शनं शुभम् ।।345।।
यजेद्यथोपचारैश्च सायुधाः देवताः सदा।
तप्तचामीकराभासा योगिन्यः प्रकटाः शुभाः ।।346।।
पाशांकुशोत्पलाभीतिपाणयो रक्तविग्रहाः ।
पंचोपचारैराराध्य मुद्रामाद्यां च दर्शयेत् ।।347।।

इस चक्र में शुभ चार्वाकदर्शन का पूजन करें। पाश एवं अंकुश को धारण किये हुये दो हाथोंवाले सर्वसंक्षोभिणीरूपा देवी तथा चक्रस्थ सायुध देवताओं का यथोपलब्ध उपचारों से पूजन करें। तपे हुये सोने के सदृश आभावाली, पाशांकुशकमल और अभय को हाथों में धारण की हुई, रक्तरंग के शरीरवाली प्रकटयोगिनियों का पंचोपचारों से पूजन करके आद्यामुद्रा अर्थात् सर्वसंक्षोभिणी मुद्रा को दर्शायें।345-347।

एताः प्रकटयोगिन्यश्चतुरस्रे व्यवस्थिताः ।
त्रैलोक्यमोहिनीचक्रे समुद्राः सायुधास्तथा ।।348।।
सवाहनाश्च सपरिवाराश्चैव ससिद्धयः ।
सांगोपांगाश्च सर्वोपचारैः संपूजितास्तथा ।।349।।
तर्पिताः सन्त्विति वदेज्जलं तत्र विनिक्षिपेत् ।
हृदये प्रणमेद्भक्त्या त्रिपुरां मनसि स्थिताम् ।।350।।

त्रैलोक्यमोहनचक्र नामक चतुरस्र में ये प्रकटयोगिनी देवियाँ जो व्यवस्थित हैं वे समुद्रा सायुध सवाहन सपरिवार ससिद्धि सांगोपांग सर्वोपचारों से संपूजित हुये, वे सब तृप्त होवें - ऐसे बोलकर थोड़ा जल छोड़ें। तत्पश्चात् भक्ति से मन में स्थित त्रिपुरा को हृदय मे प्रणाम करें।348-350।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभीष्टसिद्धिं मे देहि त्रिपुरे देवपूजिते।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।351।।
इत्युच्चार्य महादेव्यै दद्यात्पुष्पांजलिं ततः।
इति ते कथितं भद्रे प्रथमावारणार्चनम्।।352।।

हे देवताओं से पूजित त्रिपुरे!, हे भद्रे! मुझे मेरे अभीष्ट दें और भक्ति से मेरे द्वारा आप केलिये समर्पित प्रथमावरण की पूजा को ग्रहण करें - ऐसे कहकर महादेवी केलिये पुष्पांजलि दें। इस प्रकार तुम्हारे लिये मेरे द्वारा प्रथमावरणार्चन कह दिया गया।351-352।

24. अथ त्रैवर्गसाधकचक्रे द्वितीयावरणार्चानम् = त्रैवर्ग साधक चक्र में द्वितीय आवरण की पूजा-

अथ वक्ष्ये महेशानि द्वितीयावरणार्चनम्।
त्रैवर्गसाधके चक्रे ब्रह्माण्डसृष्टिके ननु।।353।।

हे महेशानी! अब मैं ब्रह्माण्डसृष्टिपरक त्रैवर्गसाधक नामक चक्र रूपी द्वितीय आवरण की पूजा पद्धति कहता हूँ।353।

कालरात्रिश्च खातीता गायत्रीं तदनन्तरम्।
घण्टाधारिणिका चैव ततो ङार्णात्मिका तथा।।354।।
चामुण्डा चैव छाया च जया झंकारिणी तथा।
ञार्णात्मिका टंकहस्ता ततष्ठंकारिणी तथा।।355।।
डामरी चैव ढंकारिणी णंकारी तामसी ततः।
स्थान देवी च दाक्षायण्यथ धात्री च नन्दिका।।356।।
पार्वती चैव फट्कारी बन्धिनी भद्रकालिका।
महामाया च शशिनी षण्डा चैव सरस्वती।।357।।
ततो हंसवती पूज्या सौभाग्यहेतवे सदा।
यथाक्रमं विधानेन पूजनीयाः प्रयत्नतः।।358।।

कालरात्रि, खातीता, गायत्री, घण्टाधारिणिका, ङार्णात्मिका, चामुण्डा, छाया, जया, झंकारिणी, ञार्णात्मिका, टंकहस्ता, ठंकारिणी, डामरी, ढंकारिणी, णंकारी, तामसी, स्थानदेवी, दाक्षायणी, धात्री, नन्दिका, पार्वती, फट्कारी, बन्धिनी, भद्रकालिका, महामाया, शशिनी, षण्डा, सरस्वती और हंसवती - सौभाग्य प्राप्ति केलिये इन देवियों का यथाक्रम विधान से प्रयत्नपूर्वक सदा पूजन करें।354-358।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अमृताकर्षिणीन्द्राणी चेशान्युमोर्ध्वकेशिनी।
ऋद्धिदा च तथा ऋषा लृकारा लृषिका तथा।।359।।
एकपादा तथैश्वर्या ओंकारा चौषधात्मिका।
अम्बिका चाक्षरात्मा च विश्रुताः शक्तयः क्रमात्।।360।।
कामेश्वरी महानित्या ततो वै भगमालिनी।
नित्यक्लिन्ना महानित्या भेरुण्डा वह्निवासिनी।।361।।
महावज्रेश्वरी नित्या शिवदूती तथैव च।
त्वरिता च महादेवी ततो वै कुलसुन्दरी।।362।।
विमला नीलपताका च विजया सर्वमंगला।
ज्वालामालिन्यथ ततश्चित्रा त्रिपुरसुन्दरी।।363।।
महानित्या ललिता च चक्रेशी त्रिपुरेशिनी।
आम्नायनायिका चैव पूज्या महोन्मनी शुभा।।364।।

अमृता, आकर्षिणी, इन्द्राणी, ईशानी, उमा, ऊर्ध्वकेशिनी, ऋद्धिदा, ऋषा, लृकारा, लृषिका, एकपादा, ऐश्वर्या, ओंकारा, औषधात्मिका, अम्बिका और अक्षरात्मा – ये शक्तियाँ इस चक्र में क्रमशः विश्रुत हैं । कामेश्वरी, महानित्या, भगमालिनी, नित्यक्लिन्ना, महानित्या, भेरुण्डा, वह्निवासिनी, महावज्रेश्वरी, नित्या, शिवदूती, त्वरिता, महादेवी, कुलसुन्दरी, विमला, नीलपताका, विजया, सर्वमंगला, ज्वालामालिनी, चित्रा, त्रिपुरसुन्दरी, महानित्या, ललिता, चक्रेशी, त्रिपुरेशिनी और कल्याणकारी महोन्मनी सहित आम्नायनायिकाओं का भी पूजन करें।359-364।

पंचकामदुघा चैव पूजनीया यथाविधि।
श्रीविद्यामथ पीठेशी सुधासूरमृतेश्वरी ।।365।।
अन्नपूर्णेति विख्याता पंचकामदुघा क्रमात्।
पूजयित्वा कामदुघाः पंच सर्वसमृद्धये।366।।

पंचकामदुघाओं का भी यथाविधि पूजन करें। श्रीविद्या, पीठेशी, सुधासू, अमृतेश्वरी, अन्नपूर्णा क्रम से पंचकामदुघा विख्यात हैं। सब प्रकार के समृद्धि की प्राप्ति केलिये इन पंचकामदुघाओं का पूजन करके।365-366।

त्रैवर्गसाधनं चक्रं पशुबुद्धिविनाशनम्।
त्रैवर्गसाधने चक्रे समुदाः सायुधास्तथा।।367।।
सवाहनाः सपरिवारास्तथैव च ससिद्धयः।
सांगोपांगैश्चोपचारैः सर्वाः संपूजितास्तथा।।368।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation

पशुबुद्धि का विनाशक है त्रैवर्गसाधनचक्र, ऐसी इस त्रैवर्गसाधनचक्र में समुद्रा सायुध सवाहन सपरिवार ससिद्धि सांगोपांग सर्वोपचारों से ये सब संपूजित हुये।367-368।

तर्पिताः सन्त्विति वदेज्जलं तत्र विनिक्षिपेत्।
भुवनेशी प्रधाना च गरिमासिद्धिरेव च।।369।।
महायोनीति मुद्रां च मातृकायोगिनीं तथा।
स्मार्तं च दर्शनं पुण्यं कण्ठे च प्रणमेत्सदा।।370।।
अभीष्टसिद्धिं मे देहि त्रिपुरे देवपूजिते।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।371।।
इत्युच्चार्य महादेव्यै दद्यात्पुष्पांजलिं ततः।

वे सब तृप्त होवे - ऐसे बोलकर थोड़ा जल छोड़ें। इस चक्र की प्रधान देवी भुवनेशी, गरिमासिद्धि, महायोनिमुद्रा, मातृकायोगिनी और पुण्यस्वरूप स्मार्तदर्शन इन से विशिष्ट इस आवरण का विशिष्ट स्वरूप का ध्यान करके भक्ति से मन में स्थित भुवनेशी को कण्ठ में प्रणाम करें। हे देवताओं से पूजित त्रिपुरे!, हे भद्रे! मुझे मेरे अभीष्ट दें और भक्ति से मेरे द्वारा आप केलिये समर्पित द्वितीयावरण की पूजा को ग्रहण करें - ऐसे कहकर महादेवी केलिये पुष्पांजलि दें।369-371।

25. अथ सर्वाशापरिपूरकचक्रे तृतीयावरणार्चनम् =सर्वाशापरिपूरक चक्र में तृतीय आवरण की पूजा-

अथ वक्ष्ये महेशानि तृतीयावरणार्चनम्।
सर्वाशापूरकं चक्रं सृष्टिस्थित्यात्मकं खलु।।372।।

हे महेशानी! अब मैं सृष्टिस्थित्यात्मक सर्वाशापूरक नामक चक्र रूपी तृतीय आवरण की पूजा पद्धति कहता हूँ।372।

सामान्यपात्रसुधया पश्चिमादिक्रमेण तु।
ततः षोडशपत्रेषु कामाकर्षणिका यजेत्।।373।।

सामान्यार्घ्यपात्र का अमृतमय जल से पश्चिमादि क्रम से 16 पत्रों में कामाकर्षणिका आदि का पूजन करें।373।

कामाकर्षणिका चैव बुद्ध्याकर्षणिका तथा।
अहंकाराकर्षणी च शब्दाकर्षणिका तथा।।374।।
स्पर्शाकर्षणिका चैव रूपाकर्षणिका तथा।
रसाकर्षणिका चैव गन्धाकर्शणिका तथा।।375।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चित्ताकर्षणिका चैव धैर्याकर्षणिका तथा।
स्मृत्याकर्षणिका चैव नामाकर्षणिका तथा।।376।।
बीजाकर्षणिका चैवामृताकर्षणिका तथा।
आत्माकर्षणिका चैव शरीराकर्षणी तथा।।377।।

कामाकर्षणिका, बुद्ध्याकर्षणिका, अहंकाराकर्षणिका, शब्दाकर्षणिका, स्पर्शाकर्षणिका, रूपाकर्षणिका, रसाकर्षणिका, गन्धाकर्षणिका, चित्ताकर्षणिका, धैर्याकर्षणिका, स्मृत्याकर्षणिका, नामाकर्षणिका, बीजाकर्षणिका, अमृताकर्षणिका, आत्माकर्षणिका और शरीराकर्षणिका - चक्र के पंखुड़ियों में स्थित इन देवियों का पूजन यथाविधि करें।374-377।।

त्रिपुरेशी च चक्रेशी अन्नपूर्णेश्वरी तथा।
षोडशारे तु पूर्वादि श्रीपात्रामृतबिन्दुभिः।।378।।
पूज्या च पंचकोशाम्बा यथाशास्त्रं विधानतः।
श्रीविद्या च परं ज्योतिः परनिष्कलशाम्भवी।।379।।
अजपामातृका चेति पंचकोशाः प्रकीर्तिताः।
स्वरवर्णा रक्तवर्णाः स्रवत्पीयूषविग्रहाः।।380।।
पाशांकुशसुधापूर्ण - काश्मीरिघटधारकाः।

(पाशांकुशधरा पूर्णकाश्मीरिघटदानदाः - इति पूर्वार्धस्य पाठभेदः।)

(कामाकर्षिणिकाद्याश्च योगिन्यो गुप्तसंज्ञकाः।
कलाः षोडशरूपाश्च चन्द्रमण्डलमध्यगाः।।377क।।
ततः पूज्या प्रयत्नेन नित्या निर्मलबुद्धिदाः।
सत्या च सर्वभूतस्था रत्नगर्भान्तरस्थिता।।377ख।।
रम्या शुद्धा च कान्ता च कान्तिमद्भासितांगका।
सर्वसौख्यप्रदा देवि भक्तौघाभयदायिनी।।377ग।।
श्वेतद्वीपकृतावासा जगन्माता जगन्मयी।
रत्नगर्भस्थिता सौम्या पंचकोशार्चनं भवेत्।।377घ।।

पाठभेद के अनुसार - कामाकर्षणिका आदि योगिनियों को 'गुप्त' नाम से कहते हैं। ये चन्द्रमण्डल में स्थित 16 कलायें हैं। जिसलिये ये निर्मलबुद्धिप्रदायक हैं इसलिये इनका प्रयत्नपूर्वक नित्य ही पूजा करनी चाहिये। ध्यान करने केलिये उनके स्वरूप का वर्णन कर रहे हैं - हे देवी! ये सत्यरूपा हैं, सकल भूतों में स्थित हैं, रत्नों का गर्भरूपा पृथिवी में व्याप्त है, रमणीय हैं, शुद्ध और कमनीय भी हैं, कान्तिवाली चमक से युक्त आंगोंवाली हैं, सब प्रकार के सौख्य देनेवाली हैं, भक्तसमूह को अभयदेनेवाली हैं, श्वेतद्वीप में निवास करनेवाली हैं, जगन्माता और जगन्मयी हैं एवं सौम्य हैं। इस प्रकार पंचकोशों की पूजा हो जाती है।377क-377घ।।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस चक्र के अधिष्ठात्री देवी है त्रिपुरेशी तथा अन्नपूर्णेश्वरी। इस षोडशारचक्र में पूर्वादि क्रम से यथाशास्त्र विधि विशेषार्घ्यपात्र का जल से पंचकोशाम्बा का पूजन करें। श्रीविद्या, पराज्योति, परनिष्कला, शाम्भवी और अजपामातृका- इन पांच देवियों को पंचकोशाम्बा कहा गया है। इनका ध्यान ऐसे करें- स्वरवर्णो के स्वरूप और लालरंगवाली हैं, बहती अमृतधारा जैसे शरीरवाली हैं, पाश-अंकुश-अमृत से पूर्ण काश्मीरीघट को धारण की हुई हैं। (पूर्वार्ध का पाठभेद के अनुसार - पाश-अंकुश-अमृत से पूर्ण काश्मीर के घट और दानमुद्रा को धारण की हुई हैं।) ।378-381।

लघिमा पूजयेन्नित्यं कामाकर्षणिकाग्रतः।
सर्वविद्राविणीं मुद्रां तथा च बौद्धदर्शनम्।।381।।
सर्वाशापूरकं चक्रं तथा च गुप्तयोगिनीम्।

कामाकर्षिणी आदि का पूजन के पश्चात् इस चक्र में लघिमा सिद्धि, सर्वविद्राविणी मुद्रा, सर्वाशापरिपूरक चक्र और गुप्तयोगिनी की पूजा करें।381-382।

मुखं च प्रणमेदत्र ध्यात्वा वै भक्तिभावतः।।382।।
पुष्पादिभिर्यजेद्विद्वान्समुद्राः सायुधास्तथा।
सवाहनपरिवारास्तथा चैव ससिद्धयः।।383।
सांगोपांगाश्च सर्वोपचारैः संपूजितास्तथा।

विद्वान् साधक पुष्पादियों से पूजन कर ध्यान करके भक्ति से मन में स्थित त्रिपुरेशी को मुख में प्रणाम करें। ऐसी इस सर्वाशापरिपूरकचक्र में समुद्रा सायुध सवाहन सपरिवार ससिद्धि सांगोपांग सर्वोपचारों से ये सब संपूजित हुये।383-384।

तर्पिताः सन्विति वदेज्जलं तत्र विनिक्षिपेत्।।384।।
अभीष्टसिद्धिं मे देहि त्रिपुरे देवपूजिते।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।385।।

वे सब तृप्त होवे - ऐसे बोलकर थोड़ा जल छोड़ें। हे देवताओं से पूजित त्रिपुरे!, मुझे मेरे अभीष्ट दें और भक्ति से मेरे द्वारा आप केलिये समर्पित तृतीयावरण की पूजा को ग्रहण करें।385।

26. अथ सर्वसंक्षोभणचक्रे चतुर्थावरणार्चनम्=सर्वक्षोभण चक्र में चतुर्थावरण की पूजा-

अथ वक्ष्ये महेशानि चतुर्थावरणार्चनम्।
सर्वसंक्षोभणं चक्रं प्रोक्तं सृष्टिलयात्मकम्।।386।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हे महेशानी! अब मैं सृष्टिलयात्मक सर्वसंक्षोभण नामक चक्र रूपी चतुर्थ आवरण की पूजा पद्धति कहता हूँ।386।

इत्युच्चार्य च देवेश्यै दद्यात्पुष्पांजलिं ततः।
सर्वसंक्षोभणे चक्रे दलाष्टकविजृम्भिते।।387।।
यजेत्सामान्यसुधया अनंगकुसुमादिकाः ।
पूर्वादिदिक्षु पत्रेषु आग्नेयादिविदिक्षु च।।388।।

ऐसे कहकर देवेशी केलिये पुष्पांजलि दें। आठदलों से विजृम्भित सर्वसंक्षोभण नामक चक्र के कमलपत्रों में क्रमशः पूर्वादिशाओं और आग्नेयादिविदिशाओं में अनंगकुसुमादि देवियों का सामान्यार्घ्यपात्र का अमृतमय जल से पूजन करें।387-388।

अनंगकुसुमाऽनंगमेखला तदनन्तरम्।
अनंगमदना पश्चादनंगमदनातुरा।।389।।
अनंगरेखाऽनंगवेगिन्यथानंगांकुशा ततः।
अनंगमालिनी ह्येता बन्धूककुसुमप्रभाः।।390।।
पाशांकुशस्फुरत्कुन्दनीलोत्पलकराः शुभाः।
अनंगकुसुमाग्रे तु यजत्रिपुरसुन्दरीम्।।391।।

उन देवियों का नाम है - अनंगकुसुमा, अनंगमेखला, अनंगमदना, अनंगमदनातुरा, अनंगरेखा, अनंगवेगिनी, अनंगांकुशा और अनंगमालिनी। ये सब बन्धूककुसुम (पुष्पविशेष) के समान भासते हैं। हाथों में पाश-अंकुश-स्फुरत्कुन्द और नीलकमल को धारण किये हुये हैं। अनंगकुसुमादियों की पूजा के पश्चात् त्रिपुरसुन्दरी का भी पूजन करें।389-391।।

भुवना भुवनेशी च पद्मसिंहासना तथा।
पूज्या यथाक्रमं भक्त्या पुष्पदीपादिभिः सदा।।392।।

सदा इस चक्र में क्रमशः भुवना, भुवनेशी और पद्मावती का भक्तिपूर्वक पुष्प, दीप आदि यथोपलब्ध सामग्रियों से पूजन करें।392।

बाला सम्पत्प्रदा चैव चैतन्या तदनन्तरम्।
द्वितीया चैतन्यरूपा कामेशी भैरवी तथा।।393।।
सिंहासनं तथाऽऽग्नेयं यजेच्च तदनन्तरम्।
रुद्रप्रेतासनं चैव तथाऽन्येषां दिशि क्रमात्।।394।।

Agamnigam Digital Preservation

बाला, संपत्प्रदा, चैतन्या, दूसरी (अर्थात् चैतन्या से अलग) चैतन्यरूपा, कामेशी, भैरवी के साथ सभी सिंहासनों का क्रमशः आग्नेय में स्थित सिंहासन, रुद्रप्रेतासन का पूजन करें। तथा अन्यों का भी जो अन्य दिशाओं में स्थित हैं।393-394।

अघोरभैरवी चैव भैरवी च महाऽधिका।
ललिता भैरवी चैव कामेशी भैरवी तथा।।395।।
भैरवी रक्तनेत्रा च विष्णुप्रेतासनस्थिता।
दक्षिणे संस्थिताश्चैव यजेत्सौभाग्यहेतवे।।396।।

अघोरभैरवी, महाभैरवी, ललिताभैरवी, कामेशीभैरवी और रक्तनेत्राभैरवी जो दक्षिण में विष्णुप्रेतासन पर संस्थित हैं, उनका सौभाग्य प्राप्ति केलिये पूजन करें।395-396।

षट्कूटा भैरवी नित्या भैरवी तदनन्तरम्।
मृतसंजीवनी चैव मृत्युंजयपरा तथा।।397।।
वज्रप्रस्तारिणी चैव कुब्जिका रौद्रमेव च।
यजेद् रुद्रासने देवि पश्चिमायां दिशि क्रमात्।।398।।

हे देवी! पश्चिम दिशा में रुद्रासन पर क्रमशः षट्कूटाभैरवी, नित्याभैरवी, मृत्संजीवनी, मृत्युंजय, वज्रप्रस्तारिणी और रुद्रकुब्जिका का पूजन करें।397-398।

सिंहासने तूत्तरे तु पूजयेद् भुवनेश्वरीम्।
भैरवीं कमलेशीं च सिद्धकौलेशभैरवीम्।।399।।
डामराख्यां भैरवीं च कामिनीभैरवीं तथा।
ब्रह्मासने च वायव्ये यजेद्धीमान् यथाविधि।।400।।

उत्तरदिशा में सिंहासन पर क्रमशः भुवनेश्वरी, कमलेशीभैरवी और सिद्धकौलेशभैरवी का यथाविधि पूजन करें तथा वायव्यदिशा में ब्रह्मासन पर डामरभैरवी और कामिनीभैरवी का बुद्धिमान् साधक पूजन करें।399-400।

ईशानाधिपतेर्विष्णोरासनं च ततो यजेत्।
कालिकामीश्वराख्यां च यजेत्सिंहासनं बुधः।।401।।

तत्पश्चात् ईशानाधिपति विष्णु के आसन का पूजन करके सिंहासन पर कालिका और ईश्वरी का विद्वान् पूजन करें।401।

बिन्दुमध्ये महेशानि ऊर्ध्वं सिंहासनस्थिताः।
बाला कुलसुन्दरी च संपत्प्रदा च भैरवी।।402।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रथमा सुन्दरी चैव द्वितीया सुन्दरी तथा।
तृतीया सुन्दरी चैव चतुर्थी सुन्दरी तथा।।403।।
पंचमी सुन्दरी चैव महात्रिपुरसुन्दरी।
सदाशिवाख्यं देवेशि मध्ये सिंहासनं यजेत्।।404।।

हे महेशानी! बिन्दु के मध्य में तथा ऊर्ध्व भाग पर सिंहासन में स्थित बाला, कुलसुन्दरी, संपत्प्रदा, भैरवी सहित प्रथमासुन्दरी, द्वितीयासुन्दरी, तृतीयासुन्दरी, चतुर्थीसुन्दरी, पंचमीसुन्दरी और महात्रिपुरसुन्दरी देवियों के तथा, हे देवेशी! सिंहासन के मध्य में सदाशिव का पूजन करें।402-404।

महिमासिद्धिमत्रैव मुद्रां च सर्वाकर्षणीम्।
तथैवानन्तरं चैव गं गाणपत्यदर्शनम्।।405।।
एता गुप्ततराश्चैव योगिन्यः सर्वसम्मताः।
वराभयकरारक्ताः पाशांकुशकराः शुभाः।।406।।

इस चक्र में महिमा सिद्धि, सर्वाकर्षणी मुद्रा, गाणपत्यदर्शन और जो ये सर्वसम्मत गुप्ततरा योगिनी हैं उनकी पूजा करें। उनका ध्यान इस प्रकार करें - वे कल्याणकारी हैं और हाथों में पाश, अंकुश, वरमुद्रा और अभयमुद्रा को धारण किये हुये हैं।405-406।

सर्वसंक्षोभणे चक्रे समुद्राः सायुधास्तथा।
सवाहनपरिवारास्तथैव च ससिद्धयः।।407।।
सांगोपांगाश्च सर्वोपचारैः संपूजितास्तथा।
तर्पिताः सन्त्विति वदेज्जलं तत्र विनिक्षिपेत्।।408।।

ऐसी इस सर्वसंक्षोभिणीचक्र में समुद्रा सायुध सवाहन सपरिवार ससिद्धि सांगोपांग सर्वोपचारों से ये सब संपूजित हुये। वे सब तृप्त होवे - ऐसे बोलकर थोड़ा जल छोड़ें।407-408।

नमेद्भक्त्या भ्रुवोर्मध्ये साधकस्तदनन्तरम्।
अभीष्टसिद्धिं मे देहि त्रिपुरे देवपूजिते।।409।।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।

तदनन्तर साधक भक्तिपूर्वक भौवों के बीच में भुवना को नमस्कार करें। हे देवताओं से पूजित त्रिपुरे!, हे भद्रे! मुझे मेरे अभीष्ट दें और भक्ति से मेरे द्वारा आप केलिये समर्पित चतुर्थावरण की पूजा को ग्रहण करें।409।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chennai

27. पूर्वाम्नायसमष्टिक्रमः = पूर्वाम्नय के समष्टि पूजा-

चतुरस्रे धरा पूज्या त्रिवृत्ते जलपूजनम्।
सोमं षोडशपत्रे च व्योम चाष्टदले यजेत्।।410।।
चतुरस्रे तु सम्पूज्या उन्मनाम्नायिकेश्वरी।
महोन्मनी त्रिवृत्ते च यजनीया प्रयत्नतः।।411।।
अन्नपूर्णा महेशानि पूज्या षोडशपत्रके।
अष्टपत्रे तु भुवना पूज्या सृष्टिसमष्टिके।।412।।
लीयन्ते भुवनायां वै गुर्वन्ताश्च शिवादिकाः।
सृष्टिकामेश्वरीमध्ये लीयते भुवनेश्वरी।।413।।

हे महेशानी! सृष्टिसृष्टि के अनुसार चतुरस्र में पृथिवीतत्त्व, त्रिवृत्त में जलतत्त्व, षोडशपत्र में सोम और अष्टदल में आकाशतत्त्व का पूजन करें। तथा चतुरस्र में आम्नायिकेश्वरी उन्मना सम्पूज्या हैं और त्रिवृत्त में प्रयत्नपूर्वक महोन्मनी पूजनीया हैं। षोडशपत्र में अन्नपूर्णा पूजनीया है तथा अष्टदल में भुवना पूज्या है। सृष्टिसमष्टि स्वरूपा भुवना में शिवादि गुरुपर्यन्त सकल तत्त्व लीन होती हैं और सृष्टिकामेश्वरी के बीच में भुवनेश्वरी लीन होती हैं।410-413।

अनाख्यायां सिद्धलक्ष्मीः कामेश्वर्यां विलीयते।
भासायां लयमायाति देवी बालाख्यसुन्दरी।।414।।

तथा अनाख्यारूपी कामेश्वरी में सिद्धलक्ष्मी लीन होती है और भासा में बालासुन्दरी देवी लय को प्राप्त होती है।414।

स्थितौ पूर्ववदभ्यर्च्या धरा वारि नभः शशी।
स्थितिभुवनेश्वरीमध्ये देवतानां लयो भवेत्।।415।।
स्थितिकामेश्वरीमध्ये लीयते भुवना तु सा।
संहारसृष्टौ सम्पूज्या धरा वारि शशी नभः।।416।।
लयभुवनेश्वरीमध्ये देवतानां लयो भवेत्।
लयकामेश्वरीमध्ये भुवना सा लयं भवेत्।।417।।

सृष्टिस्थिति में पूर्ववद् क्रमशः पृथिवी, जल, आकाश और सोम (शशी) का पूजन करके स्थितिभुवनेश्वरी के बीच में देवताओं का लय होता है तथा स्थितिकामेश्वरी के बीच में वह भुवना लय होती है। सृष्टिसंहार में पृथिवी, जल, शशी और आकाश का संपूजन करके लयभुवनेश्वरी के बीच में देवताओं का लय होता है और लयकामेश्वरी के बीच में वह भुवना लीन होती है।415-417।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

28. अथ सर्वसौभाग्यदायकचक्रे पंचमावरणार्चनम् - सर्वसौभाग्यदायक चक्र में पंचमावरण की पूजा-

अथ वक्ष्ये महेशानि पंचमावरणार्चनम्।
स्थितिसृष्ट्यात्मकं चक्रं सर्वसौभाग्यदायकम्।।418।।

हे महेशानी! अब मैं स्थितिसृष्ट्यात्मक सर्वसौभाग्यदायक नामक चक्र रूपी पंचम आवरण की पूजा पद्धति कहता हूँ।418।

चतुर्दशारके चक्रे सर्वसौभाग्यदाभिधे।
सामान्याद्भिः पश्चिमादिवामावर्तक्रमेण च ।।419।।

सर्वसौभाग्यदायक नाम से कथित चतुर्दशारचक्र में बायीं ओर से पश्चिम से आरम्भ कर सामान्यार्घ्यपात्र के जल से पूजा करनी है।419।

सर्वसंक्षोभिणीमुख्याः शक्तीर्वै पूजयेत्प्रिये।
सर्वसंक्षोभिणीशक्तिः सर्वविद्राविणी तथा।।420।।
सर्वाकर्षण्यथ ततः सर्वाह्लादिन्यनन्तरम्।
सर्वसंमोहिनी सर्वस्तम्भिनी सर्वजृम्भणी।।421।।
सर्ववशंकरीशक्तिः तथा सर्वार्थरंजिनी।
ततः सर्वोन्मादिनी च तथा सर्वार्थसाधिनी।।422।।
ततो वै सर्वसंपत्तिपूरणीशक्तिरेव च।
सर्वमन्त्रमयीशक्तिः सर्वद्वन्द्वक्षयंकरी ।।423।।

हे प्रिये! सर्वसंक्षोभिणी प्रमुख शक्तियों की पूजा करें। वे शक्तियाँ है -

---

(चतुर्दशारे चक्रे तु पार्श्वयोरुभयोस्तथा।
अग्रे च बिन्दुमध्ये च सामान्यामृतबिन्दुभिः।।423 क।।
वेदसंख्याऽवस्थाश्च यजेत्सर्वार्थसिद्धये।
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यश्च तुरीया च प्रकीर्तिताः।।423 ख।।
वराभयकरारक्ता धृतपाशांकुशाः शुभाः।
अथाष्टदलसूत्रे च वृत्ते वेष्टनया शिवे।।423 ग।।

हे शिवे! चतुर्दशारचक्र में, उसके दोनों बगल में, आगे और बिन्दु के बीच में सर्वार्थसिद्धि केलिये सामान्यार्घ्यपात्रस्थ अमृतमय जलबिन्दुओं से वेदसंख्या अर्थात् चार संख्या युक्त अवस्था का पूजन करें। उन अवस्थाओं के नाम बताये गये हैं - जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीया। इन अवस्थाओं के अभिमानी देवता का ध्यान इस प्रकार करें - वे हाथों में पाश, अंकुश, वरमुद्रा और अभय मुद्रा को धारण किये हैं। हे शिवे! अष्टदल कमल के सूत्र से वृत्त है अर्थात् कोमल व सूक्ष्म धागों से बने वस्त्र से वेष्टित हैं अर्थात् सूक्ष्म रेशम के वस्त्र पहने हुये हैं। 423क-423ग)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वसंक्षोभिणी, सर्वविद्राविणी, सर्वाकर्षणी, सर्वाह्लादिनी, सर्वसंमोहिनी, सर्वस्तम्भिनी, सर्वजृम्भणी, सर्ववशंकरी, सर्वार्थरंजिनी, सर्वोन्मादिनी, सर्वार्थसाधिनी, सर्वसंपत्तिपूरणी, सर्वमन्त्रमयीशक्ति और सर्वद्वन्द्वक्षयंकरी।420-423।

चक्रेश्वरी ततः पूज्या देवी त्रिपुरवासिनी।
आद्याकालीति विख्याता तथा चाम्नायनायिका।।424।।

तत्पश्चात् चक्रेश्वरी देवी त्रिपुरवासिनी और जो आद्याकाली नाम से विख्यात आम्नायनायिका हैं, उनकी पूजन करें।424।

ततश्चेशित्वसिद्धिश्च पूज्या ह्यत्र प्रयत्नतः।
चक्राग्रे च पंचकल्पलताम्बां पूजयेत्ततः।।425।।

इस चक्र में ईशित्वसिद्धि की प्रयत्नपूर्वक पूजा करें। तदनन्तर चक्र के अग्र भाग में पंच कल्पलताम्बाओं का पूजन करना है।425।

चतुर्दशारे पूर्वादौ श्रीपात्रामृतबिन्दुभिः।
श्रीविद्या त्वरिता चैव पारिजातेश्वरी तथा।।426।।
त्रिकूटा पंचबाणेशी पंचकल्पलताः स्मृताः।
पाशांकुशकरारक्ता निजायुधकरद्वयाः।।427।।

चतुर्दशारचक्र में पूर्वादि क्रम से विशेषार्घ्यपात्रस्थ अमृतमय जलबिन्दुओं से इन पंचकल्पलताम्बाओं का पूजन करें - श्रीविद्या, त्वरिता, पारिजातेश्वरी, त्रिकूटा और पंचबाणेशी। ये सब पाश और अंकुश से अतिरिक्त शेष दो हाथों में अपने अपने आयुध विशेष को धारण किये हुये हैं।426-427।

सर्ववशंकरीमुद्रा सांख्यादिदर्शनं शुभम्।
सर्वसौभग्यदे चक्रे सर्वसंक्षोभिणीमुखाः।।428।।
संप्रदायाख्ययोगिन्यः सर्वाभरणभूषिताः ।
इन्द्रगोपनिभाः सर्वाः सगर्वोन्मत्तयौवनाः।।429।।
पाशांकुशौ दर्पणं च पानपात्रं सुधामयम्।
बिभ्रत्यः सर्वसुभगाः साधकाभीष्टदायिकाः।।430।।

इस सर्वसौभाग्यप्रदचक्र में सर्वसंक्षोभिणीप्रमुख देवियों का पूजन करके सर्ववशंकरीमुद्रा और शुभ सांख्यादिदर्शन का पूजन कर संप्रदाययोगिनियों का पूजन करें। वे सर्वाभरणों से विभूषित हैं, इन्द्रगोप का रंग के सदृश रंग के हैं, गर्व युक्त अर्थात् पूर्ण यौवनवाले हैं, साधक के अभीष्ट देनेवाले हैं, सर्वसौभाग्य स्वरूपा हैं और हाथों में पाश, अंकुश, दर्पण और सुधामय पानपात्र को धारण की हुयी हैं।428-430।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सवाहनपरिवाराः समुद्राः सायुधाश्च ताः।
सांगोपांगाश्च सर्वोपचारैः संपूजितास्तथा।।431।।

ऐसी इस सर्वसौभाग्यदायकचक्र में समुद्रा सायुध सवाहन सपरिवार ससिद्धि सांगोपांग सर्वोपचारों से ये सब संपूजित हुये।431।

तर्पिताः सन्त्विति वदेज्जलं तत्र विनिक्षिपेत्।
ललाटे प्रणमेदत्र साधको भक्तिभावतः।।432।।
अभीष्टसिद्धिं मे देहि त्रिपुरे देवपूजिते।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम्।।433।।

वे सब तृप्त होवे - ऐसे बोलकर थोड़ा जल छोड़ें। तदनन्तर साधक भक्तिपूर्वक ललाट में चक्रेश्वरी देवी को नमस्कार करें। हे देवताओं से पूजित त्रिपुरे! मुझे मेरे अभीष्ट दें और भक्ति से मेरे द्वारा आप केलिये समर्पित पंचमावरण की पूजा को ग्रहण करें।432-433।

29. अथ सर्वार्थसाधकचक्रे षष्ठावरणार्चनम् = सर्वार्थसाधक चक्र में छठे आवरण की पूजा-

अथ वक्ष्ये महेशानि षष्ठावरणार्चनम् ।
सर्वार्थसाधकं चक्रं बहिर्दशारके स्थितम्।।434।।

हे महेशानी! अब मैं स्थितिस्थित्यात्मक बहिर्दशार में स्थित सर्वसाधक नामक चक्र रूपी छठे आवरण की पूजा पद्धति कहता हूँ।434।

देव्यै पुष्पांजलिं दद्यात्ततः सर्वार्थसाधके।
बहिर्दशारके चक्रे सामान्यसुधया शिवे।।435।।

हे शिवे! देवी केलिये पुष्पांजलि दें। तत्पश्चात् सर्वार्थसाधक नामक बहिर्दशार चक्र में सामान्यार्घ्यपात्रस्थ अमृतमय जल से पूजन करें।435।

पूर्ववत्पूजयेद्देवि सर्वसिद्धिप्रदामुखाः।
सर्वप्रियंकरीदेवी सर्वमंगलकारिणी।।436।।
सर्वकामप्रदादेवी सर्वदुःखविमोचिनी।
सर्वमृत्युप्रशमनी सर्वविघ्नविनाशिनी।।437।।
सर्वसुन्दरीदेवी सर्वसौभाग्यदायिनी।

हे देवी! इस चक्र में सर्वसिद्धिप्रदा प्रमुख शक्तियों का पूर्ववत् पूजन करें। उन शक्तियों का नाम है - सर्वसिद्धिप्रदा, सर्वप्रियंकरी, सर्वमंगलकारिणी,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वकामप्रदा, सर्वदुःखविमोचिनी, सर्वमृत्युप्रशमनी, सर्वविघ्नविनाशिनी, सर्वसुन्दरी और सर्वसौभाग्यदायिनी। 436-438।

सर्वार्थसाधके चक्रे कुलकौलाभिधाः पराः।।438।।
सर्वसिद्धिप्रदाद्याश्च योगिन्यः सर्वकामदाः।
जपाकुसुमसंकाशाः स्फुरन्मणिविभूषिताः।।439।।
महासौभाग्यगम्भीराः पीनवृत्तघनस्तनाः।
रत्नपेटीविनिक्षिप्तसाधकेप्सितभूषणाः।।440।।
नानारत्नमयान्दीपान्दधत्यो हसिताननाः।
पाशांकुशधराः सर्वा रत्नदानपरास्तथा।।441।।

इस सर्वार्थसाधकचक्र का चक्रेश्वरी है कुलकौलिनी नाम से प्रसिद्ध देवी और सर्वसिद्धिप्रदा आदि योगिनियाँ हैं। वे योगिनियाँ सर्वकामप्रदा हैं, जपाकुसुम का रंग के सदृश रंगवाली हैं, चमकती हुई मणियों से विभूषित हैं, महासौभाग्य के चिह्नों से परिपूर्ण हैं, घड़े के आकार से युक्त गोल एवं सुडौल स्तनोवाली हैं, रत्नमय पट्टि आदि से युक्त एवं साधक के द्वारा ईप्सित भूषणों को धारण की हुई हैं, मुस्कान युक्त मुखवाली हैं और हाथों से नानारत्नमयदीपों, पाश, अंकुश और रत्नों को दान देने की मुद्रा को धारण की हुयी हैं ।438-441।

सर्वसिद्धिप्रदां देवीं चक्रेशीं च तथा यजेत्।
श्यमाकालीं दक्षिणां हि पूजयेदाम्नायनायिकाम्।।442।।

तथा सर्वसिद्धिप्रदा देवी और चक्रेश्वरी का पूजन कर आम्नायनायिका दक्षिणा श्यामाकाली का पूजन करें।442।

बहिर्दशारे पूर्वादौ श्रीपात्रामृतबिन्दुभिः।
चक्राग्रे पंचरत्नाभेऽर्चयेच्च यथाविधि।।443।।
श्रीविघ्नसिद्धिलक्ष्मीश्च मातंगी भुवनेश्वरी।
वाराहीति महेशानि पंचरत्नं प्रकीर्तितम्।।444।।

(वैकुण्ठनगरस्था च क्षीरसागरकन्यका।
योगिहृत्पद्मसंस्था च कल्पवल्ली दयावती।।444 क।।
भक्तचिन्तामणिश्चैव ह्यादिमायेन्दिरा रमा।
निराकारा च साकारा पंचरत्नं प्रपूजयेत्।।444 ख।।

ग्रन्थान्तर में - वैकुण्ठनगर में स्थित, क्षीरसागर की कन्यायें, योगी के हृदयकमल में स्थित पंचरत्नाम्बाओं का नाम है - कल्पवल्ली, दयावती, भक्तचिन्तामणि, आदिमायेन्दिरा और रमा। इनके साकार और निराकार दोनों स्वरूपों का पूजन करें।444क-444ख।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हे महेशानी! बहिर्दशार चक्र में पूर्वादि क्रम से चक्र के अग्रभाग में विशेषार्घ्यपात्रस्थ अमृतमय जलबिन्दुओं से यथाविधि पंचरत्नाम्बाओं का पूजन करें। श्रीविघ्नसिद्धि, लक्ष्मी, मातंगी, भुवनेश्वरी और वाराही - इन्हें पंचरत्नाम्बा कहा गया है।443-444।

श्रीविघ्नपूजनस्थले चक्रराजे महेश्वरि।
महारत्नेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता।।445।।
सर्वसौभाग्यजननी पादुकां पूजयामि च।
पाशांकुशकरारक्ता निजायुधकरद्वया।।446।।
पंचरत्नं प्रपूज्याऽथ मुद्रादिकं यजेन्नरः।

हे महेश्वरी! श्रीविघ्नसिद्धि का पूजन स्थल अर्थात् चक्रराज की पूर्वदिशा में 'महारत्नेश्वरी वृन्दमण्डितासनसंस्थित सर्वसौभाग्यजननी के पादुकाओं को मैं पूजता हूँ' - इस प्रकार पूजन करें और ध्यान करें की 'वह पाश, अंकुश और स्व आयुध को हाथों में धारण की हुई हैं'। इस प्रकार पंचरत्नाम्बाओं का पूजन कर मुद्रा आदियों का भी पूजन करें।445-447।

सर्वार्थसाधके चक्रे समुद्राः सायुधास्तथा।।447।।
सवाहनाश्च सपरिवाराश्चैव ससिद्धयः।
सांगोपांगाश्च सर्वोपचारैः संपूजितास्तथा।।448।।

ऐसी इस सर्वार्थसाधकचक्र में समुद्रा सायुध सवाहन सपरिवार ससिद्धि सांगोपांग सर्वोपचारों से ये सब संपूजित हुये।।447-448।

वैदिकं दर्शनं चास्य कुलोत्तीर्णां च योगिनीम्।
देव्यै पुष्पांजलिं दद्यात्ततः षष्ठावृतं यजेत्।।449।।
तर्पिताः सन्त्विति वदेज्जलं तत्र विनिक्षिपेत्।
पूजिताः सम्प्रयच्छन्ति ह्यनायासेन तत्फलम्।।450।।

इस चक्र में वैदिक दर्शन, कुलोत्तीर्णा योगिनी का पूजन कर छठे आवरण की पूजन के अन्तर्गत देवी केलिये पुष्पांजलि दें। वे सब तृप्त होवे-ऐसे बोलकर थोड़ा जल छोड़ें। इस प्रकार पूजित होने पर वे अनायास ही इसका फल देते हैं। 449-450।

बहिर्दशारे षड्वाचः कामवत्पूजयेत्प्रिये।
समान्यपात्रसुधया लीना वागपरा परा।।451।।
मध्यमा वाक्च पश्यन्ती वैखरीति प्रकीर्तिताः।
ज्ञानमुद्राऽभयाः शुक्ला वीणापुस्तकपाणयः।।452।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हे प्रिये! बहिर्दशार चक्र के बाहर छः वाक् (शब्द स्वरूप) का पूजन सामानयार्घ्यस्थ अमृतमय जल से कामना के अनुसार पूजन करें। वे छः वाक् है - लीना, परा, अपरा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी। इनके मूर्ति स्वरूप ध्यान केलिये - हाथों में ज्ञानमुद्रा, अभयमुद्रा, वीणा और पुस्तक धारण की हुई हैं।451-452।

ततः सर्वोन्मादिनीं च मुद्रां सन्दर्शयेद् बुधः।
एताश्च कुलकौलाख्ययोगिन्य इति पूर्ववत्।।453।।
इत्युच्चार्य यजेदत्र योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्।
अभीष्टसिद्धिं मे देहि त्रिपुरे देवपूजिते।।454।।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तु षष्ठावरणार्चनम्।

तदनन्तर विद्वान् सर्वोन्मादिनी मुद्रा को दर्शावें। ये कुलकौलाख्य योगिनियाँ पूजित हुयीं - ऐसे बोलकर पूजन कर योनि मुद्रा दर्शायें। हे देवताओं से पूजित त्रिपुरे! मुझे मेरे अभीष्ट दें और भक्ति से मेरे द्वारा आप केलिये समर्पित षष्ठावरण की पूजा को ग्रहण करें।453-454।

30. अथ सर्वरक्षाकरचक्रे सप्तममावरणार्चनम् =सर्वरक्षाकर चक्र में सातवें आवरण की पूजा-

अथ वक्ष्ये महेशानि सप्तमावरणार्चनम्।।455।।
स्थितिलयात्मकं चक्रं सर्वरक्षाकरं शुभम्।

हे महेशानी! अब मैं स्थितिलयात्मक सर्वरक्षाकर नामक चक्र रूपी सातवाँ आवरण की पूजा पद्धति कहता हूँ।455।

सर्वरक्षाकरे चक्रेऽन्तर्दशारे महेश्वरि।।456।।

(अथवा रश्मयः सर्वाः देवीरूपेण चिन्तयेत्।
श्रीचक्रपरमेशानि स्वतन्त्रे स्वस्वसंनिभाः।।454 क।।
चक्रेशीं रतिपूर्वे तु महात्रिपुरभैरवीम्।
पूजयित्वा ततः सर्वयोनिमुद्रां प्रदर्शयेत्।।454 ख।।
परापररहस्याख्या योगिनीत्यादिना प्रिये।
देव्यै पुष्पांजलिं दत्त्वा तर्पयेच्च त्रिधा त्रिधा।।454 ग।।

हे स्वतन्त्र श्रीचक्रपरमेशानी! स्व स्व सदृश सभी रश्मियों को देवी के रूप में चिन्तन करें। प्रेम पूर्वक चक्रेश्वरी महात्रिपुरभैरवी का पूजन करके सर्वयोनिमुद्रा को दर्शायें। हे प्रिये! परापररहस्य नामक योगिनी इत्यादि मन्त्र से देवी केलिये पुष्पांजलि देकर तीन-तीन बार तर्पण दें।454क-454ग।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सामान्यपात्रसुधया पश्चिमादिक्रमेण तु।

हे महेश्वरी! सर्वरक्षाकर नामक अन्तर्दशार चक्र में पश्चिमादि क्रम से सामान्यार्घ्यपात्रस्थ अमृतमयजल से पूजन करें।456।

सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च सर्वैश्वर्यप्रदा तथा ।
सर्वज्ञानमयी चैव सर्वव्याधिविनाशिनी।।457।।
सर्वाधारस्वरूपा च सर्वपापहरा तथा।
सर्वानन्दमयी देवि सर्वरक्षास्वरूपिणी।।458।।
पूजनीया प्रयत्नेन सर्वेप्सितफलप्रदाः।

हे देवी! सर्वज्ञा, सर्वशक्ति, सर्वैश्वर्यप्रदा, सर्वज्ञानमयी, सर्वव्याधि-विनाशिनी, सर्वाधारस्वरूपा, सर्वपापहरा, सर्वानन्दमयी और सर्वरक्षास्वरूपिणी सकल फल प्रदायिनी इन शक्तियों की प्रयत्न पूर्वक पूजन करना चाहिये।457-459।

सर्वाज्ञाद्याश्च योगिन्यो ज्वलत्पावकतेजसः।।459।।
उद्यत्सूर्यसहस्राभा मुक्तालंकारभूषिताः ।
पाश-टंकायुध-ज्ञानमुद्रा-वरदसत्कराः।।460।।

सर्वज्ञा आदि योगिनियों का ध्यान इस प्रकार करें - वे जलती हुई अग्नि के सदृश तेजवाली हैं, उगता सूर्य की आभा के सदृश आभावाली हैं, मुक्तामण्यादि अलंकारों से विभूषित हैं तथा हाथों में पाश, टंक, ज्ञानमुद्रा और वरमुद्रा को धारण की हुई हैं।459-460।

सर्वज्ञा पुरतो देवि यजेत्त्रिपुरमालिनी।।461।।
सिद्धिदां सिद्धकालीं च तथाम्नायनायिकाम्।

हे देवी! सर्वज्ञा आदि देवियों की पूजा पूर्वक त्रिपुरमालिनी, सिद्धिदा, सिद्धकाली और आम्नायनायिका का भी पूजन करें।461।

वैदिकं शैवसौरे च गाणपत्यं तथैव च।।462।।
वैष्णवं शाक्तमित्येव यजेच्च षड् दर्शनम्।

शैव, सौर, गाणपत, वैष्णव और शाक्त - इन पांचों वैदिक संप्रदाय सहित षड्दर्शनों की पूजा करें।462।

रक्षायै रक्षयेदत्र ततश्च सूर्यदर्शनम्।।463।।
निगर्भयोगिनीः ध्यायेन्नादे नत्वा यथाविधि।
प्राकाम्यसिद्धिं मुद्रां च सर्वमहांकुशां तथा।।464।।
वराभयकरारक्ताः स्वसायुधकरद्वयाः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस चक्र में अपनी रक्षा केलिये सर्वरक्षास्वरूपा देवी का पूजन क
सूर्यदर्शन भी करें और (अर्थात् सूर्य का भी दर्शन करें) विधिपूर्वक नाद में देवे
को नमस्कार करके निगर्भयोगिनी का ध्यान करें। प्राकाम्यसिद्धि और सर्वमहांकुश
मुद्रा सहित देवी जो अभयमुद्रा, वरमुद्रा और अपने-अपने आयुधों को धारण
की हुई है की पूजा करें।463-464।

पंचोपचारैराराध्य लिंगमुद्रां प्रदर्शयेत्।।465।।
अन्तर्दशारे देवेशि पार्श्वयोरग्रयोस्तथा।
बाणवद्यजनं कुर्यात्पंचकामान्प्रपूजयेत् ।।466।।
काममन्मथकन्दर्पमकरध्वजसंज्ञकाः।
मीनकेतुर्महेशानि पंचकामाः प्रकीर्तिताः।।467।।
न कदापि भवेद्रोगो दारिद्र्यं नोपजायते।
ग्रहपीडां विजित्याशु पुत्रपौत्रैः समेधते।

हे देवेशी! पंचोपचारों से पूजन करके लिंग मुद्रा दर्शायें तथा अन्तर्दशार च
के दोनों बगल और अग्र भाग में पंच कामदेवताओं का पंचबाणवत् पूजन करें।
पंच कामदेवता - काम, मन्मथ, कन्दर्प, मकरध्वज और मीनकेतु नाम से प्रसिद्ध है
हे महेशानी! जो इनका पूजन करता है वह कभी रोगग्रस्त नहीं होगा, दरिद्रता अ
ग्रहपीड़ा कभी नहीं होगी और पुत्रपौत्रादि की अभिवृद्धि होगी।465-468।

सर्वरक्षाकरे चक्रे समुद्राः सायुधस्तथा।।468।।
सवाहनाश्च सपरिवाराश्चैव ससिद्धयः।
सांगोपांगाश्च सर्वोपचारैः संपूजितास्तथा।

ऐसी इस सर्वरक्षाकरचक्र में समुद्रा सायुध सवाहन सपरिवार ससि
सांगोपांग सर्वोपचारों से ये सब संपूजित हुये।।468-469। ।469।।

तर्पिताः सन्त्विति वदेज्जलं तत्र विनिक्षिपेत्।
अभीष्टसिद्धिं मे देहि त्रिपुरे देवपूजिते।।470।।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।

वे सब तृप्त होवे - ऐसे बोलकर थोड़ा जल छोड़ें। हे देवताओं से पूजि
त्रिपुरे! मुझे मेरे अभीष्ट दें और भक्ति से मेरे द्वारा आप केलिये समर्पि
सप्तमावरण की पूजा को ग्रहण करें।470।

31. दक्षिणाम्नायसमष्टिः = दक्षिणाम्नाय की समष्टि पूजा -

मायापूर्वा विश्वयोनिः मनुकोणे प्रपूज्यते।।471।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वायुर्बहिर्दशारेऽर्च्यो ह्यग्निरन्तर्दशारके।

मनुकोण में मायापूर्वा विश्वयोनि, बहिर्दशार में वायु और अन्तर्दशार में अग्नि का पूजन करें।471।

स्थितिसृष्टी देवतानां पूजनक्रम ईरितः।
स्थितिस्थिती पूजनीयौ बहिरन्तर्दशारके।।472।।
मायापूर्वां विश्वयोनिं मन्त्री चैव प्रपूजयेत्।
बहिर्दशारे वायुं च पूजयेच्च समष्टिषु।।473।।

स्थितिसृष्टिक्रम में देवताओं के पूजन क्रम बता दिया गया। अब स्थितिस्थितिक्रम में बताते हैं - पूर्ववत् साधक अन्तर्दशार में अग्नि, मनुकोण में मायापूर्वा विश्वयोनि और बहिर्दशार में वायु का पूजन करें।472-473।

स्थितिकामेश्वरीमध्ये दक्षिणायाः लयो भवेत्।
कालिकादक्षिणा याति लयं कामेश्वरीतनौ॥474।।
दक्षिणाम्नायमार्गेण समष्टिक्रम ईरितः।

समष्टि में स्थितिकामेश्वरी के बीच में दक्षिणा का लय होता है और दक्षिणकालिका का कामेश्वरी के देह में लय होता है। इस प्रकार दक्षिणाम्नाय का मार्ग से समष्टिक्रम कह दिया गया।474-475।

अनाख्यायां गुह्यकाली भरतोपासिता तु या।।475।।
सा देवी लयमायाति स्थितिकामेश्वरीतनौ।

भरत के द्वारा उपासित अनाख्या में स्थित जो गुह्यकाली है वह स्थितिकामेश्वरी के शरीर में लय को प्राप्त होती हैं।475-476।

स्थितिसंहारमध्ये तु चक्रे मन्वस्रके यजेत्।।476।।
मायापूर्वां विश्वयोनिं बहिर्दिक्कोणकेऽनिलम्।
अन्तर्दशारे वह्निं च पूजयेत्साधकोत्तमः।।477।।

स्थितिसंहारक्रम में पूर्ववत् साधकोत्तम मनुकोण में मायापूर्वा विश्वयोनि, बहिर्दशार में वायु और अन्तर्दशार में अग्नि का पूजन करें।476-477।

या बालासुन्दरी देवी भासायां सुप्रतिष्ठिता।
सा देवी लयमायाति लयकामेश्वरीतनौ।।478।।

जो भासा में प्रतिष्ठित हैं बालासुन्दरी देवी, वह देवी लयकामेश्वरी के शरीर में लय को प्राप्त होती हैं।478।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

32. अथ सर्वरोगहरचक्रे अष्टमावरणार्चनम् = सर्वरोगहर चक्र में आठवें आवरण की पूजा-

अथ वक्ष्ये महेशानि अष्टमावरणार्चनम्।
सर्वरोगहरं चक्रं लयसृष्टिस्वरूपिणम्।।479।।

हे महेशानी! अब मैं लयसृष्ट्यात्मक सर्वरोगहर नामक चक्र रूपी आठवें आवरण की पूजा पद्धति कहता हूँ।479।

सर्वहराष्टारे चक्रे यजेत्सामान्यबिन्दुभिः।
पश्चिमादिक्रमेणैव वशिन्याद्यां यजेत्क्रमात्।।480।।

सर्वरोगहर नामक अष्टार चक्र में सामान्यार्घ्यपात्रस्थ अमृतमयजल से पूजन करें। पश्चिमादि क्रम से वशिन्यादि योगिनियों का क्रमशः पूजन करें।480।

वशिनी कामेश्वरी च मोहिनी कमलाऽरुणा।
जयिनी सर्वेश्वरी च कौलिनी वागधीश्वरी।।481।।
सर्वरोगहरे चक्रे रहस्याख्याः शुभप्रदाः।
योगिन्यः कामदायिन्यो दाडिमीकुसुमप्रभाः।।482।।
रक्तवस्त्रपरिधाना रक्तगन्धानुलेपनाः ।
नानाभरणसंपन्नाः पंचबाणधनुर्धराः।।483।।
पुस्तकं वरदानं च दधाना वाक्प्रदा इमाः।

वशिनी, कामेश्वरी, मोहिनी, कमला, अरुणा, जयिनी, सर्वेश्वरी, कौलिनी और वागधीश्वरी - सर्वरोगहरचक्र में स्थित ये समस्त कामनाओं को देनेवाली नौ योगिनियाँ रहस्या नाम से प्रसिद्ध हैं। ध्यान केलिये - वे दाड़िमकुसुम के सदृश आभावाली हैं, रक्त रंग के वस्त्रों को धारण की हुई हैं, रक्तगन्धद्रव्यों का लेपन की हुयी हैं, नाना आभरणों से विभूषित हैं और हाथों में पंचबाण सहित धनुष, पुस्तक और वरमुद्रा को धारण की हुई हैं। ये सब वाक्सिद्धि प्रदान करनेवाली हैं।481-484।

यजेत्त्रिपुरसिद्धां च चक्रेशीं वशिनीं पुरः।।484।।
समयकुब्जिकां चाथ सर्वाम्नायनायिकाम्।

वशिन्यादि योगिनियों की पूजा के पश्चात् चक्रेशी त्रिपुरासिद्धा और सर्वाम्नायनायिका समयकुब्जिका का पूजन करें। 484-485।

वसुकोणे च पूर्वादौ श्रीपात्रामृतबिन्दुभिः।।485।।
पूर्वाम्नायोन्मनी चैव दक्षिणां भोगिनीं तथा।
पश्चिमां कुब्जिकां चैवोत्तराम्नायस्य कालिकाम्।।486।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऊर्ध्वाम्नायेश्वरीं देवीं श्रीविद्यामर्चयेद् बुधः।
अनुत्तरवादिनीति महात्रिपुरसुन्दरीम् ।।487।।

साधक वसुकोण में पूर्वादि दिशाओं में विशेषार्घ्यपात्रस्थ अमृतमय जलबिन्दुओं से पूर्वाम्नायनायिका उन्मनी, दक्षिणाम्नायनायिका भोगिनी, पश्चिमाम्नायनायिका कुब्जिका, उत्तराम्नायनायिका कालिका और ऊर्ध्वाम्नायनायिका ईश्वरी देवी सहित अनुत्तरवादिनी नाम से प्रसिद्ध महात्रिपुरसुन्दरी रूपा श्रीविद्या का पूजन करें।485-487।

वराभयकरारक्ताः पाशांकुशधराः शुभाः।
मुक्तिसिद्धं ततो कालीं पूजयेद् दक्षिणां तथा।।488।।

वे कल्याणकारिणी हैं और अपने हाथों में पाश, अंकुश, वरमुद्रा और अभयमुद्रा को धारण किये हुये हैं। तदनन्तर मुक्तिसिद्धि और दक्षिणाकाली का पूजन इस चक्र में करना है।

मुद्रां प्रदर्शयेत्सर्वखेचरीं भाग्यहेतवे।
वैष्णवं दर्शनं चाथ सरहस्याख्ययोगिनी।।489।।

पूजा के अन्त में भाग्योदय केलिये सर्वखेचरी मुद्रा दर्शायें तथा इस चक्र में वैष्णवदर्शन और सरहस्या योगिनी की भावना करें।489।

अभीष्टसिद्धिं प्राप्नोति देव्यै पुष्पांजलिं क्षिपेत्।
नादान्ते प्रणमेन्नित्यं सदा कार्यार्थसिद्धये।।490।।
पंचोपचारैः सम्पूज्य योनिमुद्रां च दर्शयेत्।
भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनम्।।491।।

(अत्र ये षट् श्लोकाः टिप्पण्यां पठिताः, तेष्वग्रे आद्याश्चत्वारः 509 तमादि संख्याक्रमेण मूल एव पठिताः।

आम्नायान्ते प्रपूज्याथ पंचबाणं यजेन्नरः।
देवीं मध्यविधयान्यावरणानि श्रृणु शिवे।।491क।।

हे शिवे! आम्नाय देवताओं का पूजन के अनन्तर साधक पांच बाणों का पूजन करें, मध्य में देवी की पूजा विधान करें। अन्य आवरणों के बारे में सुनो।491क।

तुरीयोपासकानां च एतान्यावश्यकानि वै।
अष्टारपार्श्वयोरग्रे सामान्यामृतबिन्दुभिः।।491ख।।
उदीच्यां प्रयजेद्देवि क्षोभणद्रावणौ यतः।
आकर्षवश्यबाणौ च दक्षिणे तु समर्चयेत्।।491ग।।
अग्रे सम्मोहनं यष्ट्वा चिन्तयेद् बाणदेवताः।
वराभयकरारक्ताः सृष्टिबाणधनुर्धराः।।491घ।।

(शेष अगले पृष्ठ में देखें)

Agamnigam Digital Preservation Foundation

सदा कार्यार्थ की सिद्धि केलिये नित्य ही नादान्त में प्रणाम करें और देवी केलिये पुष्पांजलि दें, अभीष्टसिद्धि की प्राप्ति होगी। पंचोपचारों से पूजा करके योनि मुद्रा दर्शायें। भक्ति से मेरे द्वारा आप केलिये समर्पित अष्टममावरण की पूजा को ग्रहण करें।490-491।।

33. गुरुस्मरणम् = गुरुजी के स्मरण -

अथ वक्ष्ये गुरोश्चैव परिवारप्रपूजनम् ।
कृतेन येन मन्त्रज्ञो लभते वांछिताधिकम्।।492।।

अब मैं गुरु के परिवार का पूजन विधि कहूँगा। जिसके करने से साधक वांछित फल में अभिवृद्धि प्राप्त करेगा।492।

मूलेन षोडशीमध्ये यजेत्त्रिपुरसुन्दरीम्।
बिन्दुत्रिकोणयोर्मध्ये त्रिभंगीभिर्गुरून् यजेत्।।493।।

षोडशी के मध्य में मूलमन्त्र से त्रिपुरसुन्दरी का पूजन करें तथा बिन्दु और त्रिकोण के बीच में तीन भागों में गुरुजनों का पूजन करें।493।

दिव्यौघाश्चापि सिद्धौघा मानवौघास्त्रिधा हिते।
परप्रकाशः प्रथमस्ततः परशिवाभिधः।।494।।
परशक्तिश्च कौलेशः शुक्लादेवी कुलेश्वरः।
कामेश्वरीति सप्तैव दिव्यौघा गुरवः पराः।।495।।

दिव्यौघ, सिद्धौघ और मानवौघ नाम से तीन प्रकार (त्रिभंगी) गुरुजन हैं। उनमें से श्रेष्ठ दिव्यौघ गुरुजन 7 हैं - परप्रकाश, परशिव, परशक्ति, कौलेश,

---

हे देवी! तुरीय उपासकों केलिये यह आवश्यक है कि वे अष्टार के दोनों बगल और आगे सामान्यार्घ्यपात्रस्थ अमृतमय जलबिन्दुओं से उत्तर में क्षोभण और द्रावण बाणों का पूजन करें, दक्षिण में आकर्ष और वश्य बाणों की अर्चना करें तथा आगे सम्मोहन नामक बाण का पूजन करके बाणदेवताओं का ध्यान करें। हाथों में वरमुद्रा और अभयमुद्रा तथा सृष्टिबाण सहित धनुष को धारण किये हुये हैं।491ख-491घ।

मध्ये दिक्षु क्रमेणैव यजेत्सर्वार्थसिद्धये।
सर्वज्ञा नित्यतृप्ता तथाऽनादिप्रबोधिनी।।491ङ।।
स्वतन्त्रा च महाशक्तिर्नित्याऽलुप्ता तथैव च।
नित्याऽनन्ता च कथिता देव्याः शुभे षडंगके।।491च।।

सर्वार्थ सिद्धि केलिये मध्य में और पूर्वादि दिशाओं में क्रम से पूजन करें। देवी के शुभ षडंगों में सर्वज्ञा, नित्यतृप्ता, अनादिप्रबोधिनी, स्वतन्त्रा, महाशक्ति, नित्यालुप्ता और नित्यानन्ता की भावना कर पूजन करें।491ङ-491च।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शुक्लादेवी, कुलेश्वर और कामेश्वरी।494-495।

भोगक्रीडश्च समयः सहजश्च परावरः।
सिद्धौघा गुरवश्चैते चत्वारः परिकीर्तिताः।।496।।

सिद्धौघ गुरुजन कुल ये 4 ही कहे गये हैं - भोगक्रीड, समय, सहज और परावर।496।

गगनौ विश्वविमलौ मदनो भुवनस्तथा।
लीला(सीता)स्वात्मप्रियेत्यष्टौ मानवा अपरे मताः।।497।।

मानवौघ गुरुजन कुल 8 माने गये हैं - वायु, गगन, विश्व, विमल, मदन, भुवन, लीला (अथवा सीता) और स्वात्मप्रिया।497।

आनन्दनाथशब्दान्ताः पुरुषा गुरवः स्मृताः।
अम्बान्तास्तु स्त्रियः कार्याः सर्वसिद्धिप्रदायिकाः।।498।।

व्यक्ति का नाम के अन्त में 'आनन्दनाथ' पुरुष गुरुजनों केलिये लगाने कहा गया है और स्त्रीगुरुजनों केलिये 'अम्बा' शब्द अन्त में लगाया जाता है। ऐसे करने से वे सर्वसिद्धिप्रदायक होते हैं।498।

पराशक्तिस्तथा शुक्लादेवी कामेश्वरीति च।
तिस्रः स्त्रियस्तु दिव्येषु प्रियलीलेति मानवी।।499।।

दिव्यौघ गुरुजनों में 3 स्त्रीगुरुजन हैं - पराशक्ति, शुक्लादेवी और कामेश्वरी। तथा मानवौघों में एक ही प्रियलीला।499।

श्रीपादुकां पूजयामीत्यन्ते सर्वत्र योजयेत्।
श्रीगुरुं परमगुरुं परात्परगुरून्तथा।।500।।
परमेष्ठिगुरून् चैव दक्षिणामूर्तिरूपिणम्।
आचार्यश्रीगुरुं वन्दे परमाचार्यरूपिणम्।।501।।
पूर्वसिद्धगुरुं वन्दे आदिसिद्धगुरून्तथा।
श्रीनाथादिगुरुं वन्दे सिद्धनाथादिरूपिणम्।।502।।
त्रिपुरादिनाथं वन्दे पूजयाम्यात्मपादुकाम्।

इस क्रम से गुरुजनों की पूजा करें - श्रीगुरु, परमगुरु, परात्परगुरु, परमेष्ठि गुरु, दक्षिणामूर्ति रूपा आचार्यगुरु, परमाचार्यगुरुरूपा पूर्वसिद्धगुरु, आदिसिद्धगुरु, श्रीनाथादिगुरु, सिद्धनाथादि रूपा त्रिपुरादिनाथ गुरु - प्रत्येक के साथ चतुर्थ्यन्त के बाद 'वन्दे' अथवा 'नमः', 'श्रीपादुकां पूजयामि' जोड़ लें।500-503।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्रिकोणशीर्षे द्वे द्वे च पूजयेदंगदेवताः।।503।।

त्रिकोण के शीर्ष में दो दो अंगदेवताओं का पूजन करें।503।

शुक्लपक्षे यजेन्नित्या कामेश्वर्यादि षोडश।

कृष्णपक्षे विचित्राद्याः कामेश्वर्यादिनामिकाः।।504।।

शुक्ल पक्ष में कामेश्वर्यादि 16 नित्याओं का पूजन करें तथा कृष्ण पक्ष में कामेश्वर्यादि नामक विचित्रादि का पूजन करें।504।

षोडशीं च यजेन्मध्ये वक्ष्ये तद्यजनक्रमम्।

एकैकं हि समुच्चार्य नित्यामन्त्रं समुच्चरेत्।।505।।

मध्य में षोडशी का पूजन करें, उसके पूजन विधि आगे बताऊँगा। एक-एक का समुच्चारण कर नित्यामन्त्र का उच्चारण करें।505। कैसे?

कामेश्वर्यादि नमोऽन्ते नित्यां श्रीपादुकां पठेत्।

पूजयामि तर्पयामि हृदयं प्रोच्य पूजयेत्।।506।।

अर्थात् कामेश्वर्यादि नामों का चतुर्थ्यन्त के बाद 'नमः, नित्यां श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि भावयामि' ऐसे पढकर 'ॐ' का उच्चारण कर पूजन करना चाहिये।506।

बिन्दुं परित आकल्प्य कल्प्यते बिन्दुतोऽन्तिमः।

दक्षहस्तेन पुष्पादि वामेनाम्भो विनिःक्षिपेत्।।507।।

बिन्दु के चारों तरफ सब की कल्पना करके अन्तिम को बिन्दु पर ही कल्पना करें। दाहिने हाथ से पुष्पादि को और बायें हाथ से जल को अर्पण करें। 507।

वामावर्तेन सम्पूज्याः कोणपार्श्वेषु पंचशः।

गुरुक्रमं प्रपूज्याथ यजेदाम्नायदेवताः।।508।।

बायीं ओर से त्रिकोण के तीनों भुजाओं पर 5 - 5 का पूजन करना चाहिये, इस प्रकार गुरुक्रम का पूजन करके आम्नाय देवताओं का पूजन करें।508।

आम्नायान्ते प्रपूज्याथ पंचबाणं यजेन्नरः।

देवीं मध्यविधयाऽन्यावरणानि श्रृणु शिवे।।509।।

हे शिवे! आम्नाय देवताओं का पूजन के अनन्तर साधक पांच बाणों का पूजन करें, मध्य में देवी की पूजा विधान करके अन्य आवरणों के बारे में सुनो।509।

तुरीयोपासकानां च एतान्यावश्यकानि वै।

अष्टारपार्श्वयोरग्रे सामान्यामृतबिन्दुभिः।।510।।

उदीच्यां प्रयजेद्देवि क्षोभणद्रावणौ यतः।

आकर्षवश्यबाणौ च दक्षिणे तु समर्चयेत्।।511।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अग्रे सम्मोहनं यष्ट्वा चिन्तयेद्बाणदेवताः।
वराभयकरारक्ताः सृष्टिबाणधनुर्धराः।।512।।

हे देवी! तुरीय उपासकों केलिये यह आवश्यक है कि वे अष्टार के दोनों बगल और आगे सामान्यार्घ्यपात्रस्थ अमृतमय जलबिन्दुओं से उत्तर में क्षोभण और द्रावण बाणों का पूजन करें, दक्षिण में आकर्ष और वश्य बाणों की अर्चना करें तथा आगे सम्मोहन नामक बाण का पूजन करके बाणदेवताओं का ऐसे ध्यान करें कि वे हाथों में वरमुद्रा और अभयमुद्रा तथा सृष्टिबाण सहित धनुष को धारण किये हुये हैं।510-512।

34. अथ सर्वसिद्धिप्रदचक्रे नवमावरणार्चनम् = सर्वार्थसिद्धिप्रद चक्र में नौवें आवरण की पूजा -

अथ वक्ष्ये महेशानि नवमावरणार्चनम्।
त्रिकोणे तु महाचक्रे सर्वसिद्धिप्रदायकम्।।513।।

हे महेशानी! अब मैं लयस्थित्यात्मक सर्वसिद्धिप्रदायक त्रिकोण रूपी महाचक्र में नौवाँ आवरण की पूजा पद्धति कहता हूँ।513।

अन्तराले महाचक्रे सर्वसिद्धिप्रदाभिधे।
सामान्यपात्रसुधया यजेदायुधदेवताः।।514।।

सर्वसिद्धिप्रदा नामक अन्तरालस्थ महाचक्र में सामान्यार्घ्यपात्रस्थ अमृतमयजल बिन्दुओं से आयुध देवताओं का पूजन करें।514।

ततः श्रीपात्रसुधया निजाग्रादित्रिकोणके।
वाग्भवाख्ये सूर्यचक्रे कामरूपे च पीठके।।515।।
मित्रेशनायिकात्मिका तथा जाग्रदधिष्ठाता।
रुद्रात्मशक्तिसहिता कामेशी सर्वसिद्धिदा।।516।।
कामेश्वरस्य कामेश्या जृम्भका बाणदेवताः।
मोहकाश्चापदेव्यश्च पाशदेव्यो वशंकराः।।517।।

मध्ये दिक्षु क्रमेणैव यजेत्सर्वार्थसिद्धये।
सर्वज्ञा नित्यतृप्ता तथाऽनादिप्रबोधिनी।।512क।।
स्वतन्त्रा च महाशक्तिर्नित्याऽलुप्ता तथैव च।
नित्याऽनन्ता च कथिता देव्याः शुभे षडंगके।।512ख।

सर्वार्थसिद्धि केलिये मध्य में और पूर्वादि दिशाओं में क्रम से पूजन करें। देवी के शुभ षडंगों में सर्वज्ञा, नित्यतृप्ता, अनादिप्रबोधिनी, स्वतन्त्रा, महाशक्ति, नित्यालुप्ता और नित्यानन्ता की भावना कर पूजन करें।512क-512ख।

Agamnigam Digital Preservation Foundation

स्तम्भकाख्या महादेवि तथैवांकुशदेवताः ।
प्रसन्नां स्मेरवदनां पाणिद्वयसमन्विताम्।।518।।
दक्षिणे शुद्धगुटिकां वामे च मधुपात्रकाम्।
वृषासनगतां दक्षे लोहिताभां चतुर्भुजाम्।।519।।
दक्षिणे चांकुशं खड्गं वामे खेटकपालकौ।

तत्पश्चात् विशेषार्घ्यपात्रस्थ अमृतमय जल से अपने आगे से शुरु कर त्रिकोण का अग्र भाग पर्यन्त प्रदक्षिणानुमा पूर्वादि से प्रथम कोण में वाग्भवकूटात्मक तथा कामरूप पीठात्मक सूर्यचक्र में जाग्रत् का अधिष्ठाता रुद्रात्मशक्ति युक्त मित्रेशनायिकात्मिका सर्वसिद्धिदा कामेशी, तादृश कामेशी सहित कामेश्वर का पूजन करना है। हे महादेवी! क्रमशः विजृम्भक बाण देवतागण- मोहका, चापदेवी, वशंकरा, पाशदेवी और स्तम्भका तथा अंकुश देवतागण का पूजन करना है। बाणदेवताओं का ध्यान ऐसे करें - प्रसन्न और कामोद्रिक्त मुखवाली हैं और दाहीने हाथ में शुद्धगुटिका और बायें हाथ में मधुपात्र को धारण किये हुये उनके दोनों हाथ समन्वित हैं। अंकुशदेवताओं का ध्यान ऐसे करें - दाहिने भाग में वृषासन पर विराजमान लोहित रंग से युक्त आभावाली और चारभुजावाली हैं, दाहिने भाग के दो हाथों में अंकुश और खड्ग तथा बायें भाग के दो हाथों में खेटक और कपालक को धारण किये हुये हैं।515-520।

वायुतत्त्वाधिष्ठात्री देवी श्रीभगमालिनी।।520।।
नित्यक्लिन्ना महेशानि यजेदाम्नायदेवताः।
अग्नितत्त्वाधिष्ठात्री भेरुण्डा वह्निवासिनी।।521।।
महावज्रेश्वरी देवी जलतत्त्वाधिनायिका ।
शिवदूती त्वरिता च तथा वै कुलसुन्दरी।।522।।
विमला नीलपताका च भूतत्त्वाधिनायिका।
श्रीविजया नित्या चैव तथा च सर्वमंगला।।523।।
ज्वालामालिनी चित्रा च ललिता त्रिपुरेश्वरी।
कामेश्वर्यादिनित्या च तिथिरूपे दिने दिने।।524।।

हे महेशानी! वायुतत्त्व के अधिष्ठात्रीदेवी श्रीभगमालिनी के साथ नित्यक्लिन्ना और आम्नाय देवताओं का तथा अग्नितत्त्व के अधिष्ठात्रीदेवी वह्निवासिनी भेरुण्डा एवं जलतत्त्व के अधिष्ठात्रीदेवी महावज्रेश्वरी के साथ शिवदूती और त्वरिता का तथा भूतत्त्व के अधिष्ठात्री देवी नीलपताका विमला के साथ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीविजया नित्या और सर्वमंगला का पूजन करना है। ज्वालामालिनी, चित्रा, ललिता, त्रिपुरेशी कामेश्वर्यादि नित्याओं का दिन प्रतिदिन के तिथि के अनुसार पूजा करनी है।520-524।

नित्या सप्तदश प्रोक्ता नित्या चाष्टदशात्मिका।
लयकामेश्वरी चैव गुटिका च कामेश्वरः।।525।।
खड्गं च खेटकं चैव कपालमंकुशं तथा।

नित्यायें 17 कही गयी हैं तथा नित्यायें 18 भी कहे गये हैं। इनके अलावा इस सूर्यचक्र में लयकामेश्वरी, गुटिका और कामेश्वर का भी पूजन होता है। हाथों में खड्ग, खेटक, कपाल और अंकुश को धारण किये हुये हैं।525-526।

ततो वै कामराजाख्ये सोमचक्रे महेश्वरि।।526।।
पीठे पूर्णगिरौ चैवोड्डीशनाथात्मिका ततः।
तथा स्वप्नाधिष्ठाता च विष्णुशक्तिरुदीरिता।।527।।
महावज्रेश्वरी देवी,

तत्पश्चात् द्वितीयकोण में कामराज नामक तथा पूर्णागिरि पीठात्मक सोमचक्र में स्वप्न का अधिष्ठाता उड्डीशनाथात्मिका विष्णुशक्तियुक्त महावज्रेश्वरी देवी का पूजन करना है ।526-528।

ततस्तृतीयकोणके।
शक्त्याख्ये वह्निचक्रे च पीठे जालन्धरे तथा।।528।।
षष्ठेशनाथात्मिका च तथा सुषुप्त्यधिष्ठाता।
ब्रह्मात्मशक्तिरुदिता देवी श्रीभगमालिनी।।529।।

तत्पश्चात् तीसरे कोण में शक्तिकूटात्मक और जालन्धर पीठात्मक वह्निचक्र में सुषुप्ति के अधिष्ठाता षष्ठेशनाथात्मिका ब्रह्मशक्तियुक्त श्री भगमालिनी देवी का पूजन करना है।528-529।

बिन्दुमध्ये महेशानि कूटत्रयविजृम्भिते ।
समस्तव्योमचक्रे च पीठे चोड्यानसंज्ञके।।530।।
चर्यानाथात्मिका चैव तुर्याधिष्ठाता ततः।
परब्रह्मात्मशक्तिः श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी।।531।।

हे महेशानी! कूटत्रयात्मक और उड्यानपीठात्मक समस्तव्योमचक्र रूप बिन्दु मध्य में तुरीय का अधिष्ठाता चर्यानाथात्मिका परब्रह्मशक्तियुक्त श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी का पूजन करना है।530-531।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे योगिन्यः सिद्धिदायिकाः।
अतिरहस्यसंज्ञास्ता आयुधाष्टकदेवताः ।।532।।

सर्वसिद्धिप्रदचक्र में सिद्धिदायिका अतिरहस्या नाम से प्रसिद्ध योगिनियाँ ही आयुधाष्टकदेवता हैं।532।

कामेश्वरीमुखास्तिस्रः कोणत्रयविराजिताः।
आयुधाष्टकदेव्यस्ता यौवनोन्मत्तविग्रहाः।।533।।
रक्ता विद्युल्लताकारा उद्दामकुसुमान्विताः।
नवरत्नविशोभाढ्याः स्वस्वायुधधराः क्रमात्।।534।।

आयुधाष्टकदेवियों में से कोणत्रय में विराजमान कामेश्वरी मुख्या तीन देवियाँ यौवन से उन्मत्तविग्रहवाली, रक्तरंगवाली, बिजली की लता के आकारवाली, खिले हुये श्रेष्ठ फूलों से अलंकृत, नौप्रकार के रत्नों के आभूषणों से विभूषित और अपने-अपने आयुधों को धारण की हुयी हैं। क्रमशः वे इस प्रकार है - ।533-534।

वराभये सुधापात्रं धारयन्त्यः सुखावहाः।
कामेश्वरी शुक्लवर्णा शुक्लमाल्यानुलेपना।।535।।
मुक्ताफलस्फुरद्भूषा नानाभरणभूषिताः।
पुस्तकं चाक्षसूत्रं च वरदं चाभयं तथा।।536।।
दधती चाग्रकोणस्था रुद्रशक्तिः प्रकीर्तिता।

जो अग्रकोण में स्थित है उसे रुद्रशक्ति से युक्त कामेश्वरी देवी नाम से कहा गया है और वह सुखप्रदायिनी है, गोरी है, सफेदरंग के पुष्पादि से निर्मित माला और अनुलेप से अलंकृत है, मुक्ताफल (मणि) का चमकता हुआ आभूषण और नाना आभरणों से विभूषित है, हाथ में वरमुद्रा-अभयमुद्रा-पुस्तक-सुधापात्र आदि को धारण की हुयी हैं।535-537।

वज्रेश्वरी कुंकुमाभा स्फुरद्रत्नविभूषणा।।537।।
बालार्कवसना नीलकर्णचुम्बिविलोचना ।
इक्षुकोदण्डपुष्पेषु वरदाभयशोभिता।।538।।
दक्षकोणस्थिता देवी विष्णुशक्तिरियं मता।

जो दाहिने कोण में स्थित है उसे विष्णुशक्ति से युक्त वज्रेश्वरी देवी नाम से कहा गया है और वह कुंकुम का रंग जैसी रंगवाली हैं, चमकता हुआ रत्नों के आभूषणों से विभूषित हैं, बालसूर्यके रंग जैसे रंगवाले वस्त्रों से अलंकृत है, नीले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रंग के कान तक विस्तृत आँखों वाली है, उनके हाथ गन्ने का धनुष-पुष्प-वरमुद्रा और अभयमुद्रा से सुशोभित हैं।537-539।

सद्यः सन्तप्तहेमाभा भगमालासुशोभना।।539।।
अनर्घरत्नघटितभूषणा भुवनेश्वरी ।
पाशांकुशज्ञानमुद्रावरदानकराम्बुजा ।।540।।
ब्रह्मशक्तिर्महेशानि तापत्रयनिकृन्तनी ।
उदक्कोणस्थिता देवी सर्वकामफलप्रदा।।541।।

हे महेशानी! जो उत्तर (बायें) कोण में स्थित है उसे ब्रह्मशक्ति से युक्त भुवनेश्वरी देवी नाम से कहा गया है और वह तपे हुये सोने के रंग जैसा रंगवाली हैं, भगमाला से सुशोभित है, सर्वोत्तम रत्नों से खचित भूषणोंवाली हैं, पाश-अंकुश-ज्ञानमुद्रा-वरमुद्रा युक्त हस्तकमलों वाली हैं, तापत्रय को नाशकरनेवाली और सर्वकामफलप्रदा है।539-541।

चक्रेशीं त्रिपुराम्बां च कामेशीं पुरतो यजेत्।
पंचोपचारैराराध्य बीजमुद्रां प्रदर्शयेत्।।542।।
एता अपि रहस्याख्या योगिन्य इति पूर्ववत्।
पुष्पांजलिं प्रदद्याद्वै देव्यै देवि महेश्वरि।।543।।

हे महेश्वरी! हे देवी! तत्पश्चात् चक्रेशी त्रिपुराम्बा और कामेशी का पूजन पंचोपचारों से करके बीज (योनि) मुद्रा दर्शायें। इन्हें भी अतिरहस्या नामक योगिनी ही समझें। देवी केलिये पुष्पांजलि दें।542-543।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि त्रिपुरे देवपूजिते ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्।।544।।

हे देवों से पूजित त्रिपुरे! मुझे मेरे अभीष्टसिद्धि दें और भक्ति से मेरे द्वारा आप केलिये समर्पित नवमावरण की पूजा को ग्रहण करें।544।

35. अथ सर्वानन्दमयचक्रे दशमावरणार्चनम् = सर्वानन्दमय चक्र में दसवें आवरण की पूजा -

अथ वक्ष्ये महेशानि दशमावरणार्चनम्।
सर्वानन्दमये चक्रे महात्रिपुरसुन्दरीम्।।545।।

हे महेशानी! अब मैं लयलयात्मक सर्वानन्दमय चक्र में महात्रिपुरसुन्दरी के दशम आवरण की पूजा पद्धति कहता हूँ।545।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शक्तिधाम्ने नमः प्रोच्य सदैवोक्तक्रमेण च।
संहारचक्रे चाग्नीशासुरवायव्यकोणके।।546।।
बिन्दु मध्ये चतुर्दिक्षु श्रीपात्रामृतबिन्दुभिः।
मध्ये दिक्षु क्रमेणैव यजेत्सर्वार्थसिद्धये।।547।।

सदैव पूर्वोक्त क्रम के अनुसार सर्वप्रथम शक्तिधामरूपा देवी केलिये नमस्कार करके संहारात्मक इस चक्र में सर्वार्थसिद्धि केलिये पहले अग्नि-ईशान- नैर्ऋत्य-वायव्य कोणों में तदनन्तर मध्य में स्थित बिन्दु के चारों दिशाओं में तथा अन्त में बिन्दु रूपी मध्य में विशेषार्घ्यपात्र के जल से पूजन करें। क्रम का ध्यान रखें।546-547।

सर्वानन्दमये चक्रे रतिः प्रीतिर्मनोभुवा।
द्राविणी क्षोभिणी चैव वशिनां च वशंकरी।।548।।
आकर्षिणी मनोरम्या शोभना मीनकेतना।
सुभगा भगा तथाऽनन्ता तथा च भगसर्पिणी।।549।।
भगमालिनिकाऽनंगा तथा चानंगमेखला।
अनंगमदना तथा दिव्यानंगमदातुरा।।550।।
एताश्चक्रस्थिता नित्याः पूजयेत्ताः सुधीः नरः।

सर्वानन्दमयचक्र में स्थित इन नित्याओं का बुद्धिमान् साधक पूजा करें - रति, प्रीति, मनोभुवा, द्राविणी, क्षोभिणी, वशियों के भी वशंकरी, आकर्षिणी, मनोरम्या, शोभना, मीनकेतना, सुभगा, भगा, अनन्ता, भगसर्पिणी, भगमालिनिका, अनंगा, अनंगमेखला, अनंगमदना, दिव्या और अनंगमदनातुरा।।548-551।।

साम्बसदाशिवश्चैव सद्योजातस्ततः परम्।।551।।
वामदेवस्तत्पुरुषोऽघोरः कालाग्निरुद्रकः।
ईशानश्चैव सर्वज्ञा नित्यतृप्ताऽऽनन्दीबोधना।।552।।
स्वतन्त्रतामहाशक्तिः नित्यालुप्ता ह्यनन्तता।

तदनन्तर साम्बसदाशिव, सद्योजात, वामदेव, तत्पुरुष, अघोर, कालाग्निरुद्रक और ईशान तथा सर्वज्ञा, नित्यतृप्ता, आनन्दीबोधना, स्वतन्त्रता, महाशक्ति, नित्यालुप्ता और अनन्तता का पूजन करें।551-553।।

त्रिपुरभैरवी चक्रनायिकाऽघोरकुब्जिका।।553।।
प्राप्तिसिद्धिः सदा पूज्या षडाधारं ततोऽर्चयेत्।
डाकिनी जीवजीवेशौ साकिनी च सदाशिवः।।554।।
लाकिनीसहितो विष्णुः ब्रह्मा काकिन्या सह।
ससाकिनी गणेशश्च परमात्मा सहाकिनी।।555।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तत्पश्चात् चक्रनायिका त्रिपुरभैरवी एवं अघोरकुब्जिका का पूजन कर प्राप्ति सिद्धि का पूजन करें। उसके बाद षडाधार का पूजन निम्न क्रम से करें - डाकिनी सहित जीव और जीवेश, साकिनी सहित सदाशिव, लाकिनी सहित विष्णु, काकिनी सहित ब्रह्मा, साकिनी सहित गणेश और हाकिनी सहित परमात्मा का पूजन करें।553-555।

सयाकिनी गुरुर्देवः पूज्यश्च यथाविधि।
सर्वयोनिमुद्रां चैव दर्शयेत् शैवदर्शनम्।।556।।

अन्त में याकिनी सहित गुरुदेव का यथाविधि पूजन कर सर्वयोनिमुद्रा को दर्शावें। इस चक्र में शैवदर्शन की भावना करें।556।

योगिन्यश्चापरापरातिरहस्ययुक्ताः सदा ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यमित्युच्चार्य पुनः पुनः।।557।।

सदा इस चक्रस्थ योगिनियों को परापरातिरहस्या नाम से युक्त ग्रहण करें। बार बार 'भक्ति से आप केलिये समर्पित करता हूँ' ऐसे कह करके - ।557।

बिन्दौ पुष्पांजलिं दद्याद्योनिमुद्रां च दर्शयेत्।
प्रणमेत्पादयोरत्र साधको भक्तितः सदा।।558।।

बिन्दु में पुष्पांजलि देकर योनिमुद्रा को दर्शायें और सदा साधक भक्ति से चरणों में प्रणाम करें।558।

देव्यै पुष्पांजलिं दत्त्वा तर्पयेच्च त्रिधा त्रिधा।
इति ते कथितं भद्रे दशमावरणार्चनम्।।559।।

हे भद्रे! देवी केलिये पुष्पांजलि देकर तीन तीन बार तर्पण देने के बाद पूर्ववत् कर्म को समर्पित करें। इस प्रकार तुम्हारे लिये दशमावरण पूजन विधि कह दिया गया है।559।।

36. पश्चिमाम्नायसमष्टिक्रमः = पश्चिमाम्नाम के समष्टि पूजा -

संहारसृष्टिपूजायां शिवं बिन्दौ समर्चयेत्।
त्रिकोणे नादमभ्यर्च्य काममष्टारके यजेत्।।560।।
अष्टकोणे यजेत्कामं शिवं बिन्दौ समर्चयेत्।
त्रिकोणं पूजयेन्नादं संहारस्थितिपूजने।।561।।
अष्टकोणे कामदेवं त्रिकोणे नादमर्चयेत्।
शिवं संहारसंहारे बिन्दुचक्रे प्रपूजयेत्।।562।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यहाँ ध्यान दें कि स्थान और देवता में फर्क न होने पर भी क्रम में फर्क है। संहारसृष्टिपूजा में शिव का पूजन बिन्दु में करें तथा त्रिकोण में नाद की अर्चना करके अष्टारचक्र में कामदेव की पूजा करें। संहारस्थितिपूजा में कामदेव का पूजन अष्टकोण में तथा बिन्दु में शिव का पूजन करके त्रिकोण में नाद का पूजन करें। संहारसंहारपूजा में कामदेव का पूजन अष्टकोण में करें तथा त्रिकोण में नाद की अर्चना करके बिन्दु में शिव का पूजन करें।560-562।

अघोरकुब्जिकायां हि देवतानां लयो भवेत्।
कुब्जिकैषा लये याति लयकामेश्वरीतनौ।।563।।

अघोरकुब्जिका में देवताओं का लय होता है और यह कुब्जिका लयकामेश्वरी के शरीर में लीन होती है।563।

रामेणोपासिता गुह्यकाली स्याच्चक्रनायिका।
तस्यां लयो देवतानां भवेदेष लयक्रमः।।564।।
तस्यास्तु विलयो देव्याः लयकामेश्वरीतनौ।
अनाख्यायां क्रमः प्रोक्तः समभ्यर्चासु सर्वदा।।565।।

राम के द्वारा उपासित गुह्यकाली इस चक्र की नायिका है, अतः उसमें सभी देवताओं का लय होता है। वह लय का क्रम ऐसा है - उस गुह्यकाली देवी का विलय लयकामेश्वरी के शरीर में होता है। सर्वदा सभी पूजा के विषय में अनाख्या में होनेवाले लय का क्रम पूर्वोक्त ही है अर्थात् भेद नहीं है।564-565।

भासा समष्टिपूजायां देवतानां लयो भवेत्।
देव्याः बालाभैरवाख्यातनौ भवति सर्वदा।।566।।
सा बालाभैरवी देवी दैवैः सह लयं व्रजेत्।
लयकामेश्वरीदेहे तद्रूपं प्रतिपद्यते।।567।।

भासा विषयक समष्टिपूजा में सर्वदा देवताओं का लय बाला भैरवी के शरीर में होता है। वह बालाभैरवी सभी देवताओं के साथ लयकामेश्वरी के शरीर में लीन होकर तद्रूपता को प्राप्त होती है।566-567।

37. अथ स्पन्दिचक्रे एकादशावरणार्चनम् = स्पन्दिचक्र में ग्यारहवें आवरण की पूजा -

मन्वस्रादित्रिकोणान्तर्विनिर्मितस्पन्दिचक्राय नमः = मन्वस्रादि-त्रिकोणान्तर्विनिर्मित स्पन्दिचक्र के लिये मैं नमस्कार करता हूँ।

अथ वक्ष्ये महेशान्येकादशावरणार्चनम्।
स्पन्दिचक्रे शिवां वन्दे श्रीगायत्रीस्वरूपिणीम्।।568।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हे महेशानी! अब मैं स्पन्दि चक्र में ग्यारहवाँ आवरण की पूजा पद्धति कहता हूँ। गायत्रीस्वरूपिणी शिवा की मैं वन्दना करता हूँ।568।

गुरुरेव परब्रह्म गुरोराज्ञा गरीयसी ।
यो गुर्वनुज्ञया देवीकुलपूजां समाचरेत्।।569।।

गुरु ही परब्रह्म है, इसलिये गुरु की आज्ञा सर्वश्रेष्ठ व शिरोधार्य है। जो गुरु की अनुमति लेकर ही देवीकुल की पूजा करेगा वही सफल होवेगा।569।

गायत्रीं तु समुच्चार्य तत्तदावृतिदेवताः।
पूजनीयाः प्रयत्नेन सर्वकामार्थसिद्धये।।570।।
अथवा सर्वदा पूज्या गायत्र्याः नामबोधिभिः।
द्वात्रिंशदक्षरैः पूज्या गायत्री परमा शुभा।।571।।

सकल कामनाओं की निश्चित सिद्धि केलिये गायत्री का समुच्चारण कर सभी आवरण के देवताओं का पूजन प्रयत्नपूर्वक करना चाहिये। अथवा सर्वदा गायत्री के 32 अक्षरों से बोधित नामों से पूजा करनी चाहिये क्योंकि गायत्री परमकल्याणकारिणी है।570-571।

37 क. त्रिपदा गायत्री = गायत्री के तीन पाद -

(त) तत्त्वज्ञा ज्ञानदात्री च (त्) तत्त्वज्ञानप्रबोधिनी।
शास्त्रं ख्याता सदा वन्द्या (स) सर्वशास्त्रार्थवादिनी।।572।।

'त' अक्षर तत्त्वज्ञा ज्ञानदात्री, 'त्' अक्षर तत्त्वज्ञानप्रबोधिनी और 'स' अक्षर सर्वशास्त्रार्थवादिनी का बोधक है, जिसके कारण शास्त्र भी प्रसिद्ध है इसलिये वह सदा वन्दनीया है।572।

विबुधेषु च विज्ञेया (वि) विबुधार्थस्वरूपिणी।
सर्वज्ञा सर्वदा देवि (तु) तुर्यामार्ग - प्रदर्शिनी।।573।।

'वि' अक्षर विबुधार्थस्वरूपिणी का बोधक होने से विद्वानों में विज्ञेय है। हे देवी! आप सर्वदा सर्वज्ञ होने से आप 'तु' अक्षर से तुर्यामार्गप्रदर्शिनी का बोधक हैं।573।

सनातना (र्)रमा दिव्या (व)वयोऽवस्थाविवर्जिता।
रेवायाः रम्यतीर्थे च (रे) रेवातीर - निवासिनी।।574।।

'र्' अक्षर रमा (रमणीया), 'व' अक्षर वयोऽवस्थाविवर्जिता और 'रे' अक्षर रेवातीरनिवासिनी का बोधक हैं, इसलिये कि आप रेवा (नर्मदा) के रम्यतीर्थ में दिव्य रूप से नित्य निवास करती हैं।574।

आगमैक - सदा - रूपा (ण्) निखिलागमवेदिनी।
(य)यमुना(म्)मोक्षदा रम्या(भ)भक्ताभीष्टप्रदायिनी।।575।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आप आगमैकसदारूप हैं इसलिये 'ण्' अक्षर से निखिलागमवेदिनी का बोध होता है। आप रमणीया हैं इसलिये 'य' अक्षर यमुना, 'म्' अक्षर मोक्षदा, और 'भ' अक्षर भक्ताभीष्ट प्रदायिनी का बोधक है।575।

भक्ताभीष्टप्रदा (र्) रम्या (गो) गोवर्धनविवर्धिनी।
शान्तिप्रिया च विघ्नेशी (दे) देशोपद्रवनाशिनी।।576।।

आप भक्ताभीष्टप्रदा, शान्तिप्रिया और विघ्नेशी हैं इसलिये 'र्' अक्षर रम्यता, 'गो' अक्षर गोवर्धनविवर्धिनी और 'दे' अक्षर देशो(द्वेषो)पद्रवनाशिनी का बोधक है।576।

वरदात्री सर्वदा सा (व) वक्रतुण्डवरप्रदा।
(स्)स्पन्दरूपा (य)योगगम्या ज्ञानविज्ञानसौख्यदा।।577।।

आप सर्वदा वरदात्री और ज्ञानविज्ञानसौख्यदा हैं इसलिये 'व' अक्षर वक्रतुण्डवरप्रदा, 'स्' अक्षर स्पन्दरूपता और 'य' योगगम्यता का बोधक है।577।

(धी)धीरबन्धा वन्दिता च (म) महावैरिविनाशिनी।
समग्रेषु च कार्येषु (हि) हितकर्मफलप्रदा।।578।।

समस्त कर्मों में आप वन्दित हैं इसलिये 'धी' अक्षर धीरबन्धा, 'म' अक्षर महावैरिविनाशिनी और 'हि' अक्षर हितकर्मफलप्रदा का बोधक है।578।

(धि)धिषणा(यो)योधिनी चान्या (यो)योगक्षेमविहारिणी।
(नः)नवसिद्धिसमाराध्या (प्)प्रभवा (र)रोगशमनी।।579।।

अन्य भी सामर्थ्य के कारण 'धि' अक्षर धिषणा, 'यो' अक्षर योधिनी, 'यो' अक्षर योगक्षेमविहारिणी, 'नः' अक्षर नवसिद्धिसमाराध्या, 'प्' अक्षर प्रभवा और 'र' अक्षर रोगशमनी का बोधक है।579।

(चो) चोरघ्नी चोरहन्त्री (द) दक्षिणामूर्तिरूपिणी।
वन्द्या च वेदमाता सा (या) यात्रापाप-विवर्जिता।।580।।

आप वेदमाता और वन्दनीया होने से 'चो' अक्षर चोरघ्नी तथा चोरहन्त्री, 'द' अक्षर दक्षिणामूर्तिरूपिणी और 'या' अक्षर यात्रापापविवर्जिता का बोधक है।580।

स्तोतव्या छन्दसां माता (त्) तुरीयपथगामिनी।

स्तुतियोग्य वेदों के माता होने से 'त्' अक्षर तुरीयपथगामिनी का बोधक है।581।

37 ख. गायत्र्याश्चतुर्थः पादः = गायत्री के चौथा पाद -

(प) परब्रह्मात्मिका ब्राह्मी (रो)रोगेशी (र)रमणीप्रिया।।581।।

Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिसलिये आप ब्राह्मी हैं इसलिये 'प' अक्षर परब्रह्मात्मिका, 'रो' अक्षर रोगेशी और 'र' अक्षर रमणीप्रिया का बोधक है।।581।।

(ज) जगत्प्रिया (से) सेव्यमाना (सा) सागराम्बरा।
(व)वेदाक्षरपरितांगी (दो)दोहिनी(म्)माधवी तथा।।582।।

अत एव 'ज' अक्षर जगत्प्रियता, 'से' अक्षर सेव्यमानता, 'सा' अक्षर सागराम्बरता, 'व' अक्षर वेदाक्षरपरितांगी, 'दो' अक्षर दोहिनी और 'म्' अक्षर माधवी का बोधक है।582।

द्वात्रिंशदक्षरै रक्ता गायत्री परमा शुभा।
अतोऽस्य पाठमात्रेण फलं प्राप्नोति वै शुभम्।।583।।

32 अक्षरों से निर्मित गायत्री अत्यन्त कल्याणकारिणी है। इसलिये इसका पाठमात्र से शुभ फल प्राप्त होता है।583।

गायत्र्या नामभिर्पूज्या सर्वकर्मार्थसिद्धये।
पूजयेच्च विधानेन योगक्षेमार्थसिद्धये।।584।।

अत: सकल कामनारूपी प्रयोजन की सिद्धि केलिये गायत्री के नामों से पूजा करें तथा योग और क्षेम रूपी प्रयोजन को सिद्ध करने केलिये भी विधान से पूजा करनी चाहिये।584।

पूज्या चक्रेश्वरी चैव बालात्रिपुरसुन्दरी।
महात्रिपुरेश्वरी चैव सर्वाम्नायनायिका।।585।।

चक्रेश्वरी बालात्रिपुरसुन्दरी तथा सर्वाम्नायनायिका महात्रिपुरेश्वरी का पूजन करना चाहिये।585।

चक्रस्थसिद्धा मुद्रा च स्पन्दीचक्रनायिका।
चक्रस्थयोगिनी चैव महात्रिपुरसुन्दरी।।586।।

स्पन्दीचक्र की नायिका, चक्रस्थ सिद्धा व मुद्रा, चक्रस्थ योगिनी और महात्रिपुरसुन्दरी का भी पूजन करें।586।

इत्युच्चार्य च संपूज्य पुष्पांजलिभिस्ततः।
हृदि च प्रणमेद्भक्त्या योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्।।586।।

ये सब देवियाँ पूजित हुयी - ऐसे बोलकर पूजन करके पुष्पांजलि देकर हृदय में भक्ति से प्रणाम करें और योनि मुद्रा दर्शायें।587।

सांगाः सवाहनाश्चैव सायुधाश्च ससिद्धयः।
तर्पिताः सन्त्विति वदेज्जलं तत्र विनिक्षिपेत्।।586।।

सांगा सवाहना सायुधा ससिद्धका सपरिवार सांगोपांग सर्वोपचार से पूजित हों और वे सब तृप्त होवे - ऐसे बोलकर थोड़ा जल छोड़ें।588।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि त्रिपुरे देवपूजिते।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं शुभं चैतत्तवार्चनम्।।589।।

हे देवताओं से पूजित त्रिपुरे! मुझे मेरे अभीष्ट दें और भक्ति से मेरे द्वारा आप केलिये समर्पित एकादशावरण की आपकी यह पूजा को ग्रहण करें।589।

38. स्नपन्दिचक्रे द्वादशावरणार्चनम् = स्पन्दि चक्र में बारहवें आवरण की पूजा -

अथ वक्ष्ये महेशानि द्वादशावरणार्चनम्।
स्पन्दिषु च शिवां वन्दे महाविद्यास्वरूपिणीम्।।590।।

हे महेशानी! अब मैं स्पन्दिनामक चक्र में ही की जानेवाली द्वादश आवरण की पूजा पद्धति कहता हूँ। महाविद्यास्वरूपिणी शिवा कि मैं वन्दन करता हूँ।590।

38 क. दशमहाविद्याः = दस महाविद्याओं के नाम आदि -

काली तारा षोडशी च परमा भुवनेश्वरी।
त्रिपुराभैरवी वन्द्या छिन्नमस्ता तथैव च।।591।।

1.काली, 2.तारा, 3.षोडशी, 4.भुवनेश्वरी, 5.त्रिपुराभैरवी और 6.छिन्नमस्ता ये सब श्रेष्ठ व वन्द्या हैं।591। अथवा

आद्या तारा श्रीविद्या च त्रिपुरसुन्दरी चैव।
ललिताभैरवी वन्द्या छिन्नमस्ता तथैव च।। - इति पाठभेदः।

1.आद्या (काली), 2.तारा, 3.श्रीविद्या, 4.त्रिपुरसुन्दरी, 5.ललिताभैरवी और 6.छिन्नमस्ता वन्द्या हैं।)

धूमावती च बगला मातंगी कमला तथा।
दशविद्यामयी देवी महात्रिपुरसुन्दरी।।592।।

7.धूमावती, 8.बगला, 9.मातंगी और 10.कमला। इस प्रकार दशविद्यामयी देवी महात्रिपुरसुन्दरी है।592।

पूर्वस्य सिद्धलक्ष्मीश्च पंचवक्त्रा तथोत्तरा।
मिलित्वा दशवक्त्राऽथ महाकालीति कथ्यते।।593।।

पूर्वदिशा के सिद्धलक्ष्मी और उत्तरदिशा के पंचवक्त्रा, दोनों को मिलाकर ईशानकोण में दशवक्त्रा महाकाली कही गयी है।593।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कमला हि महालक्ष्मी बगला दक्षिणोत्तरा।
मिलित्वाग्नेयकोणस्य महालक्ष्मीर्निगद्यते।।594।।

दक्षिण के कमला जो महालक्ष्मी और पूर्व के बगला, दोनों को मिलाकरके आग्नेयकोण में महालक्ष्मी कहीं गयी हैं।594।।

दक्षिणस्योग्रताराऽथ मोहनी च सरस्वती।
पश्चिमस्यां च चामुण्डा भद्रकालीति प्रोच्यते।।595।।

दक्षिण के उग्रतारा जो मोहनीसरस्वती है और पश्चिम के चामुण्डा, दोनों को मिलाकरके नैर्ऋत्य कोण में भद्रकाली कही गई है।595।

प्रतीच्यां चण्डमातंगी छिन्नमस्ता तथोत्तरा।
वायव्यस्य मिलिता च महासरस्वती ननु।।596।।

पश्चिम के चण्डमातंगी और उत्तर के छिन्नमस्ता, दोनों को मिलाकरके वायव्य में महासरस्वती कहीं गई है।596।

अथैतास्त्वन्तराले च पूजनीया विधानतः।
बिन्दौ नवार्णमन्त्रं च पूजयेद्यत्नतो ननु।।597।।

उक्त प्रकार से इन सबका अन्तराल दिशाओं में ही विधान से पूजन करना चाहिये। तदनन्तर यत्नपूर्वक बिन्दु में नवार्णमन्त्र से पूजन करें।597।

चामुण्डा भद्रकाली च तथोपाम्नायनायिका।
त्रिशक्तिचामुण्डायुक्ता महात्रिपुरसुन्दरी।।598।।
बालाचक्रेश्वरी चैव तथा प्राकाम्यसिद्धिदा।
महायोनिमुद्रा चैव स्पन्दीयचक्रनायिका।।599।।
निगर्भयोगिनी चैव महात्रिपुरसुन्दरी।
इत्युच्चार्य च संपूज्य पुष्पांजलिभिस्ततः।।600।।

चामुण्डा, भद्रकाली, उपाम्नायनायिका, त्रिशक्तिचामुण्डा से युक्त महात्रिपुरसुन्दरी, बालाचक्रेश्वरी, प्राकाम्यसिद्धिदा, महायोनिमुद्रा, स्पन्दीयचक्रनायिका, निगर्भयोगिनी और महात्रिपुरसुन्दरी, ये सब देवियाँ पूजित हुयी - ऐसे बोलकर पूजन करके पुष्पांजलि दें ।598-600।

हृदि च प्रणमेद्भक्त्या योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्।
सांगाः सवाहनाश्चैव सायुधाश्च ससिद्धयः।।601।।

हृदय में भक्ति से प्रणाम करें और योनिमुद्रा दर्शायें। सांगा सवाहना सायुधा ससिद्धका सपरिवार सांगोपांग सर्वोपचार से पूजित हों।601।

तर्पिताः सन्त्विति वदेज्जलं तत्र विनिक्षिपेत्।
अभीष्टसिद्धिं मे देहि त्रिपुरे देवपूजिते।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वादशावरणार्चनम्।।602।।

वे सब तृप्त होवे - ऐसे बोलकर थोड़ा जल छोड़ें। हे देवताओं से पूजित त्रिपुरे! मुझे मेरे अभीष्ट दें और भक्ति से मेरे द्वारा आप केलिये समर्पित द्वादशावरणार्चन को ग्रहण करें ।602।

38 ख. उत्तराम्नायसमष्टिक्रमः = उत्तराम्नाय के समष्टि क्रम-

कला नादः शिवश्चायं वसुकोणं त्रिकोणकम्।
बिन्द्वात्मकमिति यथा पश्चिमाम्नायो वै तथा।।603।।
समष्टिं च महाकीर्तिप्रदं चक्रं तथैव च।
लयश्चाघोरकुब्जेति यथा च कुब्जिकेश्वरः।।604।।
लयः कामेश्वरश्चैव साम्बा कामेश्वरी तथा।
पराशक्त्यादिसहितं समस्तं गुरुमण्डलम्।।605।।

कला, नाद, यह जो शिव, वसुकोण, त्रिकोण और बिन्दु - यह पश्चिमाम्नाय का क्रम है। इनकी समष्टि को महाकीर्तिप्रदचक्र कहा गया जिसका लय अघोरकुब्जा में, उसका लयकुब्जिकेश्वर में, उसका लय कामेश्वर में, उसका साम्बा कामेश्वरी में लय होता है। पराशक्त्यादि सहित सम्पूर्ण समुदाय गुरुमण्डल है।603-605।

---

38 ग. अतिरिक्त समष्टिपूजनम् = अतिरिक्त समष्टि पूजा -

बिन्द्वादिभूपुरे पूज्या दशचक्रस्थिता परा।
दिव्योत्तराख्यके चक्रेऽनाख्यायां शुभे तथा।।605 क।।
ब्रह्मादिपंचप्रेतस्था रक्तोत्पलसुशोभिता।
चतुःपंचाशद्दलैर्युक्तकमलोपरिराजिता।।605 ख।।
सिद्धकाली शुभा पूज्या त्र्यम्बिका त्रिपुरेश्वरी।
भुवनमोहिनी पूज्या सर्वदानन्दिनी शुभा।।605 ग।।

बिन्द्वादि भूपुरपर्यन्त में 10 चक्रों में स्थित पराशक्ति का पूजन करें। अत्यन्त शुभ दिव्योत्तरनामक अनाख्याचक्र में ब्रह्मादिपंचप्रेतासन पर स्थिता जो रक्तोत्पल से सुशोभिता, 54 दलों से युक्त कमल पर विराजमान इनका क्रमशः पूजन करें - शुभा सिद्धकाली, त्र्यम्बिका, त्रिपुरेश्वरी, भुवनमोहिनी और सर्वदा शुभा आनन्दिनी।605क-605ग।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

39. स्पन्दिचक्रे त्रयोदशावरणार्चनम् = स्पन्दिचक्र में तेरहवें आवरण की पूजा –

अथ वक्ष्ये महेशानि त्रयोदशावृतिक्रमः।
वन्दे स्पन्दिषु बिन्दौ च महात्रिपुरसुन्दरीम्।।606।।

हे महेशानी! अब मैं स्पन्दिनामक चक्र में त्रयोदश आवरण की पूजा पद्धति कहता हूँ। बिन्दु और स्पन्दिचक्र में विराजमान महात्रिपुरसुन्दरी कि मैं वन्दना करता हूँ ।606।

गुह्या कामकला काली संहारभैरवस्तथा।
भुवनेशी सदाशम्भुः भैरवी दक्षकालिका।।607।।
भैरवेति महाकालोऽक्षोभ्यो महोग्रतारका।
रुद्रश्चाथ महाकाली लक्ष्मीर्विष्णुर्भैरवः।।608।।
महासरस्वती ब्रह्मा चामुण्डा भीषणस्तथा।
अथोग्रचण्डा दुर्गा च पाण्डुनाथोऽथ भैरवः।।609।।
वज्रकुब्जा शिखाच्छन्दः कुब्जिकेश्वरभैरवः।
शारदा त्रिपुरा बाला त्रिपुरो भैरवस्तथा।।610।।
बाला वै सुन्दरी प्रोक्ता वटुको भैरवस्तथा।
बालात्रिपुरसुन्दर्याः त्रिपुरेश्वरभैरवः।।611।।
कादिविद्येश्वरी काली हादिविद्या च सुन्दरी।
सादि तु तारिणी विद्या ललिता पंचदशी सा।।612।।
अथातो विबुधैर्ज्ञेया महात्रिपुरसुन्दरी।
ललितेशो भैरवश्चैव ललितेश्वरषोडशी।।613।।
कामेश्वरः शिवश्चैव महात्रिपुरसुन्दरी।
महाकामेश्वरश्चैव भैरवो मंगलप्रदः।।614।।
ललिता गुह्यकाली च सर्वकामार्थसिद्धिदा।
तथा त्रिखण्डा मुद्रा च परारहस्ययोगिनी।।615।।

गुह्या, कामकला, काली, संहारभैरव, भुवनेशी, सदाशम्भु, भैरवी, दक्षकालिका, भैरव, महाकाल, अक्षोभ्य, महोग्रतारका, रुद्र, महाकाली, लक्ष्मी, विष्णुभैरव, महासरस्वती, ब्रह्मा, चामुण्डा, भीषण, उग्रचण्डा, दुर्गा, पाण्डुनाथभैरव, वज्रकुब्जा, शिखाच्छन्द, कुब्जिकेश्वरभैरव, शारदा, त्रिपुरा, बाला, त्रिपुरभैरव, बालासुन्दरी, वटुकभैरव, बालात्रिपुरसुन्दरी, त्रिपुरेश्वरभैरव, कादिविद्येश्वरी काली, हादिविद्येश्वरी सुन्दरी, सादिविद्येश्वरी तारिणी, ललिता जो पंचदशी इन सब का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्रमशः पूजन करें। विद्वानों को यह जानना चाहिये कि महात्रिपुरसुन्दरी, ललितेशभैरव, ललितेश्वरषोडशी, कामेश्वर, शिव, पुनः महात्रिपुरसुन्दरी, महाकामेश्वरभैरव, ललिता और सर्वकामार्थसिद्धिदा गुह्यकाली - ये सब मंगलप्रदायक हैं। इन सब के पूजन के अनन्तर त्रिखण्डा मुद्रा और परारहस्ययोगिनी के भी पूर्वोक्त रीति से नामोच्चरण पूर्वक पूजा करें।607-615।

इत्युच्चार्य च संपूज्य पुष्पांजलिभिस्ततः।
हृदि च प्रणमेद्भक्त्या योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्।।616।।

ऐसे बोलकर पूजन करके पुष्पांजलि दें तत्पश्चात् हृदय में भक्ति से प्रणाम करें और योनि मुद्रा दर्शायें।616।

सांगाः सवाहनाश्चैव सायुधाश्च ससिद्धयः।
तर्पिताः सन्त्विति वदेज्जलं तत्र विनिक्षिपेत्।।617।।

सांगा सवाहना सायुधा ससिद्धका सपरिवार सांगोपांग सर्वोपचार से पूजित हों और वे सब तृप्त होवे - ऐसे बोलकर थोड़ा जल छोड़ें।617।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि त्रिपुरे देवपूजिते।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं त्रयोदशावृतिक्रमः।।618।।

हे देवताओं से पूजित त्रिपुरे! मुझे मेरे अभीष्ट दें और भक्ति से मेरे द्वारा आप केलिये समर्पित त्रयोदशावरणपूजा को ग्रहण करें।618।

40. स्पन्दिचक्रे चतुर्दशावरणार्चनम् = स्पन्दि चक्र में चौदहवें आवरण की पूजा -

श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते भक्तानुग्रहकारक।
अनुज्ञां भगवन्देहि लयक्रमार्चनाय मे।।619।।

भक्तों पर अनुग्रह करनेवाले श्रीगुरुदेव दक्षिणामूर्ति भगवान्! लयक्रमार्चन केलये मुझे अनुमति दें।619।

ऋग्रूपिणी ब्रह्माणि रुद्राणी यजुरूपिणी।
सामवेदस्वरूपा च वैष्णवी परिकीर्तिता।।620।।

ऋग्रूपिणी ब्रह्माणि है, यजुरूपिणी रुद्राणी है और सामवेदस्वरूपा वैष्णवी है - ऐसे कहा गया है।620।

त्रिशक्तिरूपिणं तत्र वेदाद्यं प्रणवं स्मरेत्।
अम्बाऽम्बिकाऽम्बालिकाश्च विद्याऽविद्ये परं शिवम्।।621।।
सर्वमन्त्रेश्वरी चैव सृष्टिस्थितिलयात्मिका।
अनाख्या भासा चैव सुन्दरीति प्रकथ्यते।।622।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऊर्ध्वाम्नायात्मिका पूज्या महात्रिपुरसुन्दरी।
महाकामेश्वरी चैव महावज्रेश्वरी तथा।।623।।
महासमया नित्या च प्रयजेद्भगमालिनीम्।
बालां समयानित्यां च महात्रिपुरसुन्दरीम्।।624।।

इसलिये त्रिशक्तिरूप वेदाद्य प्रणव का स्मरण पूजा के आरम्भ में करें। अम्बा, अम्बिका, अम्बालिका, विद्या, अविद्या, परशिव, सृष्टिस्थितिलयात्मिका सर्वमन्त्रेश्वरी, अनाख्या, भासा और सुन्दरी - इन्हें ऊर्ध्वाम्नायात्मिका कहा गया है, इनकी पूजा क्रमशः करने के बाद हे महात्रिपुरसुन्दरी! महाकामेश्वरी, महावज्रेश्वरी, महासमया तथा नित्या का पूजन करें। तत्पश्चात् भगमालिनी, बाला, समयानित्या और महात्रिपुरसुन्दरी का पूजन करना चाहिये।621-624।

तदनन्तर चरणों की पूजा इस क्रम से करें -

शुक्लं रक्तं च मिश्रं च विश्रान्तिचरणं तथा।
निर्वाणचरणं चेति तुरीयचरणं तथा।।625।।
तुरीयातीतचरणं पूजयामीह सर्वदा।

शुक्लचरण, रक्तचरण, मिश्रचरण, विश्रान्तिचरण, निर्वाणचरण, तुरीयचरण और तुरीयातीतचरण का पूजन मैं यहाँ (इस आवरण में) सर्वदा करता हूँ।625-626।

प्रथमः परमेश्वरश्चैव द्वितीयो विच्चेश्वरस्तथा।।626।।
अन्यो हंसेश्वरश्चैव संवर्तेश्वरसंज्ञकः।
ततो द्वीपेश्वरश्चैव नवात्मेश्वरसंज्ञकः।।627।।
षडन्वयेति सुप्रोक्तो रश्मिरहितशाम्भवः।

रश्मिरहित शाम्भव षडन्वय शब्द से जो कहे गये हैं वे क्रमशः इस प्रकार से हैं-परमेश्वर, विच्चेश्वर, हंसेश्वर, संवर्तेश्वर, द्वीपेश्वर और नवात्मेश्वर। 626-628।

षडन्वयो वाग्भवः कूटः कामराजस्तथैव च।।628।।
सौम्यैन्द्री पश्चिमाम्नायाः त्रितयात्मा च वाग्भवः।
कादिः स एव कथितः कूटस्तन्त्रविशारदैः।।629।।
हादिः स एव कथितः कूट आगमवेदिभिः।
षोडशकूटात्मिकेयं कथ्यते चक्रनायिका।।630।।

षोडशकूटात्मिका चक्रनायिका का स्वरूप इस प्रकार कहा गया है - षडन्वय, वाग्भवकूट, कामराजकूट, सौम्या, ऐन्द्री, पश्चिमाम्नाय, त्रितयरूपा वाग्भव

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिसे तन्त्रविशारदों ने कादि कूट कहा है तथा उसी को आगमवेदियों ने हादि कूट भी कहा है।628-630।

ऊर्ध्वाम्नायेश्वरो चैव सुप्रोक्ता महाषोडशी।
यजेद्वै सर्वसिद्धीश्च सर्वकामार्थसिद्धिदाः।।631।।

इस आवरण में ऊर्ध्वाम्नायेश्वर और महाषोडशी जो कहे गये हैं उनका सर्वकामार्थसिद्धि देनेवाले सर्वसिद्धियों के सहित पूजा करें।631।

इत्युच्चार्य च संपूज्य पुष्पांजलिभिस्ततः।
हृदि च प्रणमेद्भक्त्या योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्।।632।।

ऐसे बोलकर पूजन करके पुष्पांजलि दें तत्पश्चात् हृदय में भक्ति से प्रणाम करें और योनि मुद्रा दर्शायें।632।

सांगाः सवाहनाश्चैव सायुधाश्च ससिद्धयः।
तर्पिताः सन्त्विति वदेज्जलं तत्र विनिक्षिपेत्।।633।।

सांगा सवाहना सायुधा ससिद्धका सपरिवार सांगोपांग सर्वोपचार से पूजित हों और वे सब तृप्त होवे - ऐसे बोलकर थोड़ा जल छोड़ें।633।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि त्रिपुरे देवपूजिते।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं शुभमेतत्तवार्चनम्।।634।।

हे देवताओं से पूजित त्रिपुरे! मुझे मेरे अभीष्ट दें और भक्ति से मेरे द्वारा आप केलिये समर्पित चतुर्दशावरणपूजा को ग्रहण करें।634।

41. अथ बिन्दौ पंचदशावरणार्चनम् = बिन्दु में पन्द्रहवें आवरण की पूजा करें -

श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते भक्तानुग्रहकारक।
अनुज्ञां भगवन्देहि सृष्टिक्रमार्चनाय मे।।635।।

हे भक्तों पर अनुग्रह करनेवाले श्रीगुरुदेव दक्षिणामूर्ति भगवान्! सृष्टिक्रमार्चन केलये मुझे अनुमति दें।635।

बिन्दौ षट्कोणमाकल्प्य चिन्तयेत्शाम्भवं शिवम्।
सभैरवमुदीच्याथ पूजयेदत्र देवता।।636।।
दक्षिणे पूजनीया च दक्षिणा कालिका शिवा।
महाकाली भैरवश्च तया सार्द्धं प्रपूजयेत्।।637।।
सर्वाम्नायात्मिका पूज्या महात्रिपुरसुन्दरी।
निर्वाणभैरवं चात्र यथाशास्त्रं समर्चयेत्।।638।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बिन्दु में एक षट्कोण की कल्पना करके उसमें शाम्भव शिव का चिन्तन करें। उसके उत्तर में भैरव देवता का पूजन करें। दक्षिण में दक्षिणाकालिका शिवा का पूजन करें, उनके साथ महाकाली और भैरव का भी पूजन करें। यथाशास्त्र यहाँ (इस स्पन्दिचक्र में) सर्वाम्नायात्मिका महात्रिपुरसुन्दरी और निर्वाणभैरव का पूजन करना चाहिये।636-638।

शाम्भवं रश्मिसहितं प्रोच्यते च पृथक्पृथक्।
यजेन्नवात्मेश्वरोऽत्र द्वीपेश्वरस्तथैव च।।639।।
संवर्तेश्वरः सुप्रोक्तः हंसेश्वरस्तथैव च ।
विच्चेश्वरः सुप्रोक्तः परेश्वरस्तथैव च।।640।।

रश्मिसहित शाम्भवों की पूजा पृथक्-पृथक् करने को कहा गया है। यहाँ नवात्मेश्वर, द्वीपेश्वर, संवर्तेश्वर, हंसेश्वर, विच्चेश्वर और परेश्वर का पूजन करें।639-640।

पूर्वाम्नाये यजेच्चैव निर्वाणभुवनेश्वरीम्।
दक्षिणाम्नाये निर्वाणकालिकां दक्षिणां यजेत्।।641।।
अधराम्नाये निर्वाणमहोग्रतारां यजेत्।
निर्वाणकुब्जिकां चैव यजेत्पश्चिमाम्नायके।।642।।
उत्तरे गुह्यकालीं च यजेदेवं विधानतः।
ऊर्ध्वाम्नाये प्रपूज्या हि महात्रिपुरसुन्दरी।।643।।

पूर्वाम्नाय में निर्वाणभुवनेश्वरी का पूजन कर दक्षिणाम्नाय में दक्षिणा निर्वाणकालिका का पूजन करें, उसके बाद अधराम्नाय में निर्वाणमहोग्रतारा का पूजन कर पश्चिमाम्नाय में निर्वाणकुब्जिका का पूजन करें। उत्तराम्नाय में गुह्यकाली का विधि विधान से पूजन कर ऊर्ध्वाम्नाय में महात्रिपुरसुन्दरी का पूजन करें ।641-643।

श्रीविद्या बगला चैव कालरात्रिस्तथैव च।
जयदुर्गा छिन्नमस्ता महात्रिपुरसुन्दरी।।644।।
समयाविद्या कथिताः यदेताश्च यथाविधि।
अघोरवज्रसमया च घोरा वीरा जयस्तथा।।645।।
सिद्धभोगौ मोक्षश्च यजेन्नवरत्नकुब्जिकाः।
कामतारा रमा माया वागदिव्ये तथा परा।।646।।
निर्वाणश्च तथा मोक्षः यजेन्नवरत्नसुन्दरीम्।
पूजयेदत्र निर्वाण-महात्रिपुर-सुन्दरीम्।।647।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महात्रिपुरसुन्दर्याः द्वादश च चतुर्दश।
षोडशकूटात्मिकेयं सर्वाम्नायात्मिका तथा।।648।।
अष्टादशी प्रपूज्या हि महात्रिपुरसुन्दरी।
मोक्षसिद्धिः त्रिखण्डा च परापरातियोगिनी।।649।।

इनके अलावा श्रीविद्या, बगला, कालरात्रि, जयदुर्गा, छिन्नमस्ता, (पुनः) महात्रिपुरसुन्दरी और समयाविद्या - कहे गये इन सब के यथाविधि पूजन करके अघोरवज्रसमया, घोरा, वीरा तथा जय, सिद्ध और मोक्ष का भी पूजन करें। तदनन्तर नवरत्नकुब्जिका, कामतारा, रमा, माया, वाक्, दिव्या, परा, निर्वाण और (पुनः) मोक्ष के पश्चात् नवरत्नसुन्दरी, निर्वाणमहात्रिपुरसुन्दरी तथा त्रिपुरसुन्दरी के द्वादशात्मिका, चतुर्दशात्मिका, षोडशकूटात्मिका, सर्वाम्नायात्मिका और अष्टादशात्मिका स्वरूप का पूजन कर फिर अन्त में त्रिपुरसुन्दरी का पूजन करें। उसके बाद मोक्षसिद्धि, त्रिखण्डा और परापरातियोगिनी का पूजन करें।644-649।

इत्युच्चार्य च संपूज्य पुष्पांजलिभिस्ततः।
हृदि च प्रणमेद्भक्त्या योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्।।650।।

ऐसे बोलकर पूजन करके पुष्पांजलि दें तत्पश्चात् हृदय में भक्ति से प्रणाम करें और योनि मुद्रा दर्शायें।650।

सांगाः सवाहनाश्चैव सायुधाश्च ससिद्धयः।
तर्पिताः सन्त्विति वदेज्जलं तत्र विनिक्षिपेत्।।651।।

सांगा सवाहना सायुधा ससिद्धका सपरिवार सांगोपांग सर्वोपचार से पूजित हों और वे सब तृप्त होवे - ऐसे बोलकर थोड़ा जल छोड़ें।651।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि त्रिपुरे देवपूजिते।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्दशावृतिक्रमः।।651क।।

हे देवताओं से पूजित त्रिपुरे! मुझे मेरे अभीष्ट दें और भक्ति से मेरे द्वारा आप के लिये समर्पित पंचदशावरणपूजा को ग्रहण करें।651क।

42. अथ भूपुराद् बहिः षोडशावरणार्चनम् = भूपुर के बाहर सोलहवें आवरण की पूजा करें-

अथ वक्ष्ये महेशानि षोडशावरणार्चनम्।
भूपुराद् बहिः पूजयेदतोऽऽकारावधिस्ततः।।651क।।

हे महेशानी! अब मैं भूपुर से बाहर किये जानेवाले षोडश आवरण की पूजा पद्धति कहता हूँ, जो आकारावधि पर्यन्त करना है।652।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कलां तत्त्वं च वर्णं च भुवनं च पदं तथा।
मन्त्राध्वानं यजेच्चैव तत्त्वाध्यानं च तत्त्वतः ॥653॥

कला, तत्त्व, वर्ण, भुवन, पद और मन्त्र - इन अध्वाओं का पूजन करके तत्त्वों के स्वरूप का ध्यान करना चाहिये।653।

प्रियेश्वरं यजेदत्र डाकिनीसहितं सदा।
ससाकिनं सदाशिवं विष्णुं च लाकिन्या सह॥654॥
काकिन्या गणनाथं च याकिन्या स्वगुरुं तथा।
यजेत्सदा शुभां चैव महात्रिपुरसुन्दरीम्॥655॥

वहाँ पर क्रमशः डाकिनी सहित प्रियेश्वर, साकिनी सहित सदाशिव, लाकिनी सहित विष्णु, काकिनी सहित गणनाथ, याकिनी सहित अपने गुरु का सदा पूजन करें और कल्याणकारिणी महात्रिपुरसुन्दरी का सदा पूजन करें।654-655।

मोक्षसिद्धां त्रिखण्डां च मुद्रां तत्र प्रदर्शयेत्।
सर्वदर्शनमुत्तीर्णां सर्वाध्वशोधनेश्वरीम्॥656॥
परापरातियोगिनीं यजेच्च रहस्यात्मिकाम्।
त्रैलोक्यमोहने चक्रे चतुरस्रे महेश्वरि॥657॥
चतुरस्रान्तरेखातः बहिरेव यजेत्सुधीः।

हे महेश्वरी! त्रिखण्डा मुद्रा का प्रदर्शन करें और मोक्षसिद्धि, सब दर्शनों से उत्तीर्ण सर्वाध्वशोधनेश्वरी, रहस्यात्मिका परापरातियोगिनी का चतुरस्रात्मक त्रैलोक्यमोहन चक्र के चतुरस्र की अन्तिम रेखा से बाहर ही विद्वान् साधक पूजन करें।656-658।

कच्छपश्च मुकुन्दश्च नन्दो नीलनिधिस्तथा॥658॥
शंख-पद्म-महापद्म-मकराः निधयस्तथा।
आम्नायनायिका पूज्या द्वारेषु च यथाविधि॥659॥

अब निधियों का पूजन करें - कच्छप, मुकुन्द, नन्द, नीलनिधि, शंख, पद्म, महापद्म और मकर। तत्पश्चात् द्वारों में यथाविधि आम्नायनायिकाओं का पूजन करना है।658-659॥

द्वारे वै पश्चिमे पूज्या नायिका घोरकुब्जिका।
उत्तरे सिद्धलक्ष्मीश्च पूर्वे चोन्मनी तथा॥660॥
आद्याकाली दक्षिणे स्यात्,

पश्चिमद्वार में पश्चिमाम्नायनायिका घोरकुब्जिका, उत्तरद्वार में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उत्तराम्नायनायिका सिद्धलक्ष्मी, पूर्वद्वार में पूर्वाम्नायनायिका उन्मनी और दक्षिणद्वार में दक्षिणाम्नायनायिका आद्याकाली का पूजन करें।660-661।

पूज्या द्वारांगदेवताः।

नैर्ऋत्ये चैव संपूज्या तिरस्करणीति वै शुभा।।661।।

आग्नेये वनदुर्गा च महालक्ष्मीति विश्रुता।

कामरतिस्तथैशाने महाकालीति वै शुभा।।662।।

वसन्तप्रीतिर्वायव्ये महासरस्वती तथा।

द्वारपार्श्वेषु पूज्या हि निधिदेवता वै क्रमात्।।663।।

द्वारांगदेवताओं का पूजन भी क्रमशः करें - नैर्ऋत्य में तिरस्करणी, आग्नेय में वनदुर्गा और महालक्ष्मी, ईशान में कामरति अैर महाकाली तथा वायव्य में वसन्तप्रीति और महासरस्वती। अब द्वार के दोनों बगल में निधिदेवताओं का क्रम से पूजन करें।661-663।

वज्रशक्ती तथा दण्डं खड्गपाशांकुशाः गदा।

त्रिशूलं पद्मचक्रे च पूज्या चायुधदेवताः।।664।।

तदनन्तर वज्र, शक्ति, दण्ड, खड्ग, पाश, अंकुश, गदा, त्रिशूल, पद्म और चक्र इन आयुधदेवताओं का पूजन करें।664।

इन्द्राग्नियमाश्चैव निर्ऋतिर्वरुणस्तथा।

वायुः सोमस्तथैशानः ब्रह्मानन्तौ तथैव च।।665।।

एवमेव पूर्वादि क्रम से 10 दिक्पालदेवताओं का पूजन करें - इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, सोम, ईशान, ब्रह्मा और अनन्त।665।

उदीच्यां बटुकस्तत्र प्रतीच्यां योगिनी तथा।

क्षेत्रपालो गणपतिः दक्षिणपूर्वयोस्तथा।।666।।

प्रतीच्यां वनदुर्गा च द्वारेऽघोरस्तु दक्षिणे।

पूर्वे सुदर्शनो ज्ञेयः शरभः स्यादुत्तरे खलु।।667।।

उत्तर में वटुक, पश्चिम में योगिनी, दक्षिण में क्षेत्रपाल और पूर्व में गणपति का पूजन करें। तथा पश्चिमद्वार में वनदुर्गा, दक्षिणद्वार में अघोर, पूर्वद्वार में सुदर्शन और उत्तरद्वार में शरभ का पूजन करें।666-667।

इत्युच्चार्य च संपूज्य पुष्पांजलिभिस्ततः।

हृदि च प्रणमेद्भक्त्या योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्।।668।।

ऐसे बोलकर पूजन करके पुष्पांजलि दें तत्पश्चात् हृदय में भक्ति से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रणाम करें और योनि मुद्रा दर्शायें।।668।।

सांगाः सवाहनाश्चैव सायुधाश्च ससिद्धयः।
तर्पिताः सन्त्विति वदेज्जलं तत्र विनिक्षिपेत्।।669।।

सांगा सवाहना सायुधा ससिद्धका सपरिवार सांगोपांग सर्वोपचार से पूजित हों और वे सब तृप्त होवे - ऐसे बोलकर थोड़ा जल छोड़ें।।669।।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि त्रिपुरे देवपूजिते।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षोडशावरणार्चनम्।।670।।

हे देवताओं से पूजित त्रिपुरे! मुझे मेरे अभीष्ट दें और भक्ति से मेरे द्वारा आप केलिये समर्पित षोडशावरणपूजा को ग्रहण करें।।670।।

42 क. समष्टिपूजनम् = समष्टि पूजा करें -

भासा समष्टिपूजायां देवतानां लयो भवेत्।
देव्याः हि बालाभैरव्यास्तनौ भवति सर्वदा।।671।।
सा बालाभैरवीदेवी देवैः सह लयं व्रजेत्।
लयकामेश्वरीदेहे तद्रूपं प्रतिपद्यते।।672।।

भासा में की जानेवाली समष्टिपूजा में बालाभैरवी देवी के शरीर में देवताओं का सर्वदा लय होता है। सकल देवताओं के साथ वह बाला भैरवी देवी लयकामेश्वरी के शरीर में लीन होकर तद्रूपता को प्राप्त होती है।671-672।

* * * *

।।इति श्रीमदाद्यशंकराचार्यविरचितयतिदण्डैश्वर्यविधानान्तर्गता पूजापद्धतिः समाप्ता भवति।।

।।इस प्रकार श्रीमदद्यशंकराचार्यविरचित यतिदण्डैश्वर्यविधानपद्धति के अन्तर्गत श्रीयन्त्रपूजापद्धति समाप्त हुआ।।

* * * *

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परिशिष्टः

1. अथ हंस - षोढोपनिषद्

अथाह वै हंसषोढान्यासी शिवो भवेत्। सर्वसिद्धेश्वरो भवेत्। एतत्फलं वक्तुं सदाशिवोऽपि न समर्थः।

विनियोगः-

अस्य श्रीहंसषोढान्यासस्य विरूपाक्षमहाकालऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, काली देवता, कालीदेहार्थे विनियोग।

ऋष्यादिन्यासः -

ह्सां हसीं ह्सूं हसें हसौं ह्सः इति षट्कम्। हंसः सोऽहम् -(इति ध्यानम्)। निर्वाणरूपो भवेत्। हंसः कं खं गं घं ङं महामुण्डमालाधारिणि महाकालप्रिये मां रक्ष रक्ष-(हृदये)[1]। षट्चक्रवासिनि वाणीश्वरि जिह्वाग्रे वस वस हं नमः - (शिरसि)। हंसः चं छं जं झं ञं महात्रिपुरभैरवि पुस्तकाक्षमालाधारिणि शत्रुमुखस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा। (सहस्रारमहापद्मे।) हंसः टं ठं डं ढं णं डां डीं डूं डाकिनि मां रक्ष रक्ष स्वाहा। इति न्यसेत्। तृतीया भवति। (मुखे न्यसेत्।) हंसः तं थं दं धं नं महामारि मारहारिणि हुं हुं दारिद्र्यं हर हर स्वाहा। (गुह्ये न्यसेत्।) स ब्रह्मकालीत्वं गच्छति। चतुर्थत्वं गच्छति। हंसः पं फं बं भं मं मार्जारि वीरावलि ममालस्यं नाशय नाशय। पञ्चमत्वं गच्छति। (नाभौ न्यसेत्।) हंसः यं रं लं वं शं षं सं हं लम्बोदरि मातर्मङ्गलप्रिये मम जाड्यं छेदय छेदय, भ्रंश भ्रंश, भगवति मां रक्ष रक्ष भुवनधारिणि मां धारय धारय स्वाहा। (पादद्वये न्यसेत्।) शिवो भवति। अथ वै षष्ठीं न्यसेत्। हंसः ळं क्षं महालक्ष्मि महालक्ष्मि राजराजेश्वरि महाकालप्रिये कालखण्डिनि खण्डिनि खण्डय खण्डय खां खीं खूं खैं खौं खः खानित्रि स मे स्वाहा। (इति सर्वाङ्गे न्यसेत्) (हंसः अं आं.....ळं क्षं) (50 व्यापकं कुर्यात्)। इति षष्ठी। स शिवो भवेत्। स सोमयाजी भवेत्। स विरक्तो भवेत्। स सर्वदीक्षितो भवेत्। सोऽमृतत्वं गच्छति। स सर्वकालत्वं गच्छति। स सर्वन्यासकारी भवति। अनधीतविद्यां लभते। कर्त्तव्यकरणादिकर्त्ता भवेत्। सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्। कालीरूपो भवेत्। सोऽहं हंसः इत्याह भगवान् सदाशिव इति प्रोक्तं वेद।

इति आथर्वणे सौभाग्यकाण्डे हंसषोढान्यासः।

---

१. प्रोक्तं वेदशिरो भवेत्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२. अथ तारा-महाषोढा-न्यासः[१]

ॐ अस्य श्रीअधराम्नायतारामहाषोढान्यासस्य अक्षोभ्यऋषिः, उष्णिक् छन्दः, श्रीताराभगवती देवता, शिवकलाग्रहबीजं, दिक्पालषट्चक्रं शक्तिः, तारापीठः कीलकं, श्रीताराप्रीत्यर्थं महाषोढान्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः -

अक्षोभ्यऋषये नमः - शिरसि, उष्णिक्छन्दसे नमः - मुखे, श्रीताराभगवतीदेवतायै नमः - हृदये, शिवकलाग्रहबीजाय नमः - गुह्ये, दिक्पालषट्चक्रशक्तये नमः - पादयोः, तारापीठकीलकाय नमः - नाभौ, श्रीताराप्रीत्यर्थं महाषोढान्यासे विनियोगाय नमः - सर्वाङ्गे।

कर-हृदयादि न्यासाः-

'स्त्रीं हूं फट्' इत्यनेन कर-हृदयादिन्यासान् कुर्यात्।

ध्यानम्-

ध्यायेत् कोटिदिवाकरद्युतिनिभां बालेन्दुयुक्शेखरां,
रक्ताङ्गीं रसनां सुरक्तवसनां पूर्णेन्दुबिम्बाननाम्।
पाशं कर्त्रिमहाङ्कुशाम्बुजधरां दोर्भिश्चतुर्भिर्युतां,
नानाभूषणभूषितां भगवतीं तारां जगत्तारिणीम्।।

(२.१) **शिवकलान्यासः-**

अस्य श्रीशिवकलामातृकान्यासमन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः गायत्रीच्छन्दः, अर्धनारीश्वरी देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, क्षं बिन्दुः कीलकं, स्वाभीष्टसिद्धये न्यासे विनियोगः।

(२.१ क) ऋष्यादि-न्यासाः।

(२.१ ख) करहृदयादि-न्यासाः-

'ह्सां' इति दीर्घषट्केन। यथा-

---

१. रवौ पद्मे शिवकला-ग्रह-दोष-निवारकाः।
दिक्पाल-डाकिनी-तारादिकं पीठं च विन्यसेत्।।
(पद्मे=मूलाधारे। डाकिनी=षट्चक्रमिति।)

रविवार के दिन मूलाधार चक्र में शिवकला, ग्रह, दिक्पाल, षट्चक्र, तारादि और पीठ नामक न्यासों का विन्यास करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

	मन्त्राः	करन्यासः	हृदयादिन्यासः
ॐ	ह्सां	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः।
ॐ	ह्सीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा।
ॐ	ह्सूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्।।
ॐ	ह्सैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्।।
ॐ	ह्सौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्।।
ॐ	ह्सः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।।

(२.१ ग) ध्यानम्-

पाशाङ्कुशवराक्षस्रक्पाणिशीतांशुशेखरम्।
त्र्यक्षं रक्तसुवर्णाभमर्द्धनारीश्वरं भजे।।

(२.१ घ) न्यासः-

ॐ ह्सौं	अं	श्रीकण्ठेश-पूर्णोदरीभ्यां नमः	ललाटे
ॐ ह्सौं	आं	अनन्तेश-विरजाभ्यां नमः	मुखवृत्ते
ॐ ह्सौं	इं	सूक्ष्मेश-शाल्मलीभ्यां नमः	दक्षनेत्रे
ॐ ह्सौं	ईं	त्रिमूर्तीश-लोलाक्षीभ्यां नमः	वामनेत्रे
ॐ ह्सौं	उं	अमरेश-वर्तुलाक्षीभ्यां नमः	दक्षकर्णे
ॐ ह्सौं	ऊं	अर्धीश-घोणाभ्यां नमः	वामकर्णे
ॐ ह्सौं	ऋं	भारभूतेश-दीर्घमुखीभ्यां नमः	दक्षनासायाम्
ॐ ह्सौं	ॠं	तिथीश-गोमुखीभ्यां नमः	वामनासायाम्
ॐ ह्सौं	लृं	स्थाण्वीश-दीर्घजिह्वाभ्यां नमः	दक्षगण्डे
ॐ ह्सौं	लॄं	हरेश-कुण्डोदरीभ्यां नमः	वामगण्डे
ॐ ह्सौं	एं	झिण्टीश-ऊर्ध्वकेशीभ्यां नमः	ऊर्ध्वोष्ठे
ॐ ह्सौं	ऐं	भीतिकेश-विकृतमुखीभ्यां नमः	अधरोष्ठे
ॐ ह्सौं	ओं	सद्योजात-ज्वालामुखीभ्यां नमः	ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ
ॐ ह्सौं	औं	अनुग्रहेश-उल्कामुखीभ्यां नमः	अधोदन्तपङ्क्तौ
ॐ ह्सौं	अं	अक्रूरेश-श्रीमुखीभ्यां नमः	शिरसि
ॐ ह्सौं	अः	महासेनेश-विद्यामुखीभ्यां नमः	मुखे
ॐ ह्सौं	कं	क्रोधीश-महाकालीभ्यां नमः	जिह्वाग्रे
ॐ ह्सौं	खं	चण्डेश-सरस्वतीभ्यां नमः	कण्ठदेशे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ह्सौं	गं	पंचान्तकेश-सर्वसिद्धिगौरीभ्यां नमः	दक्षबाहुमूले
ॐ ह्सौं	घं	शिवोत्तमेश-त्रिलोक्येशविद्याभ्यां नमः	दक्षकूपरे
ॐ ह्सौं	ङं	एकरुद्रेश-मन्त्रशक्तिभ्यां नमः	दक्षमणिबन्धे
ॐ तृथी	चं	कूर्मेश-आत्मशक्तिभ्यां नमः	दक्षहस्ताङ्गुलिमूले
ॐ ह्सौं	छं	एकनेत्रेश-भूतमातृभ्यां नमः	दक्षहस्ताङ्गुल्यग्रे
ॐ ह्सौं	जं	चतुराननेश-लम्बोदरीभ्यां नमः	वामबाहुमूले
ॐ ह्सौं	झं	अजेश-द्राविणीभ्यां नमः	वामकूपरे
ॐ ह्सौं	ञं	सर्वेश-नागरीभ्यां नमः	वाममणिबन्धे
ॐ ह्सौं	टं	सोमेश-खेचरीभ्यां नमः	वामहस्ताङ्गुलिमूले
ॐ ह्सौं	ठं	लांगलीश-मंजरीभ्यां नमः	वामहस्ताङ्गुल्यग्रे
ॐ ह्सौं	डं	दारकेश-रूपिणीभ्यां नमः	दक्षजानुनि
ॐ ह्सौं	ढं	अर्धनारीश-वीरिणीभ्यां नमः	दक्षपादमूले
ॐ ह्सौं	णं	उमाकान्तेश-काकोदरीभ्यां नमः	दक्षपादगुल्फे
ॐ ह्सौं	तं	आषाढीश-पूतनाभ्यां नमः	दक्षपादाङ्गुलिमूले
ॐ ह्सौं	थं	चण्डीश-भद्रकालीभ्यां नमः	दक्षपादाङ्गुल्यग्रे
ॐ ह्सौं	दं	अन्त्रीश-योगिनीभ्यां नमः	वामपादमूले
ॐ ह्सौं	धं	मीनेश-शङ्खिनीभ्यां नमः	वामजानौ
ॐ ह्सौं	नं	मेषेश-तर्जनीभ्यां नमः	वामपादगुल्फे
ॐ ह्सौं	पं	लोहितेश-कालरात्रीभ्यां नमः	वामपादाङ्गुलिमूले
ॐ ह्सौं	फं	शिखीश-कुब्जिनीम्यां नमः	वामपादाङ्गुल्यग्रे
ॐ ह्सौं	बं	छागलण्डेश-कपर्दिनीभ्यां नमः	दक्षपार्श्वे
ॐ ह्सौं	भं	द्विरण्डेश-वज्रीभ्यां नमः	वामपार्श्वे
ॐ ह्सौं	मं	महाकालेश-जयाभ्यां नमः	पृष्ठे
ॐ ह्सौं	यं	त्वगात्मभ्यां वालीश-सुमुखेश्वरीभ्यां नमः	उदरे
ॐ ह्सौं	रं	असृगात्मभ्यां भुजगेश-रेवतीभ्यां नमः	हृदि
ॐ ह्सौं	लं	मांसात्मभ्यां पिनाकीश-माधवीम्यां नमः	दक्षांसे
ॐ ह्सौं	वं	मेदआत्मभ्यां खड्गीश-वारुणीभ्यां नमः	ककुदि
ॐ ह्सौं	शं	अस्थ्यात्मभ्यां बकेश-वायवीभ्यां नमः	वामांसे
ॐ ह्सौं	षं	मज्जात्मभ्यां श्वेतेशर-क्षोविदारिणीभ्यां नमः	हृदयादिदक्ष-हस्तान्तम्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ह्सौं सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीश-सहजयाभ्यां नमः हृदयादिवामहस्तान्तम्
ॐ ह्सौं हं प्राणात्मभ्यां नकुलीश-लक्ष्मीभ्यां नमः हृदयादिदक्षपादान्तम्
ॐ ह्सौं ळं शक्त्यात्मभ्यां शिवेश-व्यापिनीभ्यां नमः हृदयादिवामपादान्तम्
ॐ ह्सौं क्षं क्रोधात्मभ्यां संवर्तकेश-महामायाभ्यां नमः हृदयादिमस्तकान्तम्

(२.२) **ग्रहन्यासः**

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं अं.....अः रक्तवर्णाय सूर्याय नमः हृदि
ॐ ह्री स्त्रीं हूं यं रं लं वं शुक्लवर्णाय सोमाय नमः भ्रूद्वये
ॐ ह्री स्त्रीं हूं कं खं गं घं ङं रक्तवर्णाय मङ्गलाय नमः लोचनद्वये
ॐ ह्री स्त्रीं हूं चं छं जं झं ञं श्यामवर्णाय बुधाय नमः वक्षःस्थले
ॐ ह्री स्त्रीं हूं टं ठं डं ढं णं पीतवर्णाय बृहस्पतये नमः कण्ठकूपे
ॐ ह्री स्त्रीं हूं तं थं दं धं नं श्वेतवर्णाय भार्गवाय नमं घण्टिकायां
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं पं फं बं भं मं नीलवर्णाय शनैश्चराय नाभेरधोदेशे
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं शं षं सं हं धूम्रवर्णाय राहवे नमः मुखे
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं ळं क्षं धूम्रवर्णाय केतवे नमः नाभौ

(२.३) **दिक्पालन्यासः**

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं अं इं उं ऋं लृं एं ओं अं इन्द्राय नमः ललाटपूर्वभागे
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं आं ईं ऊं ॠं लॄं ऐं औं अः अग्नये नमः ललाटस्याग्नेये
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं कं खं गं घं ङं यमाय नमः ललाटदक्षिणभागे
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं चं छं जं झं ञं निर्ऋतये नमः ललाटनैर्ऋत्यभागे
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं टं ठं डं ढं णं वरुणाय नमः ललाटपश्चिमभागे
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं तं थं दं धं नं वायवे नमः ललाटवायव्यभागे
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं पं फं बं भं मं सोमाय नमः ललाटोत्तरभागे
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं यं रं लं वं ईशानाय नमः ललाटईशानभागे
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं शं षं सं हं ब्रह्मणे नमः ललाटऊर्ध्वभागे
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं ळं क्षं अनन्ताय नमः ललाटपूर्वभागे

(२.४) **षट्चक्रन्यासः**

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं वं शं षं सं डाकिनीयुताय ब्रह्मणे नमः मूलाधारे
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं बं भं मं यं रं लं राकिनीयुताय विष्णवे नमः स्वाधिष्ठाने
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं लाकिनीयुताय रुद्राय नमः मणिपूरे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं काकिनीयुताय ईश्वराय नमः अनाहते

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं अं आं.....अः साकिनीयुताय सदाशिवाय नमः विशुद्धौ

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं हं ळं क्षं हाकिनीयुताय परशिवाय ब्रह्मणे नमः आज्ञायां

(२.५) **तारादि-न्यासः -**

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं अं आं कं खं गं घं ङं तारायै नमः ब्रह्मरन्ध्रे

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं इं ईं चं छं जं झं ञं उग्रायै नमः ललाटे

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं उं ऊं टं ठं डं ढं णं महोग्रायै नमः भ्रूमध्ये

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं ऋं ॠं तं थं दं धं नं वज्रायै नमः कण्ठे

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं लृं लॄं पं फं बं भं मं महाकाल्यै नमः हृदि

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं एं ऐं यं रं लं वं सरस्वत्यै नमः नाभौ

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं ओं औं शं षं सं हं कामेश्वर्यै नमः लिङ्गे

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं अं अः ळं क्षं चामुण्डायै नमः मूलाधारे

(२.६) **पीठ-न्यासः -**

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं अं इं उं ऋं लृं एं ओं अं कामरूपपीठाय नमः आधारे

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं आं ईं ऊं ॠं लॄं ऐं औं अः जालन्धरपीठाय नमः हृदि

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं कं खं गं घं ङं पूर्णगिरिपीठाय नमः ललाटे

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं चं छं जं झं ञं ओड्याणपीठाय नमः केशसन्धौ

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं टं ठं डं ढं णं वाराणसीपीठाय नमः भ्रुवोः

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं तं थं दं धं नं अवन्तीपीठाय नमः नेत्रयोः

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं पं फं बं भं मं मायापुरीपीठाय नमः मुखे

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं यं रं लं वं मथुरापीठाय नमः कण्ठे

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं शं षं सं हं अयोध्यापीठाय नमः नाभौ

ॐ ह्रीं स्त्री हूं ळं क्षं काञ्चीपुरीपीठाय नमः कट्याम्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

3. अथ भुवनेश्वरी- महाषोढा न्यासः[1]

विनियोगः-

ॐ अस्य पूर्वाम्नायश्रीभुवनेश्वरी-महाषोढान्यासस्य शक्तिः ऋषि-र्गायत्रीछन्दः, श्रीभुवनेश्वरी देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं (अथवा परा-परात्परा बीजं, परात्परातीत-चित्परा शक्तिः, चित्परात्परा-चित्परात्परातीता कीलकं), श्रीभुवनेश्वरीप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः तथा

'ह्रां ह्रीं ह्रूं, ह्रैं ह्रौं ह्रः' इत्यनेन षडङ्गन्यासश्च।

ध्यानम् -

उद्यद्दिनद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्।।

(३.१) **परान्यासः**

अस्य श्रीपरान्यासमन्त्रस्य.....

ॐ अं ॐ अं ॐ अं नमः	ललाटे
ॐ आं ॐ आं ॐ आं नमः	मुखवृत्ते
ॐ इं ॐ इं ॐ इं नमः	दक्षनेत्रे
ॐ ईं ॐ ईं ॐ ईं नमः	वामनेत्रे
ॐ उं ॐ उं ॐ उं नमः	दक्षकर्णे
ॐ ऊं ॐ ऊं ॐ ऊं नमः	वामकर्णे
ॐ ऋं ॐ ऋं ॐ ऋं नमः	दक्षनासायाम्
ॐ ॠं ॐ ॠं ॐ ॠं नमः	वामनासायाम्
ॐ लृं ॐ लृं ॐ लृं नमः	दक्षकपोले
ॐ ॡं ॐ ॡं ॐ ॡं नमः	वामकपोले
ॐ एं ॐ एं ॐ एं नमः	ऊर्ध्वोष्ठे

---

1. [१]परा परात्परा [२]न्यासः [३]परात्परातीता तथा।
[४]चित्परा [५]चित्परात्परा सोमे स्वाधिष्ठाने तथा।।
[६]सच्चित्परात्परातीता तथेयं भुवनेश्वरी।

सोमवार के दिन स्वाधिष्ठानचक्र में भुवनेश्वरी षोढान्यास करें-
परा, परत्परा, परात्परातीता, चित्परा, चित्परात्परा और चित्परात्परातीता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ऐं ॐ ऐं ॐ ऐं नमः	अधरोष्ठे
ॐ ओं ॐ ओं ॐ ओं नमः	ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ
ॐ औं ॐ औं ॐ औं नमः	अधोदन्तपङ्क्तौ
ॐ अं ॐ अं ॐ अं नमः	मूर्धनि
ॐ अः ॐ अः ॐ अः नमः	मुखे
ॐ कं ॐ कं ॐ कं नमः	दक्षिणबाहुमूले
ॐ खं ॐ खं ॐ खं नमः	दक्षिणकूर्परे
ॐ गं ॐ गं ॐ गं नमः	दक्षिणमणिबन्धे
ॐ घं ॐ घं ॐ घं नमः	दक्षिणहस्ताङ्गुलिमूले
ॐ ङं ॐ ङं ॐ ङं नमः	दक्षिणहस्तागुल्यग्रे
ॐ चं ॐ चं ॐ चं नमः	वामबाहुमूले
ॐ छं ॐ छं ॐ छं नमः	वामकूर्परे
ॐ जं ॐ जं ॐ जं नमः	वाममणिबन्धे
ॐ झं ॐ झं ॐ झं नमः	वामहस्ताङ्गुलिमूले
ॐ ञं ॐ ञं ॐ ञं नमः	वामहस्ताङ्गुल्यग्रे
ॐ टं ॐ टं ॐ टं नमः	दक्षिणपादमूले
ॐ ठं ॐ ठं ॐ ठं नमः	दक्षिणजानुनि
ॐ डं ॐ डं ॐ डं नमः	दक्षिणगुल्फे
ॐ ढं ॐ ढं ॐ ढं नमः	दक्षिण पादाङ्गुलिमूले
ॐ णं ॐ णं ॐ णं नमः	दक्षिण पादाङ्गुल्यग्रे
ॐ तं ॐ तं ॐ तं नमः	वामपादमूले
ॐ थं ॐ थं ॐ थं नमः	वामजानुनि
ॐ दं ॐ दं ॐ दं नमः	वामगुल्फे
ॐ धं ॐ धं ॐ धं नमः	वामपादाङ्गुलिमूले
ॐ नं ॐ नं ॐ नं नमः	वामपादाङ्गुल्यग्रे
ॐ पं ॐ पं ॐ पं नमः	दक्षपार्श्वे
ॐ फं ॐ फं ॐ फं नमः	वामपार्श्वे
ॐ बं ॐ बं ॐ बं नमः	पृष्ठे
ॐ भं ॐ भं ॐ भं नमः	नाभौ
ॐ मं ॐ मं ॐ मं नमः	उदरे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ यं ॐ यं ॐ यं नमः	त्वगात्मने नमः,	हृदि
ॐ रं ॐ रं ॐ रं नमः	असृगात्मने नमः,	दक्षांसे
ॐ लं ॐ लं ॐ लं नमः	मांसात्मने नमः,	ककुदि
ॐ वं ॐ वं ॐ वं नमः	मेदआत्मने नमः	वामांसे
ॐ शं ॐ शं ॐ शं नमः	अस्थ्यात्मने नमः	हृदयादिदक्षहस्तान्तम्
ॐ षं ॐ षं ॐ षं नमः	मज्जात्मने नमः,	हृदयादिवामहस्तान्तम्
ॐ सं ॐ सं ॐ सं नमः	शुक्रात्मने नमः,	हृदयादिदक्षपादान्तम्
ॐ हं ॐ हं ॐ हं नमः	आत्मने नमः,	हृदयादिवामपादान्तम्
ॐ ळं ॐ ळं ॐ ळं नमः	परमात्मने नमः,	जठरे
ॐ क्षं ॐ क्षं ॐ क्षं नमः	प्राणात्मने नमः,	हृदयादिमस्तकान्तम्।

(३.२) **परात्परान्यासः** -

अस्य श्री परात्परान्यासमन्त्रस्य.....

श्रीं अं श्रीं अं श्रीं अं नमः	ललाटे
श्रीं आं श्रीं आं श्रीं आं नमः	मुखवृत्ते
श्रीं इं श्रीं इं श्रीं इं नमः	दक्षनेत्रे
श्रीं ईं श्रीं ईं श्रीं ईं नमः	वामनेत्रे
श्रीं उं श्रीं उं श्रीं उं नमः	दक्षकर्णे
श्रीं ऊं श्रीं ऊं श्रीं ऊं नमः	वामकर्णे
श्रीं ऋं श्रीं ऋं श्रीं ऋं नमः	दक्षनासायाम्
श्रीं ॠं श्रीं ॠं श्रीं ॠं नमः	वामनासायाम्
श्रीं लृं श्रीं लृं श्रीं लृं नमः	दक्षकपोले
श्रीं ॡं श्रीं ॡं श्रीं ॡं नमः	वामकपोले
श्रीं एं श्रीं एं श्रीं एं नमः	ऊर्ध्वोष्ठे
श्रीं ऐं श्रीं ऐं श्रीं ऐं नमः	अधरोष्ठे
श्रीं ओं श्रीं ओं श्रीं ओं नमः	ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ
श्रीं औं श्रीं औं श्रीं औं नमः	अधोदन्तपङ्क्तौ
श्रीं अं श्रीं अं श्रीं अं नमः	मूर्धनि
श्रीं अः श्रीं अः श्रीं अः नमः	मुखे
श्रीं कं श्रीं कं श्रीं कं नमः	दक्षिणबाहुमूले
श्रीं खं श्रीं खं श्रीं खं नमः	दक्षिणकूर्परे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीं गं श्रीं गं श्रीं गं नमः	दक्षिणमणिबन्धे
श्रीं घं श्रीं घं श्रीं घं नमः	दक्षिणहस्ताङ्गुलिमूले
श्रीं ङं श्रीं ङं श्रीं ङं नमः	दक्षिणहस्तांगुल्यग्रे
श्रीं चं श्रीं चं श्रीं चं नमः	वामबाहुमूले
श्रीं छं श्रीं छं श्रीं छं नमः	वामकूपरे
श्रीं जं श्रीं जं श्रीं जं नमः	वाममणिबन्धे
श्रीं झं श्रीं झं श्रीं झं नमः	वामहस्ताङ्गुलिमूले
श्रीं ञं श्रीं ञं श्रीं ञं नमः	वामहस्ताङ्गुल्यग्रे
श्रीं टं श्रीं टं श्रीं टं नमः	दक्षिणपादमूले
श्रीं ठं श्रीं ठं श्रीं ठं नमः	दक्षिणजानुनि
श्रीं डं श्रीं डं श्रीं डं नमः	दक्षिणगुल्फे
श्रीं ढं श्रीं ढं श्रीं ढं नमः	दक्षिणपादाङ्गुलिमूले
श्रीं णं श्रीं णं श्रीं णं नमः	दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे
श्रीं तं श्रीं तं श्रीं तं नमः	वामपादमूले
श्रीं थं श्रीं थं श्रीं थं नमः	वामजानुनि
श्रीं दं श्रीं दं श्रीं दं नमः	वामगुल्फे
श्रीं धं श्रीं धं श्रीं धं नमः	वामपादाङ्गुलिमूले
श्रीं नं श्रीं नं श्रीं नं नमः	वामपादाङ्गुल्यग्रे
श्रीं पं श्रीं पं श्रीं पं नमः	दक्षपार्श्वे
श्रीं फं श्रीं फं श्रीं फं नमः	वामपार्श्वे
श्रीं बं श्रीं बं श्रीं बं नमः	पृष्ठे
श्रीं भं श्रीं भं श्रीं भं नमः	नाभौ
श्रीं मं श्रीं मं श्रीं मं नमः	उदरे
श्रीं यं श्रीं यं श्रीं यं नमः त्वगात्मने नमः	हृदि
श्रीं रं श्रीं रं श्रीं रं नमः असृगात्मने नमः	दक्षांसे
श्रीं लं श्रीं लं श्रीं लं नमः मांसात्मने नमः	ककुदि
श्रीं वं श्रीं वं श्रीं वं नमः मेदआत्मने नमः	वामांसे
श्रीं शं श्रीं शं श्रीं शं नमः अस्थ्यात्मने नमः	हृदयादिदक्षहस्तान्तम्
श्रीं षं श्रीं षं श्रीं षं नमः मज्जात्मने नमः	हृदयादिवामहस्तान्तम्
श्रीं सं श्रीं सं श्रीं सं नमः शुक्रात्मने नमः	हृदयादिदक्षपादान्तम्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीं हं श्रीं हं श्रीं हं नमः आत्मने नमः — हृदयादिवामपादान्तम्
श्रीं ळं श्रीं ळं श्रीं ळं नमः परमात्मने नमः — जठरे
श्रीं क्षं श्रीं क्षं श्रीं क्षं नमः प्राणात्मने नमः — हृदयादिमस्तकान्तम्

(३.३) **परात्परातीतान्यासः** -

अस्य श्रीपरात्परातीतान्यास मन्त्रस्य.....

क्लीं अं क्लीं अं क्लीं अं नमः — ललाटे
क्लीं आं क्लीं आं क्लीं आं नमः — मुखवृत्ते
क्लीं इं क्लीं इं क्लीं इं नमः — दक्षनेत्रे
क्लीं ईं क्लीं ईं क्लीं ईं नमः — वामनेत्रे
क्लीं उं क्लीं उं क्लीं उं नमः — दक्षकर्णे
क्लीं ऊं क्लीं ऊं क्लीं ऊं नमः — वामकर्णे
क्लीं ऋं क्लीं ऋं क्लीं ऋं नमः — दक्षनासायाम्
क्लीं ॠं क्लीं ॠं क्लीं ॠं नमः — वामनासायाम्
क्लीं लृं क्लीं लृं क्लीं लृं नमः — दक्षकपोले
क्लीं लॄं क्लीं लॄं क्लीं लॄं नमः — वामकपोले
क्लीं एं क्लीं एं क्लीं एं नमः — ऊर्ध्वोष्ठे
क्लीं ऐं क्लीं ऐं क्लीं ऐं नमः — अधरोष्ठे
क्लीं ओं क्लीं ओं क्लीं ओं नमः — ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ
क्लीं औं क्लीं औं क्लीं औं नमः — अधोदन्तपङ्क्तौ
क्लीं अं क्लीं अं क्लीं अं नमः — मूर्धनि
श्रीं अः श्रीं अः क्लीं अः नमः — मुखे
क्लीं कं क्लीं कं क्लीं कं नमः — दक्षिणबाहुमूले
क्लीं खं क्लीं खं क्लीं खं नमः — दक्षिणकूर्परे
क्लीं गं क्लीं गं क्लीं गं नमः — दक्षिणमणिबन्धे
क्लीं घं क्लीं घं क्लीं घं नमः — दक्षिणहस्ताङ्गुलिमूले
क्लीं ङं क्लीं ङं क्लीं ङं नमः — दक्षिणहस्तागुल्यग्रे
क्लीं चं क्लीं चं क्लीं चं नमः — वामबाहुमूले
क्लीं छं क्लीं छं क्लीं छं नमः — वामकूर्परे
क्लीं जं क्लीं जं क्लीं जं नमः — वाममणिबन्धे
क्लीं झं क्लीं झं क्लीं झं नमः — वामहस्ताङ्गुलिमूले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्लीं ञं क्लीं ञं क्लीं ञं नमः — वामहस्ताङ्गुल्यग्रे
क्लीं टं क्लीं टं क्लीं टं नमः — दक्षिणपादमूले
क्लीं ठं क्लीं ठं क्लीं ठं नमः — दक्षिणजानुनि
क्लीं डं क्लीं डं क्लीं डं नमः — दक्षिणगुल्फे
क्लीं ढं क्लीं ढं क्लीं ढं नमः — दक्षिणपादाङ्गुलिमूले
क्लीं णं क्लीं णं क्लीं णं नमः — दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे
क्लीं तं क्लीं तं क्लीं तं नमः — वामपादमूले
क्लीं थं क्लीं थं क्लीं थं नमः — वामजानुनि
क्लीं दं क्लीं दं क्लीं दं नमः — वामगुल्फे
क्लीं धं क्लीं धं क्लीं धं नमः — वामपादाङ्गुलिमूले
क्लीं नं क्लीं नं क्लीं नं नमः — वामपादाङ्गुल्यग्रे
क्लीं पं क्लीं पं क्लीं पं नमः — दक्षपार्श्वे
क्लीं फं क्लीं फं क्लीं फं नमः — वामपार्श्वे
क्लीं बं क्लीं बं क्लीं बं नमः — पृष्ठे
क्लीं भं क्लीं भं क्लीं भं नमः — नाभौ
क्लीं मं क्लीं मं क्लीं मं नमः — उदरे
क्लीं यं क्लीं यं क्लीं यं नमः त्वगात्मने नमः — हृदि
क्लीं रं क्लीं रं क्लीं रं नमः असृगात्मने नमः — दक्षांसे
क्लीं लं क्लीं लं क्लीं लं नमः मांसात्मने नमः — ककुदि
क्लीं वं क्लीं वं क्लीं वं नमः मेदआत्मने नमः — वामांसे
क्लीं शं क्लीं शं क्लीं शं नमः अस्थ्यात्मने नमः — हृदयादिदक्षहस्तान्तम्
क्लीं षं क्लीं षं क्लीं षं नमः मज्जात्मने नमः — हृदयादिवामहस्तान्तम्
क्लीं सं क्लीं सं क्लीं सं नमः शुक्रात्मने नमः — हृदयादिदक्षपादान्तम्
क्लीं हं क्लीं हं क्लीं हं नमः आत्मने नमः — हृदयादिवामपादान्तम्
क्लीं ळं क्लीं ळं क्लीं ळं नमः परमात्मने नमः — जठरे
क्लीं क्षं क्लीं क्षं क्लीं क्षं नमः प्राणात्मने नमः — हृदयादिमस्तकान्तम्

(३.४) **चित्परान्यासः** -

अस्य श्री चित्परान्यासमन्त्रस्य.....

ह्रीं अं ह्रीं अं ह्रीं अं नमः — ललाटे
ह्रीं आं ह्रीं आं ह्रीं आं नमः — मुखवृत्ते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ह्रीं इं ह्रीं इं ह्रीं इं नमः	दक्षनेत्रे
ह्रीं ईं ह्रीं ईं ह्रीं ईं नमः	वामनेत्रे
ह्रीं उं ह्रीं उं ह्रीं उं नमः	दक्षकर्णे
ह्रीं ऊं ह्रीं ऊं ह्रीं ऊं नमः	वामकर्णे
ह्रीं ऋं ह्रीं ऋं ह्रीं ऋं नमः	दक्षनासायाम्
ह्रीं ॠं ह्रीं ॠं ह्रीं ॠं नमः	वामनासायाम्
ह्रीं लृं ह्रीं लृं ह्रीं लृं नमः	दक्षकपोले
ह्रीं ॡं ह्रीं ॡं ह्रीं ॡं नमः	वामकपोले
ह्रीं एं ह्रीं एं ह्रीं एं नमः	ऊर्ध्वोष्ठे
ह्रीं ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं ऐं नमः	अधरोष्ठे
ह्रीं ओं ह्रीं ओं ह्रीं ओं नमः	ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ
ह्रीं औं ह्रीं औं ह्रीं औं नमः	अधोदन्तपङ्क्तौ
ह्रीं अं ह्रीं अं ह्रीं अं नमः	मूर्धनि
ह्रीं अः ह्रीं अः ह्रीं अः नमः	मुखे
ह्रीं कं ह्रीं कं ह्रीं कं नमः	दक्षिणबाहुमूले
ह्रीं खं ह्रीं खं ह्रीं खं नमः	दक्षिणकूर्परे
ह्रीं गं ह्रीं गं ह्रीं गं नमः	दक्षिणमणिबन्धे
ह्रीं घं ह्रीं घं ह्रीं घं नमः	दक्षिणहस्ताङ्गुलिमूले
ह्रीं ङं ह्रीं ङं ह्रीं ङं नमः	दक्षिणहस्तागुल्यग्रे
ह्रीं चं ह्रीं चं ह्रीं चं नमः	वामबाहुमूले
ह्रीं छं ह्रीं छं ह्रीं छं नमः	वामकूर्परे
ह्रीं जं ह्रीं जं ह्रीं जं नमः	वाममणिबन्धे
ह्रीं झं ह्रीं झं ह्रीं झं नमः	वामहस्ताङ्गुलिमूले
ह्रीं ञं ह्रीं ञं ह्रीं ञं नमः	वामहस्ताङ्गुल्यग्रे
ह्रीं टं ह्रीं टं ह्रीं टं नमः	दक्षिणपादमूले
ह्रीं ठं ह्रीं ठं ह्रीं ठं नमः	दक्षिणजानुनि
ह्रीं डं ह्रीं डं ह्रीं डं नमः	दक्षिणगुल्फे
ह्रीं ढं ह्रीं ढं ह्रीं ढं नमः	दक्षिणपादाङ्गुलिमूले
ह्रीं णं ह्रीं णं ह्रीं णं नमः	दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे
ह्रीं तं ह्रीं तं ह्रीं तं नमः	वामपादमूले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ह्रीं थं ह्रीं थं ह्रीं थं नमः — वामजानुनि
ह्रीं दं ह्रीं दं ह्रीं दं नमः — वामगुल्फे
ह्रीं धं ह्रीं धं ह्रीं धं नमः — वामपादाङ्गुलिमूले
ह्रीं नं ह्रीं नं ह्रीं नं नमः — वामपादाङ्गुल्यग्रे
ह्रीं पं ह्रीं पं ह्रीं पं नमः — दक्षपार्श्वे
ह्रीं फं ह्रीं फं ह्रीं फं नमः — वामपार्श्वे
ह्रीं बं ह्रीं बं ह्रीं बं नमः — पृष्ठे
ह्रीं भं ह्रीं भं ह्रीं भं नमः — नाभौ
ह्रीं मं ह्रीं मं ह्रीं मं नमः — उदरे
ह्रीं यं ह्रीं यं ह्रीं यं नमः त्वगात्मने नमः — हृदि
ह्रीं रं ह्रीं रं ह्रीं रं नमः असृगात्मने नमः — दक्षांसे
ह्रीं लं ह्रीं लं ह्रीं लं नमः मांसात्मने नमः — ककुदि
ह्रीं वं ह्रीं वं ह्रीं वं नमः मेदआत्मने नमः — वामांसे
ह्रीं शं ह्रीं शं ह्रीं शं नमः अस्थ्यात्मने नमः — हृदयादिदक्षहस्तान्तम्
ह्रीं षं ह्रीं षं ह्रीं षं नमः मज्जात्मने नमः — हृदयादिवामपादन्तम्
ह्रीं सं ह्रीं सं ह्रीं सं नमः शुक्रात्मने नमः — हृदयादिदक्षपादान्तम्
ह्रीं हं ह्रीं हं ह्रीं हं नमः आत्मने नमः — हृदयादिवामपादान्तम्
ह्रीं ळं ह्रीं ळं ह्रीं ळं नमः परमात्मने नमः — जठरे
ह्रीं क्षं ह्रीं क्षं ह्रीं क्षं नमः प्राणात्मने नमः — हृदयादिमस्तकान्तम्

(३.५) **चित्परात्परान्यासः -**

अस्य श्री चित्परात्परान्यासमन्त्रस्य.....

ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः — ललाटे।
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः — मुखवृत्ते
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः — दक्षनेत्रे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः — वामनेत्रे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः — दक्षकर्णे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः — वामकर्णे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः — दक्षनासायाम्
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः — वामनासायाम्
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः — दक्षकपोले
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः — वामकपोले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः ऊर्ध्वोष्ठे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः अधरोष्ठे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः अधोदन्तपङ्क्तौ
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः मूर्धनि
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः मुखे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः दक्षिणबाहुमूले
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः दक्षिणकूर्परे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः दक्षिणमणिबन्धे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः दक्षिणहस्ताङ्गुलिमूले
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः दक्षिणहस्तागुल्यग्रे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः वामबाहुमूले
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः वामकूर्परे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः वाममणिबन्धे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः वामहस्ताङ्गुलिमूले
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः वामहस्ताङ्गुल्यग्रे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः दक्षिणपादमूले
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः दक्षिणजानुनि
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः दक्षिणगुल्फे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः वामपादमूले
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः वामजानुनि
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः वामगुल्फे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः वामपादाङ्गुलिमूले
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः दक्षपार्श्वे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः वामपार्श्वे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः पृष्ठे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः नाभौ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः उदरे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः हृदि
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः दक्षांसे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः ककुदि
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः वामांसे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः हृदयादिदक्षहस्तान्तम्
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः हृदयादिवामपादन्तम्
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः हृदयादिदक्षपादान्तम्
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः हृदयादिवामपादान्तम्
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः जठरे
ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ह्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः हृदयादिमस्तकान्तम्

(३.६) **चित्परात्परातीतान्यासः -**

अस्य श्री चित्परात्परातीतान्यासमन्त्रस्य.....

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं अं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं अं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं अं नमः ललाटे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं आं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं आं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं आं नमः मुखवृत्ते
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं इं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं इं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं इं नमः दक्षनेत्रे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ईं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ईं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ईं नमः वामनेत्रे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं उं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं उं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं उं नमः दक्षकर्णे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ऊं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ऊं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ऊं नमः वामकर्णे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ऋं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ऋं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ऋं नमः दक्षनासायाम्
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ॠं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ॠं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ॠं नमः वामनासायाम्
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ऌं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ऌं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ऌं नमः दक्षकपोले
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ॡं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ॡं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ॡं नमः वामकपोले
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं एं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं एं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ऐं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ऐं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ऐं नमः अधरोष्ठे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ओं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ओं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ओं नमः
ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं औं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं औं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं औं नमः
अधोदन्तपङ्क्तौ
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं अं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं अं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं अं नमः मूर्धनि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं अः ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं अः ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं अः नमः मुखे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं कं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं कं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं कंनमः दक्षिणबाहुमूले
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं खं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं खं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं खं नमः दक्षिणकूपरे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं गं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं गं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं गं नमः
दक्षमणिबन्धे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं घं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं घं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं घं नमः
दक्षिणहस्ताङ्गुलिमूले
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ङं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ङं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ङं नमः
दक्षिणहस्ताङ्गुल्यग्रे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं चं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं चं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं चं नमः वामबाहुमूले
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं छं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं छं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं छं नमः वामकूपरे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं जं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं जं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं जं नमः वाममणिबन्धे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं झं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं झं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं झं नमः
वामहस्ताङ्गुलिमूल
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ञं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ञं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ञं नमः वामहस्ताङ्गुल्यगे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं टं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं टं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं टं नमः दक्षपादमूले
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ठं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ठं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ठं नमः दक्षिणजानुनि
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं डं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं डं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं डं नमः दक्षिणगुल्फे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ढं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ढं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ढं नमः
दक्षपादाङ्गुलिमूले
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं णं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं णं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं णं नमः
दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं तं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं तं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं तं नमः वामपादमूले
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं थं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं थं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं थं नमः वामजानुनि
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं दं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं दं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं दं नमः वामगुल्फे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं धं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं धं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं धं नमः
वामपादाङ्गुलिमूले
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं नं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं नं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं नं नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं पं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं पं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं पं नमः दक्षपार्श्वे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं फं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं फं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं फं नमः वामपार्श्वे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं बं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं बं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं बं नमः पृष्ठे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं भं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं भं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं भं नमः नाभौ
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं मं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं मं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं मं नमः उदरे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं यं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं यं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं यं नमः हृदि
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं रं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं रं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं रं नमः दक्षांसे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं लं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं लं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं लं नमः ककुदि
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं वं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं वं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं वं नमः वामांसे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं शं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं शं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं शं नमः
हृदयादिदक्षहस्तान्तम्
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं षं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं षं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं षं नमः
हृदयादिवामहस्तान्तम्
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सं नमः
हृदयादिदक्षपादान्तम्
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं हं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं हं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं हं नमः
हृदयादिवामपादान्तम
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ळं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ळं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ळं नमः जठरे
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं क्षं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं क्षं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं क्षं नमः
हृदयादिमस्तकान्तम्।

मूलेनाष्टोत्तरशतवारं व्याप
कं कुर्यात्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

4. अथ महाकाली- महाषोढा न्यासः

अस्त श्रीमहाकाली-महाषोढान्यासस्य महाकालीऋषिः, उष्णिक् छन्दः, श्रीमहाकाली देवता, ग्रहराशि-बीजं, नक्षत्रयोग-शक्तिः, करणसंवत्सर-कीलकं, श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासं कृत्वा
क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः इति षडङ्गन्यासान् कुर्यात्।

ध्यानम् -

ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां ललज्जिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम्॥१॥
नीलोत्पलदलप्रख्यां शत्रुसङ्घविदारिणीम्।
नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं वरदं तथा॥२॥
बिभ्राणां रक्तरसनां दंष्ट्रालीं घोररूपिणीम्।
अट्टाट्टहासनिरतां सर्वदैव दिगम्बराम्॥३॥
शवासनस्थितां देवीं मुण्डमालाविभूषिताम्।
नागयज्ञोपवीतां च चन्द्रार्धकृतशेखराम्॥४॥
जटाजूटं च सञ्चिन्त्य महाकालसमीपगाम्।
एवं ध्यायेन् महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये॥५॥

(४.१) **ग्रहन्यासः** -

ॐ अस्य श्रीकालीमहाषोढान्यासान्तर्गत-ग्रहन्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः, ग्रहरूपिणी काली देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, म्लुं कीलकं ग्रहदोषनिवृत्तिपूर्वकदेवताभावसिद्धये न्यासे विनियोगः[१]।

अथ ऋष्यादिन्यासः। तथा श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं श्रः इति दीर्घषट्केन कर-हृदयादिन्यासान् कुर्यात्।

---

१. ग्रहन्यासोऽस्म्यहं देवि देवताभावसिद्धये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ध्यानम्-

रक्तं श्वेतं तथा रक्तं, श्यामं पीतञ्च पाण्डुरम्।
कृष्णं धूम्रं धूम्रधूम्रं भावयेद् रविपूर्वकान्।।५।।

ॐ अं आं.....अः श्रीं क्रीं क्रीं क्रीं आदित्याय माणिक्यात्मनेऽनन्ताय नमः स्वाहा शिरसि

ॐ कं खं गं घं ङं हूं हूं इं ईं सीमाय मुक्तात्मने वासुकये नमः स्वाहा ललाटे

ॐ चं छं जं झं ञं ग्लों ह्रीं ह्रीं भौमाय विद्रुमात्मने तक्षकाय नमः स्वाहा भ्रूमध्ये

ॐ टं ठं डं ढं णं क्लूं दक्षिणे बुधाय मरकतात्मने कर्कोटकाय नमः स्वाहा मुखे

ॐ तं थं दं धं नं म्लुं कालिके बृहस्पतये पुष्परागात्मने पद्माय नमः स्वाहा कण्ठे

ॐ पं फं बं भं मं प्लुं क्रीं क्रीं क्रीं शुक्राय वज्रात्मने महापद्माय नमः स्वाहा हृदये

ॐ यं रं लं वं न्लुं हूं हूं शनैश्चराय नीलात्मने शङ्खपालाय नमः स्वाहा उदरे

ॐ शं षं सं हं ह्रीं ह्रीं ह्रीं राहवे गोमेदात्मने कुलिकाय नमः स्वाहा गुह्ये

ॐ ळं क्षं स्वाहा केतवे वैदूर्यात्मने कुलिकाय नमः स्वाहा ऊरूतः पादपर्यन्तयोः

(४.२) **अथ राशिन्यासः -**

ॐ अस्य श्रीकालीमहाषोढान्यासान्तर्गत-राशिन्यासस्य संवर्तभैरव ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, राशिरूपिणी दक्षिणकाली देवता, ह्सैं बीजं, ह्रीं शक्तिः, इं कीलकं, ग्रहराशिवेधादिदोषशान्तिपूर्वकमायुर्वृद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासं विधाय ह्सैं ह्रीं ह्रूं ह्सैं ह्रीं ह्रूं इति षडङ्गं कुर्यात्।

ध्यानम्-

रक्तं श्वेतं हरिद्वर्णं, पाण्डुचित्रं सितं स्मरेत्।
पिशङ्गं - पिंगलकद्रु - कर्पूरारुणाधूम्रकान्।।

ह्सैं ह्रीं ईं ह्रीं क्रीं अं आं इं ईं मेषराशिरूपिण्यै दक्षिणाकालिकायै नमः दक्षपादे

ह्सैं ह्रीं ईं ह्रीं क्रीं उं ऊं वृषभराशिरूपिण्यै दक्षिणाकालिकायै नमः दक्षजानुनि

ह्सैं ह्रीं ईं ह्रीं क्रीं ऋ ॠं लृं लॄं मिथुनराशिरूपिण्यै दक्षिणाकालिकायै नमः दक्षवृषणे

ह्सैं ह्रीं ईं ह्रीं क्रीं एं ऐं कर्कराशिरूपिण्यै दक्षिणाकालिकायै नमः दक्षकुक्षौ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ह्सैं ह्रीं ईं ह्रीं क्रीं ओं औं	सिंहराशिरूपिण्यै दक्षिणाकालिकायै नमः दक्षस्कन्धे
ह्सैं ह्रीं ईं ह्रीं क्रीं अं अः	कन्याराशिरूपिण्यै दक्षिणाकालिकायै नमः शिरोदक्षभागे
ह्सैं ह्रीं ईं ह्रीं क्रीं कं खं गं घं ङं	तुलाराशिरूपिण्यै दक्षिणाकालिकायै नमः शिरोवामभागे
ह्सैं ह्रीं ईं ह्रीं क्रीं चं छं जं झं ञं	वृश्चिकराशिरूपिण्यै दक्षिणाकालिकायै नमः वामस्कन्धे
ह्सैं ह्रीं ईं ह्रीं क्रीं टं ठं डं ढं णं	धनूराशिरूपिण्यै दक्षिणाकालिकायै नमः वामकुक्षौ
ह्सैं ह्रीं ईं ह्रीं क्रीं तं थं दं धं नं	मकरराशिरूपिण्यै दक्षिणाकालिकायै नमः वामवृषणे
ह्सैं ह्रीं ईं ह्रीं क्रीं पं फं बं भं मं	कुम्भराशिरूपिण्यै दक्षिणाकालिकायै नमः वामजानुनि
ह्सैं ह्रीं ईं ह्रीं क्रीं यं.....क्षं	मीनराशिरूपिण्यै दक्षिणाकालिकायै नमः वामपादे

ग्रहराश्यादिवेधेषु महोत्पाते महाभये।
महामृत्युभये घोरे राशिन्यासं समाचरेत्।।
मन्त्रांश्च प्रजपेन्मन्त्री सर्वशान्तिमुपैति च।
सर्वमङ्गलसम्पत्तिर्जायते नात्र संशयः।।

(४.३) **अथ नक्षत्रन्यासः -**

ॐ अस्य श्रीकालीमहाषोढान्यासान्तर्गत-नक्षत्रन्यासस्य प्रचण्डभैरव ऋषिः गायत्रीच्छन्दः, नक्षत्ररूपिणी दक्षिणकाली देवता, स्त्रीं बीजं, फट् शक्तिः, हूं कीलकं, ग्रहोपग्रहवेधादिदुष्टराशिनक्षत्रस्य ग्रहदशोपदशादोषनिवृत्तिपूर्वकं सर्वत्र सर्वसिद्धिसमृद्धिप्राप्तिदेवताभावसिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासं विधाय स्त्री हूँ फट् इत्यनेन षडङ्गन्यासो विधेयः।

ध्यानम्-

नवत्रिकमयीं देवीं ज्वलत्कालाग्निसन्निभाम्।
वरदाभयहस्ताञ्च सर्वाभरणभूषिताम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्त्रीं हूं फट् कीं अं आं अश्विनीनक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा ललाटे
स्त्रीं हूं फट् कीं ई ईं भरणीनक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा दक्षनेत्रे
स्त्रीं हूं फट् कीं उं ऊं कृत्तिकानक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा वामनेत्रे
स्त्रीं हूं फट् कीं ऋं ॠं रोहिणीनक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा दक्षकर्णे
स्त्रीं हूं फट् कीं लृं लॄं मृगशिरानक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा वामकर्णे
स्त्रीं हूं फट् कीं एं ऐं आर्द्रानक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा दक्षनासायाम्
स्त्रीं हूं फट् कीं ओं औं अं अः पुनर्वसुनक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा वामनासायाम्
स्त्रीं हूं फट् कीं कं पुष्यनक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा कण्ठे
स्त्रीं हूं फट् कीं खं गं अश्लेषानक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा दक्षस्कन्धे
स्त्रीं हूं फट् कीं घं ङं मघानक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा वामस्कन्धे
स्त्रीं हूं फट् कीं चं पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा दक्षकूपरे
स्त्रीं हूं फट् कीं छं जं उत्तराफाल्गुनीनक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा वामकूपरे
स्त्रीं हूं फट् कीं झं ञं हस्तनक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा दक्षमणिबन्धे
स्त्रीं हूं फट् कीं टं चित्रानक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा वाममणिबन्धे
स्त्रीं हूं फट् कीं ठं डं स्वातिनक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा दक्षस्तने
स्त्रीं हूं फट् कीं ढं णं विशाखानक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा वामस्तने
स्त्रीं हूं फट् कीं तं थं दं अनुराधानक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा नाभौ
स्त्रीं हूं फट् कीं धं ज्येष्ठानक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा दक्षकक्षामां
स्त्रीं हूं फट् कीं नं पं फं मूलनक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा वामकक्षायां
स्त्रीं हूं फट् कीं बं पूर्वाषाढानक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा दक्षोरौ
स्त्रीं हूं फट् कीं भं उत्तराषाढानक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा वामोरौ
स्त्रीं हूं फट् कीं मं श्रवणनक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा दक्षाजानुनि
स्त्रीं हूं फट् कीं यं रं धनिष्ठानक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा वामजानुनि
स्त्रीं हूं फट् कीं लं शतभिषानक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा दक्षाजङ्घायाम्
स्त्रीं हूं फट् कीं वं शं पूर्वाभाद्रपदनक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा वामजङ्घायाम्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्त्रीं हूं फट् कीं षं सं हं उत्तराभाद्रपदनक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा दक्षपादतले

स्त्रीं हूं फट् कीं ळं क्षं रेवतीनक्षत्ररूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा वामपादतले

ग्रहोपग्रह - देवीनां दशासु प्रदशासु च।
क्रूरबाधासु सर्वासु तारान्यासं समाचरेत्।।
सर्वप्रशमनं नीतं सर्वं तद्वद् भवेद् भद्रम्।
मनोरथाः कल्पवृक्षा भवन्ति त्वत्प्रसादतः।।

(४.४) **अथ योग-न्यासः -**

ॐ अस्य श्रीकालीमहाषोढान्यासान्तर्गत-योगन्यासस्य मेलनभैरव ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, श्रीयोगरूपिणी दक्षिणकाली देवता, रुं बीजं, हूं शक्तिः, ॐ कीलकं, शक्तिचालने विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः । ॐ रुं ईं-इति षडङ्गन्यासः।

ध्यानम्-

ॐ ज्वलत्कालाग्निसङ्काशां त्र्यक्षां सन्दघतीं भुजे।
वह्निं नागं शक्तिशूले वृकं गङ्गां धनुः शरान्।।
महाकालमपि ध्यायेद् योगदेवीं ज्वलन्मुखीम्।

ॐ रुं हूं कीं अं आं विष्कुम्भयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा ललाटे
ॐ रुं हूं कीं ईं ईं प्रीतियोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा दक्षनेत्रे
ॐ रुं हूं कीं उं ऊं आयुष्मद्योगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा वामनेत्रे
ॐ रुं हूं कीं ऋं ॠं सौभाग्ययोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा दक्षकर्णे
ॐ रुं हूं कीं लृं लॄं शोभनयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा वामकर्णे
ॐ रुं हूं कीं एं ऐं अतिगण्डयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाह दक्षनासायाम्
ॐ रुं हूं कीं ओं औं अं अः सुकर्मयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा वामनासायाम्
ॐ रुं हूं कीं कं धृतियोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा कण्ठे
ॐ रुं हूं कीं खं गं शूलयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा दक्षस्कन्धे
ॐ रुं हूं कीं घं ङं गण्डयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा वामस्कन्धे
ॐ रुं हूं कीं चं वृद्धियोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा दक्षकूपरे
ॐ रुं हूं कीं छं जं ध्रुवयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा वामकूपरे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ रुं हूं क्रीं झं ञं व्याघातयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा
दक्षमणिबन्धे
ॐ रुं हूं क्रीं टं हर्षणयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा वाममणिबन्धे
ॐ रुं हूं क्रीं ठं डं वज्रयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा दक्षस्तने
ॐ रुं हूं क्रीं ढं णं सिद्धियोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा वामस्तने
ॐ रुं हूं क्रीं तं थं दं व्यतीपातयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा नाभौ
ॐ रुं हूं क्रीं धं वरीयान्योगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा
दक्षिणकट्याम्
ॐ रुं हूं क्रीं नं पं फं परिघयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा
वामकट्याम्
ॐ रुं हूं क्रीं बं शिवयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा दक्षोरौ
ॐ रुं हूं क्रीं भं सिद्धयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा वामोरौ
ॐ रुं हूं क्रीं मं साध्ययोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा दक्षजानुनि
ॐ रुं हूं क्रीं यं रं शुभयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा वामजानुनि
ॐ रुं हूं क्रीं लं शुक्लयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहादक्षजङ्घायाम्
ॐ रुं हूं क्रीं वं शं ब्रह्मयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा
वामजङ्घायाम्
ॐ रुं हूं क्रीं षं सं हं ऐन्द्रयोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा दक्षपादे
ॐ रुं हूं क्रीं ळं क्षं धृतियोगरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा वामपादे

योगन्यासे कृते देवि! खेचरक्रमवर्त्मगः।
सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरज्ञानी साक्षाच्छिवमयो भवेत्।।

(४.५) **अथ करणन्यासः -**

ॐ अस्य श्रीकालीमहाषोढान्यासान्तर्गत - करणन्यासस्य श्रीखण्डभैरव ऋषिः, गायत्रीच्छन्द, करणरूपिणी दक्षिणकालिका देवता, हूं बीजं, फट् शक्तिः, क्रीं कीलकं, सर्वकरणसिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः । क्रीं हूं फट् इत्यनेन षडङ्गन्यासः।

ध्यानम्-

ज्वलत्कालाग्निसङ्काशां कालीं त्र्यक्षां ज्वलन्मुखीम्।
पाशाङ्कुशाभयवरां पुस्त-स्रग्-वज्रभूकराम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ क्रीं हूं फट् क्रीं अं आं इं ईं बवकरणरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा।
ललाटे

ॐ क्रीं हूं फट् क्रीं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं बालवकरणरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा।
भ्रुवोः

ॐ क्रीं हूं फट् क्रीं एं ऐं ओं औं अं अः कौलवकरणरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा।
नेत्रयोः

ॐ क्रीं हूं फट् क्रीं कं खं गं घं ङं तैतिलवकरणरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा।
कर्णयोः

ॐ क्रीं हूं फट् क्रीं चं छं जं झं ञं गरकरणरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा।
नासिकयोः

ॐ क्रीं हूं फट् क्रीं टं ठं डं ढं णं वणिजकरणरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा।
मुखे

ॐ क्रीं हूं फट् क्रीं तं थं दं धं नं विष्टिकरणरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा।
कण्ठे

ॐ क्रीं हूं फट् क्रीं पं फं बं भं मं शकुनिकरणरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा।
बाह्वोः

ॐ क्रीं हूं फट् क्रीं यं रं लं वं चतुष्पद्करणरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा।
जठरे

ॐ क्रीं हूं फट् क्रीं शं षं सं हं नागकरणरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा।
गुह्ये

ॐ क्रीं हूं फट् क्रीं ळं क्षं किंस्तुघ्नकरणरूपायै दक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा।
पादयोः

कृतेऽस्मिन् न्यासवर्ये तु करणानां जयो भवेत्।
सर्वे करणन्यासस्य वशे तिष्ठन्ति सर्वदा।।
समृद्धिः करणन्यासान्नित्यमीशत्वभाववान्।
जायते नात्र सन्देहः साधकः कुलसुन्दरि!।।

(४.६) **अथ संवत्सरन्यासः -**

ॐ अस्य श्रीकालीमहाषोढान्यासान्तर्गतसंवत्सरन्यासस्य परभैरव ऋषिः, गायत्रीच्छन्द, संवत्सररूपा दक्षिणकालिकादेवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, सृष्टिस्थितिसंहरणशिवतत्त्वसिद्ध्या तुर्यावस्थासिद्धये न्यासे विनियोगः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋष्यादिन्यासः । क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ हूं - इत्यनेन षडङ्गन्यासः।

ध्यानम्-

ॐ सहस्रवदनां त्र्यक्षां सहस्राष्टभुजां शिवाम्।
बहुपादां सर्वशस्यां सृष्टिस्थित्यन्तकारिणीम्।।
सहस्रसूर्यचन्द्राग्निलोचनां वायुवाहनाम्।
विद्युत्कोटिनिभां बृहद्रसनां दशनैर्दिशः।
द्योतवन्तीं महाकालीं पञ्चसंवत्सरात्मिकाम्।।
एवं ध्यात्या न्यसेद् यस्तु, स सद्यःसुखमाप्नुयात्।।

ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ हूं लृं लॄं अः ङं ञं णं नं मं शं क्षं क्ष्रीं क्रीं संवत्सररूपायै ईशानरूपायै दक्षिणाकालिकायै नमः स्वाहा। (ऊर्ध्ववक्त्रे)

ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ हूं उं ऊं अं गं जं डं दं बं लं ळं क्ष्रीं क्रीं परिवत्सररूपायै तत्पुरुषरूपायै सिद्धमातङ्गीकालिकायै नमः स्वाहा। (पूर्ववक्त्रे)

ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ हूं इं ईं एं ऐं खं छं ठं थं फं रं हं क्ष्रीं क्रीं अनुवत्सररूपायै अघोररूपायै मातङ्गीकालिकायै नमः स्वाहा। (दक्षवक्त्रे)

ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ हूं अं आं ओं कं चं टं तं पं यं सं क्ष्रीं क्रीं इडावत्सररूपायै वामदेवरूपायै ताराकालिकायै नमः स्वाहा। (उत्तरवक्त्रे)

ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ हूं ऋं ॠं औं घं झं ढं धं भं वं षं क्ष्रीं क्रीं वत्सररूपायै सद्यौजातरूपायै धूमावतीकालिकायै नमः स्वाहा। (पश्चिमवक्त्रे)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

5. अथ पश्चिमाम्नाय-कुब्जिका- महाषोढा न्यासः

ॐ अस्य श्रीपश्चिमाम्नाय-कुब्जिका-महाषोढान्यासस्य सद्योजात ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, श्रीकुब्जिकाभगवतीदेवता, ग्रन्थ्यघोरबीजं, मालिनीशब्दराशिः शक्तिः, षड्दूतीरत्नपञ्चकं कीलकं, श्रीकुब्जिकाभगवतीप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः। करषडङ्गादिन्यासाश्च ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें ह्सौः इति पञ्चबीजैः कर्तव्याः।

मध्ये- ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें ह्सौः हसक्षमलवरयऊं सहक्षमलवरयईं न्यासकर्मभट्टारिकायै पादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः-आसनं। पद्मासनाय पादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः। शवासनाय पादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

ध्यानम्-

ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें ह्सौः-

पद्मासन-शवस्थं च दशवक्त्रं त्रिलोचनम्।
खवर्णं च महादीप्तं सर्वत्र क्षणसंयुतम्।।
खवर्णं पूर्ववक्त्रं तु दक्षिणे कृष्णशोभितम्।
उत्तरे पीतवर्णं स्यात् तदूर्ध्वं रक्तरञ्जितम्।।
रक्तस्य दक्षिणे धूम्रं श्वेतमुत्तरमेव च।
तदूर्ध्वं पीतवर्णं च पीतस्य कृष्णदक्षिणे।
रक्तमुत्तरमित्याहुस्तदूर्ध्वे श्वेतमुत्तमम्।
अष्टादशभुजं देवं कबन्धहारभूषितम्।।
खड्गफेटधरं देवं त्रिशूलमङ्कुशं तथा।
सूत्रं कमण्डलुं श्रेष्ठं डमरुं खट्वाङ्गमेव च।।
बाणान् धनुःषु संयुक्तं परशुं घण्टशोभितम्।
चक्रं चैव गदापाणिवरदाभयहस्तकम्।।
काद्यं बिन्दुधरं देवं नानालङ्कारमण्डितम्।
शवं पीतं भवेद् वर्णमासने सुखसंस्थितम्।।
एवं रूपं नवात्मानं मण्डलं गुरुमण्डलम्।
ध्यायेद् यस्तु प्रयुक्तात्मा क्षिप्रं सिद्ध्यति मानवः।।

(इति मध्ये ध्यानं विचिन्तयेत्)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(५.१) **अथ गुरुमण्डल न्यासाः -**

(५ = ऐं ह्रीं श्री हस्ख्फ्रें ह्सौः) (९ = हसक्षमलवरयऊं)

५ सहक्षमलवरयईं आस हसक्षमलवरयऊं (मध्ये बिन्दौ)

५ हं ९ श्रीआनन्दशक्ति-भैरवानन्दवीराधिपतये सं ९ नवात्मगुरुमण्डले श्रीकुब्जिकायै पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

५ न्लूं औ महापूजागुरुमण्डले श्रीकुब्जिकायै पादुकां पूजयामि त० त्रिकोणमध्ये

५ न्लूं ऐं महापूजा गुरुमण्डले श्रीशक्त्यै पादुकां पूजयामि, त० त्रिकोणदक्षे

५ प्लूं ऊं परमेष्ठिगुरुमण्डले श्रीदेव्यै पादुकां पूजयामि, त० त्रिकोणाग्रे

५ स्लूं ईं परमगुरुमण्डले श्री आज्ञायै पादुकां पूजयामि, त० त्रिकोणवामे

५ ग्लूं आं गुरुमण्डले श्रीआज्ञायै पादुकां पूजयामि, त० परापरे

५ श्रीशिवतत्त्व गुरुमण्डलपरायै पादुकां पूजयामि, त० चतुरस्रे पूर्वे

५ श्रीविद्यातत्त्व गुरुमण्डलपरापरायै पादुकां पूजयामि, त० दक्षिणे

५ श्रीआत्मतत्त्व गुरुमण्डलापरायै पादुकां पूजयामि, त० पश्चिमे

५ श्री आज्ञाकुसुमायै पादुकां पूजयामि, त० उत्तरे

५ श्री जयायै पादुकां पूजयामि, त० आग्नेये

५ श्री विजयायै पादुकां पूजयामि, त० नैर्ऋत्ये

५ श्री अजितायै पादुकां पूजयामि, त० वायव्ये

५ श्री अपराजितायै पादुकां पूजयामि, त० ईशाने

५ श्री हंसातिगायै पादुकां पूजयामि, त० त्रिकोणमध्ये

५ श्री यं शान्तिनाथायै पादुकां पूजयामि, त० पश्चिमे

५ श्री रं विद्यायै पादुकां पूजयामि, त० उत्तरे

५ श्री वं प्रतिष्ठायै पादुकां पूजयामि, त० दक्षिणे

५ श्री लं निवृत्त्यै पादुकां पूजयामि, त० पूर्वे

५ श्री कुलभैरवायै पादुकां पूजयामि, त० वायव्ये

५ श्री कुलनाथभैरवायै पादुकां पूजयामि, त० ईशाने

५ श्री कुलतुम्बुरुभैरवायै पादुकां पूजयामि, त० आग्नेये

५ श्री कुलपालभैरवायै पादुकां पूजयामि, त० नैर्ऋत्ये

५ श्री कुलाज्ञाभैरवायै पादुकां पूजयामि, त० त्रिकोणदक्षिणरेखायाम्

५ श्री कुलाज्ञादेव्यै पादुकां पूजयामि, त० त्रिकोणवामरेखायाम्

५ क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षेत्रपालायै पादुकां पूजयामि, त० वायव्ये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५ गां गीं गूं गः ग्लौं श्रीकुलगणेश्वरायै पादुकां पूजयामि, त० ईशाने
५ श्रीं ह्रीं कुलपुत्रबटुकनाथायै पादुकां पूजयामि, त० आग्नेये
५ श्री महाकौमारिकायै विच्चे पादुकां पूजयामि, त० नैर्ऋत्ये
५ त्रियांजलिमारिका विच्चे पादुकां पूजयामि, त० पश्चिमे
५ हं ९ आनन्दशक्तिभैरवानन्दवीराधिपतये, सं ९ नवात्मगुरुमण्डलभट्टारिकायै पादुकां पू०त०। उत्तरे
५ सं ९ आनन्दशक्तिभैरवानन्द श्रीविद्याराजेश्वरी हं ९ नवात्मगुरुमण्डलभट्टारिकायै पादुकां पू०त०। मध्ये
५ हां हृदयाय पादुकां पू०त०। पश्चिमे
(षडङ्गेन सम्पूज्य)।
५ बलिः दक्षिणे
५ अघोर० पूर्वे
५ वज्र० मध्ये
५ यं द्वात्रिंशदक्षरमन्त्रजपो (नमो भगवत्यै हस्ख्फ्रें कुब्जिकायै स्ह्रां स्ह्रीं स्ह्रूं ङ ञ ण नमो अघोरमुखि छां छीं किणि किणि विच्चे।) बलिश्च।

(५.२) **अथ द्वात्रिंशद्वर्णन्यासः -**

"नमो भगवत्यै हस्ख्फ्रें कुब्जिकायै स्ह्रां स्ह्रीं स्ह्रूं ङ ञ ण नमो अघोरमुखि छां छीं किणि किणि विच्चे।"

न-शिखायाम् । मो-शिरसि । भ-ललाटे । ग-दक्षिणनेत्रे। क-वामनेत्रे। त्यै-नासिकायाम्। हस्ख्फ्रें-मुखे । कु-दक्षिणकर्णे। ब्जि-वामकर्णे । का-चिबुके । यै-कण्ठे । स्ह्रां-हृदि। स्ह्रीं-दक्षिणस्तने। स्ह्रूं-वामस्तने । ङ-दक्षिणपार्श्वे । ञ-वामपार्श्वे। ण-नाभौ। न-लिङ्गमूले । मो-अण्डयोः । अ-पायौ। घो-दक्षिणोरौ। र-वामोरौ । मु-दक्षिणजानौ। खि-वामजानौ । छां-दक्षजङ्घायाम्। छीं-वामजङ्घायाम्। कि-दक्षगुल्फे । णि-वामगुल्फे । कि-दक्षपादे । णि-वामपादे । वि-दक्षपादाङ्गुलिषु। च्चे-वामपादाङ्गुलिषु।

।। इति द्वात्रिंशद्वर्णन्यासः ।।

समस्तमन्त्रपीठ-सिंहासनपीठ-पीठोपपीठ-क्षेत्रोपक्षेत्र-सन्दोहोपसन्दोह-दिव्यचक्रसमयपादुका० । उक्तमनुक्तं-यत् किञ्चित् सर्वं ऐं हृदयाय पादुका०। आवाह्य योनिमुद्रां प्रदर्श्य नमः श्रीनाथायेत्यादि० । धूप-दीप-नैवेद्यान्ते जपः - हर क्लीं स्वाहा ।।५४।। स्तोत्रं तर्पणं। बिन्दुत्रय०।

इति नवात्मानन्दनाथसमयादेव्यै गुरुमण्डलदेवार्चनविधिः समाप्तः।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ततः क्रमार्चनमारभेत्-

ग्रन्थिन्यासं तथा घोरं द्वादशाङ्गं षडङ्गकम्।
मालिनीं शब्दराशिं च षड्दूती रत्नपञ्चकम्।।
नवात्मा नवघोरास्त्रं षोढाश्चैव त्रिविद्यया।।
घोराष्टकत्रिखण्डा चैवैकाक्षरी द्विपञ्चकम्।।
दादिष्ट्कन्यासादि षोढान्याससमुद्राहृतम्।
एतैर्न्यासैर्विना देवि नहि क्रमार्चनं भवेत्।।
कमला कुलद्वीपा च तर्वरा बहुरूपिका।
महत्तारी कोंकलाख्या कमलाद्यङ्गयं यजेत्।।

(५.३) **अथ षडङ्गहृदयादिन्यासाः-**

व-शिखायां। ज्र-शिरसि। कु-ललाटे। ब्जि-दक्षिणनेत्रे। नि-वामनेत्रे। हस्ख्फ्रें-नासिकायाम्। त्रै-मुखे। लो-दक्षिणकर्णे। क्या-वामकर्णे। क-चिबुके। र्षि-कण्ठे। णि-हृदि। ह्रीं-दक्षिणस्तने। का-वामस्तने। माँ-दक्षिणपार्श्वे। ग-वामपार्श्वे। द्रा-नाभौ। वि-लिंगमूले। णि-अण्डयोः। क्लीं-पायौ। स्त्रीं-दक्षिणोरौ। म-वामोरौ। हा-दक्षिणजानौ। क्षो-वामजानौ। भ-दक्षजंघायाम्। का-वामजंघायाम्। रि-दक्षगुल्फे। णि-वामगुल्फे। ऐं-दक्षिणपादे। क्लीं-वामपादे। सौः-दक्षपादाङ्गुलिषु। सः-वामपादाङ्गुलिषु। वज्रकुब्जिनी हस्ख्फ्रें त्रैलोक्याकर्षिणि ह्रीं कामांगद्रविणि क्लीं स्त्रीं महामोक्षकारिणि ऐं क्लीं सौं सः - सर्वाङ्गे।

अ-शिखायाम्। घो-शिरसि। रे-ललाटे। ह्रां-दक्षिणनेत्रे। थ-वामनेत्रे। घो-नासिकायां। रे-मुखे। ह्रीं - दक्षिणकर्णे। घो-वामकर्णे। र-चिबुके। घो-कण्ठे। र-हृदि। त-दक्षिणस्तने। रे-वामस्तने। ह्रूं-दक्षिणपार्श्वे। फ्रें-वामपार्श्वे। स-नाभौ। र्व-लिङ्गमूले। स-अण्डयोः। र्वे-पायौ। श-दक्षिणोरौ। र्वे-वामोरौ। फ्रैं-दक्षिणजानौ। हैं-वामजानौ। जूं-दक्षजङ्घायाम्। सः-वामजङ्घायाम्। ह्रौं-दक्षगुल्फे। रु-वामगुल्फे। द्र-दक्षपादे। रू-वामपादे। पे-दक्षपादांगुलिषु। हः -वामपादांगुलिषु। अघोरे ह्रां अथ घोरे ह्रीं घोरघोरतरे ह्रूं फ्रें सर्वशर्वे फ्रैं हैं जूं सः ह्रौ रुद्ररूपे हः - सर्वाङ्गे। वज्रमण्डले- ऐं ५ ह्रां ह्रीं ह्रूं हैं ह्रौं हः वज्रिणि अमोघे महाघोरे गगनविशुद्धे शोधय शोधय हूं फट् वज्रासनं पादुकां पूजमामि तर्पमामि। सूर्यमण्डले- ऐं ५ ह्सीं ह्सौं मार्तण्डमण्डलशोधनीं तेजस्विनीं हूँ फट् ह्सौं।

(५.४) **अथ ग्रन्थिन्यासः -**

ऐं५ हं - अनन्तग्रन्थिग्रन्थ्यै नमः - पादुकां पूजयामि, त० पादयोः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५ हां - कलग्रन्थि नमः पादुकां पूजयामि, त० गुल्फयोः
५ हिं - रुद्रग्रन्थि नमः पादुकां पूजयामि, त० जङ्घाद्वये
५ हीं - अष्टग्रन्थि नमः पादुकां पूजयामि, त० ऊरुद्वये
५ हुं - वामग्रन्थि नमः पादुकां पूजयामि, त० कटिद्वये
५ हूं - कामग्रन्थि नमः पादुकां पूजयामि, त० लिङ्गस्याग्रे
५ हृं - पिण्डग्रन्थि नमः पादुकां पूजयामि, त० मेढ्रस्थाने
५ हृं - ब्रह्मग्रन्थि नमः पादुकां पूजयामि, त० ब्रह्मस्थाने
५ हलृं - सूर्यग्रन्थि नमः पादुकां पूजयामि, त० नाभिमध्ये
५ हलृं - सोमग्रन्थि नमः पादुकां पूजयामि, त० नाभौ
५ हें - प्राणग्रन्थि नमः पादुकां पूजयामि, त० उदरे
५ हैं - जीवग्रन्थि नमः पादुकां पूजयामि, त० हृदये
५ हों - विष्णुग्रन्थि नमः पादुकां पूजयामि, त० कण्ठे
५ हौं - रुद्रग्रन्थि नमः पादुकां पूजयामि, त० तालुमध्ये
५ हं - ईश्वरग्रन्थि नमः पादुकां पूजयामि, त० शिरसि
५ हः - सदाशिवग्रन्थि नमः पादुकां पूजयामि, त० मूर्ध्नि

इति ग्रन्थिन्यासभट्टारिकायाः पादुकाग्रन्थिन्यासात् सहोदरवधमहापातकनाशनमिदं बलिं गृह्ण २ स्वाहा ।

(५.५) **अघोरन्यासः -**

५ अघोरे ह्रां-हृदयाय नमः । ५ घोरे ह्रीं-शिरसे स्वाहा।
५ घोरे घोरतरे ह्रूं - शिखायै वषट् । ५ सर्वशर्वे ह्रैं-कवचाय हुं।
५ जूं सः ह्रौं - नेत्रत्रयाय वौषट् । ५ नमस्ते रुद्ररूपे ह्रः - अस्त्राय फट्।
अघोरे अघोरादिन्यासात् महापातकनाशनमिदं बलिं गृह्ण २ स्वाहा। इति अघोरन्यासः।

अथ षडङ्गन्यासः -

५ स्हां सर्वज्ञता शक्तिधाम्ने- हृदयाय नमः। ५ स्हीं अमृततेजोमालिनी नित्यतृप्तिशक्तिधाम्ने- शिरसे स्वाहा । ५ स्हूं अवेदवेदअनादिन्यादिशक्तिधाम्ने- शिखायै वषट् । ५ स्हैं वज्रिणीवज्रधारास्वतन्त्रधाम्ने- कवचाय हुँ । ५ स्हौं सहस्रतैजसात्मिके नित्यमलुप्तशक्तिधाम्ने- नेत्रत्रयाय वौषट् । ५ स्हः अनन्तशक्तिधाम्ने- अस्त्राय फट् । ५ नफलवर्यी षडङ्गन्यासाय बलिं गृह्ण २ स्वाहा । षडङ्गन्यासात् महाव्याधिनाशनमिदं बलिं गृह्ण २ स्वाहा। इति षडङ्गन्यासः।

(५.६) **मालिनी-न्यासः**

ऐं ५ नं नादिन्यै नमः शिखायां पादुकां पूजयामि, तर्पयामि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५	थं	ग्रसन्यै नमः	अर्धशिरोमालायां पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	ऋं	निवृत्त्यै नमः	पूर्वशिरोमालायां पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	ॠं	प्रतिष्ठायै नमः	दक्षिणशिरोमालायां पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	लृं	विद्यायै नमः	उत्तरशिरोमालायां पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	लॄं	क्षान्त्यै नमः	पश्चिमशिरोमालायां पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	चं	चामुण्डायै नमः	तृतीयनेत्रे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	धं	प्रियदर्शन्यै नमः	नेत्रयोः पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	णं	नारायण्यै नमः	कर्णयोः पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	उं	मोहिन्यै नमः	दक्षिणकर्णभूषणे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	ऊं	प्रज्ञायै नमः	वामकर्णभूषणे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	इं	गुह्यावत्यै नमः	नासापुटयोः पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	वं	वज्रिण्यै नमः	वक्त्रे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	कं	कटकटायै नमः	दंष्ट्रयोः पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	खं	कालिकायै नमः	ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	गं	शिवायै नमः	अधोदन्तपंक्तौ पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	घं	घोरघोरायै नमः	ऊर्ध्वोष्ठे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	ङं	खिविरायै नमः	अधरोष्ठे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	ईं	मायादेव्यै नमः	जिह्वायां पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	अं	वागीश्वर्यै नमः	वाचि पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	वं	शिखिवाहिन्यै नमः	कण्ठे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	भं	भीषण्यै नमः	दक्षिणस्कन्धे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	यं	वायुवेगायै नमः	वामस्कन्धे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	डं	लामायै नमः	दक्षिणबाहुदण्डे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	ढं	विनायक्यै नमः	वामबाहुदण्डे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	ठं	पूर्णिमायै नमः	करतलद्वये पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	झं	झंकार्यै नमः	दक्षिणहस्तांगुलिषु पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	ञं	कूर्दनायै नमः	वामहस्तांगुलिषु पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	जं	जयन्त्यै नमः	मेरुदण्डसन्धौ दक्षिणहस्ते पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	रं	दीपिन्यै नमः	शूलदण्ड-दक्षिणहस्ते पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	टं	कपालिन्यै नमः	कपाले पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	पं	पावन्यै नमः	हृन्मध्ये पादुकां पूजयामि, तर्पयामि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५ हं अम्बिकायै नमः प्राणाधारे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ सं सर्वात्मन्यै नमः दक्षिणपार्श्वे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ अः इच्छाशक्त्यै नमः वामपार्श्वे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ छं छागल्यै नमः दक्षिणस्तने पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ लं पूतनायै नमः वामस्तने पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ आं आमोटन्यै नमः पादद्वये पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ षं लम्बोदर्यै नमः उदरे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ क्षं संहारिण्यै नमः नाभिमध्ये पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ मं महाकाल्यै नमः नितम्बे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ शं कुसुमायुधायै नमः गुह्ये पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ अं शुक्रादेव्यै नमः शुक्रे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ तं तारादेव्यै नमः ऊरुद्वये पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ एं ज्ञानशक्त्यै नमः दक्षिणजानौ पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ ऐं क्रियायै नमः वामजानौ पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ ओं गायत्र्यै नमः दक्षिणजङ्घायाम् पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ औं सावित्र्यै नमः वामजङ्घायाम् पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ यं दहन्यै नमः दक्षिणपादे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ ळं पोरकारिण्यै नमः वामपादे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ नफलमरयूं मालिनीन्यासाद् गोहत्यामहापातकनाशनमिमं बालिं गृह्ण २ स्वाहा।

।। इति मालिनीन्यासः।।

(५.७) **शब्दराशिन्यासः** -

ऐं ५ अं श्रीकण्ठाय नमः ललाटे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ आं अनन्तमण्डलाय नमः वक्त्रे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ इं सूक्षमीशाय नमः दक्षिणनेत्रे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ ईं त्रिमूर्तीशाय नमः वामनेत्रे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ उ अमरीशाय नमः दक्षिणकर्णे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ ऊं अर्धीशाय नमः वामकर्णे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ ऋं अतिथीशाय नमः दक्षिणनासायां पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५ ॠं भारभूतीशाय नमः वामनासायां पादुकां पूजयामि, तर्पयामि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५	लृं	स्थाणवे नमः	दक्षगण्डे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	लॄं	हराय नमः	वामगण्डे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	एं	झण्टीशाय नमः	अधोदन्तपंक्तौ पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	ऐं	भूतीशाय नमः	ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	ओं	सद्योजाताय नमः	अधरोष्ठे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	औं	अनुग्रहीशाय नमः	ऊर्ध्वोष्ठे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	अं	क्रूरेशाय नमः	तालुमध्ये पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	अः	महासेनाय नमः	जिह्वायाम् पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	कं	क्रोधीशाय नमः	दक्षिणस्कन्धे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	खं	चण्डाय नमः	दक्षबाहुदण्डे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	गं	प्रचण्डाय नमः	दक्षिणहस्तमणिबन्धे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	घं	शिवाय नमः	दक्षहस्ते पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	ङं	एकरुद्राय नमः	दक्षहस्तांगुलिषु पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	चं	कूर्माय नमः	वामस्कन्धे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	छं	एकनेत्राय नमः	वामबाहुदण्डे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	जं	चतुर्मुखाय नमः	वामहस्तमणिबन्धे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	झं	अजेशाय नमः	वामहस्ते पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	ञं	सर्वेशाय नमः	वामहस्ताङ्गुलिषु पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	टं	सोमेश्वराय नमः	दक्षिणस्फिचि पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	ठं	लाङ्गलीशाय नमः	दक्षिणोरौ पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	डं	दारुकाय नमः	दक्षिणजानौ पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	ढं	अर्धनारीशाय नमः	दक्षिणजङ्घायाम् पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	णं	उमाकान्ताय नमः	दक्षिणपादे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	तं	आषाढीशाय नमः	वामस्फिचि पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	थं	दण्डीशाय नमः	वामोरौ पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	दं	धात्रीशाय नमः	वामजानौ पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	धं	मीनाय नमः	वामजङ्घायाम् पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	नं	मेषाय नमः	वामपादे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	पं	लोहिताय नमः	दक्षिणपार्श्वे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	फं	शिखीशाय नमः	वामपार्श्वे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	बं	छगलण्डाय नमः	पृष्टवंशे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५	भं	द्विरण्डाय नमः	नाभिमध्ये पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	मं	महाकालाय नमः	हृन्मध्ये पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	यं	जवालीशाय नमः	त्वङ्मध्ये पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	रं	भुजङ्गाय नमः	रक्ते पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	लं	पिनाकीशाय नमः	मांसे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	वं	खड्गानन्दाय नमः	स्नायुमध्ये पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	शं	वकानन्दाय नमः	अस्थिमध्ये पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	षं	श्वेतानन्दाय नमः	मज्जायाम् पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	सं	भृग्वीशाय नमः	शुक्रे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	हं	लकुलीशाय नमः	प्राणाधारे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि
५	क्षं	संवर्तकाय नमः	पादाङ्गुष्ठग्रन्थौ पादुकां पूजयामि, तर्पयामि

ऐं ५ शब्दराशिन्यासात् स्त्रीहत्यामहापातकनाशनमिदं बलिं गृह्ण २ स्वाहा ।।इति शब्दराशिन्यासः।।

(५.८) **षड्दूतीन्यासः** -

ऐं ५ कालि २ महाकालि मांसशोणितभोजिनि ह्रां ह्रीं ह्रौं रक्तकृष्णमुखि देवि मां मा पश्यन्तु शत्रवः, श्रीहृदयदूत्यै नमः - हृदयाय नमः पादुकां पूजमामि तर्पयामि।
ऐं ५ नमो भगवति दुष्टचाण्डालिनि हुं रुधिरमांसभक्षिणि कपालखट्वाङ्गधारिणि हन २, दह २, धम २, पच २, मम शत्रून् ग्रस २, मारय २, हूं ३ फट् श्रीशिरोदूत्यै - शिरसे स्वाहा पादुकां पूजमामि त०।।
ऐं ५ हस्फ्रां हस्फ्रीं हस्फ्रूं श्रीशिखादूत्यै - शिखायै वषट् पादुकां पूजमामि त०।
ऐं ५ उत्तोली असिमट्टि आसपूह ईशवट्टि आदिर्णि आशि उल्लेखि आ सर्वदुष्टभेलखी आ श्रीकवचदूत्यै - कवचाय हुं। पा०पू०त०।
ऐं ५ रक्ते रक्ते महारक्ते चामुण्डेश्वरी अवतर २ स्वाहा श्रीनेत्रदूत्यै - नेत्रत्रयाय वौषट्। पा०पू०त०।
ऐं ५ गुह्यकुब्जिके ह्रीं क्षौं ह्रः फट् क्षफ्रें हूं २ एणं हूं ३ फट् मम सर्वोपद्रवान् यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रं चूर्णय २, प्रयोगादिकानन्येन कृतान् कारयितान् करिष्यमाणान् सर्वान् हन २ मथ २ मर्दय २ दंष्ट्राकरालि फ्रें ह्रीं हूं फट् गुह्यकुब्जिके अस्त्रदूत्यै - अस्त्राय फट्। पा०पू०त०।
षड्दूतीन्यासात् शस्त्रक्षयकामनार्थमिदं बलिं गृह्ण २ स्वाहा। खादकास्त्रेण शिरसि भ्रमणम्।। इति षड्दूतीन्यासः।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(५.९) **रत्नपञ्चक-न्यासः -**

हृदये - 'ऐं ५ वागीश्वरी ग्लूं' रत्नगगनलोकभोगगर्भगामिनी गगन-लोकामृतसञ्चारिणी-गगनानन्ददेव-गगनाम्बा-चतु:षष्टिलक्ष-कोटिसिद्ध-चतु:षष्टिलक्षकोटियोगिनीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि।

नाभौ - 'ऐं ५ माया स्लूं' 'ऐ मोहिनी क्लीं फ्लूं' रत्नस्वर्गलोकयोगगर्भगामिनी स्वर्गलोकामृतसञ्चारिणी स्वर्गनन्ददेव-स्वर्गाम्बा-द्वात्रिंशल्लक्षकोटिसिद्ध-द्वात्रिंशल्लक्षकोटियोगिनीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि।

लिङ्गे - 'ऐं मोहिनी क्लीं फ्लूं' रत्नपवनलोकभोगगर्भगामिनी पवन लोकामृतसञ्चारिणी पवनानन्ददेवपवनाम्बाषोडशलक्षकोटिसिद्ध-षोडशलक्षकोटियोगिनी पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

गुह्ये - 'ऐं ५ ज्ञाना म्लूं' रत्नमर्त्यलोक-भोगगर्भगामिनी-मर्त्यलोका-मृतसञ्चारिणी मर्त्यानन्ददेव-मर्त्याम्बा-अष्टलक्षसिद्ध-अष्टलक्ष-कोटियोगिनीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि।

बीजे - 'ऐं ५ ह्रीं गायत्री ह्रीं न्लूं' रत्ननागलोकभोगगर्भगामिनी नाग-लोकामृतसञ्चारिणी - नागानन्ददेव - नागाम्बा -चत्वारिंशल्लक्ष-कोटिसिद्ध-चत्वारिंशल्लक्षकोटियोगिनीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि।

शिर:स्थाने- 'ऐं ५ ह्रीं न्लूं' इन्द्रनीलानन्तलोक-भोगगर्भगामिन्यनन्तलोका-मृतसञ्चारिण्यनन्तानन्ददेवानन्ताम्बाऽनन्तलक्षकोटिसिद्धानन्तलक्ष कोटियोगिनीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि।

रत्नपञ्चकन्यासात् शोकसन्तापक्षयकारकमिदं बलिं गृह्ण २ स्वाहा।

।।इति रत्नपञ्चकन्यास:।।

(५.१०) **नवात्मन्यासः -**

अथ करन्यास :

'ऐं ५ ह्सं' अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । '५ क्षमं' - तर्जनीभ्यां स्वाहा। '५ ल्वं' - मध्यमाभ्यां वषट् । '५ रं यं' - अनामिकाभ्यां हुम् । '५ यं ॐ' - कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । '५ अं ऊं' - करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

।। इति करन्यास:।।

अथ हृदयादिन्यास: -

'५ हसं' - हृदयाय नमः । '५ क्षमं - शिरसे स्वाहा । ५ ल्वं शिखायै वषट्। ५ रं यं कवचाय हुं । ५ यं ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ५ अं ऊं अस्त्राय फट्।

।। इति हृदयादिन्यास:।। इति नवात्मन्यासश्च।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(५.११) **छोटिकान्यासः -**

'५ हं-शिखायां पादुकां पू.। ५ सं-शिरसे पादुकां पू.। ५ क्षं-ललाटे पादुकां पू।
५ मं-मुखमण्डले पादुकां पू.। ५ लं-हृदि पादुकां पू.। ५ वं-नाभौ पादुकां पू.।
५ रं-गुह्ये पादुकां पू.। ५यं-जान्वोः पादुकां पू.। ५ ॐ-पादद्वये पादुकां पू।
५ अं-अस्त्राय फट् सर्वाङ्गे पादुकां पूजयामि।

।। इति छोटिकान्यासः।।

(५.१२) **अघोरास्त्रन्यासः -**

ऐं ५ ह्रां ह्रीं ह्रौं प्रस्फुर प्रस्फुर - हृदयाय नमः।
ऐं ५ घोरघोरतरतनुरूप - शिरसे स्वाहा।
ऐं ५ चट चट प्रचट प्रचट - शिखायै वषट्।
ऐं ५ कह कह वम वम - कवचाय हुं।
ऐं ५ दंश दंश घातय घातय - नेत्रत्रयाय वौषट्।
ऐं ५ विद्यालय विद्यालय भिन्दि भिन्दि हूं ३ फट् फट् - अस्त्राय फट्।

।। इति अघोरास्त्रन्यासः।।

(५.१३) **द्वात्रिंशद्वर्णन्यासः -**

ऐं-शिखायाम्। व-शिरसि। ज्र-ललाटे। कु-दक्षिणनेत्रे।
ब्जि-वामनेत्रे। के-नासिकायाम्। हस्फ्रें-मुखे। त्रै-दक्षिणकर्णे।
लो-वामकर्णे। क्या-चिबुके। क-कण्ठे। र्षि-हृदि।
णि-दक्षिणस्तने। ह्रीं-वामस्तने। का-दक्षिणपार्श्वे। मां-वामपार्श्वे।
ग-नाभौ। द्रा-लिङ्गमूले। वि-अण्डयोः। णि-पायौ।
क्लीं-दक्षिणोरौ। स्त्रीं-वामोरौ। म-दक्षिणजानौ। हा-वामजानौ।
क्षो-दक्षजङ्घायाम्। भ-वामजङ्घायाम्। का-दक्षगुल्फे। रि-वामगुल्फे।
णि-दक्षपादे। ऐं-वामपादे। सौः-दक्षपादाङ्गुलिषु।
सः-वामपादाङ्गुलिषु। (सर्वत्र 'पादुकां पूजयामि' को जोड़ लें।)

।। इति द्वात्रिंशद्वर्णन्यासः।।

(५.१४) **एकाक्षरीन्यासः -**

ऐं ५ क्लीं-नासायां पादुकां पूजयामि, तर्पयामि।
५ हं-मुखे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि।
५ सं-दक्षनेत्रे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि।
५ खं-वामनेत्रे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५ फं-ललाटे पादुकां पूजयामि, तर्पयामि।
५ रं-शिरसि पादुकां पूजयामि, तर्पयामि।
५ ऐं-कर्णद्वये पादुकां पूजयामि, तर्पयामि।
५ ॐ पादद्वये पादुकां पूजयामि, तर्पयामि।
।। इत्येकाक्षरीन्यासः।।

(५.१५) **त्रिविद्यान्यासः** -

ऐं ५ शिवतत्त्वाधिकारे स्हीं परायै-शिरसे स्वाहा।
ऐं ५ आत्मतत्त्वाधिकारे ऐं ह्रीं हूँ ह्रौं स्हौं फट् अपरायै-हृदयाय नमः।
ऐं ५ विद्यातत्त्वाधिकारे अघोरे ह्रीं परमघोरे हूँ घोररूपे हः घोरमुखी भीमा भीषणी वम २ पिब २ रुरु २ रर २ फट् स्हौं हुं फट् परापरायै- गुह्ये।
ऐं ५ ह्सूं त्रिविद्यान्यासाय बलिं गृह्ण २ स्वाहा।
।। इति त्रिविद्यान्यासः।।

(५.१६) **घोराष्टकन्यासः** -

ऐं ५ ह्रीं रु अघोरे ह्रीं स्हौं अघोरायै नमः - शिरसि स्वाहा।
५ ह्रीं रु परमघोरे हूं स्हौं परमघोरायै नमः - मुखस्थाने।
५ ह्रीं रु घोररूपे हः स्हौं घोररूपायै नमः - हृदये।
५ ह्रीं रु घोरामुखी स्हौं घोरमुख्यै नमः - नाभौ।
५ ह्रीं रु फट् भीमे स्हौं भीमायै नमः - दक्षभुजे।
५ ह्रीं रु हूं भीषणे स्हौं भीषण्यै नमः - वामभुजे।
५ ह्रीं रु हूं हः वम स्हौं वमनायै नमः - दक्षोर्वादिपादाङ्गुल्यन्तम्।
५ ह्रीं रु फट् पिब हे स्हौं पिबनायै नमः - वामोर्वादि पादाङ्गुल्यन्तम्।

५ घोरिकाष्टकाय बलिं गृह्ण २ स्वाहा।
।। इतिघोराष्टकन्यासः।।

(५.१७) **रुद्रखण्डन्यासः (प्रथमत्रिखण्डन्यासः)** -

ऐं ५ नमो भगवति रुद्रायै फ्रें - पादाङ्गुष्ठयोः।
५ नमश्चाकाशमातृभ्यः फ्रें - पादद्वये।
५ नमः सर्वकामार्थसाधकेभ्यः फ्रें - गुल्फद्वये।
५ नमोऽजरामरेभ्यः फ्रें - जङ्घयोः।
५ नमः सर्वत्राप्रतिहतगतिभ्यः फ्रें - जान्वोः।
५ नमः स्वरूपपररूपपरिवर्तिभ्यः फ्रें - ऊर्वोः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५ नमः सर्वसत्त्ववशीकरणाच्छादनोन्मूलनसमस्तकर्म
-प्रवर्त्तिभ्यः फ्रें - योनौ।
५ नमः परकर्मच्छेदनकर सं सिद्धिकराय फ्रें - गुह्ये।
५ नमः मातृणां वचनं शुभं फ्रें - उपस्थे।

।। इति रुद्रन्यासः।।

(५.१८) **मातृखण्डन्यासः -**

५ अघोरे अमोघे वरदे विमले श्रीब्रह्माणि विच्चे पादुकां० हृदि।
५ अघोरे अमोघे वरदे विमले श्रीमाहेश्वरि विच्चे पादुकां० कण्ठे।
५ अघोरे अमोघे वरदे विमले श्रीकौमारि विच्चे पादुकां० तालुमध्ये।
५ अघोरे अमोघे वरदे विमले श्रीवैष्णवि विच्चे पादुकां० मुखे।
५ अघोरे अमोघे वरदे विमले श्रीवाराहि विच्चे पादुकां० नासिकायाम्।
५ अघोरे अमोघे वरदे विमले श्रीऐन्द्राणि विच्चे पादुकां० कोदण्डे।
५ अघोरे अमोघे वरदे विमले श्रीचामुण्डे विच्चे पादुकां० अर्धचन्द्रे।
५ अघोरे अमोघे वरदे विमले श्रीमहालक्ष्मि विच्चे पादुकां० शिरोबिले।

।। इति मातृकान्यासः।।

(५.१९.१) **मन्त्रखण्डे त्रिखण्डान्यासः -**

ऐं ५ नमश्चामुण्डायै फ्रें - ललाटे । ५ ऊर्ध्वकेशि फ्रें - केशे।
५ ज्वलितशिखे फ्रें- शिखायाम्। ५ विद्युज्जिह्वे फ्रें - जिह्वायाम्।
५ तार्क्ष्याक्षि फ्रें - नेत्रत्रये । ५ पिङ्गलभ्रुवे फ्रें - भ्रूयुगले।
५ विकृतदंष्ट्रे फ्रें - दन्तपंक्तौ । ५ क्रुद्धे फ्रें - ओष्ठयोः।
५ मांसशोणितसुरासवप्रिये फ्रें - जिह्वायाम् । ५ हस, हस फ्रें- तालुमध्ये।
५ नृत्य नृत्य फ्रें- बाहुद्वये । ५ जये जये फ्रें - कण्ठग्रन्थौ।
५ मायात्रैलोक्यरूपसहस्रपरिवर्तिनि फ्रें - कण्ठकूपे।
५ नूद नूद फ्रें - हृदि मध्ये । ५ क्रूट २ फ्रें - नाभौ।
५ चिरि चिरि फ्रें - नितम्बे । ५ हिरि हिरि फ्रें- कट्याम्।
५ मिरि मिरि फ्रें- उपस्थलिङ्गे । ५ छिद छिद फ्रें - गुह्ये।
५ त्रासिनी फ्रें - दक्षिणोरौ । ५ भ्रामिणी फ्रें - वामोरौ।
५ विद्राविणी २ फ्रें- उपस्थे। ५ क्षोभिणी २ फ्रें - दक्षजानुनि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५ मार २ फ्रें- वामजानुनि । ५ सञ्जीवय २ फ्रें- दक्षजङ्घायाम्।
५ हेरि २ फ्रें- वामजङ्घायाम् । ५ गोरि - २ फ्रें - दक्षिणगुल्फे।
५ घुरि २ फ्रें - वामगुल्फे। ५ घुरिणे २ फ्रें - दक्षिणपादे।
५ नमो मातृगणेभ्यः - वामपादे। ५ चामुण्डे वरदे विच्चे- पादाङ्गुष्ठयोः।

।। इति मन्त्रखण्डे त्रिखण्डान्यासः।।

(५.१९.२) **बीजपञ्चकन्यासः** -

ऐं ५ अं-ललाटे । ५ इं-कण्ठे । ५ उं-मुखे। ५ एं-गुह्ये। ५ ओं- पादद्वये।

(५.१९.३) **पादादिषट्कन्यासः** -

ऐं ५ छां छीं महत्तारिकायै ह्रौं ग्लूं कलाध्व सां सीं सूं समलवरयूं विशुद्धे साकिन्यै प्रकृतिपुरि खड्गीशानन्ददेव पादुकां पूजयामि A-कण्ठे।

ऐं ५ घोरे अघोरे अघोरामुखि बहुरूपायै ह्रौं ग्लूं मन्त्राध्व कां कीं कूं कमलवरयूं- अनाहते काकिन्यै गुणपुरि विश्वानन्ददेव पादुकां पूजयामि - हृदि।

ऐं ५ ह्रां ह्रीं ह्रूं वरवरशिखे ह्रूं ग्लूं वर्णाध्व लां लीं लूं लमलवरयूं मणिपूरके लाकिन्यै महापुरि झिण्टीशानन्ददेव पादुकां पूजयामि - नाभौ।

ऐं ५ हस्फ्रें कुब्जिकायै कुलदीपायै ह्रीं ग्लूं पदाध्व रां रीं रूं रमलवरयूं स्वाधिष्ठाने राकिन्यै धीपुरि अनुग्रहीशानन्ददेव पादुकां पूजयामि - लिङ्गे।

ऐं ५ नमो भगवति हृत्कमलायै ह्रां न्लूं भुवनाध्व डां डीं डूं डमलवरयूं आद्यायां डाकिन्यै मनःपुरि मित्रानन्ददेव पादुकां पूजयामि -गुदे उपस्थमूले।

ऐं ५ किणि किणि विच्चे कोङ्कणायै हः ब्लू तत्त्वाध्व ह्रां ह्री ह्रूं हमलवरयूं आज्ञायां हाकिन्यै पुम्पुरि अखण्डीशानन्ददेव पादुकां पूजयामि - भ्रूमध्ये।

ऐं ५ यां यीं यूं यमलवरयूं शिरोबिले याकिन्यै यक्षपुरि कौलीशानन्ददेव पादुकां पूजयामि -ललाटे।

इति पादादिषट्कन्यासः ।

A-मूलाधार इति प्रामादिकः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

६. पञ्चक्रमकालिका षोढान्यास
(उत्तराम्नाये)

अस्य श्रीपञ्चक्रमकालिका-षोढान्यासमन्त्रस्य हां सदाशिव ऋषिः, बृहतीच्छन्दः, ह्सौं शिवशक्तिः समरसनिर्वाण देवता, खं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ख्फ्रें कीलकं, मम सर्वसिद्धिसाधने विनियोगः।

यथाक्रमं ऋष्यादिन्यासः कृत्वा करन्यासादिः —

'ॐ ख्फ्रें ह्रीं' अं आं महाचण्डयोगेश्वरि अं आं - अङ्गुष्ठभ्यां नमः।
" इं ईं रिश्वगेयो ड चं हाम इं ईं परमप्रचण्डयोगेश्वरि इं ईं - तर्जनीभ्यां नमः।
" उं ऊं कालरात्रि योगेश्वरि उं ऊं - मध्यमाभ्यां नमः।
" एं ऐं ड चं हां महामायायोगेश्वरि एं ऐं - अनामिकाभ्यां नमः।
" ओं औं उन्मत्तचण्डाग्रयोगेश्वरि ओं औं - कनिष्ठिभ्यां नमः।
" अं अः नरमुण्डमहामारि अं अः - करतलकपृष्ठाभ्यां नमः।
अस्त्राय फट्।

हृदयादिन्यास-

'ॐ ख्फ्रें ह्रीं' अं आं महाचण्डयोगेश्वरि अं आं - हृदयाम नमः।
" इं ईं रिश्वगेयो ड चं हाम इं ईं परमप्रचण्डयोगेश्वरि इं ईं - शिरसे स्वाह।
" उं ऊं कालरात्रि योगेश्वरि उं ऊं - शिखायै वपट्।
" एं ऐं ड चं हां महामायायोगेश्वरि एं ऐं - नेत्रत्रलयाय वौषट्।
" ओं औं उन्मत्तचण्डाग्रयोगेश्वरि ओं औं - कवचाय हुम्।
" अं अः नरमुण्डमहामारि अं अः - अस्त्राय फट्।

अथ व्यापकम् ॐ ख्फ्रें ह्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः।

(६.१) **अथ उग्रमातृक्रमन्यासः -**

ॐ ह्रीं ख्फ्रें अं १६ ॐ नमः परमशिव विपरीताचार 'रहक्षमलवरयूं' महाभैरव कालनिषूदन महाकालग्रासमुख ह्रां ह्रीं खाहि २, भुङक्ष्व २ कालि कालि, महाकालि २, हां हां हां हां हासिनि रह रयां हंस हंस हंस २ हंसी हंसः ह्रीं हृदयनाथ श्रीपादुकां पूजयामि - हृदयाय नमः ।।१।।

ॐ ह्रीं ख्फ्रें कं ५ ॐ नमः सदाशिवाय ह्सौः भगवते हां एह्येहि, परमात्मने सर्वशत्रुनिषूदनाय झमलवरयूं ह्लीं ब्रह्म शिरसे स्वाहा। परमव्योमवासिनि खं ३ व्योमरूपे सत्ये ध्रुवे गुह्येक्षां ३ रक्ष म्रीं क्षां क्षः ह्रीं ब्रह्म - शिरसे स्वाहा।।२।।

ॐ ह्रीं ख्फ्रें चं ५ ॐ ह्रीं रहक्षमलवरयीं ह स ख फ्रां हस फ्रीं चण्ड

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कपालिनि देवि हूँ ज्वल २ प्रज्वल २ हित्ति २, छित्ति २, भित्ति २, ग्रन्थान् गृहण २ नमः रजमलीं जृम्भिते स्तम्भिते मोहिते ऐं ग्लूं चर्चिते जूं सं जम्भय जम्भय, परमचण्डे शीघ्रमानय २, ॐ ह्रीं महोच्छुष्मे रहरक्षमीं भगवच्छक्त्यै - शिखायै वषट्।।३।।

ॐ ह्रीं ख्फ्रें टं ५ ॐ ह्रीं भीम भीम भीषण भगवति एह्येहि मातर्देवि तर २ तुरू २ प्रस्फुर प्रस्फुर हं, ह्रीं मेघमाले महामायेश्वरि विद्युत्कटाक्षे क्ष्म्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षपितदुरिते स्वरूपे विरूपे ज्वलितमुखि चण्डेश्वरि हट्ट २ वज्रायुधधारिणि हन २ हूं डामरमुखि ह्स्फ्रां ह्स्फ्रीं वज्रशरीरं कुरु २ - कवचाय हुं।। ४।।

ॐ ह्रीं ख्फ्रें तं ५ ॐ वज्रमध्ये फट् ॐ हूं फट् महाकिरातचाण्डाले अवतर २ आवाहेन मुखे क्ष्लं भण्डीरथ डं ४ वज्रसारमुखे ह्रीं जहि २, कालि २, कालविध्वंसिनि, हूं क्ष्लं ह्क्लौं रफ्रें फट् - नेत्रत्रयाय वौषट्।। ५।।

ॐ ख्फ्रें ह्रीं पं ५ आगच्छ २ हूं ३ चक्रराजेश्वरि महाशब्दं तर २ रा व्ह्लों ज्वल २ महारौद्रिणि कालानलं पत २ तापय २ कट्ट २ दह २ घोराचारे महाघोरे वाडवाग्निं ग्रस ग्रस रक्ष्रीं ज्वालय २ रफ्रें हर यैः हरयः - अस्त्राय फट्।। अस्त्र०।।६।।

ॐ ख्फ्रें ह्रीं यं १० ॐ नमो महाबलाय नमो रुद्राय ह्स्ख्फ्रें महाचण्डे तेजःसङ्कर्षणि कालिमन्थाने रक्ष्रीं रक्ष लह फ्रें रक्ष्रें फ्रां ब्रह्मरन्ध्रतः पादान्तम् श्रीपादुकां पूजयामि।।मूर्ध्नि।।७।।

(एताः "पादुकां पूजयामि" इत्यन्तेन मातृकास्थाने विन्यसेत्।)

श्व फर ऐ म म ह आ च ण ड य ओ ए श व र ईं श्रीपादुकायै नमः।। इति मातृक्रमः -।।८।।

इति उग्रमातृक्रमन्यासः।।१।।

(६.२) **अथ कालीकुलक्रमन्यासः -**

ॐ ख्फ्रें फ्रें	अं फिं फां	महासृष्टिकाली श्री पादुकां पूजयामि -		शिरसि।
ॐ ख्फ्रें फ्रें	आं फिं फां	महास्थितिकाली	"	मुखे।
"	इं फिं फां	महासंहारकाली	"	दक्षनेत्रे।
"	ईं फिं फां	महा-अनाख्याकाली	"	वामनेत्रे।
"	उं फिं फां	महाभासाकाली	"	दक्षकर्णे।
"	ऊं फिं फां	महाज्ञानकाली	"	वामकर्णे।
"	ऋं फिं फां	महासूर्यकाली	"	दक्षिणनासापुटे।
"	ॠं फिं फां	महासोमकाली	"	वामनासापुटे।
"	लृं फिं फां	महाज्ञानानन्दकाली	"	दक्षगण्डे।
"	लॄं फिं फां	महाज्ञानप्रभाकाली	"	वामगण्डे।
"	एं फिं फां	महानभःकाली	"	ऊर्ध्वोष्ठे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"	ऐं फिं फां	महाक्षीवकाली	"	अधरे।
"	ओं फिं फां	महार्चिष्काली	"	ऊर्ध्वदन्दपंक्तौ।
"	औं फिं फां	महाकेतुकाली	"	अधोदन्तपङ्क्तौ।
"	अं फिं फां	महाकुलीशकाली	"	तालुमूले।
"	अः फिं फां	महापाशुपतकाली	"	जिह्वायां।
"	कं फिं फां	महातापनीकाली	"	दक्षबाहुमूले।
"	खं फिं फां	महानराशनीकाली	"	दक्षकूर्परे।
"	गं फिं फां	महा-ऋक्षकाली	"	वामकूर्परे।
"	घं फिं फां	महासिद्धकाली	"	दक्षाङ्गुलिमूले।
"	ङं फिं फां	महाऋद्धिकाली	"	दक्षांगुल्यग्रे।
"	चं फिं फां	महादंष्ट्रिणीकाली	"	वामबाहुमूले।
"	छं फिं फां	महामन्त्रदाकाली	"	वामकूर्परे।
"	जं फिं फां	महाज्वालिनीकाली	"	वाममणिबन्धे।
"	झं फिं फां	महामन्त्रसिद्धिकाली	"	वामाङ्गुलिमूले।
"	ञं फिं फां	महागणेश्वरीकाली	"	वामाङ्गुल्यग्रे।
"	टं फिं फां	महामायाकाली	"	दक्षपादमूले।
"	ठं फिं फां	महानित्याकाली	"	दक्षजानुनि।
"	डं फिं फां	महाशान्तिकाली	"	दक्षगुल्फे।
"	ढं फिं फां	महाविद्याकाली	"	दक्षपादाङ्गुलिमूले।
"	णं फिं फां	महानन्दिनीकाली	"	दक्षपादाङ्गुल्यग्रे।
"	तं फिं फां	महा-उमाकाली	"	वामपादमूले।
"	थं फिं फां	महानन्दश्रीनन्दकाली	"	वामजानुनि।
"	दं फिं फां	महाबलकाली	"	वामगुल्फे।
"	धं फिं फां	महानन्दनन्दिनीकाली	"	वामापादाङ्गुलिमूले।
"	नं फिं फां	महासुभगानन्दिनीकाली	"	वामाङ्गुल्यग्रे।
"	पं फिं फां	महालक्ष्लीकाली	"	दक्षपार्श्वे।
"	फं फिं फां	महासिद्धिलक्ष्मीकाली	"	वामपार्श्वे।
"	बं फिं फां	महाकुब्जिकाकाली	"	पृष्ठे।
"	भं फिं फां	महाविश्वलक्ष्मीकाली	"	नाभौ।
"	मं फिं फां	महाजयावहाकाली	"	जठरे।
"	यं फिं फां	महाश्रीकाली	"	हृदये।
"	रं फिं फां	महासुन्दरीकाली	"	दक्षांसे।
"	लं फिं फां	महात्रिपुराकाली	"	ककुदि।
"	वं फिं फां	महाचण्डडामरीकाली	"	वामांसे।
"	शं फिं फां	महापूर्णेश्वरीकाली	"	हृदयादिदक्षहस्तान्ते।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"	षं फिं फां	महानैःश्रेयसीकाली	"	हृदयादिवामहस्तान्ते।
"	सं फिं फां	महाराजेश्वरीकाली	"	हृदयादिदक्षपादान्ते।
"	हं फिं फां	महादुर्गाकाली	"	हृदयादिवामपादान्ते।
"	ळं फिं फां	महाभैरवकाली	"	हृदयादिपादाङ्गुलिपर्यन्ते।
"	क्षं फिं फां	महामेलापकाली	"	हृदयादिब्रह्मरन्ध्रपर्यन्ते।

ॐ ख्फ्रें ह्रीं फिं फां अं आं १६ कं खं ३५ महागुह्यकालिके ह्रीं मातः फ्रें प्रपञ्चरूपायै म ए र फ ख महाचण्डयोगेश्वरीश्रीपादुकायै नमः।। व्यापकं कुर्यात्।

(६.३) **अथ पीठन्यासः -**

ॐ ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं अं आं इं-सिद्धियोगिनी महाराविणीपीठस्थे, सिद्धिकालि, महाचर्चिके परातिपरगुह्यमङ्गलाशक्तिश्रीपादुकायै नमः - भ्रूमध्ये ।।१।।

ॐ ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं ईं उं ऊं-ओड्डियानमहापीठस्थे महाचण्डयोगेश्वरी कालकाली छिप्पिणी गुह्याढ्यगुह्यातिगुह्यपरापराशक्तिश्रीपादुकायै नमः - वक्त्रे।।२।।

ॐ ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं ऋं ॠं लृं-जालन्धरमहापीठस्थे महाचण्डकापालिनी कालान्तककाली धीवरी गुह्यान्तरान्तराशक्तिश्रीपादुकायै नमः - ललाटे।।३।।

ॐ ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं लृं एं ऐं-कामरूपपीठस्थे महाचण्डकापालिमहाचण्डराविणी यमान्तककाली जालिनी महाघोर अतिगुह्याढ्यशक्तिश्रीपादुकायै नमः -आनने।।४।।

ॐ ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं ओं औं-पूर्णगिरिमहापीठस्थे पुलिन्दीमहाचण्डयोगिनी कालवञ्चनी परागुह्याढ्यशक्तिश्रीपादुकायै नमः - विशुद्धौ, कण्ठे।।५।।

ॐ ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं अं अः - प्रयागमहापीठस्थे ब्रह्मवती महाचण्डदण्डिनी अतिरहस्यगुह्याढ्यशक्तियोगिनी श्रीपादुकायै नमः - अनाहते, हृदि।।६।।

ऐं ॐ ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं कं खं गं घं ङं वाराणसीमहापीठस्थे रुद्रवतीमहा-चण्डशूलिनी अतिगुह्यस्वात्मयोगिनीशक्तिश्रीपादुकायै नमः - मणिपूरे, नाभौ।।७।।

ऐं ॐ ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं चं छं जं झं ञं कोलापुरमहापीठस्थे महाकैवर्ती गुह्य-सिद्धिमहचण्डातिवेगिनी अतिगुह्ययोगिनीशक्तिश्रीपादुकायै नमः -स्वाधिष्ठने, लिङ्गे।।८।।

ऐं ॐ ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं टं ठं डं ढं णं अट्टहासे महापीठस्थे खड्गकी नारायणवती महाचण्डचक्रिणी अतिगुह्यातिगुह्यकारिणीशक्तिश्रीपादुकायै नमः -मूलाधारे।।९।।

ऐं ॐ ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं तं थं दं धं नं जयन्ती महापीठस्थे कन्दुकी पोणवती महाचण्डाङ्कुशिनी गुह्यातिगुह्यपातालचारिणीशक्तिश्रीपादुकायै नमः - पादतलयोः।।१०।।

ऐं ॐ ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं पं फं बं भं मं हस्तिनापुरमहापीठस्थे बन्धकी शक्रवती महाचण्डवज्रिणी अतिगुह्याढ्यव्यक्तकारिणीशक्तिश्रीपादुकायै नमः -ऊरौ।।११।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐं ॐ ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं यं रं लं वं एकाम्रनाथमहापीठस्थे क्षिपणीशिवदूतिमहा चण्डकर्त्तरी कुलार्णवचारिणी अतिगुह्यवनचारिणीशक्तिश्रीपादुकायै नमः -जानुनि।।१२।।

ऐं ॐ ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं शं षं सं हं ळं देवीकोटमहापीठस्थे कोपवती-चर्चिका-चण्डिका महाचण्डखड्गिनी अतिगुह्याढ्ययोगेश्वरीशक्तिश्रीपादुकायै नमः -जङ्घयोः।। १३।।

ऐं ॐ ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं अं आं १६ करवीरमहापीठस्थे चण्डयोगेश्वरी महागुह्यशक्तिश्रीपादुकायै नमः ।। कण्ठे।। १४।।

ॐ ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं कं खं ३५ राजगृहमहापीठस्थे महासृष्टि-स्थिति-संहार-अनाख्या-भासाकालीकुलमहाचण्डयोगेश्वरी परापरपरमरहस्यकाली-क्रमशक्तिश्रीपादुकायै नमः - व्यापकम्।। १५।।

(६.४) **अथ योगिनीन्यासः -**

ॐ ख्फ्रें ह्रीं डां डी डूं डमलवरयीं महाचण्डकापालिनी काली विशुद्धपीठे षोडशशक्त्यै नमः - कण्ठे।।

ॐ ख्फ्रें ह्रीं रां रीं रूं रमलवरयीं महाचण्डकापालिनी काली राकिनी मम रक्तधातून् रक्ष रक्ष ह्रीं हूं महाकाली कापालिनी अनाहतपीठस्थद्वादशशक्त्यै नमः - हृदि।।

ॐ ख्फ्रें ह्रीं लां लीं लूं लमलवरयीं महाचण्डकापालिनी काली लाकिनी मम मांसधातून् रक्ष रक्ष ह्रीं हूं महाकाली कापालिनी मणिपूरपीठस्थदशशक्त्यै नमः -नाभौ।।

ॐ ख्फ्रें ह्रीं कां कीं कूं कमलवरयीं महाचण्डकापालिनी काली काकिनी मम मेदोधातून् रक्ष रक्ष, ह्रीं हूं महाकाली कापालिनी स्वाधिष्ठानपीठस्थ षट्शक्त्यै नमः - लिङ्गे।।

ॐ ख्फ्रें ह्रीं सां सीं सूं समलवरयीं महाचण्डकापालिनी काली साकिनी मम अस्थिधातून् रक्ष रक्ष, ह्रीं हूं महाकाली कपालिनी मूलाधारपीठे चतुष्टयशक्त्यै नमः - गुदे, आधारे।

ॐ ख्फ्रें ह्रीं हां हीं हूं हमलवरयीं महाचण्डकापालिनी काली हाकिनी मम मज्जाधातून् रक्ष रक्ष, ह्रीं हूं महाकाली कापालिनी आज्ञापीठे शक्तिद्वयशक्त्यै नमः -भ्रुवोः।

ॐ ख्फ्रें ह्रीं यां यीं यूं यमलवरयीं महाचण्डकापालिनी काली याकिनी मम शुक्रधातून् रक्ष रक्ष, ह्रीं हूं महाकाली कापालिनी व्योमपीठे सर्वशक्तियुक्तायै नमः -सहस्रदले।

ॐ ख्फ्रें ह्रीं अं आं १६ कं खं ३५ अनन्तकोटि कालिका महासिद्धिचक्रे योगिनीशक्तियुतायै महागुह्यकाल्यै नमः - इति व्यापकम्।

इति योगिनीन्यासः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(६.५) **अथ देवता-न्यासः -**

ॐ ख्फ्रें ह्रीं	ॐ भगवते रुद्राय जूं सः परमेश्वराय नमः	शिरसि
ॐ ख्फ्रें	सर्वसर्वात्मने चण्डाध्यक्षाय जूं सः परमात्मने नमः	ललाटे
ॐ ख्फ्रें	ह्रां क्षपिततमसे नरसिंहाय जूं सः ज्ञानात्मने नमः	नेत्रयोः
ॐ ख्फ्रें	ह्रीं वीर्यनिर्जितदिग्वक्त्राय जूं सः धर्माय नमः	नासिकायाम्
ॐ ख्फ्रें	रहरयें रहरयौ ह्रीं तेजश्चण्डाय जूं सः ज्ञानात्मने नमः	गण्डयोः
ॐ ख्फ्रें	वीर्यनिर्जितदिग्वक्त्राय जूं सः वैराग्याय नमः	श्रोत्रयोः
ॐ ख्फ्रें	ख्फ्रां ख्फ्रीं स्त्रों सः अमृतात्मने जूं सः ऐश्वर्याय नमः	स्कन्धयोः
ॐ ख्फ्रें	रां रां रूं ज्वल २ प्रज्वल २ गीर्वाणमुख्याय जूं सः अधर्माय नमः	बाह्वोः
ॐ ख्फ्रें	ह्रां ह्रीं ज्वालामालिने महाबलाय जूं सः अज्ञानाय नमः	कराङ्गुलिषु
ॐ लां ब्रह्मणे	जूं सः	पार्श्वयोः
ॐ वां विष्णवे	"	नाभौ
ॐ रां रुद्राय	"	जङ्घयोः
ॐ यां ईश्वराय	"	पादयोः
ॐ हां सदाशिवाय	"	पादाङ्गुलिषु
ॐ आत्मज्ञानाय	"	अनाहते
ॐ परज्ञानाय	"	ताल्वोः घण्टललनायाम्
ॐ ह्रां अघोराय	"	बिन्दौ
ॐ घोराय	"	अर्धचन्द्रे
ॐ घोररूपाय	"	नादे
ॐ भैरवाय	" निरोधिकायाम्	भ्रूमध्ये
ॐ वीरभद्राय	" व्यापिन्याम्	नासिकायाम्
ॐ ह्सौः शरभपक्षिराजाय	" समनायाम्	दक्षिणकपाले
ॐ ह्लीं श्रीं बलप्रमथनाय	" अकुले	वामकपाले
ॐ क्लीं हूं रक्ष्रीं ज्लीं प्रचण्डाय	" मनोन्मन्याम्	चेतनस्थाने
ॐ परमात्मने	" शाम्भवान्ते	उन्मन्याम्
ॐ दिक्पतिभ्यो	" नादान्ते	उन्मनीनाथं दक्षहस्ताङ्गुलिषु
ॐ भूतलवासिनीभ्यो	" षोडशान्ते	शाम्भवनाथं वामहस्ताङ्गुलिषु
ॐ प्रचण्डभैरवाय	" सूक्ष्मान्ते	षोडशान्तनाथं दक्षपादाङ्गुलिषु
ॐ सर्वात्मने	" परान्ते	ह्लूतोनहडन्वने वामपादाङ्गुलिषु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ नमो रुद्राय " कुले ह्लूतोस सहस्रदले

ॐ ख्फ्रें ह्रीं प्रचण्डचण्डमहाघोषभैरवाय मर्द २, मर्दय २, ज्वल २, प्रज्वल २, ख्फ्रें हरक्षमलवरयूं र झ ह्रीं हूं फ्रें कालनाशक मां रक्ष २ महाप्रचण्डाय भैरवाय जूं सः -व्यापकं कुर्यात्।

इति देवतान्यासः ।।५।।

(६.६) **अथ मन्त्रन्यासः -**

ॐ ख्फ्रें ह्रां ह्रीं महाचण्डयोगेश्वरि श्रीं ह्रीं थ्रीं द्वीपिवक्त्राय नमः ब्रह्मरन्ध्रे

ॐ ख्फ्रें ह्रां ह्रीं महाचण्डयोगेश्वरि श्रीं ह्रीं थ्रीं सिंहवक्त्राय नमः शिरसि

ॐ ख्फ्रें ह्रां ह्रीं ॐ ह्रीं शुष्के ह्स्त्रं फें फेरुवक्त्राय नमः ललाटमध्ये

३ रह्रीं फट् फट् कपिवक्त्राय नमः वामललाटे

३ हूं हस्त्रीं रहूं झम्रीं रह्रीं हूं फें फट् ऋक्षवक्त्राय नमः दक्षललाटे

३ ह्रीं हस्त्रीं रभर्यीं हूं रजमझ्रीं फें फट् हूं ३ फट् ३ कालीप्रचण्डवक्त्राय नमः नासिकाग्रे

३ ॐ म्ह्रां स्ह्रां हूं ऐं क्लीं ग्लूं तार्क्ष्यवक्त्राय नमः वामगण्डे

३ रह्रीं हं क्षमलवरयीं म्लौं मकराननाय नमः दक्षगण्डे

३ ह सौं क्ष्म्रीं ह्रीं श्रीं ग्लीं ग्लौं गजवक्त्राय नमः वामकर्णे

३ श्लीं क्लीं ह्लीं चण्डकाली ह्यौ हयाननाय नमः दक्षकर्णे

३ नमश्चामुण्डे करङ्कमालिनि करङ्कमालाधारिणि भगवति फ्रां फ्रीं फ्रूं चण्डकपालिनि महाचण्डकालिकायै नमः मूर्ध्नि, सहस्रारे

३ ह्रीं फट् महाचण्डभैरवि ख्फ्रीं फ्रें फट् रमरवरय मीं फ्रीं फट् रक्ष मखयूं स्फ्रीं महाचण्डचण्डेश्वरि कालिकायै नमः मूलाधारे

३ ह्रीं चण्ड फ्रें कापालिनि ज्झ्रीं रज्रीं महामन्थानभैरवि हूं ३ नमः स्वाधिष्ठाने

३ ॐ ह्रीं क्ष्रीं प्रीं ल्रीं फ्रीं ह्रीं ह्रूं फट् महाभोगकाली श्रीपादुकां पू.त. मणिपूरे

३ ॐ क्षरझजमजरल्यूं क्रीं ह्रीं झ्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं फ्रीं थ्रीं ध्रीं पराकाली श्रीपादुकां पू.त.। हृदि, अनाहते

३ ॐ स्रीं ल्रीं स्त्रीं स्त्रां व्रीं म्रीं क्ष्रीं ब्रां य्रां म्रां हां हां कालिकायै नमः श्रीपादुका० -कण्ठे, विशुद्धौ

३ ॐ ह्रीं छ्रीं ज्फ्रीं यममुखी यमहस्ते क्रीं रस्रीं फ्रीं २ फ्रीं फ्रीं रफ्रीं फट् -आकाशे, कपाले, आज्ञायाम्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३ ॐ फ्रें-हृदयाय नमः ।　　३ ॐ सिद्धिकरालि - शिरसे स्वाहा
३ ॐ ह्रीं छ्रीं हूं -शिखायै वषट्　　३ ॐ स्त्रीं फ्रें -　　कवचाय हुं
३ ॐ नमः - नेत्रत्रयाय वौषट्　　३ ॐ नमः फ्रें स्वाहा -अस्त्राय फट्
३ ॐ फ्रें सिद्धिकरालि-दक्षिणवक्त्राय नमः ३ ॐ ह्रीं ह्रीं हूं वामवक्त्राय नमः
३ ॐ स्त्रीं फ्रें नमः स्वाहा-मध्यवक्त्राय नमः ३ ॐ ॐ ॐ　-शिखास्थाने
३ ॐ फ्रें फ्रें फ्रें-हृदयाय नमः　　३ ॐ फ्रें सि फ्रें -　　वामकर्णे
३ ॐ फ्रें द्धि फ्रें - दक्षिणकर्णे　　३ ॐ फ्रें क फ्रें -　　वामनेत्रे
३ ॐ फ्रें रा फ्रें - दक्षिणनेत्रे　　३ ॐ फ्रें लि फ्रें-　दक्षिणनासामाम्
३ ॐ फ्रें ह्रीं फ्रें - वामनासायाम्　　३ ॐ फ्रें छां फ्रें -　　वक्त्रे
३ ॐ फ्रें हूं फ्रें - लिङ्गे　　३ ॐ फ्रें स्त्रीं फ्रें -　　गुरुये
३ ॐ फ्रें फ्रें फ्रें - भ्रूमध्ये　　३ ॐ फ्रें न फ्रें -　　ब्रह्मरन्ध्रे
३ ॐ फ्रें मः फ्रें - शिरसि　　३ ॐ फ्रें स्वा फ्रें -मस्तकात् पादान्तम्
३ ॐ फ्रें हा फ्रें पादात् मस्तकान्तम्, नाभौ। ३ ॐ ह्रीं -हृदये।३ॐ फ्रें -बिन्दौ
३ ॐ ह्रीं श्रीं फ्रें गुह्यकालिके फट् फ्रें हूं नमः　-　　शिरसि
३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ फ्रें ख्फ्रें स्ह्रीं फट् गुह्यकालिके हूं ख्फ्रें हूं सिद्धिकराली
३ ॐ फ्रें स्ह्रीं महाचण्डयोगेश्वरी श्रीपादुकायै नमः　-　　व्यापकम्

अत्र सहस्राक्षरी-शुद्धाया उच्चारणम्।।

नानया सदृशी विद्या, त्रिषु लोकेषु दुर्लभा।
कालीकुलसमायाता, सिद्धिदा परमा स्मृता।।
मपञ्चकं पुरस्कृत्य, निशायां संन्यसेत्तु यः।
अयुतं तु पुरश्चर्या शक्ति - सन्नद्ध - विग्रहः।।
आज्ञासिद्धिर्भवेन्नूनं, भैरवोऽसौ न संशयः।
यदि दासकुले जातो, नूनं राजा भवेद् ध्रुवम्।।
एषा गुह्या परागुह्या, गुह्योऽवतु परापरम्।
परशिष्ये नैव दद्यात्, देवतामन्त्रमेव च।।
न श्रावयेन् मन्त्रपूजां, परशिष्येषु कौलिकः।
प्राणाघाते न वक्तव्यं, सिद्ध्यते गोपनाद् ध्रुवम्।।
स एव तु महायोगी, भैरवः परमेश्वरः शिवः।
(ततो रुद्रमन्त्रेण बलिं मांससुरया युक्तेन दद्यात्।।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बलिदान-मन्त्रः -

ह्रीं श्रीं वक्त्रयोगेश्वरि चन्द्रपीठे व्योमकालि मातङ्गिनि भीमकालि कामरूपिणि सिद्धकालि पूर्णगिरिपीठे चन्द्रकालि जालन्धरि चण्डकालि ओड्डियाणि रक्तकालि सर्वसमयोल्लासं कुरु २, शुद्धिं सुप्रसर २, श्रीं प्रसर २, हैं सखः ४ खाहि २, हि ४ ह्रीं २ हः २ बाहि २ काहि २ खाहि २ खे २ हूं लां खां २ लां छां हूं वां श्रीं हूं ह्रीं सोः ह्रां ह्रीं ह्रूं हैं ह्रौं फट् नमः स्वाहा।

(इति श्रीकालीकुलार्णवे महातन्त्रे महाश्रीगुह्यकालीदेव्याः महाषोढा सम्पूर्णः।)

ॐ फ्रें ख्फ्रें ध्रीं स्त्रीं हस् ख्फ्रें भगवति गुह्यकालि स्वाहा।

(इति गुह्यकालिकादेव्याः कुल्लुका।)

इति उत्तराम्नायः।

श्री कुब्जिका-कवचमाला-मन्त्रस्तोत्रम्

देव्युवाच-

हिमाद्रिशिखरे रम्ये, सुखासीनं त्रिलोचनम्।
तोषयित्वा महाघोरैस्तपोभिरतिदुष्करैः॥१॥
सर्वज्ञ! भक्तिसुलभ! शरणागतवत्सल।
बिना न्यासेन तपसा, विना ध्यानजपादिभिः॥२॥
कथं तुष्टा भवेत् कुब्जा, कुलाकुलविभेदिनी।
केन रक्षा भवेन्नृणां साधकानां विशेषतः॥३॥
वक्तुमर्होऽसि तत्त्वेन, षट्त्रिंशत् कृपामयि।

श्रीभैरव उवाच-

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि, कुब्जिका-कवचं महत्॥४॥
यन्न कस्यचिदाख्यातं, तव स्नेहाद् ब्रवीम्यहम्।
मेरु-सन्तान-सम्भूता, सत्य-प्रस्तारविस्तृता॥५॥
शिव-शक्ति-प्रभेदेन, द्वात्रिंशत् कुब्जिका मता।
वलया षड्विधो मन्त्रो, मन्त्र-प्राणोऽप्यनेकधा॥६॥
पुरा नैव मया प्रोक्तं, कवचं शृणु सुन्दरि!

विनियोगः -

अस्य श्रीकुब्जिका-मन्त्रकवचस्य त्रिलोचन ऋषिः, अनुष्टुपु छन्दः, श्रीगुह्यकुब्जिका परमेश्वरी देवता, नवात्मा बीजं, समया शक्तिः, बीजं कीलकं, मम श्रीकुब्जिकाप्रसादद्वारा चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे शरीररक्षणार्थे च जपे विनियोगः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋष्यादिन्यासः -

त्रिलोचनर्षये नमः – शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमः – मुखे

श्रीगुह्यकुब्जिका परमेश्वरी देवतायै नमः – हृदये

नवात्मबीजाय नमः – गुह्ये, समयाशक्तये नमः – पादयोः

कीलकाय नमः – नाभौ, विनियोगाय नमः – सर्वाङ्गे।

मूलेन कर – **षडङ्गन्यासान्** कुर्यात्।

सृष्टिवज्रकुब्जिका - (पश्चिमाम्नाये)-

देवीं ध्यायेद् वज्रकुब्जां, प्रभासे साधकोत्तमः।
स्वच्छन्दभैरवयुतां, पञ्चवक्त्रां परां शिवाम्।।१।।
दिव्यतेजोमयीमम्बां, पश्चिमाम्नायमार्गतः।
पश्चिमाम्नायमाश्रित्य, सम्यगाप्ताक्रमो नरः।।२।।
स पूजयेदघोराख्यां, कुब्जिकां तु षडाननाम्।
पञ्चवक्त्रं दशभुजं, त्रिपञ्चनयनोज्ज्वलम्।।३।।
गोक्षीरधवलं पूर्वे, दक्षिणे कृष्णसन्निभम्।
उत्तरे रक्तवर्णं च, पश्चिमे कनकप्रभम्।।४।।
ऊर्ध्ववक्त्रं स्फाटिकाभं, प्रत्यालीढपदस्थितम्।
कपर्दस्थभालचन्द्रं, श्वेताङ्गं सर्पभूषणम्।।५।।
नागकुण्डलिनं देवं, गले वासुकिधारिणम्।
हस्तपादघृतव्यालं, व्यालयज्ञोपवीतिनम्।।६।।
स्थूलाङ्गं मुण्डमालाढ्यं, व्याघ्रचर्मावृतं कटौ।
नानाभरणभूषाङ्गं, डमरूं तर्जनीं मणिम्।।७।।
दधानमङ्कुशं खड्गं, वरदं चापि सव्यतः।
वामे खड्वाङ्गपद्माक्ष, नागपाशांस्तथैव च।।८।।
मुण्डं पात्रं च दधतं, द्वात्रिंशन्मन्त्रबीजकम्।
वह्नि नाभिस्थिताम्भोजे, वृषभासनसंस्थितम्।।९।।
महातेजं महेशानं, सर्वलक्षणसंयुतम्।
स्वच्छन्दभैरवं देवं, भैरवी सहसंयुतम्।।१०।।
परापरकलारूपामूर्ध्वं कुब्जेश्वरीमुखम्।
पूर्ववक्त्रं तडितप्रख्यं, सिद्धियोगेश्वरी मतम्।।११।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दक्षिणे कालिकावक्त्रमुमाख्यं पश्चिमे मतम्।।१२।।
उत्तरे तु महालक्ष्मीमुखं स्फटिकसुप्रभम्।
पाशाङ्कुशधनुर्बाण-चन्द्रहास-कपालकम्।।१३।।
कपालपात्रमुद्राख्य-वरदाभय-शोभितम्।
दिग्भुजामिन्दुमुकुटां, कुब्जिकेश्वरराधिताम्।।१४।।
ईडे सकलसम्पत्त्यै, पश्चिमाम्नायदेवताम्।

'लमलवरयीं' - कुमारी कुब्जिका पातु, मूलाधारकुलं मम।
'वमलवरयीं' - महती समया पातु, स्वाधिष्ठानं सदा मम।।१५।।
'रमलवरयीं' - पातु सौदामिनी कुब्जा, मणिपूरं सदा मम।
'यमलवरयीं' - हंसेश्वरी महाकुब्जा, हृदयं मम रक्षतु।।१६।।
'कमलवरयीं' - सर्वेश्वरी च या कुब्जा, विशुद्धं परिरक्षतु।
'ममलवरयीं' - चित्परा कुब्जिका पातु, ममाज्ञाचक्रमन्वहम्।।१७।।
'हमलवरयीं'-व्योमातीता महाकुब्जा, लम्बिकां पातु मे सदा।
कुलालिकेति या कुब्जा, ललाटं पातु मेऽनिशम्।।१८।।

'हसौं'- नीलकुब्जेति या ख्याता, मस्तकं परिरक्षतु।
सन्तानकुब्जिका पातु, मम मस्तकमन्वहम्।।१९।।
मन्थानभैरवी कुब्जा, मूर्धानं परिरक्षतु।
श्मशानभैरवी कुब्जा, बिन्दुस्थानं सदाऽवतु।।२०।।
अघोरभैरवी कुब्जा, नादस्थाने सदाऽवतु।
या गुह्यकुब्जिका प्रोक्ता, प्रधाना वलिभाषिणी।।२१।।
सा योगिनी गणाध्यक्षा, नादान्ते माऽभिरक्षतु।
बृहत् - कुब्जा महादेवी, कलास्थानं च रक्षतु।।२२।।
बृहत्तरी च या कुब्जा, कलातीतं सदाऽवतु।
मम सिद्धिं प्रयच्छन्तु, एताः षोडश कुब्जिकाः।।२३।।
षड्भ्यो मे षडङ्गानि, पातु वीरेन्द्रवन्दिता।
चण्डिका चरणं पातु, प्रपदं पातु चर्चिका।।२४।।
अङ्गुलीर्मालिनी पातु, पातु गुल्फं भगेश्वरी।
जङ्घां रक्षतु चामुण्डा, जानुनी पातु वेगिनी।।२५।।
ऊरू रक्तेश्वरी पातु, कटिं पातु कृशोदरी।
गुह्यं गुह्येश्वरी पातु नाभिकन्दं नभेश्वरी।।२६।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हृदयं पातु चामुण्डा, स्तनौ पातु यशस्विनी।
रक्तनेत्रा सदा पातु, पार्श्वयुग्मं त्रिलोचना।।२७।।
वृषणौ पातु मे घोरा, अघोरा च कराङ्गुलीः।
कुब्जा करतलं पातु, मणिबन्धे च मोहिनी।।२८।।
उग्रचण्डा प्रकोष्ठे च, कुलचण्डा च कूर्परे।
पातु मे बाहुमूलं तु, महोग्रचण्डिका सदा।।२९।।
रक्तप्रिया तथा पातु, हस्तयुग्मं सदा मम।
स्कन्धिनी स्कन्धमूलञ्च, कण्ठं कामारिवल्लभा।।३०।।
चिबुकं कौलिनी पातु, मुखं रक्तमुखी मम।
तारस्वरूपिणी पातु, अधरोष्ठं सदा मम।।३१।।
बलिनी पातु मे दन्तान्, जिह्वां रक्षतु जिह्विनी।
चिन्तासंहारिणी पातु, ऊर्ध्वमोष्ठं सदा मम।।३२।।
हनुं मांसाशिनी पातु, जिह्वामूलं सुराशिनी।
वह्निगर्भा सदा पातु, नासिकाविवरं मम।।३३।।
सर्पकुण्डलिनी पातु, सर्वदा श्रवणद्वयम्।
लोचने लोहिता पातु, मदाघूर्णितलोचना।।३४।।
भ्रूमध्यं पान्तु शाकिन्यो, याकिन्यः पान्तु मस्तकम्।
भैरवाः पान्तु सर्वाङ्गे, योगिन्यश्चास्थिसन्धिषु।।३५।।
रोमकूपे च वज्राङ्गी, वज्ररूपा महाबला।
त्वचं रक्षतु वाराही, पथि रक्षतु पार्वती।।३६।।
खेचरी गगने पातु, भूचरी पातु भूतले।
दिवा रक्षतु गायत्री, निशि नक्तञ्चरी च माम्।।३७।।
दिक्षु दिगम्बरी पातु, सर्वदा पातु शङ्करी।
पर्वतेषु सदा पातु, मेरुशृङ्गनिवासिनी ।।३८।।
वह्नौ ज्योतिष्मती पातु, विषाद् रक्षतु वासुकी।
सङ्ग्रामे विजया पातु, शत्रुमध्येऽस्थिमालिनी।।३९।।
जया राजकुले पातु, समायां नीतिवल्लभा।
विद्या जागरणे पातु, स्वप्ने पातु हिरण्मयी।।४०।।
प्रज्ञावती सुषुप्तौ च, तुर्य्यं च विमलाऽवतु।
निर्वाणरूपिणी पातु, तुर्य्यातीतं ममाऽनिशम्।।४१।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[1]रक्ष मां कुब्जिके देवि, रक्ष मां कुब्जिकेश्वरि।
रक्ष रक्ष महादेवि, अस्मदीयमिदं वपुः ।।४२।।
कुलद्वीपेति विख्याता, कैलाशशिखरालये।
सा कुब्जिका महामाया, स्थातु श्रीर्मस्तके मम।।४३।।
या खर्वेति समाख्याता, गन्धमादनवासिनी। रक्ष मां. ...मस्तके मम। ४४।।
बिन्दुरूपेति विख्याता, मेरुमण्डलवासिनी। ,,।।४५।।
महोदरीति विख्याता, श्मशानालयवासिनी। ,,।।४६।।
मादिनीति समाख्याता, अकाराक्षरमालिनी। अं नमः ,,।।४७।।
ग्रसनीति प्रसिद्धा या, आकाराक्षरमालिनी। आं नमः ,,।।४८।।
ऋषिवृन्देति या गीता, ऋषिस्था ऋषिमानिता । इं नमः ,,।।४९।।
प्रतिष्ठेति समख्याता, प्रतिष्ठास्था प्रतिष्ठिता। ईं नमः ,,।।५०।।
विद्येश्वरीति या प्रोक्ता, विद्याविद्ये प्रतिष्ठिता। उं नमः ,,।।५१।।
शान्तेति गीयते या च, शान्तिरूपे प्रतिष्ठिता । ऊं नमः ,,।।५२।।
चामुण्डेति प्रसिद्धा या, प्रसिद्धाख्या प्रतिष्ठिता। ऋं नमः ,,।।५३।।
वशिनीति समाख्याता, वशिन्यपि प्रतिष्ठिता । ॠं नमः ,,।।५४।।
नारायणीति विख्याता, नारायणसमर्हिता । लृं नमः ,,।।५५।।
मोहिनीति समाख्याता, मोहिनीं प्रति संस्थिता। लॄं नमः ,,।।५६।।
प्रशस्तिरिति या गीता, प्रशस्तिस्था प्रतिष्ठिता। एं नमः ,,।।५७।।
गुहाशक्तिरिति ख्याता, गुह्यस्था परिकीर्तिता। ऐं नमः ,,।।५८।।
मन्त्रनीतिप्रसिद्धा या, मन्त्ररूपा प्रतिष्ठिता। ओं नमः ,,।।५९।।
त्रिकूटेति समाख्याता, त्रिकूटप्रतिसंस्थिता। औं नमः ,,।।६०।।
कालिकेति प्रसिद्धार्था, कलिरूपेण संस्थिता। अं नमः ,,।।६१।।
शम्भुना बिन्दुरूपस्था , बिन्दुरूपा प्रकीर्तिता। अः नमः ,,।।६२।।
विसर्गाक्षर मालिन्यां, शिवेति कथिता च या। ॐ नमः ,,।।६३।।
मञ्जुघोषेति या प्रोक्ता, ककाराक्षरमालिनी। कं नमः ,,।।६४।।
ऐङ्कारी चैव या प्रोक्ता, विश्वयोनिरितीरिता। खं नमः ,,।।६५।।
महामायेति विख्याता, विश्वमाया प्रतिष्ठिता। गं नमः ,,।।६६।।
वागीश्वरीति विख्याता, वागीशत्वे प्रतिष्ठिता। घं नमः ,,।।६७।।
शिखिवाहेति विख्याता, शिखिरूपा प्रतिष्ठिता। ङं नमः ,,।।६८।।

---

१. इदं पद्यद्वयं ४२, ४३ संख्यात्मकं सर्वत्र योज्यम् अर्थात् श्लोक संख्या 44 से 98 तक पाठ को श्लोक संख्या 42 और 43 को जोड़कर आवृत्तिपूर्वक करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बिभीषणीति विख्याता, बिभीषणप्रतिष्ठिता। चं नमः ॥।।६९।।
वायुवेगेति या गीता, वायुसंस्थाप्रतिष्ठिता। चं नमः ॥।।७०।।
कुलमालेति विख्याता, कुलस्था कुलमार्गणी जं नमः ॥।।७१।।
विनायकेति विख्याता, विनायके प्रतिष्ठिता। झं नमः ॥।।७२।।
पूर्णिमेति प्रसिद्धा या, पूर्णिमायां प्रतिष्ठिता। ञं नमः ॥।।७३।।
शुभकरीति विख्याता, शुभदा सुप्रतिष्ठिता। टं नमः ॥।।७४।।
क्रोधिनीति समाख्याता, क्रोधस्था च प्रतिष्ठिता। ठं नमः ॥।।७५।।
दीपिनी त्रिपुरा गीता, दीपिताङ्गी सुसंस्थिता। डं नमः ॥।।७६।।
जयन्तीति समाख्याता, जयं देहि जयप्रदा। ढं नमः ॥।।७७।।
कपालिनीति या गीता, कपालस्था शुभप्रदा। णं नमः ॥।।७८।।
भवानीति समाख्याता, भवरूपा प्रतिष्ठिता। तं नमः ॥।।७९।।
अम्बिकेति समाख्याता, अम्बिनी परिसंस्थिता। थं नमः ॥।।८०।।
सर्वात्मिकेति विख्याता, सर्वस्था सर्वरूपिणी। दं नमः ॥।।८१।।
इच्छेति या समादिष्टा, इच्छायां सम्प्रतिष्ठिता। धं नमः ॥।।८२।।
छागलीति च या गीता, छागस्था सुप्रतिष्ठिता। नं नमः ॥।।८३।।
पूतनेति प्रसिद्धा या, पूतस्था पूतसंस्थिता। पं नमः ॥।।८४।।
अमोघेति च विख्याता, अमोघे या प्रतिसंस्थिता। फं नमः ॥।।८५।।
लम्बोदरीति विख्याता, लम्बमाना प्रतिष्ठिता। बं नमः ॥।।८६।।
संहारिणीति विख्याता, संहारप्रतिसंस्थिता। भं नमः ॥।।८७।।
महाकालीति विख्याता, महाकालप्रतिष्ठिता। मं नमः ॥।।८८।।
कुसुमेति प्रसिद्धा या, कुसुमे सुप्रतिष्ठिता। यं नमः ॥।।८९।।
शुक्लेश्वरीति या प्रोक्ता, शुक्लस्था प्रतिसंस्थिता। रं नमः ॥।।९०।।
सबलेति च या गीता, बलस्थेति प्रतिष्ठता। लं नमः ॥।।९१।।
या चोग्रतारका प्रोक्ता, तारस्था प्रतिसंस्थिता। वं नमः ॥।।९२।।
ज्ञानशक्तिरिति ख्याता, ज्ञानस्था प्रतिसंस्थिता। शं नमः ॥।।९३।।
क्रियाशक्तिरिति ख्याता, क्रियास्थानप्रतिष्ठिता। षं नमः ॥।।९४।।
गायत्रीति प्रसिद्धा सा, गायत्री वेदमातृका। सं नमः ॥।।९५।।
सावित्रीति समाख्याता, सारभूता समाश्रिता। हं नमः ॥।।९६।।
सरस्वतीति विख्याता, शारदा प्रतिसंस्थिता। ळं नमः ॥।।९७।।
मालिनीति कुलाध्यक्षा, क्षकाराक्षरमालिनी। क्षं नमः ॥।।९८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्रह्माणी पूर्वतः पातु, अग्निकोणे महेश्वरी।
कौमारी दक्षिणे स्थातु, वैष्णवी स्थातु नैर्ऋते।।९९।।
वाराही पश्चिमे पातु, इन्द्राणी वायुमण्डले।
उत्तरे स्थातु चामुण्डा, लक्ष्मीरीशानकोणके।।१००।।
ऊर्ध्वदेशे च चक्राङ्गी, अधोभागे च नागिनी।
सर्वतः पातु विश्वेशी, सर्वदा मां कपालिनी।।१०१।।
विद्याराजेश्वरी प्रोक्ता, सर्वविद्याधिदेवता।
सा कुब्जिका महामाया, करोति मम चिन्तितम्।।१०२।।
सा वीरयोगिनी प्रोक्ता, वीराणां सिद्धिदायिनी।
रक्ताम्बिकेति या प्रोक्ता, बलिरक्तप्रिया समा।।१०३।।
या कामविजया प्रोक्ता, सर्वकामार्थसिद्धिदा।
महोच्छिष्टेति विख्याता, महाज्वरविनाशिनी।।१०४।।
धर्मादेवीति या प्रोक्ता, सर्वधर्मविवर्द्धिनी।
महोत्तरीति विख्याता, महामृत्युविनाशिनी ।।१०५।।
सर्वेशी च प्रसिद्धा सा, सर्वस्फोटकनाशिनी।
सा कुब्जिका महामाया, स्थातु श्रीर्मस्तके मम।।१०६।।
कामोल्लासेति विख्याता सर्वैश्वर्यप्रदायिनी। साकुब्जिका... मस्तके मम।१०७
मातङ्गीति प्रसिद्धा या, सर्वलोकवशङ्करी। " ।।१०८।।
पौर्णमासीति या प्रोक्ता, सर्वमङ्गलदायिनी। " ।।१०९।।
शाम्भवीति च या प्रोक्ता, सर्वमङ्गलदायिनी। " ।।११०।।
पञ्चकेति समाख्याता, सुरद्रुमनिवासिनी। " ।।१११।।
महोक्षा मस्तकं पातु, गुह्या गुह्यं सुरक्षतु।
गोवरा हृदयं पातु, रम्भा पातु मम स्तनौ।।११२।।
शुभा पातु मम श्रोत्रे, साकिनी पातु सृक्किणी।
काकिनी नाभिकुण्डञ्च, लाकिनी पातु जानुनी।।११३।।
राकिनी चरणौ पातु, इडां मे पातु डाकिनी।
हाकिनी पिङ्गलां पातु, सुषुम्नां कुलकुब्जिका।।११४।।
मित्रा रक्षतु मे गात्रं, चर्चिका पातु मे वपुः।
सृष्टीश्वरी च पृष्ठं मे, बोधिनी सर्वसन्धिषु।।११५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीव्रास्थीनि च मे पातु, कौलिनी पातु नाडिका।
इच्छा रक्षतु मे पुत्रान्, ज्ञानं विद्या ममावतु।।११६।।
क्रिया रक्षतु मे भार्य्यां, कुब्जिका पातु मां सदा।
ज्येष्ठा रक्षतु सर्वस्वमनुज्येष्ठा च मे श्रियम्।।११७।।
द्वात्रिंशदक्षराभिज्ञा, महाविद्याधिदेवता।
सा कुब्जिका महादेवी, निर्वाणं मेऽभिरक्षतु।।११८।।
इदं हि कवचं पुण्यं, मेरुसन्तानसम्भवम्।
यः पठेत् परया भक्त्या, तस्य शत्रुभयं कुतः।।११९।।
त्रिकालमेककालं वा, यः पठेच्च सुसिद्धिदम्।
तस्य हस्तगता सिद्धिर्नान्यैश्च जपकोटिभिः।।१२०।।
इदं तु कवचं गुह्यं, पश्चिमादिमुखे निशि।
दीपे देवीं समाराध्य, जयेदष्टोत्तरं शतम्।।१२१।।
प्रसन्ना कुब्जिका तस्य, ददाति फलमीप्सितम्।
रसं रसायनं खण्डं, गुटिकामञ्जनं जयम्।।१२२।।
अणिमाद्यंष्टसिद्धीश्च, पादुकासिद्धिमेव च।
सर्वे ददाति सन्तुष्टा, कुब्जिका साधकस्य वै।।१२३।।
इदं तु कवचं देवि, वज्रेणापि न हन्यते।
त्रिरावृत्त्या तु सप्ताहाद्, बन्धनान्मुच्यते नरः।।१२४।।
कवचस्यास्य माहात्म्यं, मया वक्तुं न शक्यते।
कुब्जिकाऽपि महादेवी, तथा जानाति वा न वा।।१२५।।
एतत्परतरं देवि! कुब्जा-कवचमुत्तमम्।
कथितं यन्मया ज्ञातं, गोपनीयं प्रयत्नतः।।१२६।।
कवचेनावृतो यस्तु, यत्र कुत्रापि सञ्चरेत्।
न जातु जायते तस्य, भूत-प्रेतादिजं भयम्।।१२७।।
महारक्षाकरं देवि ! महाभयविनाशनम्।
महाज्वरनिवारणं, महादारिद्र्यनाशनम्।।१२८।।
सर्वपापविनिर्मुक्तं, सर्वैश्वर्यप्रदायकम्।
सर्वकामप्रदं देवि, सर्वव्याधिनिवारणम्।।१२९।।
ग्रहापस्मार-कुष्ठादि-विष-सर्पादि-भञ्जनम्।
कवचेनावृतं दृष्ट्वा, चौर-व्याघ्रादिसम्भवम्।।१३०।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पलायन्ते तथा भीताः, सिंहं दृष्ट्वा यथा मृगाः।
भैरवोऽहमिति ध्यायन्नयुतं कवचं पठेत् ।।१३१।।
खेचरो जायते देवि ! कुब्जिकायाः प्रसादतः।
निशीथेऽयुतजापेन, मारयेद् रिपुमण्डलम् ।।१३२।।
रात्रिशेषे तु जप्तेन, सर्वैश्वर्यमवाप्नुयात्।
पूर्वाक्षरानुसन्धानं, विद्यासु जायते तथा।।१३३।।
पूर्वाह्णे प्रपठन् मन्त्री, वशीकुर्याज्जगत्त्रयम्।
मध्याह्नकाले प्रजपन्, स्तम्भयेद् वायुमण्डलम्।।१३४।।
सन्ध्यासमयजापेन, शत्रूनुद्घाटयेद् भृशम् ।
कण्ठमात्रोदके स्थित्वा, सम्पश्यन् भानुमण्डले।।१३५।।
कुब्जिकां मनसि ध्यायन् त्रिकालं कवचं पठेत्।
सप्ताहाज्जायते मृत्युर्वैरिणां नात्र संशयः ।।१३६।।
क्षितौ भूमौ निशीथे तु, कवचस्यायुतं पठेत्।
प्रत्यक्षा वरदा देवी, कुब्जिका सुप्रसीदति।।१३७।।
महाकालयुता रात्रौ, चतुर्दश्यां यतेन्द्रियः।
कर्मार्चनविधानेन, पूजयित्वा च कुब्जिकाम्।।१३८।।
सप्तधावर्तनान्मन्त्री, बन्धनान्मुच्यते नृपः।
यद्यत्तिष्ठति मे लोके दिवि पातालभूतले।।१३९।।
तत्सर्वं साधयेताशु, कवचेनैव साधकः ।
इति ते कथितं देवि, कुब्जिकाकवचं महत्।।१४०।।
पश्चिमास्नायकुञ्जोक्तं भोगमोक्षप्रदायकम्।
समासेन सुरेशानि, किं भूयः श्रोतुमिच्छसि।।१४१।।

इति श्रीमेरुतन्त्रोक्ते पश्चिमाम्नायाद्यप्रस्तारे
श्रीकुब्जिका-कवचमाला-मन्त्रस्तोत्रम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

७ अथ श्रीविद्या-लघुषोढा-न्यासः

ॐ अस्य श्रीलघुषोढान्यासस्य दक्षिणामूर्तिऋषिर्गायत्रीच्छन्दः, गणेश-ग्रह-नक्षत्र-योगिनी-राशि-पीठस्वरूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवता, श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः -

श्रीदक्षिणामूर्तये ऋषये नमः -शिरसि। गायत्रीच्छन्दसे नमः - मुखे। गणेश -ग्रह-नक्षत्र-योगिनी-राशि-पीठस्वरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः - हृदये। विनियोगाय नमः - सर्वाङ्गे।

कर-हृदयादिन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं	अं कं खं गं घं ङ आं ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
"	इं चं छं जं झं ञं ईं क्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
"	उं टं ठं डं ढं णं ऊं सौः	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
"	एं तं थं दं धं नं ऐं ऐं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
"	ओं पं फं बं भं मं औं क्लीं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
"	अंयंरंलंवंशंषंसंहंक्षं अःसौः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यानम्-

उद्यत्सूर्यसहस्राभां, पीनोन्नतपयोधराम् ।
रक्तमाल्याम्बरालेपां, रक्तभूषणभूषिताम्।।१।।
पाशाङ्कुशधनुर्बाणभास्वत्पाणिचतुष्टयाम्।
लसन्नेत्रत्रयां स्वर्ण-मुकुटोद्भासि-मस्तकाम्।।२।।
गणेश-ग्रह-नक्षत्र-योगिनी-राशि रूपिणीम्।
देवीं पीठमयीं बन्दे, मातृकां सुन्दरीं पराम्।।३।।

इति श्रीदेवीं समष्टिरूपेण ध्यात्वा, गणेशादिव्यष्टिरूपेण च ध्यायेत्।

(७.१) **गणेश-न्यासः**

अस्य श्रीगणेशन्यासमन्त्रस्य गणकऋषिर्निचृद्गायत्रीच्छन्दः, महा-गणपतिर्देवता, मम श्रीविद्याङ्गत्वेन तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

गणकऋषये नमः - शिरसि। निचृद्गायत्रीच्छन्दसे नमः - मुखे।
महागणपतिदेवतायै नमः - हृदये। विनियोगाय नमः - सर्वाङ्गे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तरुणादित्यसङ्काशान् गजवक्त्रांस्त्रिलोचनान्।
पाशाङ्कुशवराभीतिकरान् शक्तिसमन्वितान्।।
ते तु सिन्दूरवर्णाभाः सर्वालङ्कारभूषिताः।
एकहस्तधृताम्भोजा इतरालिङ्गितप्रियाः।।

ऐं ह्री श्रीं	अं	श्रीयुक्ताय विघ्नेशाय	नमः	शिरसि
"	आं	ह्रीयुक्ताय विघ्नराजाय	"	मुखवृत्ते
"	इं	तुष्टियुक्ताय विनायकाय	"	दक्षनेत्रे
"	ईं	शान्तियुक्ताय शिवोत्तमाय	"	वामनेत्रे
"	उं	पुष्टियुक्ताय विघ्नहृते	"	दक्षकर्णे
"	ऊं	सरस्वतीयुक्ताय विघ्नकर्त्रे	"	वामकर्णे
"	ऋं	रतियुक्ताय विघ्नराजे	"	दक्षनासापुटे
"	ॠं	मेधायुक्ताय गणनायकाय	"	वामनासापुटे
"	लृं	कान्तियुक्ताय एकदन्ताय	"	दक्षगण्डे
"	लॄं	कामिनीयुक्ताय द्विदन्ताय	"	वामगण्डे
"	एं	मोहिनीयुक्ताय गजवक्त्राय	"	ऊर्ध्वोष्ठे
"	ऐं	जटायुक्ताय निरञ्जनाय	"	अधरोष्ठे
"	ओं	तीव्रायुक्ताय कपर्दभृते	"	ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ
"	औं	ज्वालिनीयुक्ताय दीर्घमुखाय	"	अधोदन्तपंक्तौ
"	अं	नन्दायुक्ताय शङ्कुकर्णाय	"	जिह्वाग्रे
"	अः	सुरसायुक्ताय वृषभध्वजाय	"	कण्ठे
"	कं	कामरूपिणीयुक्ताय गणनाथाय	"	दक्षबाहुमूले
"	खं	सुभ्रूयुक्ताय गजेन्द्राय	"	दक्षकूर्परे
"	गं	जयिनीयुक्ताय शूर्पकर्णाय	"	दक्षमणिबन्धे
"	घं	सत्यायुक्ताय त्रिलोचनाय	"	दक्षकराङ्गुलिमूले
"	ङं	विघ्नेशीयुक्ताय लम्बोदराय	"	दक्षकराङ्गुल्यग्रे
"	चं	सुरूपायुक्ताय महानादाय	"	वामबाहुमूले
"	छं	कामदायुक्ताय चतुर्मूर्तये	"	वामकूर्परे
"	जं	मदविह्वलायुक्ताय सदाशिवाय	"	वाममणिबन्धे
"	झं	विकटायुक्ताय आमोदाय	"	वामकराङ्गुलिमूले
"	ञं	पूर्णायुक्ताय दुर्मुखाय	"	वामकराङ्गुल्यग्रे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"	टं	भूतिदायुक्ताय सुमुखाय	"	दक्षोरुमूले
"	ठं	भूमियुक्ताय प्रमोदाय	"	दक्षजानुनि
"	डं	शक्तियुक्ताय एकपादाय	"	दक्षगुल्फे
"	ढं	रमायुक्ताय द्विजिह्वाय	"	दक्षपादाङ्गुलिमूले
"	णं	मानुषीयुक्ताय शूराय	"	दक्षपादाङ्गुल्यग्रे
"	तं	मकरध्वजायुक्ताय वीराय	"	वामोरुमूले
"	थं	वीरिणीयुक्ताय षण्मुखाय	"	वामजानुनि
"	दं	भ्रुकुटीयुक्ताय वरदाय	"	वामगुल्फे
"	धं	लज्जायुक्ताय वामदेवाय	"	वामपादाङ्गुलिमूले
"	नं	दीर्घघोणायुक्ताय वक्रतुण्डाय	"	वामपादाङ्गुल्यग्रे
"	पं	धनुर्धरायुक्ताय द्विरण्डकाय	"	दक्षपार्श्वे
"	फं	यामिनीयुक्ताय सेनान्ये	"	वामपार्श्वे
"	बं	रात्रियुक्ताय ग्रामण्ये	"	पृष्ठे
"	भं	चन्द्रिकायुक्ताय मत्ताय	"	नाभौ
"	मं	शशिप्रभायुक्ताय विमत्ताय	"	जठरे
"	यं	त्वगात्मने लोलायुक्ताय मत्तवाहनाय	"	हृदये
"	रं	अस्थ्यात्मने चपलायुक्ताय जटिने	"	दक्षस्कन्धे
"	लं	मांसात्मने ऋद्धियुक्ताय मुण्डिने	"	गलपृष्ठे
"	वं	मेदसात्मने दुर्भगायुक्ताय खड्गिने	"	वामस्कन्धे
"	शं	रक्तात्मने सुभगायुक्ताय वरेण्याय	"	हृदयादिदक्षकरङ्गुल्यन्तम्
"	षं	मज्जात्मने शिवायुक्ताय वृषकेतनाय	"	हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तम्
"	सं	शुक्रात्मने दुर्गायुक्ताय भक्ष्यप्रियाय	"	हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तम्
"	हं	जीवात्मने कालीयुक्ताय गणेशाय	"	हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तम्
"	ळं	परमात्मने कालकुब्जिकायुक्ताय मेघनादाय	"	हृदयादिगुह्यान्तम्
"	क्षं	ज्ञानात्मने विघ्नहारिणीयुक्ताय गणेश्वराय	"	हृदयादिमूर्धान्तम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(७.२) **अथ ग्रहन्यासः -**

अस्य श्रीग्रहन्यासस्य कश्यपऋषिः, दीधितिच्छन्दः, श्रीसूर्यादिनवग्रह-स्वरूपिणी श्रीत्रिपुरसुन्दरीदेवता, मम श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः।

करहृदयादिन्यासाः - स्त्रां, स्त्रीं, स्त्रूं, स्त्रैं, स्त्रौं, स्त्रः, इति।

रक्तं श्वेतं तथा रक्तं श्यामं पीतं च पाण्डुरम्।
कृष्णं धूम्र-धूम्रं भावये रविपूर्वकान्।।
कामरूपधरान्देवान् दिव्याभरणभूषितान्।
वामोरुन्यस्तहस्तांश्च दक्षहस्तवरप्रदान्।।
शक्तीरपि तथा वन्दे वराभयकराम्बुजाः।
स्वस्वप्रियांकनिलयाः सर्वाभरणभूषिताः।।

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः

	रेणुकायुक्ताय सूर्याय नमः -	हृदयाधः हृज्जठरसन्धौ
३ ऐं ह्रीं श्री यं रं लं वं	अमृतायुक्ताय चन्द्राय नमः	भ्रूमध्ये
३ ऐं ह्रीं श्री कं खं गं घं ङं	धर्मायुक्ताय भौमाय नमः	नेत्रयोः
३ ऐं ह्रीं श्री चं छं जं झं ञं	यशस्विनीयुक्ताय बुधाय नमः	श्रोत्रकूपाधः
३ ऐं ह्रीं श्री टं ठं डं ढं णं	शांकरीयुक्ताय बृहस्पतये नमः	कण्ठे
३ ऐं ह्रीं श्री तं थं दं धं नं	ज्ञानरूपायुक्ताय शुक्राय नमः	हृदि
३ ऐं ह्रीं श्री पं फं बं भं मं	शक्तियुक्ताय शनैश्चराय नमः	नाभौ
३ ऐं ह्रीं श्री शं षं सं हं	कृष्णायुक्ताय राहवे नमः	मुखे
३ ऐं ह्रीं श्री ळं क्षं	धूम्रायुक्ताय केतवे नमः	गुदे

(७.३) **अथ नक्षत्रन्यासः -**

ॐ अस्य श्रीनक्षत्रन्यासस्य दक्षिणामूर्तिऋषिर्गायत्रीछन्दो नक्षत्रस्वरूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, मम श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः।

ॐ वषट्पूर्वकं अं, आं, इं, ईं, उ, ऊं, एं, ऐं, ओं, औं, अं, अः इतिन्यासाः।

ज्वलत्कालानलप्रख्या वरदाभयपाणयः ।
वन्देऽहमश्विनीपूर्वाः सर्वाभरणभूषिताः।।

ऐं ह्रीं श्रीं	अं आं	अश्विन्यै	नमः	ललाटे
"	इं	भरण्यै	"	दक्षनेत्रे
"	ईं उं ऊं	कृत्तिकायै	"	वामनेत्रे
"	ऋं ॠं लृं लॄं	रोहिण्यै	"	दक्षकर्णे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"	एं	मृगशिरसे	"	वामकर्णे
"	ऐं	आर्द्रायै	"	दक्षनासापुटे
"	ओं औं	पुनर्वसवे	"	वामनासापुटे
"	कं	पुष्याय	"	कण्ठे
"	खं गं	आश्लेषायै	"	दक्षस्कन्धे
"	घं ङं	मघायै	"	वामस्कन्धे
"	चं	पूर्वाफाल्गुन्यै	"	पृष्ठे
"	छं जं	उत्तराफाल्गुन्यै	"	दक्षकूपरि
"	झं ञं	हस्तायै	"	वामकूपरि
"	टं ठं	चित्रायै	"	दक्षमणिबन्धे
"	डं	स्वात्यै	"	वाममणिबन्धे
"	ढं णं	विशाखायै	"	दक्षहस्ते
"	तं थं दं	अनुराधायै	"	वामहस्ते
"	धं	ज्येष्ठायै	"	नाभौ
"	नं पं फं	मूलायै	"	कटिबन्धे
"	बं	पूर्वाषाढायै	"	दक्षोरौ
"	भं	उत्तराषाढायै	"	वामोरौ
"	मं	श्रवणायै	"	दक्षजानुनि
"	यं रं	धनिष्ठायै	"	वामजानुनि
"	लं	शततारकायै	"	दक्षजङ्घायाम्
"	वं शं	पूर्वाभाद्रपदायै	"	वामजङ्घायाम्
"	षं सं हं	उत्तराभाद्रपदायै	"	दक्षपादे
"	ळं क्षं अं अः	रेवत्यै	"	वामपादे

(७.४) **योगिनीन्यासः -**

ॐ अस्य श्रीयोगिनीमातृकान्यासस्य दक्षिणामूर्तिऋषिर्गायत्रीछन्दो योगिनीस्वरूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, मम श्रीविद्याङ्गत्वेत न्यासे विनियोगः।

कर-हृदयादि न्यासः -

ॐ यां हूं फट्। ॐ यीं हूं फट्। ॐ यूं हूं फट्। ॐ यैं हूं फट्। ॐ यौं हूं फट्। ॐ यः हूं फट्। इति।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विशुद्धौ-

कण्ठस्थाने विशुद्धौ नृपदलकमले श्वेतवर्णां त्रिनेत्रां,
हस्तैः खट्वाङ्गखड्गौ त्रिशिखमपि महाचर्मसन्धारयन्तीम्।
वक्त्रेणैकेन युक्तां पशुजनभयदां पायसान्नैकसक्तां,
त्वक्स्थां वन्देऽमृताद्यैः परिवृतवपुषां डाकिनीं वीरवन्द्याम्।।

इति ध्यात्वा -

ऐं ह्रीं श्रीं विशुद्धस्थाने षोडशदलकमलकर्णिकायां ऐं ह्रीं श्रीं डां डीं डूं डमलवरयूं डाकिनि मां रक्ष रक्ष मम त्वग्धातुभागान् रक्ष २ सर्वसत्त्ववशङ्करि देव्यागच्छागच्छ इमां पूजां गृह्ण २ ऐं घोरे देवि ह्रीं सः परमघोरे हं घोररूपे एह्येहि नमश्चामुण्डे डरलकसह ऐं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि वरदे विच्चे देवी अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः विशुद्धपीठस्थे विशुद्धडाकिनि विशुद्धनाथदेवश्रीपादुकां पूजयामि नमः। (कण्ठे)।

३ = 'ऐं ह्रीं श्रीं'।

३ अं अमृतायै नमः।	३ आं आकर्षिण्यै नमः।	३ इं इन्द्राण्यै नमः ।
३ ईं ईशान्यै नमः।	३ उं उमायै नमः ।	३ ऊं ऊर्ध्वकेश्यै नमः।
३ ऋं ऋद्धिदायै नमः।	३ ॠं ॠकारायै नमः।	३ लृं लृकारायै नमः।
३ लॄं लॄकारायै नमः।	३ एं एकपदायै नमः।	३ ऐं ऐश्वर्यात्मिकायै नमः।
३ ओं ओङ्कारायै नमः।	३ औं औषध्यै नमः।	३ अं अम्बिकायै नमः।
३ अः अक्षरायै नमः।		

अनाहते-

हृत्पद्मे भानुपत्रद्विवदनलसितां दंष्ट्रिणीं श्यामवर्णाम्
अक्षं शूलं कपालं डमरुमपि भुजैर्धारयन्तीं त्रिनेत्राम्।
रक्तस्थां कालरात्रिप्रभृतिपरिवृतां स्निग्धभक्तैकसक्ताम्
श्रीमद्वीरेन्द्रवन्द्यामभिमतफलदां राकिणीं भावयामः।।

इति ध्यात्वा -

३ अनाहतस्थाने द्वादश दलकमलकर्णिकायां ३ रां रां रूं रमलवरयूं राकिनि मां रक्ष २ मम रक्तधातुभागान् रक्ष २ सर्वसत्त्ववशङ्करि देव्यागच्छागच्छ इमां पूजां गृह्ण २ ऐं घोरे ह्री सः परमघोरे हूं घोररूपं एह्येहि नमश्चामुण्डे डरलकसह ऐं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि वरदे विच्चे कं खं गं .....टं ठं अनाहतपीठस्थे अनाहतराकिनि अनाहतनाथदेव श्रीपादुकां पूजयामि नमः। (हृदये)।

३ कं कालरात्र्यै नमः।	३ खं खण्डितायै नमः।	३ गं गायत्र्यै नमः।
३ घं घण्टाकर्षिण्यै नमः।	३ ङं ङार्णायै नमः।	३ चं चण्डायै नमः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३ छं छायायै नमः। ३ जं जयायै नमः। ३ झं झङ्कारिण्यै नमः।
३ ञं ज्ञानरूपायै नमः। ३ टं टङ्कहस्तायै नमः। ३ ठं ठङ्कारिण्यै नमः।

मणिपूरे-

दिक्पत्रे नाभिपद्मे त्रिवदनलसितां दंष्ट्रिणीं रक्तवर्णां,
शक्तिं दम्भोलिदण्डावभयमपि भुजैर्धारयन्तीं महोग्राम्।
डामर्याद्यैः परीतां पशुजनभयदां मांसधात्वंकनिष्ठां,
गौडान्नासक्तचित्तां सकलसुखकरीं लाकिनीं भावयामः।।

इति ध्यात्वा—

मणिपूरस्थाने दशदलकमलकर्णिकायां ३ लां लीं लूं लमलवरयूं लाकिनि मां रक्ष २ मम मांसधातुभागान् रक्ष २ सर्वसत्त्ववशङ्करि देव्यागच्छागच्छ, इमां पूजां गृह्ण २ ऐं घोरे ह्रीं सः परमघोरे हूं घोररूपे एह्येहि नमश्चामुण्डे डरलकसह ऐं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि वरदे विच्चे देवि डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं मणिपूरपीठस्थे मणिपूरलाकिनि मणिपूरनाथदेव श्रीपादुकां पूजयामि नमः। (नाभौ)

३ डं डामर्यै नमः। ३ ढं ढङ्कारिण्यै नमः। ३ णं णार्णायै नमः।
३ तं तामस्यै नमः। ३ थं स्थाण्व्यै नमः। ३ दं दाक्षायण्यै नमः।
३ धं धात्र्यै नमः। ३ नं नार्यै नमः। ३ पं पार्वत्यै नमः।
३ फं फट्कारिण्यै नमः।

स्वाधिष्ठाने-

स्वाधिष्ठानाख्यपद्मे रसदललसिते वेदवक्त्रां त्रिनेत्रां,
हस्ताब्जैर्धारयन्तीं त्रिशिखगुणकपालाङ्कुशानात्तगर्वाम्।
मेदोधातुप्रतिष्ठामलिमदमुदितां बन्धिनीं मुख्ययुक्तां,
पीतां दध्योदनेष्टामभिमतफलदां काकिनीं भावयामः।।

इति ध्यात्वा-

स्वाधिष्ठानस्थाने षड्दलकमलकर्णिकायां ३ कां की कूं कमलवरयूं काकिनि मां रक्ष २ मेदोधातुभागान् रक्ष २ सर्वसत्त्ववशङ्करि देव्यागच्छागच्छ इमां पूजां गृह्ण २ ऐं घोरे ह्रीं सः परमघोरे हं घोररूपे एह्येहि नमश्चामुण्डे डरलकसहऐं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि वरदे विच्चे देवि ३ बं भं मं यं रं लं स्वाधिष्ठानपीठस्थे स्वाधिष्ठानकाकिनि स्वाधिष्ठाननाथदेव श्रीपादुकां पूजयामि नमः। (बस्तौ)।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३ बं बन्धिन्यै नमः । ३ भं भद्रकाल्यै नमः। ३ मं महामायायै नमः।
३ यं यशस्विन्यै नमः । ३ रं रक्तायै नमः । ३ लं लम्बोष्ठ्यै नमः।

मूलाधारे-

मूलाधारस्थपत्रे श्रुतिदललसिते पञ्चवक्त्रां त्रिनेत्रां,
धूम्राभामस्थिसंस्थां सृणिमपि कमलं पुस्तकं ज्ञानमुद्राम्।
बिभ्राणां बाहुदण्डैः सुललितवरदापूर्वशक्त्यावृतां तां,
मुद्गान्नासक्तचित्तां मधुमदमुदितां साकिनीं भावयामः।।

इति ध्यात्वा-

मूलाधारस्थाने चतुर्दलकमलकर्णिकायां ३ सां सीं सूं समलवरयूं साकिनी मां रक्ष २ ममास्थिधातुभागान् रक्ष २ सर्वसत्त्ववशङ्करि देव्यागच्छागच्छ इमां पूजां गृह्ण २ ऐं घोरे ह्रीं सं परमघोरे हूं घोररूपे एह्येहि नमश्चामुण्डे डरलकसहऐं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि वरदे विच्चे देवि ३ वं शं षं सं मूलाधारपीठस्थे मूलाधारसाकिनि मूलाधारनाथदेव श्रीपादुकां पूजयामि नमः। (लिङ्गे)।

३ वं वरदायै नमः । ३ शं श्रियै नमः।
३ षं षष्ठायै नमः । ३ सं सरस्वत्यै नमः।

आज्ञायाम्-

भ्रूमध्ये बिन्दुपद्मे दलयुगकलिते शुक्लवर्णां कराब्जै-
र्बिभ्राणां ज्ञानमुद्रां डमरुकममलामक्षमालां कपालम्।
षड्वक्त्रां मज्जसंस्थां त्रिनयनलसितां हंसवत्यादियुक्तां,
हारिद्रान्नैकसक्तां सकलसुखकरीं हाकिनीं भावयामि।।

इति ध्यात्वा-

ऐं ह्रीं श्रीं आज्ञास्थाने युगदलकमलकर्णिकायां ३ हां हीं हूं हमल- वरयूं हाकिनि मां रक्ष २ मम मज्जाधातुभागान् रक्ष २ सर्वसत्त्ववशङ्करि देव्यागच्छागच्छ इमां पूजां गृह्ण २ ऐं घोरे ह्रीं सः परमघोरे हूं घोररूपे एह्येहि नमश्चामुण्डे डरलकसहऐं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि वरदे विच्च देवि हं क्षं आज्ञापीठस्थे आज्ञाहाकिनि आज्ञानाथदेव श्रीपादुकां पूजयामि नमः। (भ्रूमध्ये।)

ऐं ह्रीं श्रीं हं हंसवत्यै नमः। ३ क्षं क्षमावत्यै नमः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सहस्रारे-

मुण्डव्योमस्थपद्मे दशशतदलके कर्णिकाचन्द्रसंस्थां,
रेतोनिष्ठां समस्तायुधकलितकरां सर्वतो वक्त्रपद्माम्।
आदिक्षान्तार्णशक्तिप्रकरपरिवृतां सर्ववर्णां भवानीं,
सर्वान्नासक्तचित्तां परशिवरसिकां याकिनीं भावयामः।।

इति ध्यात्वा

सहस्रारस्थाने सहस्रदलकमलकर्णिकायां ३ यां यीं यूं यमलवरयूं याकिनि मां रक्ष २ शुक्रधातुभागान् रक्ष २ सर्वसत्त्ववशङ्करि देव्यागच्छागच्छ इमां पूजां गृह्ण २ ऐं घोरे ह्रीं सः परमघोरे हूं घोररूपे एह्येहि नमश्चामुण्डे डरलकसहऐं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि वरदे विच्चे देवि अं आं इं ईं.... ळं क्षं ब्रह्मरन्ध्रपीठस्थे ब्रह्मरन्ध्रयाकिन्यम्बा ब्रह्मरन्ध्रनाथदेव श्रीपादुकां पूजयामि नमः। (शिरसि।)

३ अं अमृतायै नमः।	३ आं आकर्षिण्यै नमः।	३ इं इन्द्राण्यै नमः।
३ ईं ईशान्यै नमः ।	३ उं उमायै नमः ।	३ ऊं ऊर्ध्वकेश्यै नमः।
३ ऋं ऋद्ध्यै नमः।	३ ॠं ॠकारायै नमः ।	३ लृं लृकारायै नमः ।
३ लॄं लॄकारायै नमः।	३ एं एकपदायै नमः।	३ ऐं ऐश्वर्यात्मिकायै नमः।
३ ओं ओंकारायै नमः।	३ औं औषध्यै नमः।	३ अं अम्बिकायै नमः।
३ अः अक्षरायै नमः ।	३ कं कालरात्र्यै नमः।	३ खं खण्डितायै नमः ।
३ गं गायत्र्यै नमः ।	३ घं घण्टाकर्षिण्यै नमः।	३ ङं ङार्णायै नमः ।
३ चं चण्डिकायै नमः।	३ छं छायायै नमः ।	३ जं जयायै नमः ।
३ झं झङ्कारिण्यै नमः।	३ ञं ज्ञानरूपायै नमः ।	३ टं टङ्कारिण्यै नमः ।
३ णं णार्णायै नमः।	३ तं तामस्यै नमः ।	३ थं स्थाण्व्यै नमः ।
३ दं दाक्षायण्यै नमः।	३ धं धात्र्यै नमः ।	३ नं नन्दिकायै नमः ।
३ पं पार्वत्यै नमः ।	३ फं फट्कारिण्यै नमः ।	३ बं बन्धिन्यै नमः ।
३ भं भद्रकाल्यै नमः ।	३ मं महामायायै नमः।	३ यं यशस्विन्यै नमः ।
३ रं रमायै नमः ।	३ लं लम्बोष्ठ्यै नमः।	३ वं वरदायै नमः ।
३ शं श्रियै नमः ।	३ षं षण्डायै नमः ।	३ सं सरस्वत्यै नमः ।
३ हं हंसवत्यै नमः।	३ क्षं क्षमावत्यै नमः।	

(७.५) **अथ राशिन्यासः -**

अस्य श्रीराशिमातृकान्यासस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः, गायत्रीछन्दः, श्रीराशिस्वरूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, श्रीविद्याङ्गत्वेन तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर-हृदयादिन्यासाः -

३ मां, मीं, मूं, मैं, मौं, मः - इत्यादिभिः कर्तव्याः।

ध्यानम् - **रक्तश्वेताहरित्पाण्डुचित्रकृष्णपिशङ्गकान् ।**
कपिशबभ्रुकिर्मीरकृष्णधूम्रान् क्रमाद् भजे।।

ऐं ह्रीं श्रीं	अं आं इं ईं	मेषाय नमः	दक्षपादे
३	उं ऊं	वृषाय नमः	लिङ्गदक्षभागे
३	ऋं ॠं लृं लॄं	मिथुनाय नमः	दक्ष-कुक्षौ
३	एं ऐं	कर्काय नमः	हृदयदक्षभागे
३	ओं औं	सिंहाय नमः	दक्षबाहुमूले
३	अं अः शं षं सं हं ळं	कन्यायै नमः	दक्षशिरोभागे
३	कं खं गं घं ङं	तुलायै नमः	वामशिरोभागे
३	चं छं जं झं ञं	वृश्चिकाय नमः	वामबाहुमूले
३	टं ठं डं ढं णं	धनुषे नमः	हृदयवामभागे
३	तं थं दं धं नं	मकराय नमः	वामकुक्षौ
३	पं फं बं भं मं	कुम्भाय नमः	लिङ्गवामभागे
३	यं रं लं वं	मीनाय नमः	वामपादे

(७.६) **पीठन्यासः -**

अस्य श्रीपीठमातृकान्यासस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दः, पीठरूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, मम श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः।

कर-हृदयादिन्यासाः - 'कां कीं कूं कैं कौं कः' इत्यादिभिः कर्तव्याः।

ध्यानम् - सितासितारुणश्याम - हरित्पीतान्यनुक्रमात्।
वन्दे क्रमेण देवेश्याः पञ्चाशत्पीठसञ्चयान्।।

इति भावयित्वा मातृकाभिः समं पूर्वोक्तेषु तासां स्थानेषु पीठानि क्रमेण विन्यसेत्। यथा-

ऐं ह्रीं श्रीं	अं कामरूपाय नमः	शिरसि
३	आं वाराणस्यै नमः	मुखवृत्ते
३	इं नेपालाय नमः	दक्षनेत्रे
३	ईं पौण्ड्रवर्धनाय नमः	वामनेत्रे
३	उं पुरस्थितकाश्मीराय नमः	दक्षकर्णे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३	ऊं कान्यकुब्जाय नमः	वामकर्णे
३	ऋं पूर्णशैलाय नमः	दक्षनासायाम्
३	ॠं अर्बुदाचलाय नमः	वामनासायाम्
३	लृं आम्रातकेश्वराय नमः	दक्षगण्डे
३	लॄं एकाम्राय नमः	वामगण्डे
३	एं त्रिस्रोतसे नमः	ऊर्ध्वोष्ठे
३	ऐं कामकोटये नमः	अधरोष्ठे
३	ओं कैलासाय नमः	उर्ध्वदन्तपंक्तौ
३	औं भृगुनगराय नमः	अधोदन्तपंक्तौ
३	अं केदाराय नमः	जिह्वाग्रे
३	अः चन्द्रपुष्करिण्यै नमः	कण्ठे
३	कं श्रीपुराय नमः	दक्षबाहुमूले
३	खं ओङ्काराय नमः	दक्षकूर्परे
३	गं जालन्धराय नमः	दक्षमणिबन्धे
३	घं मालवाय नमः	दक्षकरांगुलिमूले
३	ङं कुलान्तकाय नमः	दक्षकरांगुल्यग्रे
३	चं देवीकोटाय नमः	वामबाहुमूले
३	छं गोकर्णाय नमः	वामकूर्परे
३	जं मारुतेश्वराय नमः	वाममणिबन्धे
३	झं अट्टहासाय नमः	वामकरांगुलिमूले
३	ञं विरजायै नमः	वामकरांगुल्यग्रे
३	टं राजगेहाय नमः	दक्षोरूमूले
३	ठं महापथाय नमः	दक्षजानुनि
३	डं कोल्हापुराय नमः	दक्षगुल्फे
३	ढं एलपुराय नमः	दक्षपादांगुलिमूले
३	णं कालेश्वराय नमः	दक्षपादांगुल्यग्रे
३	तं जयन्तिकायै नमः	वामोरुमूले
३	थं उज्जयिन्यै नमः	वामजानुनि
३	दं चित्रायै नमः	वामगुल्फे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३	धं क्षीरिकायै नमः	वामपादांगुलिमूले
३	नं हस्तिनापुराय नमः	वामपादांगुल्यग्रे
३	पं उड्डीशाय नमः	दक्षपार्श्वे
३	फं प्रयागाय नमः	वामपार्श्वे
३	बं षष्ठीशाय नमः	पृष्ठे
३	भं मायापुर्यै नमः	नाभौ
३	मं जलेशाय नमः	जठरे
३	यं मलयाय नमः	हृदये
३	रं श्रीशैलाय नमः	दक्षस्कन्धे
३	लं मेरवे नमः	गलपृष्ठे
३	वं गिरिवराय नमः	वामस्कन्धे
३	शं महेन्द्राय नमः	हृदयादिदक्षकरांगुल्यन्तम्
३	षं वामनाय नमः	हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तम्
३	सं हिरण्यपुराय नमः	हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तम्
३	हं महालक्ष्मीपुराय नमः	हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तम्
३	ळं ओड्याणाय नमः	हृदयादिगुह्यान्तम्
३	क्षं छायाच्छत्राय नमः	हृदयादिमूर्धान्तम्

इति लघुषोढान्यासः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

८ अथ श्रीविद्याषोढान्यासः
(ऊर्ध्वाम्नायस्य[१])

अस्य श्रीविद्याषोढान्यासस्य श्रीआदिप्रकृतिर्ऋषिः, महतीच्छन्दः श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ५ ऐं क ५ तत्सवितुः ..... प्रचोदयात्। परोरजसेऽसावदोम्-इति बीजं, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ५ क्लीं ह ६ जातवेदसे... त्यग्निः - इति शक्तिः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ५ सौः स ४ त्र्यम्बकं.....माऽमृतात्-इति कीलकं, श्रीविद्याषोढान्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः, मूलेन च कर-हृदयादिन्यासाश्च कर्तव्याः।

ध्यानम्-

अनन्तं चिन्तयेद् धीमान् सहस्रफणिमण्डपम्।
तन्मध्ये फणिशृङ्गान्ते, महाप्रेतं विचिन्तयेत्।।

१-आदिशक्तिरुवाच-

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि, विद्या-षोढा महत्तरम्।
मन्त्री तां न्यासमात्रेण जीवन्मुक्तो न संशयः।।
मम न्यासादिकं कृत्वा, ध्यात्वा ऋष्यादिपूर्वकम्
श्रीविद्याया महेशान्या, वर्णन्यासं समाचरेत्।।
षोढ़ान्यासं प्रकुर्वीत, श्रीविद्याया महाप्रभो।
आद्यः सिद्धेश्वरीन्यासो द्वितीयस्तु परापरे।
तृतीयस्तु महाविद्या चतुर्थस्तु महाकला।।
पञ्चमः स्याद् बीजकला षष्ठं तदवरोधकम्।
पूर्वोक्ते शाम्भवे पीठे सहस्रफणवराटके।।
हिरण्यगर्भं षड्वक्त्रं, पञ्चप्रेतासनस्थितम्।
तस्य मूर्ध्नि महाप्राज्ञः, कमलं चन्द्ररोचिषम्।।
कर्णिकायां महेशानं, पद्मरागाकृतिं स्मरेत्।
कलाब्जं चिन्तयेत्तत्र, महाकालकलालयम्।।
महारक्तप्रभां देवीं, श्रीविद्यां मनसा स्मरेत्।
आधारादिकलाचक्रां, ध्यात्वा मूले विचिन्तयेत्।।
तडित्कोटिप्रभापुञ्ज - कैवल्याग्निसमोपमाम्।
त्रिपुरात्मत्रिकोणस्थां, मूलविद्यास्वरूपिणीम्।।
गुरूपदिष्टविधिना, प्रोत्थितां चिन्तयेत् सुधीः।
इति ध्यत्वा सुरेशान विन्यसेत् परमेश्वरीम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(८.१) **तत्रादौ सिद्धेश्वरीन्यासः -**

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ५ अं....अः (१६) क क १५ सन्ध्यारूपिण्यै कालनित्यात्मिकायै सात्त्विक-ककार-भट्टारक-पीठस्थितायै कामेश्वराङ्कनिलयायै कामेश्वरीमहाभट्टारिकायै खड्गसिद्धेश्वर्यै नमः श्रीं ५। मूलाधारे

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ५ कं....ङ ए ह १५ वर्णरूपिणीमातृकात्मिकायै महासात्त्विकभोगद-एकार-भट्टारकपीठस्थितायै एकवीरकामेश्वराङ्कनिलयायै कलाललितामहाभट्टारिकायै पादुकासिद्धेश्वर्यै नमः श्रीं ५ । स्वाधिष्ठाने

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ५ चं....ञं ई स १५ हसकलह्रीं हसकल ह्रीं भं हएईलह्रीं नफलवरयीं मालिन्यादिरूपिणीनिष्कलमातृकात्मिकायै शुद्ध सात्विकमोक्षदईकारभट्टारकपीठस्थितायै ईश्वरकामेश्वराङ्कनिलयायै ईश्वरीललिता-महाभट्टारिकायै अज्जनसिद्धेश्वर्यै नमः श्रीं ५ । मणिपूरे

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ५ टं....णं ल क ४ हकएईलह्रीं सकएईलह्रीं गणेशादिरूपिणीविराजात्मिकायै सात्त्विकलकारभट्टारकपीठस्थितायै ललितलक्षस्तरकामेश्वराङ्कनिलयायै लक्षसाराललितामहाभट्टारिकायै बलवीरसिद्धेश्वर्यै नमः श्रीं ५। अनाहते

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ५ तं....नं ह्रीं हसकएईल ह्रीं सहकएईल ह्रीं मण्डूकादियोगसिंहासनात्मिकायै निष्कलसात्त्विकह्रीङ्कारभट्टारकपीठस्थितायै हृदयकामेश्वराङ्कनिलयायै हल्लेखाललितामहाभट्टारिकायै ५ वाक्सिद्धेश्वर्यै नमः श्रीं ५। वक्षसि

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ५ पं....मं हं ह ५ सहसकल ह्रीं तिथिरूपिणे नित्यात्मकाय राजसहकारभट्टारकपीठस्थिताय हलिनीललिताभूषिताङ्काय हलिककामेश्वरभट्टारकाय देहसिद्धेश्वराय नमः श्रीं ५। कण्ठे

७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ५ यं....शं सं स ३ सएईल ह्रीं सहकहल ह्रीं सशृंङ्गा-रादिरूपिणे अणिमाद्यात्मकाय भोगदराजससकारभट्टारकपीठस्थिताय सरस्वतीललिता-भूषिताङ्काय सर्वज्ञकामेश्वरभट्टारकाय लोहसिद्धेश्वराय नमः। श्रीं ५। मुखे

८. ॐ ३-५-षं सं हं ळं क्षं क ५ हकहल ह्रीं सहकल ह्रीं प्रतिबिम्ब-रूपिणे पञ्चपञ्चिकात्मकाय कामदराजसतामसककारभट्टारकपीठस्थिताय कमलाललिताभूषिताङ्काय कालियमर्दनकामेश्वरभट्टारकाय अणि-मादिमहा-सिद्धेश्वराय नमः श्रीं ५। नेत्रयोः

९. ॐ ३-५-क्षं ळं हं सं षं हं ह ६ सहकल ह्रीं महाप्रेतरूपिणे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पञ्चसिंहासनात्मकाय मोक्षदराजसहकारभट्टारकपीठस्थिताय हरिवल्लभाललिता-भूषिताङ्काय हरनाथकामेश्वरभट्टारकाय सर्ववश्यसिद्धेश्वराय नमः श्रीं ५ ।

आज्ञायाम्

१०. ॐ ३-५ शं वं लं रं यं ल क १५ दिग्रूपाम्नायदर्शनात्मकाय मुक्तिदराजसलकारभट्टारकपीठस्थिताय लक्ष्मीललिताभूषिताङ्काय लल-ज्जिह्वाकामेश्वरभट्टारकाय सर्वाकर्षणसिद्धेश्वराय नमः श्रीं ५ । ललाटे

११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ५ मं भं बं फं पं ह्रीं हसकहल सकल ह्रीं ह ५ स ३ विश्वरूपप्रपञ्चाद्यात्मकाय तामसह्रीङ्कारभट्टारकपीठस्थिताय हिरण्याललिताभूषिताङ्काय हृदयेश्वरकामेश्वरभट्टारकाय सर्वसम्मोहनसिद्धेश्वराय नमः श्रीं ५। इन्दौ

१२. ॐ ३-५ नं धं दं थं तं स क ४ सह सकल ह्रीं स ए ईल ह्रीं ह ५ स ३ त्रिपुष्कररूपिणे चतुर्लिङ्गात्मकाय महातामससकारभट्टारकपीठस्थिताय सकलजननीललिताभूषिताङ्काय सर्वेश्वरसकलेश्वरकामेश्वरभट्टारकाय सर्वस्तम्भन-सिद्धेश्वराय नमः श्रीं ५। बिन्दौ

१३. ॐ ३-५ णं ढं डं ठं टं क क १५ मानसादिरूपिणे षडन्वयात्मकाय परतामसराजसककारभट्टारकपीठस्थिताय कामकोटिललिताभूषिताङ्काय करुणाकरकामेश्वर-भट्टारकाय धर्मार्थकाममोक्षपुरुषार्थचतुष्टयसिद्धेश्वराय नमः श्रीं ५ । वृत्ते

१४. ॐ ३-५ ञं झं जं छं चं ल क ४ सहएईल ह्रीं चरणादिरूपिणे-निर्वाणशाम्भवात्मकाय अतितामसराजसककारभट्टारकपीठस्थितायलीलावती ललिताभूषिताङ्काय लावण्य-नायक-कामेश्वरभट्टारकाय नित्यानन्दसिद्धेश्वराय नमः श्रीं ५। नादे

१५. ॐ ३-५ ङं घं गं खं कं ह्रीं हसकसहल ह्रीं स ३ शून्यरूपिणे महाशाम्भवात्मकाय शुद्धतामसराजसह्रीङ्कारभट्टारकपीठस्थिताय हिरण्येश्वरी ललिताभूषिताङ्काय हिरण्यबाहुकामेश्वरभट्टारकाय मोक्षसिद्धेश्वराय नमः श्रीं ५। नादान्ते

१६. ॐ ३-५ अं १५ कएईल हसकहल सकल ह्रीं (१३) हसकल हसकहल सकल ह्रीं (१३) महाशून्यरूपिण्यै महाविद्यात्मिकायै त्रिगुणातीत -श्रीङ्कारभट्टारकपीठस्थितायै महाकामेश्वराङ्कनिलयायै श्रीमहात्रिपुरा-ललितामहाभट्टारिकायै सर्वसिद्धेश्वराय नमः श्रीं ५। ब्रह्मरन्ध्रे

ॐ ३-५ अं ५० क १५ क्षं ५० सर्वसिद्धेश्वराधिदेवतायै श्रीमहात्रि-पुरसुन्दरीपराम्बायै नमः श्रीं ५ । इति सर्वाङ्गे व्याप्य।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एताः पाशाङ्कुशकरा बाणकार्मुकपाणयः।
मूलदेव्यो यथारूपं तथैव मनसा स्मरेत्।।

इति सिद्धेश्वरीन्यासः।

(८.२) **अथ परमेश्वरीन्यासः -**

तत्र पूर्वोक्तवर्णकमलं अकथादित्रिधा विभाव्य-

ॐ ३-५	अं	श्रीं	श्रीपरमेश्वरी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीं ५	आधारे
"	आं	ह्री	विश्वेश्वरी परापरेश्वरी नमः श्रीं ५	स्वाधिष्ठाने
"	इं	क्लीं	कामेश्वरी परापरेश्वरी नमः श्रीं ५	मणिपूरे
"	ईं	ऐं	वीरेश्वरी परापरेश्वरी नमः श्रीं ५	अनाहते
"	उं	सौः	अनुत्तरा परापरेश्वरी नमः श्रीं ५	वक्षसि
"	ऊं	ॐ	निःश्रेयसालया परापरेश्वरी नमः श्रीं ५	कण्ठे
"	ऋं	ह्रीं	हृदयोदरालया परापरेश्वरी नमः श्रीं ५	मुखे
"	ॠं	श्रीं	श्रीविद्या परापरेश्वरी नमः श्रीं ५	नेत्रयोः
"	लं	क ४	त्रिपुरावागीश्वरी परापरेश्वरी नमः श्रीं ५	आज्ञायाम्
"	लृं	ह ५	त्रिपुराकामेश्वरी परापरेश्वरी नमः श्रीं ५	ललाटे
"	एं	स ३	त्रिपुरामृतेश्वरी परापरेश्वरी नमः श्रीं ५	इन्दौ
"	ऐं	सौः	निष्कला परापरेश्वरी नमः श्रीं ५	बिन्दौ
"	ओं	ऐं	महाविद्या परापरेश्वरी नमः श्रीं ५	वृत्ते
"	औं	क्लीं	कामकला परापरेश्वरी नमः श्रीं ५	नादे
"	अं	ह्रीं	जगदीश्वरी परापरेश्वरी नमः श्रीं ५	नादान्ते
"	अः	श्रीं	महात्रिपुरसुन्दरी परापरेश्वरी नमः श्रीं ५	ब्रह्मरन्ध्रे

इति परापरमेश्वरीन्यासः।

(८.३) **अथ महाविद्यान्यासः (श्रीबीजरूपा षोडशी)**

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ५ कं श्रीं श्रीं क १५ श्रीबीजषोडशी श्रीविद्यारूपिणी श्रीपरब्रह्मात्मिका महात्रिपुरसुन्दरी श्रीं ५ सौः ५ आधारे

ॐ ३-५ ह्रीं क्लीं ऐं सौः खं ह्रीं ह्रीं क १५ मायादिषोडशी श्रीपरब्रह्मात्मिका महात्रिपुरसुन्दरी श्रीं ५ सौः ५ स्वाधिष्ठाने

ॐ ३-५ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः गं क्लीं क्लीं क १५ कामादिषोडशी० मणिपूरे

ॐ ३-५ घं ऐं ऐं क १५ वागादिषोडशी० " अनाहते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ३-५ ङं सौं: सौ: क १५ परादिषोडशी० " वक्षसि
ॐ ३-५ चं ॐ ॐ क १५ तारादिषोडशी० " कण्ठे
ॐ ३-५ छं ह्रीं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीं ५ क १५ सौ: ५ ईश्वर्यादिषोडशी मुखे
ॐ ३-५ जं श्रीं श्रीं ह ५ क ४ स ३ रमादिषोडशी " नेत्रयो:
ॐ ३-५ झं क ४ क ४ हसौं क १५ शिवादिषोडशी " आज्ञायाम्
ॐ ३-५ ञं क ५ ह ६ ॐ ह्रीं श्रीं क १५ मदनषोडशी " ललाटे
ॐ ३-५ टं स ३ स ३ स्हौं क १५ सत्यादिषोडशी " इन्दौ
ॐ ३-५ ठं सौ: सौ: श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ क १५ ऐं ५ नामषोडशी " विन्दौ
ॐ ३-५ डं ऐं ऐं क १५ ह्रीं श्रीं ॐ ३ श्रीं ५ वामादिषोडशी " वृत्ते
ॐ ३-५ श्रीं ४ ढं क्लीं क्लीं क १५ ॐ ५ सौ: रत्यादिषोडशी " नादे
ॐ ३-५ श्रीं ४ णं ह्रीं ह्रीं क १५ ब्रह्मविद्याषोडशी " नादान्ते
ॐ ३-५ श्रीं ४ तं श्रीं श्रीं क १५ श्रीविद्याषोडशीविद्या " ब्रह्मरन्ध्रे

इति महाविद्येश्वरीन्यास:।

(८.४) **अथ महाकलाधीश्वरीन्यास—**

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौ: थं श्रीं पराकलारूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीं सौ: ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं। आधारे
ॐ ३ ह्रीं क्लीं ऐं सौ: दं ह्रीं ह्रीं क १५ मायादिषोडशी श्रीपरब्रह्मात्मिका महात्रिपुरसुन्दरी श्रीं सौ: ४ स्वाधिष्ठाने
ॐ ३ श्रीं ४ धं ईं ह्रीं पश्यन्तीकलारूपिणी श्रीं सौ: ४ मणिपूरे
ॐ ३ श्रीं ४ नं क्लीं मध्यमाकलारूपिणी० श्रीं सौ: ४ अनाहते
ॐ ३ श्रीं ४ पं ऐं वैखरीकलारूपिणी० श्रीं सौ: ४ वक्षसि
ॐ ३ फं सौ: साकारकलारूपिणी० श्रीं सौ: ४ कण्ठे
ॐ ३ बं ह्री निरामयाकलारूपिणी० श्रीं सौ: ४ मुखे
ॐ ३ भं श्री चिदानन्दकलारूपिणी० श्रीं सौ: ४ नेत्रयो:
ॐ ३ मं क ४ पातालव्यापिनीकलारूपिणी० श्रीं सौ: ४ आज्ञायाम्
ॐ ३ यं ह ५ मर्त्यव्यापिनीकलारूपिणी० श्रीं सौ: ४ ललाटे
ॐ ३ रं स ३ स्वर्गव्यापिनीकलारूपिणी० श्रीं सौ: ४ इन्द्रौ
ॐ ३ लं सौ: ४ आकाशव्यापिनीकलारूपिणी० श्रीं सौ: ४ बिन्दौ
ॐ ३ वं ऐं महदाकाशव्यापिनीकलारूपिणी० श्रीं सौ: ४ नादे
ॐ ३ शं षं ह्रीं विश्वव्यापिनीकलारूपिणी० श्रीं सौ: ४ नादान्ते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ३ सं हं क्षं श्रीं विश्वाङ्कुरव्यापिनीकलारूपिणी० श्रीं सौः ४ ब्रह्मरन्ध्रे

इति महाकलाधीश्वरीन्यासः।

(८.५) **अथ बीजकलान्यासः** (वर्णारविन्दान्तर्गतकलाब्जे) -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः अं कं थं हं श्रीं चित्कलापराम्बायै नमः

श्रीं सौं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं आधारे

ॐ ३ श्रीं ४ आं खं दं ळं ह्रीं सत्कलापराम्बायै नमःश्रीं सौं ४ स्वाधिष्ठाने

" इं गं धं क्षं क्लीं ज्ञानकलापराम्बायै नमः " मणिपूरे।

" ईं घं नं ऐं संवित्कलापराम्बायै नमः " अनाहते।

" उं ङं प सौः विरागताकलाम्बायै नमः " वक्षसि।

" ऊं चं फं ॐ मोक्षकलाम्बायै नमः " कण्ठे।

" ऋं छं बं ह्रीं परमाणुकलाम्बायै नमः " मुखे।

" ॠं जं भं श्रीं विद्याकलाम्बायै नमः " नेत्रयोः।

" लृं झं मं क ४ विज्ञानकलाम्बायै नमः " आज्ञायाम्।

" लॄं ञं यं ह ५ सन्तोषकलाम्बायै नमः " ललाटे।

" एं टं रं स ३ तृप्तिकलाम्बायै नमः " इन्दौ।

" ऐं ठं लं सौः परब्रह्मप्रकाशिनीकलाम्बायै नमः " बिन्दौ।

" ओं डं वं ऐं शक्तिकलाम्बायै नमः " वृत्ते।

" औं ढं शं क्लीं ऊर्ध्वाधःकलाम्बायै नमः " नादे।

" अं णं षं ह्रीं व्याप्तिकलाम्बायै नमः " नादान्ते।

" अः तं सं श्रीं पराकलाम्बायै नमः " ब्रह्मरन्ध्रे।

इति बीजकलान्यासः।

इति विन्यस्य कर्णिकायां अकथादित्रिकोणं विभाव्य त्रिपुरकोणेषु चरणत्रयं (ब्रह्मरन्ध्रे) न्यसेत्।

(८.६) **अथ चरणन्यासः** -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क एईलहसकहल सकल ह्रीं श्री ह्रीं ॐ सौः ऐं क्लीं ह्रीं रक्तचरणश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ ३ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः क १३....ऐं ह्रीं श्रीं ह सौः स्हौं हंसः सोहं शिवः स्हों स्हौं श्रीं ह्रीं ऐं क १३ सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं शुक्लचरणश्रीपादुकां०।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ३ श्रीं ४ ॐ ह्रीं श्रीं क १३ ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें हसौं स्हौं ऐं फें ह सौः हस्ख्फ्रों श्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं क १५ श्रीं ह्रीं ॐ सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं मिश्रचरणश्री०।

ॐ ३ श्रीं ४ श्रीं क १३ सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं तुरीयचरणश्रीपादुकां०

(इति त्रिकोणमध्यदक्षिणतः।)

ॐ ३ श्रीं ४ ॐ ह्रीं श्रीं क १५ हस्रौं हस्क्रें.....लज्स्रीं हस हस हस्रौं क १३ न्फं हलीं श्रीं ह्रीं ॐ हसौं स्हौं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं तुरीयातीतचरणश्रीपादुकां०।

(इति त्रिकोणमध्यवामतः।)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ४ श्रीं क १५ ॐ ह्रीं श्रीं क १५ श्रीं ह १५ सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं श्रीं परापरनिर्वाणचरणश्रीपादुकां पूजयामि नमः। (इति तयोर्मध्ये।)

ततस्तेनैव ध्यायेत्।

यत्कामुकः परशिवः खलु चिन्मयोऽपि।
कामेश्वरत्वमगमज्जगतां हिताय ।
यत् सर्वदा वरदयावृतपुष्पबाण-
मोक्षप्रदं किमपि वस्तु ममाविरस्तु।। इति ध्यात्वा-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं १५ सौं ४-ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं अष्टादशाक्षरी निर्वाणोत्तीर्ण परब्रह्मस्वरूपा महानिर्वाणकलातीता श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इति मानसैरुपचारैः सम्पूज्य मूलविद्यां यथाशक्ति जप्त्वा, जपं निवेद्य, योनिमुद्रया प्रणम्य, द्वितीयचरणविद्यां विन्यस्य, तत उक्तरीत्या अवरोहसिद्धेश्वरीन्यासं विधाय ताः सर्वाः तत्समानरूपाः प्रत्येकं षष्ट्युत्तर त्रिशतरश्मिपरिखाऽऽवृता ध्येयाः।

इति विन्यस्य देवेशीं, ध्यात्वा तां चिन्मयीं पराम्।
संघट्टमुद्रया देवीं, पूजयेदुपचारकैः ।।१।।
क्षोभिण्याद्याः शक्ररूप (१४) स्कन्धिनी दण्डिनीति च।
कलामुद्रां प्रदर्श्याथ संस्मरेत् षोडशीं पराम् ।।२।।
[1]आद्यं बीजं समुच्चार्य, ब्रह्महत्यां विनाशयेत्।
द्वितीयं सर्वविश्वानां, प्रादक्षिण्यफलं लभेत्।।३।।
तृतीयं सर्वविद्यानां, पारायणफलं लभेत्।
चतुर्थं तु क्रियारूपमज्ञानतिमिरापहम् ।।४।।

---

१. वाग्भवम् । वाग् माया रमा वाक् कामशक्तिः। (ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं)।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पञ्चमं राजसूयञ्च, शतकोटिफलं लभेत्।
षष्ठं निर्वाणफलदं, सप्तमं श्रीकरं परम्।।५।।
अष्टमं सर्वसाम्राज्यं, लोकालोकाधिपत्यदम्।
नवमं वाक्यदं देवं, दशमं सर्वकामदम्।।६।।
एकादशं महादेवं, निग्रहानुग्रहप्रदम् ।
त्रिकालं ज्ञानदं पश्चात्, स्वात्मज्ञानप्रदं ततः।।७।।
शुक्रबीजं समुच्चार्य, ऋद्धिर्सिद्धिर्भवेत् प्रभो।
बीजं पञ्चदशं प्रोक्तं, शिवत्वफलदायकम्।।८।।
महामुक्तिप्रदं देव, षोडशाख्यं परात्परम्।
महासप्तदशी विद्या, तल्लीना तत्स्वरूपिणी।।९।।
अष्टादशाक्षरी विद्या, स्वस्वरूपात्मविग्रहा।
तस्याः फलं न जानीमो, न जानीमः पुनः पुनः।।१०।।
तस्या विज्ञानमात्रेण, जीवन्मुक्तो न संशयः।
मयाऽपि च त्वया चैव, वन्दनीयो भवेद् ध्रुवम्।।११।।

इति श्रीविद्या-षोढान्यासः।

(ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्त्रीं हूं स्त्रौं क्षौं छ्रीं फ्रें ग्लूं क्ष्म्लीं इति बाला द्वादशाक्षरी बोध्या।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

९ अथ श्रीविद्यामहाषोढा-न्यासः

प्रपंचो भुवनं मूर्तिर्मन्त्रदैवतमातरः।
महाषोढाह्वयो न्यासाः सर्वन्यासोत्तमोत्तमाः।।

अस्य श्रीश्रीविद्यामहाषोढान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः, जगतीच्छन्दः, श्रीमदर्धनारीश्वरो देवता, प्रपञ्चभुवनं बीजं, मूर्तिमन्त्ररशक्तिर्दैवतमातरः कीलकं, श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः —

ब्रह्मणे ऋषये नमः - शिरसि। जगतीच्छन्दसे नमः - मुखे। श्रीमदर्ध-नारीश्वरदेवतायै नमः — हृदये। प्रपञ्चभुवनात्मकबीजाय नमः - गुह्ये, मूर्तिमन्त्रात्मकशक्तये नमः - पादयोः, दैवतमात्रात्मककीलकाय नमः - नाभौ, विनियोगाय नमः - सर्वाङ्गे।

अङ्गन्यासाः—

१-अङ्गुलीन्यासः	'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः'	हों ईशानाय नमः	अङ्गुष्ठयोः
	६	हें तत्पुरुषाय नमः	तर्जन्योः
	६	हुं अघोराय नमः	मध्यमयोः
	६	हिं वामदेवाय नमः	अनामिकयोः
	६	हं सद्योजाताय नमः	कनिष्ठिकयोः
२-देहन्यासः	६	हों ईशानाय नमः	मूर्ध्नि
	६	हें तत्पुरुषाय नमः	मुखे
	६	हुं अघोराय नमः	हृदये
	६	हिं वामदेवाय नमः	गुह्ये
	६	हं सद्योजाताय नमः	पादयोः
३-वक्त्रन्यासः	६	हों ईशानायोर्ध्ववक्त्राय नमः	मुर्ध्नि-अङ्गुष्ठेन
	६	हें तत्पुरुषाय पूर्ववक्त्राय नमः	मुखे-तर्जन्या
	६	हुं अघोराय दक्षिणवक्त्राय नमः	दक्षकर्णे-मध्यमया
	६	हिं वामदेवायोत्तरवक्त्राय नमः	वामकर्णे-अनामिकया
	६	हं सद्योजाताय पश्चिमवक्त्राय नमः	चोरकूपे-कनिष्ठिकया

करषडङ्गन्यासौ-

ह्सां-अंगुष्ठाभ्यां नमः, ह्सीं-तर्ज०, ह्सूं-मध्य०, ह्सैं-अना०, ह्सौं-कनि०, ह्सः - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ह्सां-हृदयाय नमः, हसीं-शिरसे०, हसूं-शिखायै०, हसैं-कवचाय०, ह्सौं-नेत्रत्रयाय०, ह्सः - अस्त्राय फट्।

ध्यानम्-पञ्चवक्त्रं चतुर्बाहुं, सर्वाभरणभूषितम्।
चन्द्र-सूर्य-सहस्राभं, शिवशक्त्यात्मकं भजे।।

(९.१) **अथ प्रपञ्च न्यासः -**

६ = 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः'

६	अं प्रपञ्चरूपायै श्रिये नमः	शिरसि
६	आं द्वीपरूपायै मायायै नमः	मुखवृत्ते
६	इं जलधिरूपायै कमलायै नमः	दक्षनेत्रे
६	ईं गिरिरूपायै विष्णुवल्लभायै नमः	वामनेत्रे
६	उं पत्तनरूपायै पद्मधारिण्यै नमः	दक्षकर्णे
६	ऊं पीठरूपायै समुद्रतनयायै नमः	वामकर्णे
६	ऋं क्षेत्ररूपायै लोकमात्रे नमः	दक्षनासापुटे
६	ॠं वनरूपायै कमलवासिन्यै नमः	वामनासापुटे
६	लृं आश्रमरूपायै इन्दिरायै नमः	दक्षगण्डे
६	लॄं गुहारूपायै मायायै नमः	वामगण्डे
६	एं नदीरूपायै रमायै नमः	ऊर्ध्वोष्ठे
६	ऐं चत्वररूपायै पद्मायै नमः	अधरोष्ठे
६	ओं उद्भिज्जरूपायै नारायणप्रियायै नमः	ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ
६	औं स्वेदजरूपायै सिद्धलक्ष्म्यै नमः	अधोदन्तपंक्तौ
६	अं अण्डजरूपायै राजलक्ष्म्यै नमः	जिह्वाग्रे
६	अः जरायुजरूपायै महालक्ष्म्यै नमः	कण्ठे
६	कं लवरूपायै आर्यायै नमः	दक्षबाहुमूले
६	खं त्रुटिरूपायै उमायै नमः	दक्षकूर्परे
६	गं कलारूपायै चण्डिकायै नमः	दक्षमणिबन्धे
६	घं काष्ठारूपायै दुर्गायै नमः	दक्षकरांगुलिमूले
६	ङं निमेषरूपायै शिवायै नमः	दक्षकरांगुल्यग्रे
६	चं श्वासरूपायै अपर्णायै नमः	वामबाहुमूले
६	छं घटिकारूपायै अम्बिकायै नमः	वामकूर्परे
६	जं मुहूर्तरूपायै सत्यै नमः	वाममणिबन्धे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

६	झं प्रहररूपायै ईश्वर्यै नमः	वामकरांगुलिमूले
६	ञं दिवसरूपायै शाम्भव्यै नमः	वामकरांगुल्यग्रे
६	टं सन्ध्यारूपायै ईशान्यै नमः	दक्षोरूमूले
६	ठं रात्रिरूपायै पार्वत्यै नमः	दक्षजानुनि
६	डं तिथिरूपायै सर्वमङ्गलायै नमः	दक्षगुल्फे
६	ढं वाररूपायै दाक्षायण्यै नमः	दक्षपादांगुलिमूले
६	णं नक्षत्ररूपायै हैमवत्यै नमः	दक्षपादांगुल्यग्रे
६	तं योगरूपायै महामायायै नमः	वामोरूमूले
६	थं करणरूपायै महेश्वर्यै नमः	वामजानुनि
६	दं पक्षरूपायै मृडान्यै नमः	वामगुल्फे
६	धं मासरूपायै रुद्राण्यै नमः	वामपादांगुलिमूले
६	नं राशिरूपायै शर्याण्यै नमः	वामपादांङ्गुल्यग्रे
६	पं ऋतुरूपायै परमेश्वर्यै नमः	दक्षपार्श्वे
६	फं अयनरूपायै काल्यै नमः	वामपार्श्वे
६	बं वत्सररूपायै कात्यायन्यै नमः	पृष्ठे
६	भं युगरूपायै गौर्यै नमः	नाभौ
६	मं प्रलयरूपायै भवान्यै नमः	जठरे
६	यं पञ्चभूतरूपायै ब्राह्म्यै नमः	हृदये
६	रं पञ्चतन्मात्रारूपायै वागीश्वर्यै नमः	दक्षकक्षे
६	लं पञ्चकर्मेन्द्रियरूपायै वाण्यै नमः	गलपृष्ठे
६	वं पञ्चज्ञानेन्द्रियरूपायै सावित्र्यै नमः	वामकक्षे
६	शं पञ्चप्राणरूपायै सरस्वत्यै नमः	हृदयादिदक्षकरांगुल्यन्तं
६	षं गुणत्रयरूपायै गायत्र्यै नमः	हृदयादिवामकरांगुल्यन्तं
६	सं अन्तःकरणचतुष्टयरूपायै वाक्प्रदायै नमः	हृ.द.पा. "
६	हं अवस्थाचतुष्टयरूपायै शारदायै नमः	हृ.वाम "
६	ळं सर्वधातुरूपायै भारत्यै नमः	कट्यादिपादांगुल्यन्तं
६	क्षं दोषत्रयरूपायै विद्यात्मिकायै नमः	कट्यादिब्रह्मरन्ध्रान्तं

इत्येकपञ्चाशच्छक्तिमातृकास्थानेषु विन्यस्य ततः - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौं स्हौं अं.....क्षं (अकारदिक्षकारान्तां मातृकामुच्चार्य) सकलप्रपञ्चाधिदेवतायै श्रीपराम्बदेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ - इति सर्वाङ्गे व्यापकं कुर्यात्।

इति प्रपञ्चन्यासः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(९.२) **अथ भुवनन्यासः -**

अथ पादयोः –'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः' अं आं इं अतललोकनिलयशतकोटि-
गुह्याद्यनन्तयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

गुल्फयोः ६ ईं उं ऊं वितललोकनिलयशतकोटिगुह्यतरानन्तयोगिनी-
मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

जानुनि ६ ऋं ॠं लृं सुतललोकनिलयशतकोट्यतिगुह्याचिन्त्य-
योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

जान्वोः ६ लॄं एं ऐं महातललोकनिलयशतकोटिमहागुह्यस्वतन्त्र-
योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

ऊर्वोः ६ ओं औं तलातललोकनिलयशतकोटिपरमगुह्येच्छा-
योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

स्फिचोः (कट्यधोभागयोः) ६ अं अः रसातललोकनिलयशतकोरिहस्यज्ञानयोगिनी-
मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

मूलाधारे ६ कं खं गं घं ङं पाताललोकनिलयशतकोटिरहस्यतर क्रिया–
योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्यम्बादेव्यै नमः।

स्वाधिष्ठाने ६ चं छं जं झं ञं भूर्लोकनिलयशतकोट्यतिरहस्यडाकिनीयोगिनी-
मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

मणिपूरे ६ टं ठं डं ढं णं भुवर्लोकनिलयशकोटिमहारहस्यराकिनी-
मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

अनाहते ६ तं थं दं धं नं स्वर्लोकनिलयशतकोटिपरमरहस्यलाकिनीयोगिनी-
मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

विशुद्धौ ६ पं फं बं भं मं महर्लोकनिलयशतकोटिगुप्तकाकिनीयोगिनी-
मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

आज्ञायां ६ यं रं लं वं जनलोकनिलयशतकोटिगुप्ततरसाकिनीयोगिनी-
मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

ललाटे ६ शं षं सं हं तपोलोकनिलयशतकोट्यतिगुप्तहाकिनीयोगिनी-
मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

ब्रह्मरन्ध्रे ६ ळं क्षं सत्यलोकनिलयशतकोटिमहागुप्तयाकिनी-
योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

इति विन्यस्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

६ समस्तमातृकामुच्चार्य सकलभुवनाधिपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः
ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ इति व्यापकं कुर्यात्।

इति भुवनन्यासः।

(९.३) **अथ मूर्तिन्यासः**

शिरसि	'ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः'	अं केशवायाक्षरशक्त्यै	नमः
मुखे	"	आं नारायणायाद्याशक्त्यै	"
दक्षिणांसे	"	इं माधवायेष्टदायै	"
वामांसे	"	ईं गोविन्दायेशान्यै	"
दक्षपार्श्वे	"	उं विष्णवे उग्रायै	"
वामपार्श्वे	"	ऊं मधुसूदनायोर्ध्वनयनायै	"
दक्षकट्याम्	"	ऋं त्रिविक्रमाय ऋद्ध्यै	"
वामकट्याम्	"	ॠं वामनाय रूपिण्यै	"
दक्षोरौ	"	लृं श्रीधराय लुप्तायै	"
वामोरौ	"	लॄं हृषीकेशाय लूनदोषायै	"
दक्षजानुनि	"	एं पद्मनाभायैकनायिकायै	"
वामजानुनि	"	ऐं दामोदरायैकारिण्यै	"
दक्षजङ्घायाम्	"	ओं वासुदेवायौघवत्यै	"
वाजजङ्घायाम्	"	औं सङ्कर्षणयौर्वकामायै	"
दक्षपादे	"	अं प्रद्युम्नायाञ्जनप्रभायै	"
वामपादे	"	अः अनिरुद्धायास्थिमालाधरायै	"
दक्षपादाग्रादूरूमूलपर्यन्तम्	"	कं भं भवाय करभद्रायै	"
वामपादाग्रादूरूमूलपर्यन्तम्	"	खं बं शर्वाय खगबलायै	"
दक्षपार्श्वे	"	गं फं हराय गरिमफलप्रदायै	"
वामपार्श्वे	"	घं पं पशुपतये घोरपादायै	"
दक्षदोर्मूले	"	ङं नं उग्राय पंक्तिवासायै	"
वामदोर्मूले	"	चं धं महादेवाय चन्द्रार्धधारिण्यै	"
कण्ठे	"	छं दं भीमाय छन्दोमय्यै	"
नयने	"	जं थं ईशानाय जगत्स्थानायै	"
दक्षकर्णे	"	झं तं तत्पुरुषाय झंकृत्यै	"
वामकर्णे	"	ञं णं अघोराय ज्ञानदायै	"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाले	"	टं ढं सद्योजाताय टंकढक्कधरायै	"
शिरसि	"	ठं डं वामदेवाय ठंकृतिडामर्यै	"
मूलाधारे	"	यं ब्रह्मणे यक्षिण्यै	"
स्वाधिष्ठाने	"	रं प्रजापतये रञ्जिन्यै	"
मणिपूरके	"	लं वेधसे लक्ष्म्यै	"
अनाहते	"	वं परमेष्ठिने वज्रिण्यै	"
विशुद्धौ	"	शं पितामहाय शशिधरायै	"
आज्ञायाम्	"	षं विधात्रे षडाधारालयायै	"
अर्धेन्दौ	"	सं विरिञ्चये सर्वनायिकायै	"
रोधिन्याम्	"	हं स्रष्ट्रे हसिताननायै	"
नादे	"	ळं चतुराननाय ललितायै	"
नादान्ते	"	क्षं हिरण्यगर्भाय क्षमायै नमः, इति	

विन्यस्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौ स्हौः अं.....क्षं (सकलमातृकामुच्चार्य) सकल- त्रिमूर्त्यात्मिकायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ - इति व्यापकं कुर्यात्।

इति मूर्तिन्यासः।

(९.४) **अथ मन्त्रन्यासः**

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं इं एकलक्षकोटिभेद ॐ प्रणवाद्येका- क्षरात्मिकायै सकलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै क ए ई ल ह्रीं कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः। मूलाधारे।

ॐ ५ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्सौः ईं उं ऊं द्विलक्षकोटिभेद हंसः हंसादि द्व्यक्षरात्मिकायै सकलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै हसकहल ह्रीं सकलह्रीं द्विकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः । लिङ्गे, स्वाधिष्ठाने।

ॐ ५ ऋं ॠं लृं त्रिलक्षकोटिभेद रां रीं रमलवरयूं वह्न्यादि त्र्यक्ष रात्मिकायै सकलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै कएईलह्रीं, हसकहलहीं सकलह्रीं त्रिकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः । मणिपूरके।

ॐ ५ लृं एं ऐं चतुर्लक्षकोटिभेद सां सीं 'समलवरयूं' चन्द्रादि चतुर- क्षरात्मिकायै सकलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै सहकएईल ह्रीं, सहकहएईल ह्रीं, सहकह एईल ह्रीं, हसकलह सकहल ह्रीं, हसकएईल ह्रीं, (हसकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, हसकल ह्रीं सकल ह्रीं) चतुष्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः। अनाहते।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ५ ओं औं अं अः पञ्चलक्षकोटिभेद ह्रां ह्रीं सहमलवरयूं हंस ह्रां ह्रीं सोऽहं सः सूर्यादिपञ्चाक्षरात्मिकायै सकलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै हसकल ह्रीं, सहकल ह्रीं, (हसकल ह्रीं सकल ह्रीं) सएईल ह्रीं, सहकहल ह्रीं, सहकहल ह्रीं पञ्चकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः । कण्ठे, विशुद्धौ।

ॐ ५ कं खं गं षड्लक्षकोटिभेद हसकल ह्रीं, सकहसकलह्रीं सकहसल ह्रीं स्कन्दादिषडक्षरात्मिकायै सकलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै हसकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, सहकल ह्रीं, सहकहल ह्रीं सहसकल ह्रीं, षट्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः। मुखे, आज्ञायाम्।

ॐ ५ घं ङं चं सप्तलक्षकोटिभेद ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गमलवरयूं गणेशादिसप्ताक्षरात्मिकायै सकलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै कसकह् ह्रीं, हसकल ह्रीं, हसकल ह्रीं, सहकह ह्रीं, कसकल ह्रीं, हसलकल ह्रीं, सकलरल ह्रीं, सप्तकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः । नेत्रयोः, बिन्दौ।

ॐ ५ छं जं झं अष्टलक्षकोटिभेद ह्रीं वं वटुकाय नमः वटुकाद्यष्टाक्षरात्मिकायै सकलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै हकहलह्रीं, हकह ह्रीं, सहकल ह्रीं, हसकल ह्रीं, हसकहल ह्री, सकलरल ह्री, सकल ह्रीं, हसकह हसकहल सकल ह्रीं, अष्टकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः। आज्ञायाम्, नादे।

ॐ ५ ञं टं ठं नवलक्षकोटिभेद कं कां कीं कमलवरयूं ब्रह्मणे नमः ब्रह्मादिनवाक्षरात्मिकायै सकलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै हसकल ह्रीं, हकहल ह्रीं, कहहल ह्रीं, कएईल ह्रीं, हलकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, हसकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, नवकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः। रोघिन्याम् इन्दौ।

ॐ ५ डं ढं णं दशलक्षकोटिभेद ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं विष्णवे नमः विष्ण्वादिदशाक्षरात्मिकायै सकलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै कएईल ह्रीं, हसकलहल ह्रीं, सकल ह्रीं, कल ह्रीं, सक ह्रीं, हलस ह्रीं, हंसह्रीं, सएल ह्रीं कल ह्रीं, सकल ह्रीं दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः । बिन्दौ, नादे।

ॐ ५ तं थं दं एकादशलक्षकोटिभेद ॐ हौं नमो भगवते रुद्राय रुद्राद्येकादशाक्षरात्मिकायै सकलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै कएई ल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, सहकहल ह्रीं, हकहल ह्री, कहकल ह्रीं कएईल ह्रीं, हसकल ह्रीं, हकह ल ह्रीं, कहएल ह्रीं, हकलसक ह्रीं एकादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः। कलायाम्, नादान्ते।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ धं नं पं द्वादशलक्षकोटिभेद ॐ श्रीं क्लीं गद्यपद्यवासिन्यै स्वाहा सरस्वत्यादिद्वादशाक्षरात्मिकायै सकलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै ह्रीं गौरि रुद्रदयिते योगेश्वरि स्वाहा कएरलर ह्रीं, हकलरहल ह्रीं, सरकलर ह्रीं, कएईरल ह्रीं, हकहलर ह्रीं, सहकलर ह्रीं, कहल ह्रीं, हकलहलर ह्रीं, सकल ह्रीं, कएईल ह्रीं, हकहसर ह्रीं, हसकल ह्रीं, द्वादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

उन्मन्यां, व्यापिकायाम्

ॐ ५ फं बं भं त्रयोश्दशलक्षकोटिभेद ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं लक्ष्म्यादित्रयोदशाक्षरात्मिकायै नमः सकलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, हसकह ह्रीं, हसकह ल ह्रीं, सकल ह्रीं, सएईल् ह्रीं, सहकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, हसकल ह्रीं, ह्स्क्ल ह्रीं, सकल ह्रीं, हसकहलहसल सकल ह्रीं त्रयोदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः । शिरोवृत्ते-निरोधिकायाम्

ॐ ५ मं यं रं चतुर्दशलक्षकोटिभेद ह्रीं गौरि रुद्रदयिते योगेश्वरि स्वाहा गौर्यादिचतुर्दशाक्षरायै सकलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै क्एईल् ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, कहकह ह्रीं, कएईल ह्रीं, हसकल ह्रीं, ह कलस ह्रीं, कहरल ह्रीं, हकलस ह्रीं, कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सहसकल ह्रीं, ह सकलहसकहल ह्रीं, चतुर्दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः। नादे

ॐ ५ लं वं शं षं पञ्चदशलक्षकोटिभेद ह्रीं 'ज्वल ज्वल' शूलिनि दुष्टग्रहं हूं फट् स्वाहा दुर्गादिपञ्चदशाक्षरात्मिकायै सकलमन्त्राधिदेवतायै नमः सकलफलप्रदायै ईएकल ह्रीं, कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, ह कलस ह्रीं, कएईल ह्रीं, हसकल ह्रीं, हकहल ह्रीं, कहयल ह्रीं, हसकल ह्रीं, सकहल ह्रीं, कएईल ह्रीं, हकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, हकलस ह्रीं पञ्चदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः ।

नादान्ते, श्रवणमण्डले

ॐ सं हं ळं क्षं षोडशलक्षकोटिभेदत्रिपुराश्रीषोडशाक्षरात्मिकायै सकलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै सकल ह्रीं, हलकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सहकल ह्रीं, कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, हकहल ह्रीं, कहलर ह्रीं, हकलस ह्रीं, कएईल ह्रीं, हसकल ह्रीं, हकहल ह्रीं, कहरल ह्रीं, हसकलस ह्रीं, षोडशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रे

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह् सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ओं अं....क्षं सर्वमन्त्रात्मिकायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः हसौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ इति व्यापकं न्यसेत्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

९.५ अथ देवतान्यासः —

६ = ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः

६ अं आं सहस्त्रकोटिऋषिकुलसेवितायै निवृत्त्यम्बादेव्यै नमः। दक्षपादे

६ इं ईं सहस्रकोटियोगिनीकुलसेवितायै प्रतिष्ठाम्बादेव्यै नमः। वामपादे

६ उं ऊं सहस्रकोटितपस्विकुलसेवितायै विद्याम्बादेव्यै नमः। दक्षगुल्फे

६ ऋं ॠं सहस्रकोटिशान्तकुलसेवितायै शान्ताम्बादेव्यै नमः। वामगुल्फे

६ लृं लॄं सहस्रकोटिमुनिकुलसेवितायै शान्त्यतीताम्बादेव्यै नमः। दक्षजङ्घायाम्

६ एं ऐं सहस्रकोटिदैवतकुलसेवितायै हृल्लेखाम्बादैव्यै नमः। वामजङ्घायाम्

६ ओं औं सहस्रकोटिराक्षसकुलसेवितायै गगनाम्बादेव्यै नमः । दक्षजानुनि

६ अं अः सहस्रकोटिविद्याधरकुलसेवितायै रक्ताम्बादेव्यै नमः । वामजानुनि

६ कं खं सहस्रकोटिसिद्धकुलसेवितायै महोच्छुष्माम्बादेव्यै नमः । दक्षोरौ

६ गं घं सहस्रकोटिसाध्यकुलसेवितायै करालिकाम्बादेव्यै नमः। वामोरौ

६ ङं चं सहस्रकोट्यप्सरःकुलसेवितायै जयाम्बादेव्यै नमः । दक्षोरुमूले

६ छं जं सहस्रकोटिगन्धर्वकुलसेवितायै विजयाम्बादेव्यै नमः । वामोरुमूले

६ झं ञं सहस्रकोटिगुह्यककुलसेवितायै अजिताम्बादेव्यै नमः। दक्षपार्श्वे

६ टं ठं सहस्रकोटियक्षकुलसेवितायै अपराजिताम्बादेव्यै नमः । वामपार्श्वे

६ डं ढं सहस्रकोटिकिन्नरकुलसेवितायै वामाम्बादेव्यै नमः। दक्षस्तने

६ णं तं सहस्रकोटिपन्नगकुलसेवितायै ज्येष्ठाम्बादेव्यै नमः। वामस्तने

६ थं दं सहस्रकोटिपितृकुलसेवितायै रौद्र्यम्बादेव्यै नमः । दक्षदोर्मूले

६ धं नं सहस्रकोटिगणेश्वरकुलसेवितायै मायाम्बादेव्यै नमः । वामदोर्मूले

६ पं फं सहस्रकोटिभैरवकुलसेवितायै कुण्डलिन्यम्बादेव्यै नमः । दक्षभुजे

६ बं भं सहस्रकोटिवटुककुलसेवितायै काल्यम्बादेव्यै नमः । वामभुजे

६ मं यं सहस्रकोटिक्षेत्रेशकुलसेवितायै कालरात्र्यम्बा देव्यै नमः । दक्षांसे

६ रं लं सहस्रकोटिप्रमथकुलसेवितायै भगवत्यम्बादेव्यै नमः। वामांसे

६ वं शं सहस्रकोटिब्रह्मकुलसेवितायै सर्वेश्वर्यम्बादेव्यै नमः दक्षकर्णे

६ षं सं सहस्रकोटिविष्णुकुलसेवितायै सर्वज्ञात्र्यम्बादेव्यै नमः। वामकर्णे

६ हं ळं सहस्रकोटिरुद्रकुलसेवितायै सर्वकर्त्र्यम्बादेव्यै नमः। भाले

६ क्षं सहस्रकोटिचराचरकुलसेवितायै कुलशक्त्यम्वादेव्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रे

६ अं....क्षं (सकलमातृकामुच्चार्य) समस्तदेवताधिपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः।

ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ। इति व्यापकम् कुर्यात्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

९.६ **अथ मातृकाभैरवन्यासः -**

६= 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौ स्हौः'

६ कं खं गं घं ङं अनन्तकोटिभूचरीकुलसहितायै* आं क्षां मङ्गलाम्बादेव्यै आं क्षां ब्रह्माण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिभूचरकुलसहिताय अं क्षं मङ्गलनाथाय नमः अं क्षं असिताङ्गभैरवनाथाय नमः — मूलाधारे

६ चं छं जं झं ञं अनन्तकोटिखेचरीकुलसहितायै ईं ळां चर्चिकाम्बादेव्यै ईं ळां माहेश्वर्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिवेतालकुलसहिताय इं ळं चर्चिकनाथाय इं ळं रुरुभैरवनाथाय नमः — स्वाधिष्ठाने

६ टं ठं डं ढं णं अनन्तकोटिपातालचरीकुलसहितायै ऊं हां योगेश्वर्यम्बादेव्यै ऊं हां कौमार्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिपिशाचकुलसहिताय उं हं योगेश्वरनाथाय उं हं चण्डभैरवनाथाय नमः — मणिपूरे

६ तं थं दं धं नं अनन्तकोटिदिक्चरीकुलसहितायै ऋं सां हरसिद्धाम्बादेव्यै ऋं सां वैष्णव्यम्बादेव्यै अनन्तकोट्यपस्मारकुलसहिताय ऋं सं हरसिद्धनाथाय ऋं सं क्रोधभैरवनाथाय नमः — अनाहते

६ पं फं बं भं मं अनन्तकोटिसहचरीकुलसहितायै लृं षां भट्टिन्यम्बादेव्यै लृं षां वाराह्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिब्रह्मराक्षसकुलसहिताय लृं षं भट्टिनाथाय लृं षं उन्मत्तभैरवनाथाय नमः — विशुद्धौ

६ यं रं लं वं अनन्तकोटिगिरिचरीकुलसहितायै ऐं शां किलिकिलाम्बादेव्यै ऐं शां इन्द्राण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिचेटककुलसहिताय एं शं किलि किलनाथाय एं शं कपालिभैरवनाथाय नमः — आज्ञायाम्

६ शं षं सं हं अनन्तकोटिवनचरीकुलसहितायै औं वां कालरात्र्यम्बादेव्यै औं वां चामुण्डाम्बादेव्यै अनन्तकोटिप्रेतकुलसहिताय ओं वं कालरात्रिनाथाय ओं वं भीषणभैरवनाथाय नमः — भाले

६ ळं क्षं अनन्तकोटिजलचरी [१]कुलसहितायै अः ळां भीषणाम्बादेव्यै अः ळां महालक्ष्म्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिकूष्माण्डकुलसहिताय अः ळं भीषणनाथाय अः ळं संहारभैरवनाथाय नमः — ब्रह्मरन्ध्रे

६ अं.....क्षं (समस्तमातृकामुच्चार्य) समस्तमातृकाभैरवाधिदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः, ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ। इति व्यापकं कुर्यात्।

इति मातृका-भैरवन्यासः।

---

* सेवितायै-पाठ।

१. कुलचरी - इति पाठभेदः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनन्तरं पूर्वोक्तैः हसां हसीं इत्यादिभिः करषडङ्गन्यासं विधाय देवं ध्यायेत्, यथा—

अमृतार्णवमध्योद्यत्स्वर्णद्वीपे मनोरमे ।
कल्पवृक्षवनान्तःस्थे नवमाणिक्यमण्डपे।।
नवरत्नमयश्रीमत्सिंहासनगताम्बुजे ।
त्रिकोणान्तः समासीनं चन्द्रसूर्यायुतप्रभम्।।
अर्धाम्बिकासमायुक्तं प्रविभक्तविभूषणम्।
कोटिकन्दर्पलावण्यं सदा षोडशवार्षिकम्।।
मन्दस्मितमुखाम्भोजं, त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम्।
दिव्याम्बरस्रगालेपं दिव्याभरणभूषितम्।।
पानपात्रं च चिन्मुद्रां त्रिशूलं पुस्तकं करैः।
विद्यासंसदि बिभ्राणं सदानन्दमुखेक्षणम्।।
महाषोढोदिताशेषदेवतागणसेवितम् ।
एवं चित्ताम्बुजे ध्यायेदर्धनारीश्वरं शिवम्।।
पुरुषं वा स्मरेद्देवी! स्त्रीरूपं वा विचिन्तमेत्।
अथवा निष्फलं ध्यायेत् सच्चिदानन्दलक्षणम्।।
सर्वतेजोमयं ध्यायेत् सचराचरविग्रहम्।

इति स्वाभेदेन ध्यात्वा योनि-लिङ्ग-सुरभि-कपाल-ज्ञान-त्रिशूल-पुस्तक-वनमाला-नभो-महामुद्रा इति दशमुद्राः प्रदर्श्य, शिरसि श्रीगुरुं ध्यायेत्।

सहस्रदलपङ्कजे सकलशीतरश्मिप्रभं,
वराभयकराम्बुजं विमलगन्धपुष्पाम्बरम्।
प्रसन्नवदनेक्षणं सकलदेवतारूपिणं,
स्मरेच्छिरसि हंसगं तदभिधानपूर्वं गुरुम्।।

इति श्रीगुरुं ध्यात्वा तद्विद्यया तत्पादुकां शिरसि विन्यस्य, प्रणम्य स्वगुरुकृतं स्वनाम स्वमूलाधारे स्मृत्वा, शिवरूपं स्वात्मानं ध्यायेत्।

इति महाषोढान्यासः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१०. अथ श्रीविद्या-महाशक्तिन्यास-स्तोत्रम्

तत्र प्रथमं जगच्छून्याकारं निरालम्बं ध्यात्वा—'हुं पृथिव्यै नमः' इति स्वासनस्याधः पृथिवीं सम्पूज्य स्वासनं वामहस्तेन संस्पृशन् भुवनेश्वरीबीजं हृल्लेखां सप्तवारं जप्त्वा - '४ = ॐ ऐं ह्रीं श्रीं'।

४ ॐ जयायै नमः। ४ ॐ विजयायै नमः। ४ ॐ जयन्त्यै नमः।

४ ॐ अजितायै नमः । ४ ॐ अपराजितायै नमः। ४ ॐ सङ्गमायै नमः।

४ ॐ रम्भायै नमः — इति स्वासने सप्तशक्तीः पूजयेत् मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा—

ॐ अस्य श्रीशक्तिन्यासस्य परशिवऋषिः, अतिजगतीच्छन्दः श्रीपराशक्तिर्देवता, ऐं बीजं, श्रीं शक्तिः, सौः कीलकं, श्रीविद्याङ्गत्वेन महाशक्तिन्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-

परशिवऋषये नमः —शिरसि। अतिजगतीच्छन्दसे नमः —मुखे। श्रीपराशक्तिदेवतायै नमः —हृदये । ऐं बीजाय नमः —गुह्ये । श्रीं शक्तये नमः —पादयोः। सौः कीलकाय नमः —नाभौ । विनियोगाय नमः —सर्वाङ्गे।

कर-हृदयादिन्यासाः — ऐं, क्ली, सौः, ऐं, क्लीं, सौः, इति।

अङ्गन्यासः —

ॐ ४ ऐं ह्रीं श्रीं नमः योनौ। ४ ह्रां ह्रीं ह्रूं नमः नाभौ

ॐ ४ क्लां क्लीं क्लूं नमः कराग्रयोः। ४ ह्रां ह्रीं ह्रूं नमः हृदये

ॐ ४ सां सीं सूं नमः ललाटे। ४ ह्रां ह्रीं ह्रूं नमः कर्णयोः

ॐ ४ द्रां द्रीं द्रूं नमः लिङ्गे। ४ सौः श्रीं श्रीं नमः चिबुकाग्रे

ॐ ४ ऐं ईं सौः अं नमः ब्रह्मरन्ध्रे। इति विन्यस्य—

अकारादिक्षकारान्तानां सर्वेषां वर्णानां मूलभूतेऽकारे दुग्धे सर्पिर्वत् सूक्ष्मरूपेण स्थितं विभावयन् तन्मयानन्यवर्णान् वक्ष्यमाणेषु विन्यसेत्-

७ = 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः'

७ अं नमः मुखे

७ आं नमः तालुके

७ इं नमः नासाग्रे

७ ईं नमः पश्चिमलिङ्गे सीवन्यां मूलाधारगतज्योतिर्लिङ्गे वा

७ उं नमः गुदे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

७	ऊं नमः	पृष्ठे
७	ऋं नमः	कटिसन्धौ
७	ॠं नमः	वृषणान्ते
७	लृं नमः	पृष्ठमध्ये
७	लॄं नमः	लम्बिकाग्रे
७	एं नमः	सर्वाङ्गे

(पुनर्बिन्दूपरिगतत्रिरेखायां योनौ न्यासभावनया)

७	ऐं नमः	सर्वाङ्गे विन्यस्य

योनिरित्युच्यते शक्तिरेषा ब्रह्माण्डभेदिनी।
लेपं (लयं) विलीनयेद् देहे, रेफो बिन्दुरिति स्मृतः।।
द्वासप्ततिसहस्रेषु नाडीभेदेषु पञ्जरम्।
व्याप्यमाना महाशक्तिः कामिनीनामृतुक्रमे।।
तद्वशाद् द्वादशा वापि पञ्चपञ्चाशतः समाः।
नाडीचक्रागतं रक्तं योनिमार्गे निपातितम्।।
पुष्पीभूते भगे पुष्पं मासपक्षादिषु क्रमात्।
योनिरेखागतं बिन्दुं रक्तं जानीहि पङ्कजम्।।
मारुतोऽपि भगाकारे ऐङ्कारे संस्थितो विदुः।
ऐङ्कारोऽपि स्वयं योनिर्नात्र कार्या विचारणा।।
न्यस्त वाऽप्यत्र देवेशि! त्रैलोक्यं सचराचरम्।

इत्यन्तं श्लोकं समुच्चार्यास्यार्थं चिन्तयन् महाकामकलायां ब्रह्मरन्ध्रस्थायां लयं भावयित्वा—

७	ओं नमः	ब्रह्मरन्ध्रे।	७	औं नमः	नादमध्ये
७	अं नमः	नादान्ते।	७	अः नमः	कण्ठे
७	कं नमः	हृदि।	७	खं नमः	मस्तके
७	गं नमः	जङ्घयोः।	७	घं नमः	स्तनयोः
७	ङं नमः	नासिकान्ते।	७	चं नमः	आज्ञायाम्
७	छं नमः	वामकुक्षौ।	७	जं नमः	दक्षिणकुक्षौ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

७	झं नमः	ऊरुमूलयोः।	७	ञं नमः	दन्तपङ्क्तौ
७	टं नमः	जिह्वाग्रे।	७	ठं नमः	मुखे
७	डं नमः	कक्षयोः।	७	ढं नमः	अस्थिसन्धिषु
७	णं नमः	चित्ते।	७	तं नमः	नाभौ
७	थं नमः	ललाटे।	७	दं नमः	कर्णरन्ध्रयोः
७	धं नमः	कपोलयोः।	७	नं नमः	नयनयोः
७	पं नमः	श्वेतसहस्रदलपद्मे।	७	फं नमः	हृत्पद्मे
७	बं नमः	स्कन्धयोः।	७	भं नमः	भ्रूमध्ये
७	मं नमः	हनुमूले।	७	यं नमः	तालुमूले
७	रं नमः	लिङ्गगुदयोर्मध्ये।	७	लं नमः	जिह्वायाम्
७	वं नमः	सर्वाङ्गे।	७	शं नमः	शिरः
७	षं नमः	तालुमूले।	७	सं नमः	दक्ष सर्वाङ्गुलीषु
७	हं नमः	ब्रह्मरन्ध्रे।	७	ळं नमः	हस्तपादयोः

७ क्षं नमःवामसर्वाङ्गुलीषु। एवं प्रागुक्तमूलाधारस्थितकुण्डलिन्याम् इति विन्यस्य–

४ ऐं ईं सौः अं.....क्षं समस्तमातृकामुच्चरन् तां कुण्डलिनीं सुषुम्नावर्त्मना षट्चक्रभेदक्रमेण ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा तत्रस्थाकुलसहस्रदलकमलकर्णिकामध्य-स्थितपरमात्मनि शिवे विलीनां विभाव्य ४ ऐं ईं सौः रक्ष रक्ष त्रिशूलिनि त्रैलोक्यानन्ददायिनि त्रिपुरे देवि ! रक्ष मां त्रिपुरेश्वरि ! रक्ष रक्ष महादेवि ! अस्मदीयमिदं वपुः, ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्फ्रें ह्सौः २ हसफ्रें श्रीं ह्रीं ऐं श्रीं समयिनि मदिरानन्दसुन्दरि समस्तसुरासुरवन्दिते भुजङ्ग भूपालमौलि मालालङ्कृतचरणकमले विकटदन्तच्छटाटोपनिवारिणि मदीयं शरीरं रक्ष रक्ष, परमेश्वरि हुं फट् स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहा, नरान्त्रमालाभरणभूषिते महाकौलिनि महाब्रह्मवादिनि महाधनोन्मादनकारिणि महाभोगप्रदे अस्मदीपं शरीरं वज्रमयं कुरु कुरु, दुर्जनान् हन हन, दुष्टमहीपालान् भक्षय २, परचक्रं भञ्जय भञ्जय, जयङ्करि गगनगामिनि त्रैलोक्यस्वामिनि यमलवरयूं ममलवरयूं वमलवरयूं शमलवरयूं श्रीभैरवि प्रसादय स्वाहा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एषा विद्या महाविद्या समया बलवत्तरा।
समस्तेषु समानी या सूर्यकोटिसमप्रभा।।
कुलाङ्गना कुलं सर्वं मदीयं त्रिपुरेश्वरी।
देवी रक्षतु दिव्याङ्गी दिव्यात्मा भोगदायिनी।।
रक्ष रक्ष महादेवि! शरीरं परमेश्वरि!।
मदीयं मदिरानन्दे! आपादतलमस्तकम्।।
निरालम्बे महातल्पे लीयमाना सुरेश्वरी।

इत्यात्मरक्षां कृत्वा (स्मृत्वा)

५ = ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें स्हख्फ्रें।

५—५ ॐ नमः शिवाय सहस्रसूर्येक्षणाय आनन्दस्वरूपाय पुरुहूताय महेश्वराय व्यापिने जगदपायकारिणे शान्ताय सर्वकारिणे महाघोरातिघोराय महाप्रभावं दर्शय २ हुं फट् स्वाहा।।१।।

५—५ ॐ हन हन विद्युज्जिह्वे ज्वल २ प्रज्वल २ बन्ध २ मथ २ प्रध्वंसय २ मम शत्रून् भक्षय २ रक्ष २ त्वं मां साधकं सपरिवारं रक्ष २ सर्वोपद्रवेभ्यः हुं फट् स्वाहा।।२।।

५—५ ॐ महामेघौघघण्टासिसंवर्तकविद्युदग्निकपर्दिककनकाम्भोरुह-विकचताल-सितकण्ठ-कपालव्याघ्राजिन-कुर्कुटपरमेश्वरप्रिये हुं फट् स्वाहा।।३।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हस्ख्फ्रें सहख्फ्रें ॐ नमः मम शत्रून् छिन्धि २ भिन्धि २ विद्रावय २ देवपिशाचासुरपन्नगगन्धर्व-नर-किन्नर-विद्याधर-यक्षराक्षस - लोकपालांस्त्रासय त्रासय, हन २ ये च मम शत्रवस्तान् निष्क्रामय २ ये च ममाविद्यां कुर्वन्ति तेषामविद्यां त्रासय २ कीलय २ घातय घातय विश्वमूर्ते महातेजसे हुं फट् स्वाहा।।४।।

५ ॐ यः ५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हस्ख्फ्रें स्हख्फ्रें मम शत्रूणां मुखं स्तम्भय २ हुं फट् स्वाहा।।५।।

५ ॐ अः ५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हस्ख्फ्रें स्हख्फ्रें मम शत्रूणां बाहू स्तम्भय २ हुं फट् स्वाहा।।६।।

'५ ॐ यः ५ ॐ ६' मम शत्रूणां हृदयं स्तम्भय २ हुं फट् स्वाहा ।।७।।
" " उदरं " " ।।८।।
" " हस्तौ " " ।।९।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

" " नाभिं " " ।१०।।

" " पादौ " " ।११।।

" " कुटुम्बानि " " ।१२।।

" " स्थानं " " ।१३।।

" " मण्डलानि " " ।।१४।।

५ ॐ य: ४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हस्ख्फ्रें स्हख्फ्रें मम शत्रूणां ग्रामं कीलय २ हुं फट् स्वाहा। ।।१५।।

५ ॐ व: ४-७ मम शत्रूणां कीलय २ हुं फट् स्वाहा। ।।१६।।

५ ॐ र: ७ ॐ सर्वसिद्धिप्रदे महाभागे मम साधकस्य सपरिवारस्य रक्षां कुरु २ हुं फट् स्वाहा। ।।१७।।

५ ॐ य: ४-७ ॐ ल: ५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हस्ख्फ्रें सहख्फ्रें ॐ ह्रीं ४ हुं फट् स्वाहा। ।।१८।।

५ ॐ श: ४ ॐ ६ मम शत्रून् कीलय २ हुं फट् स्वाहा ।।१९।।

५ ॐ ष: ४ ॐ ६ मम शत्रून् कीलय २ हुं फट् स्वाहा ।।२०।।

५ ॐ स: ४ ॐ ६ मम शत्रून् कीलय २ हुं फट् स्वाहा ।।२१।।

५ ॐ ह: ४ ॐ ६ मम शत्रून् कीलय २ हुं फट् स्वाहा ।।२२।।

५ ॐ क्ष: ६ सौ: सौभाग्यसुन्दरि मम शत्रून् कीलय २ हुं फट् स्वाहा ।।२३।।

५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्स्ख्फ्रें स्हख्फ्रें ॐ क्रों ॐ क्रों ॐ क्रों ॐ क्रों ॐ य: ॐ य: ॐ य: ॐ य: ॐ य: ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं हस्ख्फ्रें स्हख्फ्रें ॐ ५ ऐं ह्रीं क्लीं हस्ख्फ्रें स्हख्फ्रें ॐ यं यं यं यं यं ॐ ५ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हस्ख्फ्रें स्हख्फ्रें ॐ रं रं रं रं रं ॐ ५ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हस्ख्फ्रें स्हख्फ्रें ॐ ५ वं वं वं वं वं ॐ ६ शं शं शं शं शं ॐ ६ ॐ षं षं षं षं षं ॐ ५-६ ॐ सं सं सं सं सं ॐ ५-६ हं हं हं हं हं ॐ ५-६ क्षं क्षं क्षं क्षं क्षं ॐ ५-६ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ ५-६ ॐ क्लीं ॐ क्लीं ॐ क्लीं ॐ क्लीं ॐ क्लीं ॐ ५-६ हुं हुं हुं हुं हुं ॐ ५-६ हुं फट् स्वाहा।।२४

५ ॐ ६ ॐ नमो भगवति सौ: सुभगे सौभाग्यसुन्दरि मम साधकस्य सपरिवारस्य रक्षां कुरु २ हुं फट् स्वाहा।।२५।।

५ ॐ ६ ॐ क्रों ॐ क्रों ॐ ठ: ॐ ठ: ॐ ठ: ॐ ह्रौं ॐ हुं हुं हुं हुं हुं ॐ हुं फट् म्वाहा।।२६।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५ ॐ ६ ॐ नमो भगवति दुष्टचाण्डालिनि योगनिद्रे त्रिशूलबाणाङ्कुश-धारिणि दुष्टमानभक्षिणि कपालखट्वाङ्गधारिणि अणिमादिगुणसिद्धिदायिनि स्तम्भनमारणमोहनवशीकरणादिसर्वकार्यस्तम्भिनि हुं फट् स्वाहा।।२७।।

५ ॐ यः ॐ ६ मम शत्रून् हन २ दह २ पच २ मथ २ नाशय २ धम २ पापं नाशय २ विनाशय २ सर्वदुष्टान् ग्रस २ त्रासय २ हुं हुं हुं हुं हुं ॐ हुं फट् स्वाहा।। २८।।

५ ॐ यः ५ ॐ ६ ॐ हुं ५ दंष्ट्राकरालिनि सौः सुभगे सौभाग्यसुन्दरि मम शत्रूणां मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र-विष-चूर्ण-शस्त्राभिचार-सर्वोपद्रवादिकं येन कृतं कारितं कुरुते कारयति करिष्यति तान् सर्वान् हन २ सौः सुभगे सौभाग्यसुन्दरि मदीयं शरीरं मां साधकस्य सपरिवारं रक्ष २ हुं फट् स्वाहा।।२९।।

५ ॐ ६ स्फ्रें ५ ॐ ६ ॐ ह्रीं ५ हुं फट् स्वाहा।।३०।।

५ ॐ ६ ॐ खलानां भयभीतोऽस्मि आगतं शरणं तव।
शवरूपबलिं दास्ये गृहाण परमेश्वरि! हुं फट् स्वाहा।।३१।

अथ सर्वाङ्गरक्षा—

'५ ॐ ६'	ब्रह्माणि	मम	शिरो	रक्ष २ हुं फट् स्वाहा		।।३२।।
"	माहेश्वरि	"	नेत्रे	"		।।३३।।
"	कौमारि	"	वक्त्रं	"		।।३४।।
"	वैष्णवि	"	कण्ठं	"		।।३५।।
"	वाराहि	"	बाहुं	"		।।३६।।
"	माहेन्द्रि	"	हृदयं	"		।।३७।।
"	चामुण्डे	"	नाभिं	"		।।३८।।
"	महालक्ष्मी	"	गुह्यं	"		।।३९।।

" प्रत्यङ्गिरे सौः सौभाग्यसुन्दरि मम सर्वशरीरं रक्ष २ हुं फट् स्वाहा।।४०।।

५ ॐ ६ स्फ्रें ५ ॐ ६ ॐ ह्रीं ५ हुं फट् स्वाहा ।। ४१।।

इति रक्षामन्त्राः।

स्तम्भिनी मोहिनी चैव क्षोभिणी द्राविणी तथा।
जृम्भिणी भ्रामिणी रौद्री तथा संहारिणीति च।
शक्तयः क्रमयोगेन शत्रुपक्षे नियोजिताः।
धारिताः साधकेन्द्रेण सर्वशत्रुविनाशिनी।।

'५ ॐ ६' स्तम्भिनि स्फ्रें स्फ्रें मम शत्रून् स्तम्भय २ हुं फट् स्वाहा।।४२।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"	मोहिनि	"	मोहय २	"	।।४३।।
"	क्षोभिणि	"	क्षोभय २	"	।।४४।।
"	द्राविणि	"	द्रावय २	"	।।४५।।
"	जृम्भिणि	"	जृम्भय २	"	।।४६।।
"	भ्रामिणि	"	भ्रामय २	"	।।४७।।
"	रौद्रि	"	सन्तापय २	"	।।४८।।

५ ॐ ६ ॐ संहारिणि स्फ्रें स्फ्रें मम शत्रून् संहारय २ हुं फट् स्वाहा।।४९।। ॐ ह्रीं नमः कृष्णवाससे शतसहस्रकोटिसिंहवाहने सहस्रवदने अष्टादश भुजलताविभूषिते महाबलेऽजिते अपराजिते श्रीप्रत्यङ्गिरे सर्वस्यैव परकर्म-विध्वंसिनि पशुमन्त्रोच्छेदिनि सर्वभूतदमनि सर्वभूतान् बन्ध २ निकृन्तय २ सर्वदुष्टान् भञ्जय २ सर्वमन्त्रान् स्फोटय २ सर्वशृङ्खलास्त्रोटय २ ज्वालाजिह्वे करालवक्त्रे श्रीप्रत्यङ्गिरे नमोऽस्तु ते स्वाहा।।५०।।

त्रिपुराख्या महादेवी भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।
न गुरोरधिकं वस्तु न देवः शङ्करोपमः।।
न च कौलात्परो योगो न विद्या त्रैपुरी समा।
न च शान्तेः परं ज्ञानं न च क्षान्तेः परं सुखम्।।
न च शक्तिसमो न्यासो न विद्या त्रैपुरीसमा।
दर्शनेषु समस्तेषु षडङ्गेषु विशेषतः।।
दिव्यरूपा महादेवी सर्वत्र परमेश्वरी।

इति मन्त्रविद्ययोर्महिमानं स्मृत्वा–

"पीठोपपीठशिरःस्था गगनगिरि–भुवनगिरि–भुवनगोकुलनिवासिनी जयन्ती कुलशक्तिमहीतलपातालकनिवासिनी कुलकौलविभेदिनी सकलजनमन आनन्दकारिणी करोतु मम चिन्तितं, कार्यं भैरवी शतमेकं पुनातु परमेश्वरी मदनमण्डलालम्बिनी सप्तकोटिसहस्राणां मन्त्राणां परमेश्वरी।" इति मन्त्रं सकृज्जप्त्वा–

ऐं नमो भगवति त्रिकोणे त्रिधावर्ते महालिङ्गालङ्कृते त्रैलोक्यो-त्पत्तिस्थितिप्रलयकारिणि सहलर्ह्रीं कन्दर्पनन्ददायिनि सहर्ह्रीं ब्रह्मदण्डरेखे सहर्ह्रौं चित्स्वरूपेण ह्रीं क्रीं पाशाङ्कुशालङ्कृते वद वद वाग्वादिनि श्रीं सत्यव्रतमहीपालराज्यप्रदे ऐं वं वरदाश्रितहस्ते समस्तजनानन्दकारिणि हस्कलीं स्क्लीं क्लीं कीं कामराजबीजाश्रये द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः क्षोभय क्षोभय क्षोभिणि हसौः हसः हसौः दह दह मथ मथ अभयप्रदायिनि चतुर्भुजे त्रिनेत्रे प्रेतासनोद्धारिणि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महाकपालमालालङ्कृते चन्द्रशेखरे त्रिपुरे भुक्तिमुक्तिफलप्रदे ॐ ऐं ॐ नमः सिद्धं अं.....क्षं ५१ तथा क्षं .....अं ५१ अं सिद्धं नमः ॐ ऐं ॐ सर्वबीजमातः श्रीसमयिनि मम मनोरथ देहि देहि स्वाहा।' - एवं जपित्वा 'ऐं ईं सौः' इति, 'श्रीमन्त्रराजाय नमः' इति त्रैपुरमन्त्रस्य पूजां विधाय त्रिपुरादिमहानामभिः त्रयोदशविद्याः पूजयेत्—

४ ऐं स्क्लीं स्क्लां सकलह्रीं सह्रौं आदित्रिपुरायै नमः ।

(१) ४ ऐं स्ह्रौं सकलह्रीं सहस्रै ऐं सहह्रीं सह हूं कामत्रिपुरायै नमः (ऐं सहौं सहल ह्रीं सह ह्रौं ऐं सह ह्रीं सह हूं)

(२) ४ ऐं ह्रीं क्लीं हसौः त्रिपुरभैरव्यै नमः।

(३) ४ ॐ ३ ऐं ह्रीं सः वाक्त्रिपुरायै नमः।

(४) ४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः महालक्ष्म्यै त्रिपुरायै नमः।

४ ऐं ह्रीं सौः वह्नित्रिपुरायै नमः।

(५) ४ ॐ ऐं प्रें क्लीं मोहिन्यै त्रिपुरायै नमः । (ऐं हसौः क्लीं)

(६) ४ ॐ ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं भ्रामरीत्रिपुरायै नमः । (ऐं क्लीं सौः)

(७) ४ ॐ ३ ऐं ह्रीं श्रीं प्रें हसौः त्रैलोक्यस्वामिन्यै त्रिपुरायै नमः।

(८) ४ ॐ ऐं डां डीं डूं डैं डः हंस्यै त्रिपुरायै नमः।

(९) ४ ॐ ऐं ऐं सौः कौलिकायै त्रिपुरायै नमः।

(१०) ४ ऐं ऐं सौः चण्डिकायै त्रिपुरायै नमः।

(११) ४ ऐं ऐं सौः तालुमध्यगायै त्रिपुरायै नमः।

(१२) ४ ऐं ऐं सौः कपालाङ्कुरवासिन्यै त्रिपुरायै नमः।

(१३) ४ ठः ठः ठः योगिनीत्रिपुरायै नमः।

इति जपित्वा— समस्तप्रकटयोगिनीत्रिपुरायै नमः।
गुप्तयोगिनीत्रिपुरायै नमः
गुप्ततरयोगिनीत्रिपुरायै नमः
सम्प्रदाययोगिनीत्रिपुरायै नमः
कुलकौलयोगिनीत्रिपुरायै नमः
अतिरहस्ययोगिनीत्रिपुरायै नमः।
परापरारहस्ययोगिनीत्रिपुरायै नमः।

कल्पद्रोः पादमूले मणिगणखचिते काञ्चने भद्रपीठे,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीकण्ठोत्सङ्गरङ्गस्मरललितवपुस्तप्तकार्तस्वराङ्गी ।
पीनोत्तुङ्गस्तनाढ्याभरणाशतयुता कान्तिभिः सामसिन्धुः,
पायात् पाशाङ्कुशश्रीसमरविशिखधनुःखङ्गहस्ता मृडानी।।

इति ध्यात्वा–

रक्तपुष्पं शिरसि 'ऐं ईं सौः आत्मदेहाय नमः' इति गन्धाक्षतैश्च सप्तधा सम्पूज्य, धूपदीपौ निवेद्य तस्मिन्नेव त्रैपुरे देहे 'ऐं ईं सौः' इति वनिताक्षोभकरी महाकामकलां ध्यायेत् । ततः श्लोकशतकं न्यासानुसन्धानेन पठेत्।

तत्र शक्तिरुद्रमयं देहं मदीयं त्रिपुरे कुरु।
देहि मे देवदेवेशि ! वरं नित्यमभीप्सितम्।।१।।
मस्तकं मङ्गलादेवी ललाटं कुलसुन्दरी।
नेत्रयुग्मं महाकाली कर्णे रक्षतु कुण्डली।।२।।
कपाली कर्णगर्भं तु कपोलौ कमलावती।
दन्तान् रक्षतु चामुण्डा चिबुके मेरुवासिनी।।३।।
भ्रूमध्यं कण्ठदेशं च रक्ष मे भुवनेश्वरी।
जिह्वां सरस्वती रक्षेत् तालुकं तालुवासिनी।।४।।
स्थातु मे कपिला स्कन्धे स्कन्धां-(वामां) से कुलमालिनी।
कुक्षौ विनायकी स्थातु जयानन्दा स्तनद्वये।।५।।
कण्ठकूपे महालक्ष्मीर्हृदये चण्डभैरवी।
ब्रह्माणी नाभिदेशे तु स्थातु ज्वालावती गुदे।।६।।
लिङ्गे लिङ्गप्रभा चैव मुण्डिनी मेदमण्डले।
नाडीचक्रे महायोगा उद्भटा दक्षिणे करे।।७।।
वामहस्ते महामाया विद्या हस्ताङ्गुलीषु च।
वैष्णवी वामपादे च स्थातु चक्रायुधान्विता।।८।।
तथा दक्षिणपादान्ते एकपादा सुरेश्वरी।
पादाङ्गुलीषु कौबेरी रोमकूपे महोद्भटा।।९।।
मण्डली नखमूले तु वाराही मेदमण्डले।
जालन्धरी जलस्थाने कामाक्षी काममध्यगा।।१०।।
उद्भटा नाभिलिङ्गान्ते नासाग्रे पूर्णपीठगा।
पृष्ठवंशे जया देवी अस्थिसंधिषु चर्चिका।। ११।।
चर्मधारी त्वचायां तु स्थातु नित्यं महायशाः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रक्तमध्ये (A) मनोऽन्ते च स्थातु मे हंसिनी शुभा।।१२।।
माहेश्वरी च कौमारी द्वे चैते स्थातु जङ्घयोः।
वामदक्षिणयोश्चैव वीराली कटिसन्धिषु।।१३।।
देवी रक्षतु मे गात्रं मस्तकं कुलकामिनी।
पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाशमेव च।।१४।
पञ्चभूतेषु भूतेशी सदा रक्षतु मे कुलम्।
राज्यं ददातु मे चंन्द्री प्रजां चैव प्रजावती।।१५।।
माया ददातु मे नित्यं धनं धान्यं यशस्तथा।
रणे राजकुले चैव शत्रुमध्ये महावने।।१६।।
रक्तनेत्रा महादेवी करोतु मम चिन्तितम्।
समया समयं रक्षेद्विद्यां विद्या कुलागमे।।१७।।
साधकानां जगन्नाथा भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।
(B) प्राणा करोतु मे सिद्धिं त्रैलाक्यविजया सुखम्।।१८।।
घण्टाली या महाविद्या सा मे यच्छतु मङ्गलम्।
सप्तकोटिसहस्राणां मन्त्राणां नायिका तु या।।१९।।
सा मे सुरेश्वरी देवी सदा सिद्धिं प्रयच्छतु
उल्कामुखा मुखे स्थातु मार्जारी देहसंधिषु।।२०।।
भद्रकाली तु या विद्या सा मे स्थातु शिखामये।
त्रिकोणं च त्रिधावर्तं त्रैपुरं चक्रमुत्तमम्।।२१।।
मस्तके स्थातु मे नित्यं तस्यान्ते बहुरूपिणी।
पूर्वोक्ता त्रैपुरी शक्तिः स्थातु मे मन्मथोत्थिता।।२२।।
क्षोभयन्ती (C) जगत्सर्वं मदिरानन्दविह्वला।
निवासं कुरु मे देहे साम्प्रतं दिव्ययोगिनी।।२३।।
एह्येहि त्वं महादेवि सिद्धयोगिनि मे कुले।
शत्रूणां घातनार्थाय (D) जन्तूनां भोगदायिनी।।२४।।

(A) मांसके च। (B) पूर्णा करोतु। (C) क्षोभावती। (D) जेतृणाम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महायोगिनि देहेऽस्मिन् सर्वदा निलयं कुरु।
माहेन्द्री च शिखां स्थातु योनिमध्ये गणेश्वरी।।२५।।
प्रेताशी नाम विख्याता करोतु कुशलं मम।
डाकिनी पूर्वभागे च मम सौख्यं प्रयच्छतु।।२६।।
साकिनी पश्चिमाङ्गेषु दक्षिणे चाऽपि राकिनी।
वामभागे महामाया करोतु कुशलं मम।।२७।।
साऽस्मदीयं शिरः पातु सदा तिष्ठतु भैरवी।
या विशाला विशालाक्षी निर्मला मलवर्जिता।।२८।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
या कालकल्पिता काली कालरात्री तु कथ्यते।।२९।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
या निशाचरराजन्यपूजिता च निशाचरी।।३०।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
या चोर्ध्वकेशिका नाम मुक्तकेशी महाभया।।३१।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
या वीरेति समाख्याता वीराणां जयदायिनी।।३२।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
या मालिनी समाख्याता नासाग्रेबिंदुमालिनी (A)।।३३।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
या कङ्कालकरालाङ्गी चण्डकङ्कालकुण्डला।।३४।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
प्रचण्डा च विरूपाक्षी विरूपा विश्वरूपिणी।।३५।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
खट्वाङ्गी कथ्यते या च रौद्रीरूपेण पूजिता।।३६।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
कलियोगिनी प्रसिद्धा च या लोके श्रूयते कलौ।।३७।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
प्रेताक्षी कथ्यते या च फेत्कारोत्कटवर्जिता।।३८।।

(A) विद्रुमाजिनी-इतिपाठा०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
धूम्राक्षी या समाख्याता शास्त्रेऽस्मिन् योगिनीमते।।३९।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
घोररूपा महादेवी कथ्यते या कुलागमे ।।४०।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
विश्वरूपा विशेषेण करोति च जगत्त्रयम्।।४१।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
कपालमालिका प्रोक्ता या देवी मुण्डधारिणी।।४३।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
भीषणा भैरवी नाम या देवी भीमविक्रमा।।४४।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
न्यग्रोधवासिनी या, च कथ्यते च सुरार्चिता।।४५।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
भैरवी भीषणा या च भैरवाष्टकवन्दिता।।४६।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
प्रोच्यते दीर्घलम्बोष्ठी महामाया महाबला।।४७।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
खट्वाङ्गी या महाशक्तिः संसारार्णवतारिणी।।४८।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
या समस्तेषु मन्त्रेषु प्रोच्यते मन्त्रवादिनी।।४९।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
कालघ्नी कथ्यते या च युगान्ते परमेश्वरी।।५०।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
ग्राहिणीति समाख्याता सुरासुरमहोरगैः ।।५१।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
चक्रिणी गद्यते या च एकपादा त्रिलोचना।।५२।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
या विश्वबाहुका देवी विश्वनाथप्रिया सदा।।५३।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकटा गोपिताः सर्वा निर्वाणा भैरवी शिवा।
सम्भ्रमा विजया हंसा शुभा (A) सा जलदेवता।।८१।।
यक्षिणी चूडकन्या च तथा चाकाशगामिनी।
भूचरी चरिता कुम्भी सर्वागमनिवासिनी।।८२।।
चतुःषष्ट्याश्रया देवी योगिन्यो येन चिन्तिताः।
आधारे लीयमानास्तु स योगी योगविद् भवेत्।।८३।।
ललाटे मण्डला स्थातु विरजा स्थातु मस्तके।
एकाक्षी दक्षिणस्कन्धे वामे चैव त्रिलोचना।।८४।।
जयन्ती स्थातु मे कुक्षौ कट्यां कन्दर्पकुण्डली।।
मालिनि लिङ्गसन्धौ च हृदि स्थातु समाधिनी।।८५।।
अम्बिका पृष्ठवंशे च पार्श्वयोः स्थातु मेदिनी।
दिग्गजाङ्गी कराग्रे च नागेन्द्री नखसन्धिषु।।८६।।
(B) व्याघ्री चक्री च जङ्घायां स्थातु पादतले मम।
अमृता शङ्खि रन्ध्रे लोचने च विलासिनी।।८७।।
कालिन्दी मूलजिह्वां च रक्तं रक्षतु रक्तिनी।
लाङ्गली जाङ्गली रक्षेदस्थिनि चाऽस्थिसन्धिषु।।८८।।
मज्जिनी देहमज्जां तु शुक्रं शुक्रेश्वरी तथा।
त्वचं रक्षतु वेताली मम रोगप्रणाशिनी।।८९।।
रुद्भटा कुरुते शान्तिं सदैव मम विग्रहे।
पादा पादतले स्थातु पथि रक्षतु पन्थिनी।।९०।।
चौराग्निराजसर्पेभ्यो भयाद्रक्षतु भैरवी।
दुष्टानां दृष्टिबन्धं तु सदा करोतु बन्धिनी।।९१।।
चापेटी नाम या विद्या सा मे करोतु मङ्गलम्।
मर्कटी घण्टकर्णी च हनुमन्ती च रावणी।।९२।।
घर्घुरा कीर्तिविख्याता वन्दे विद्याचतुष्टयम्।
चेटका ज्ञानदा विद्या कौमारी चरणावली।।९३।।

(A) सानलदेवता। (B) व्याघ्रवक्त्री।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विघ्नराजस्तुता नाम तुष्टा सन्तानरूपिणी।
मूलाधारस्थिता हंसी पातकी दलनोद्धृता।।९४।।
दशैता मन्त्रविद्यास्तु तिष्ठन्तु मम मस्तके।
शुभा मे चाग्रतः स्थातु लोहिता स्थातु दक्षिणे।।९५।।
वामाङ्गं रतिकाले च पश्चिमे स्थातु शृङ्खला।
शिखायां शङ्खिनी रक्षेद् वस्त्रे वस्त्रवती शुभा।।।९६।।
कवचे कवचाङ्गी च नेत्रे नेत्रकृतोत्सवा।
तिष्ठन्ति योगिनीरूपास्त्रैलोक्ये सचराचरे।।९७।।
योगिन्यो या स्तुताः सर्वा गेहं कुर्वन्तु मे वपुः।
पुत्राणां च तदा देयं भक्तानां तु विशेषतः।।९८।।
(A) शक्तिन्यासमिदं देयं न देयं यस्य कस्यचित्।
मनुष्याणां महीलोके चिन्तितार्थफलप्रदम्।।९९।।
यः करोति महान्यासं षोढान्यासादिकं विभो।
स जीवन् शक्तिरूपी वै त्रैलोक्योन्मूलनक्षमः।।१००।।
शक्तिन्यासेऽकृते (B) जीवेद् यः कश्चित्साधको भवेत्।
कर्मणा मनसा वाचा तस्य पातो भविष्यति।।१०१।।
।। इति महाशक्ति न्यासः।।
इति यतिदण्डैश्वर्यविधानान्तर्गतो महाषोढान्यासः समाप्तः।

(A) शक्तिन्यासस्त्वयं देवि, न देयो यस्य कस्यचित् ।
(B) जीव - इति पाठ भेदः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

११. श्रीपरा-महा-योनि-कवचम्

पूर्वपीठिका-

ॐ नमः शिवाय गुरवे नादबिन्दुकलात्मने ।
श्रीगणेशाय नमः। श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः।

श्रीभैरव उवाच-

क्रमदीक्षाविधानानि मयोक्तानि महेश्वरि।
त्वयात्मनः कुलागारे कवचं यत् सुगोपितं।।१।।
अधुना कृपया त्वं च तत्सर्वं वक्तुमर्हसि।

श्रीभैरव्युवाच-

शृणु देव! प्रवक्ष्यामि तन्त्रसारमिदं महत्।।२।।
एतच्छ्रीकवचस्यास्य परब्रह्म-ऋषिः शिवः।
महती जगतीच्छन्दश्चिच्छक्तिर्देवतोच्यते।।३।।
ऐं वीजं ह्रीं तथा शक्तिः सकलह्रीं कीलकं तथा।
परब्रह्मप्राप्तिहेतौ विनियोगः प्रकीर्तितः ।।४।।

ऋष्यादिन्यासं कृत्वा कवचं पठेत्। यथा-

ॐ अस्य श्रीपरमहायोनिकवचस्य परमब्रह्म शिव ऋषिः, महज्जगतीच्छन्दः, शक्तिर्देवता, ऐं बीजं, ह्री शक्तिः, सकलह्रीं कीलकं, परब्रह्म प्राप्तये विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः -

ॐ श्री परब्रह्मशिवाय ऋषये नमः - **शिरसि**, महज्जगतीछन्दसे नमः - **मुखे**, शक्तिदेवतायै नमः - **हृदि**, ऐं बीजाय नमः - **गुह्ये**, ह्रीं शक्तयै नमः - **पादयोः**, सकलह्रीं कीलकाय नमः - **नाभौ**, परब्रह्म प्राप्तये विनियोगाय नमः - **सर्वाङ्गे**।

अथ कराङ्गन्यासौ -

मन्त्राः	करन्यासः	हृदयादिन्यासः
ॐ ऐं	अनुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ क्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ सौं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ ऐं	अनमिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
ॐ क्लीं	कलिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रैयायग वैषट्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। अस्त्राय फट्।
।।ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।।

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् उग्रतारा मूलाधारं ममावतु।
ह्रीं भुवनेश्वरी पातु स्वाधिष्ठानं च मे सदा ।।५।।
क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणा पातु मणिपुरं तथा मम। नमो
भगवत्यै हस्ख्फ्रें कुब्जिकायै स्ह्रां स्ह्रीं स्ह्रूं ङञणनमे
अघोरा-मुखि छांछीं किणि किणि विच्चे।।६।।
अनाहतं सदा पातु कुब्जिका परमेश्वरी।
फ्रें ख्फ्रें गुह्यकाली सा विशुद्धं मे च रक्षतु।।७।।
कएईलह्रीं हसकहलह्री सकलह्रीं श्रीं।
आज्ञाचक्रं महादेवी षोडशी पातु मे सदा ।।८।।
हस्क्ष्लवरयूँ स्हक्ष्म्लवरयीं नादचक्रं च मे ।
श्रीमदानन्दभैरवः सहावतु परेश्वरी।।९।।
ह्सौः स्हौः अर्धनारीश्वरी बिन्दुश्च मेऽवतु।
हंसः सोऽहं सदा पातु सहस्रारं सदा मम।।१०।।
कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं श्रीं।
शिरो मे पातु सा देवी महात्रिपुरसुन्दरी।।११।।
कएईलह्रीं कामेशी भ्रूमध्यं से सदाऽवतु।
हसकहलह्रीं वज्रेशी दक्ष नेत्रं सदाऽवतु।।१२।।
सकलह्रीं वामनेत्रं रक्षतु भग मालिनी।
ह्स्रें हसकलह्रीं ह्सौः त्रिनेत्रं पातु भैरवी।।१३।।
ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धा कर्णौ मे परिरक्षतु।
ह्रीं क्लीं क्षुं मां सदा पातु मुखं त्रिपुर मालिनी।।१४।।
मे ह्सैं हस्क्लीं हसौं कण्ठं पातु श्रीत्रिपुराश्रीर्मे।
हैं सैं हक्लीं हसौं पातु वक्षस्त्रिपुरवासिनी।।१५।।
दौवारिजौ सदा पातु ह्यणिमाद्यष्टसिद्धयः।
ह्रीं क्लीं सौः पातु मे नाभि परात्रिपुरसुन्दरी।।१६।।
दशमुद्रायुता देवी मनश्च पातु सर्वदा।
ऐं क्लीं सौः पातु मे जानू श्रीमहात्रिपुरेश्वरी।।१७।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

षड्दर्शनं सदा पातु जङ्घायुग्मं च सर्वदा।
अं आं सौः त्रिपुरा पातु पादौ च सततं नमः।।१८।।
ॐ ह्रीं श्रीं पातु मां पूर्वे श्रीमहाभुवनेश्वरी।
कएईलह्रीं दक्षिणे मां परा परिरक्षतु।।१९।।
सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं श्रीकुब्जा पश्चिमे मां सदाऽवतु।
श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः चोत्तरे मां पातु योगेश्वरी परा।।२०।।
हसकहलह्रीं पातु मामधो वज्रयोगिनी।
सकलह्रीं सा ललिता ह्यूर्ध्वे मां परिरक्षतु।।२१।।
श्रीं ५ ॐ ३ क ५ ह ६ स ४ सौः ५ सदाऽवतु।
सर्वाङ्गं मे च चिद्रूपा महात्रिपुरसुन्दरी।।२२।।

फल श्रुतिः (उत्तर पीठिका) -

इति ते कथितं देव! ब्रह्मानन्दमयं परं ।
श्रीमहायोनिराख्यातं कवचं देवदुर्लभम् ।।२२।।
मम तेजसा रचितं श्रीविद्याक्रमसंयुतम्।
तव स्नेहान्महादेव! तवाग्रे तु मयोदितम्।।२३।।
राज्यं देयं शिरो देयं न देयं कवचं परम्।
देयं पूर्णाभिषिक्ताय स्वशिष्याय महेश्वर।।२४।।
अन्यथा नारकी भूयात् कल्पकोटिशतैरपि।
दिक्सहस्रेण पाठेन ह्यसाध्यं साध्यते क्षणात्।।२५।।
लक्षं जप्त्वा महादेव! तद्दशांशं हुनेद् यदि।
ब्रह्मज्ञानमवाप्नोति परब्रह्मणि लीयते।।२६।।
भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद् यदि।
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ साक्षात् कामेश्वरी भवेत्।
नारी वामभुजे धृत्वा भवेत् त्रिपुरसुन्दरी।।२७।।

ॐ तत्सत् श्रीमहानिर्वाणतन्त्रे श्रीमहायोनिकवचं नाम
श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरी कवचम् सम्पूर्णम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भुवनेश्वरी स्तोत्रम्

प्रसीद प्रपञ्चस्वरूपे प्रधाने प्रकृत्यात्मिके प्राणिनां प्राणसंज्ञे।
प्रणोतुं प्रभो प्रारभे प्राञ्जलिस्त्वां प्रकृत्याप्रतर्क्यप्रकामप्रवृत्ते।।1।।
स्तुतिर्वाक्यबद्धा पदात्मैव वाक्यं ध्रुवं त्वां त्वमेवाक्षरैस्त्वन्मयैः।
स्तौष्यतस्त्वन्मयी वाक्प्रवृत्तिर्यतः स्यात् सा परा त्वमेव भवानी।।2।।
अजाधोक्षजत्रीक्षणा चापि रूपं परं नाभिजानन्ति मायामयं ते।
स्तुवन्तीशितां त्वाममी स्थूलरूपां तदेतावदम्बेह युक्तं ममापि।।3।।
नमस्ते महत्त्वं प्रपन्ने प्रधाने नमस्ते त्वहङ्कारतत्त्वस्वरूपे।।4।।
नमः शब्दरूपे नमो व्योमरूपे नमः स्पर्शरूपे नमो वायुरूपे।
नमो रूपतेजोरसाम्भःस्वरूपे नमस्तेऽस्तु गन्धात्मिके भूस्वरूपे।।5।।
नमः श्रोत्रचर्माक्षिजिह्वाख्यनासास्यवाक्पाणिपत्पायुसोपस्थरूपे।
मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तस्वरूपे विरूपे नमस्ते विभो विश्वरूपे।।6।।
रवित्वेन भूत्वान्तरात्मा दधासि प्रजाञ्चन्द्रमस्त्वेन पुष्णासि भूयः।
दधत्यग्निमूर्ति दहस्याहुतिं वा महादेवि तेजस्त्रयं त्वत्त एव।।7।।
चतुर्वक्त्रयुक्ता लसद्धंसवाहा रजःसंश्रिता ब्रह्मसंज्ञां दधाना।
जगत्सृष्टिकार्या जगन्मातृरूपे वरं त्वत्पदं ध्यायसीशि त्वमेव।।8।।
विराजत्किरीटा लसच्छंखचक्रा वहन्ती च नारायणाख्यां जगत्सु।
गुणं सत्त्वमास्थाय विश्वस्थितिं यः त्वमेव करोतीह सोंऽशोऽपि देवि।।9।।
जटाबद्धचन्द्राहिगणां त्रिनेत्रां जगत्संहरन्ती च कल्पावसाने।
तमः संश्रितां रुद्रसंज्ञां दधाना वहन्ती परश्वक्षमाले विभासि।।10।।
सचिन्ताक्षमाला सुधाकुम्भलेखाधरा त्रीक्षणार्धेन्दुराजत्कपर्दा।
सुशुक्लांशुकाकल्पदेहा सरस्वत्यपि त्वन्मयैवेशि वाचामधीशा।।11।।
लसच्छंखचक्रा लसद्खड्गचक्रा लसद्खड्गभीमा नदत्सिंहवाहा।
द्रवद्दैत्यवर्गा स्तुवत्सिद्धवर्गा त्वमम्बेशि दुर्गापि सर्गादिहीने।।12।।
पुरारातिदेहार्धभागा भवानी गिरीन्द्रात्मजात्वेन यैषा विभासि।
महायोगिवन्द्या महेशा सुनाथा महेश्यम्बिका तत्त्वतस्त्वन्मयैव।।13।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लसत्कौस्तुभोरसि ते व्योमनीले वसन्तीं च वक्षःस्थले कैटभारेः।
जगद्वल्लभां सर्वलोकैकनाथां श्रियं त्वां महादेव्यहं तामवैमि।।14।।
अजाद्रीगुहाब्जाक्षपोत्रीन्द्रकाणां महाभैरवस्यापि बिन्दुं वहन्त्यः।
विभो मातराः सप्त तद्रूपरूपाः स्फुरन्त्यस्त्वदंशा महादेवि ताश्च।।15।।
समुद्यद्दिवाकृत्सहस्राभभासा सदा सन्तताशेषविश्वावकाशे।
लसन्मौलिबद्धेन्दुलेखे सपाशांकुशाभीत्यभीष्टात्तहस्ते नमस्ते।16।।
प्रभाकीर्तिकान्तिदिवारात्रिसन्ध्याः क्रियाशा तमिस्त्रा क्षुधाबुद्धिमेधा।
धृतिर्वाङ्मतिः सन्मतिः श्रीश्च कान्तिस्त्वमेवेशि येऽन्ये च शक्तिप्रभेदाः।।17।।
हरे बिन्दुनादैः सशक्त्याख्यशान्तैर्नमस्तेऽस्तु भेदप्रभिन्नैरभिन्नैः।
सदा सप्तपाताललोकाचलाब्धिगुहद्वीपधातुस्वरादिस्वरूपे।18।।
नमस्ते नमस्ते समस्तस्वरूपे समस्तेषु वस्तुष्वनुस्यूतरूपे।
अतिस्थूलसूक्ष्मस्वरूपे महेशि स्मृते बोधरूपेऽप्यबोधस्वरूपे।19।।
मनोवृत्तिरस्तु स्मृतिस्ते समस्ता तथा वाक्प्रवृत्तिः स्तुतिः स्यान्महेशि।
शरीरप्रवृत्तिः स्तुतिः स्यान्महेशि शरीरप्रवृत्तिः प्रणामक्रिया स्यात्।।20।।
हृल्लेखाजपविधिसमर्चनविशेषानेतांस्तां स्तुतिमपि नित्यमादरेण।
योऽभ्यसेत् स खलु परां श्रियं परस्य धाम्नः प्राप्नोत्येव न संशयः।।21।।

।। इति भुवनेश्वरीस्तुतिः।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिन्दी व्याख्या के व्याख्याता

श्री स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

सत्यं साधना कुटीर

वार्ड नं 3, डाकः कैलास गेट, मुनि की रेती,

ऋषिकेश, तहसीलः नरेन्द्रनगर, जिलाः टिहरी गढ़वाल,

उत्तराखण्ड. पिनः 249137. चलदूरभाषः 9557130251